

छत्तीसगढ़ विधान सभा की अशोधित कार्यवाही



(अधिकृत विवरण)



षष्ठम् विधान सभा

दशम् सत्र

शुक्रवार, दिनांक 17 जुलाई, 2026
(आषाढ़ 26, शक सम्वत् 1948)

[अंक 05]

छत्तीसगढ़ विधान सभा

शुक्रवार, दिनांक 17 जुलाई, 2026

(आषाढ़ 26, शक संवत् 1948)

विधान सभा पूर्वाह्न 11:00 बजे समवेत हुई

{अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए}

तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर

चावल की आवश्यकता तथा केन्द्रीय पूल और राज्य पूल से पूर्ति की स्थिति

[खाद्य, नागरिक आपूर्ति तथा उपभोक्ता संरक्षण]

1. (*क्र. 961) श्रीमती शेषराज हरवंश : क्या खाद्य मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- (क) राज्य में किन-किन योजनाओं के अन्तर्गत चावल का वितरण किया जा रहा है? इनमें से केन्द्रीय, राज्य की तथा संयुक्त योजनाएं क्या-क्या हैं तथा चावल की पात्र मात्राएं क्या-क्या हैं ? (ख) योजनावार चावल के लिए पात्र परिवार/व्यक्तियों की संख्या कितनी-कितनी है? इसके लिये 2024-25 तथा 2025-26 में कितनी-कितनी मात्रा में चावल की आवश्यकता थी तथा कितनी-कितनी मात्रा में केन्द्रीय पूल तथा राज्यपूल से चावल की आपूर्ति की गई ? (ग) क्या केन्द्रीय योजनान्तर्गत पात्र परिवार/व्यक्तियों तथा पात्र मात्राओं से अधिक संख्या में परिवार/व्यक्तियों को तथा पात्रता से अधिक मात्रा में चावल का वितरण किया जाता है ? यदि हां, तो उसका विवरण दीजिए ? (घ) क्या केन्द्रीय पूल से पात्रानुसार पर्याप्त मात्रा में चावल प्राप्त नहीं होता है ? यदि हां, तो कमियों का विवरण दीजिए?

खाद्य मंत्री (श्री दयालदास बघेल) : (क) राज्य में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत प्रचलित अंत्योदय, प्राथमिकता, निराश्रित, निःशक्तजन एवं सामान्य राशनकार्डों में चावल वितरण किया जा रहा है। इनमें से केन्द्रीय योजना राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत 57.25 लाख अंत्योदय एवं प्राथमिकता राशनकार्ड तथा राज्य योजना के अंतर्गत 25.76 लाख राशनकार्ड प्रचलित है। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय योजना छात्रावास एवं कल्याणकारी संस्थाओं को खाद्यान्न आवंटन तथा स्कूल शिक्षा विभाग की मध्याह्न भोजन योजना एवं महिला बाल विकास विभाग की पूरक पोषण आहार योजना में चावल प्रदाय किया जा रहा है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत केन्द्रीय योजना एवं राज्य योजना में प्रचलित राशनकार्डों में चावल की पात्रता की जानकारी संलग्न प्रपत्र-अ¹ अनुसार है। (ख) सार्वजनिक वितरण प्रणाली

¹ परिशिष्ट 'एक'

के अंतर्गत वर्तमान में 15.73 लाख अन्त्योदय राशनकार्ड, 58.34 लाख प्राथमिकता राशनकार्ड, 29,408 निराश्रित राशनकार्ड, 17,792 निःशक्तजन राशनकार्ड तथा 8.46 लाख सामान्य राशनकार्ड प्रचलित है। इन राशनकार्डों के लिए खरीफ वर्ष 2024-25 एवं 2025-26 में केन्द्रीय पूल एवं राज्य पूल में उपार्जित चावल की जानकारी संलग्न प्रपत्र-ब अनुसार है। (ग) जी हां, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्य से अधिक व्यक्तियों एवं राशनकार्डों को राज्य योजना से चावल वितरण किया जा रहा है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत प्राथमिकता राशनकार्ड में निर्धारित मासिक पात्रता 05 किलो प्रति सदस्य प्रतिमाह के स्थान पर राज्य में राज्य शासन द्वारा प्राथमिकता राशनकार्ड हेतु निर्धारित पात्रता 01 सदस्य वाले राशनकार्ड में 10 किलो, 02 सदस्य वाले राशनकार्ड में 20 किलो, 03 से 05 सदस्य वाले राशनकार्ड में 35 किलो प्रति राशनकार्ड तथा 05 से अधिक सदस्य वाले राशनकार्ड में 07 किलो प्रति सदस्य प्रतिमाह वितरण किया जा रहा है। (घ) जी नहीं, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत निर्धारित पात्रता अनुसार केन्द्रीय पूल में पर्याप्त मात्रा में चावल प्राप्त हो रहा है। शेष प्रश्नांश उपस्थित नहीं होता।

श्रीमती शेषराज हरवंश :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न माननीय खाद्य मंत्री जी से है। मैंने पूछा है कि राज्य में किन-किन योजनाओं के अन्तर्गत चावल का वितरण किया जा रहा है ? इनमें केन्द्रीय और राज्य की तथा संयुक्त योजनाएं क्या-क्या हैं तथा चावल की पात्र मात्रा क्या है ? माननीय मंत्री जी ने विस्तार से जानकारी दी है। इसमें कुल 10 प्रकार के राशन कार्ड के बारे में बताया गया है, जिसमें सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत 15.73 लाख अन्त्योदय राशनकार्ड एवं 58.34 लाख प्राथमिकता राशनकार्ड प्रचलन में हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहूंगी कि जब अन्त्योदय परिवारों को केन्द्र की योजना से निःशुल्क राशनकार्ड मिल रहा है तो राज्य के कोटे में पृथक से 8.5 लाख से अधिक कार्ड क्यों चल रहे हैं ? माननीय मंत्री जी, बतायें।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे विधायक जी के द्वारा जो प्रश्न पूछा गया है, जवाब में स्पष्ट है कि अन्त्योदय, अति गरीब के लिए केन्द्र के 7.18 लाख राशनकार्ड और राज्य के 8.51 लाख राशनकार्ड हैं। प्राथमिकता बी.पी.एल. राशनकार्ड में केन्द्र के 50.07 लाख राशनकार्ड हैं और राज्य के 8.33 लाख राशनकार्ड हैं। ये अन्त्योदय और प्राथमिकता वाले राशनकार्ड हैं। उसी प्रकार से इसमें और भी हैं। राज्य सरकार के निराश्रित एकल सदस्य और निःशक्तजन विकलांग के भी हैं। तो कुल मिलाकर यहां 57.25 लाख केन्द्र का राशनकार्ड है तथा राज्य का 25.76 लाख राशनकार्ड है। इसमें केन्द्र से जो मिलता है, इसमें 1 करोड़ 98 लाख सदस्य हैं और राज्य के 75 लाख सदस्य हैं। इस तरह कुल सदस्य हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इसमें चावल का वितरण होता है, उसके सम्बन्ध में बताना चाहूंगा। जैसे अन्त्योदय राशनकार्डधारी को 35 किलो चावल देते हैं। इसमें पात्रता है। जैसे इसमें कुछ केन्द्र का है तथा कुछ राज्य का है। उसी प्रकार प्राथमिकता बी.पी.एल. राशनकार्ड हैं, उसमें केन्द्रीय योजना के अन्तर्गत एक सदस्य वाले राशनकार्डधारी को, बी.पी.एल. वाले को 5 किलो केन्द्र सरकार से तथा 5 किलो राज्य सरकार की ओर से चावल दिया जाता है। कुल मिलाकर 10 किलो चावल दिया जाता है। इसी प्रकार 2 सदस्य वाले राशनकार्डधारी हैं, उसको 10 किलो केन्द्र की ओर से तथा 10 किलो राज्य की ओर से, उनको कुल 20 किलो चावल दिया जाता है। 3 से 5 सदस्य वाले राशनकार्डधारी हैं, उनको 35 किलो चावल देते हैं। इसमें हम लोग 20 किलो चावल देते हैं तथा 15 किलो केन्द्र से मिलता है। जो 5 से 10 सदस्य वाले राशनकार्डधारी हैं, उनको पात्रता के हिसाब से 5 किलो केन्द्र के चावल के अलावा उसको 2 किलो अतिरिक्त मिलता है। इस तरह चावल का वितरण होता है। इसमें निराश्रित और निःशक्तजन राशनकार्डधारी को भी 10 किलो चावल प्रति महीना देते हैं।

श्रीमती शेषराज हरवंश :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या निराश्रित और निःशक्तजन परिवार प्राथमिकता परिवार गरीबी रेखा परिवार में नहीं आते हैं ? इन्हें केन्द्रीय योजना से क्यों नहीं जोड़ा गया है ? माननीय मंत्री जी बतायें।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, निराश्रित और निःशक्तजन, इन दोनों को 10-10 किलो चावल राज्य सरकार से देते हैं। केंद्र से नहीं, केंद्र का ये जो कार्ड है, 7.18 लाख और 50.07 लाख, ये दोनों को केंद्र योजना से मिलता है।

श्रीमती शेषराज हरवंश :- माननीय अध्यक्ष महोदय, केंद्र एवं राज्य की प्राथमिकता में बी.पी.एल. संख्या में 16.82 लाख का भारी अंतर है। जब पात्रता नियम स्पष्ट है तो इतनी भारी मात्रा में अतिरिक्त परिवार कहाँ से आया है? केंद्र में इनकी गणना क्यों नहीं की गई है? माननीय मंत्री जी बताएं।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने जो कार्ड की संख्या है, उसे स्पष्ट बताया है, केंद्र का अलग है, राज्य का अलग है। इसमें 57.25 लाख केंद्र का है, जिसको केंद्र की योजना का लाभ मिलता है। बाकी शेष है 25,76,000, राज्य कोटे से चावल मिलता है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक।

श्रीमती शेषराज हरवंश :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर राज्य में कुल अतिरिक्त परिवार 25,36,858 हैं और हमारे राज्य को, जो एक्स्ट्रा परिवार है, जो केंद्र में होने चाहिए जिनका डेटा वह राज्य में है और राज्य में अतिरिक्त अंत्योदय राशन कार्ड के आधार पर छत्तीसगढ़ को राज्य के हम लोगों को वार्षिक वित्तीय भार लगभग 1364.35 करोड़ रुपये का पड़ रहा है। जबकि अंत्योदय राशन कार्ड, अंत्योदय योजना पूरी तरह से केंद्र का है, तो फिर हमारे राज्य को ये वित्तीय भार क्यों पड़ रहा है? माननीय मंत्री जी बताएं।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये पात्रता तय है। पात्रता के हिसाब से ही ये जो 7.18 लाख है, ये केंद्र का है, ये पात्रता सूची में है, जैसे बी.पी.एल. का ही है। ये दोनों पात्रता सूची में है, इसका लाभ केंद्र सरकार से इनको मिलता है और पात्रता के अतिरिक्त जैसे 8,51,000 जो कार्ड बताया और 8,33,000, केंद्र और राज्य दोनों से इनको लाभ मिलता है, ये पात्रता है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है, पर्याप्त हो गया।

श्रीमती शेषराज हरवंश :- माननीय अध्यक्ष महोदय...

अध्यक्ष महोदय :- पर्याप्त हो गया।

श्रीमती शेषराज हरवंश :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक और सवाल। अगर हम प्राथमिकता राशन कार्ड को प्रति सदस्य, पांच सदस्य से ऊपर अगर होते हैं तो प्रति सदस्य 7 किलो एक्स्ट्रा उनको दिया जाता है, प्रति सदस्य 7 किलो। तो यही हम अंत्योदय में यदि पांच सदस्य से ऊपर हैं, तो ये हम उनको 7 किलो क्यों नहीं देते अगर पांच से ऊपर है तो? माननीय मंत्री जी बताएं। माननीय अध्यक्ष महोदय, ये जनहित का मुद्दा है, गरीबों का है। अगर उनको भी प्रति सदस्य 7 किलो मिल जाता तो ये अच्छा रहता।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब इसको बताना चाहूंगा, ये जो 5 किलो केंद्र का है, उसके अलावा पांच सदस्य से ऊपर है, उसको 2 किलो राज्य सरकार से मिलाकर चावल देते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें तीन से पांच सदस्य वाले हैं, इसको तीन सदस्य को हम लोग 20 किलो देते हैं और 15 किलो केंद्र सरकार से मिलता है, उनको भी 35 किलो देते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, ये 35 किलो चावल जो मिलता है, मैं केंद्र सरकार का और राज्य सरकार का पात्रता भी बता दिया हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, ये अंत्योदय की पात्रता केंद्र एवं राज्य में 35 किलो निर्धारित है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, अब आप पूछ लीजिए।

श्री बघेल लखेश्वर :- अध्यक्ष महोदय, ये राशन कार्ड धारियों को कई लोगों को के.वाई.सी. के अभाव में राशन नहीं मिल पा रहा है। मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि कितने के.वाई.सी. नहीं कराए हैं और कितनी अन्य-अन्य योजना, जितनी योजना हैं, इन योजना का अलग-अलग थोड़ा बताएं।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये के.वाई.सी. आवश्यक है, के.वाई.सी. के बगैर चावल में गड़बड़ी होने की शंका रहती है, इसलिए हम लोग आवश्यक कर दिए हैं, के.वाई.सी. आवश्यक है।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सुशांत शुक्ला जी।

श्री सुशांत शुक्ला :- माननीय अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। मैं प्रश्न क्रमांक 748 के तहत आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूँ..।

श्री दिलीप लहरिया :- के.वाई.सी. अनिवार्य है तो सर्वर डाउन क्यों हो रहा है, पहले उस त्रुटि को सुधारा जाये।

अध्यक्ष महोदय :- आप कुछ बोलेंगे।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- जी सर।

अध्यक्ष महोदय :- आप कुछ बोलेंगे?

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- जी सर।

अध्यक्ष महोदय :- बोलिए। आपको कौन रोकेगा, साहब?

डॉ. चरणदास महंत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से बहुत सरल सवाल पूछ रहा हूँ। मेरा सवाल यह है कि आप लोग ऐसा कहते हैं कि केन्द्र की सरकार देश के 80 करोड़ गरीब परिवारों को मुफ्त में अनाज देती है।

अध्यक्ष महोदय :- 80 लाख है।

डॉ. चरणदास महंत :- नहीं सर, देश का 80 करोड़।

अध्यक्ष महोदय :- अच्छा, पूरे देश का 80 करोड़। वह पूरे देश की जानकारी कहां से बतायेंगे?

डॉ. चरणदास महंत :- नहीं, उसमें छत्तीसगढ़ का हिस्सा कितना है? उसी के अनुसार सरकार कहती है कि 25 करोड़ गरीब परिवार गरीबी रेखा से बाहर आ गए हैं। चूँकि डबल इंजन की सरकार है, इसलिए इंजन तो चुनना ही पड़ेगा। उन 25 करोड़ गरीब परिवारों में से छत्तीसगढ़ के कितने परिवार हैं? यह बहुत सरल सवाल है।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने अभी विधायक जी को स्पष्ट बताया है कि छत्तीसगढ़ में राशन कार्डधारी सदस्यों की संख्या 57,25,000 है। केन्द्र सरकार से जिन्हें चावल मिलता है, उनकी संख्या भी मैंने बताई है कि छत्तीसगढ़ में 1,98,00,000 सदस्य हैं, जिन्हें हम चावल उपलब्ध कराते हैं।

डॉ. चरणदास महंत :- मंत्री जी, मैंने यह पूछा है कि कितने लोग गरीबी रेखा से बाहर आ चुके हैं। आपने कहा कि गरीबों को अमीर बना दिया है, मैं उसी संख्या के बारे में पूछ रहा हूँ। आपके पास पर्ची आई है, उसे आप देखकर बता दीजिए।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य गरीबी रेखा से ऊपर आए परिवारों की जानकारी पूछ रहे हैं। अभी इसका जानकारी उपलब्ध नहीं है, मैं उनको बाद में उपलब्ध करा दूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है, आपको उपलब्ध करा देंगे।

डॉ. चरणदास महंत :- जब जानकारी जाएगी, तब मुझे बता दीजिएगा।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया साहब। आप प्रश्न पूछ लीजिये।

श्री बघेल लखेश्वर :- अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं आया है।

अध्यक्ष महोदय :- आ जाएगा। आप प्रश्न पूछिये।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय मंत्री जी ने कहा कि राशन कार्ड की e-KYC बार-बार करानी पड़ती है। Field में यह देखा गया है कि सर्वर डाउन होने या अंगूठे का निशान न मिलने आदि कारणों से कई लोगों की 3-4 महीने बीत जाने के बाद भी e-KYC नहीं हो पाती है। जब e-KYC होती है, तब उसी महीने से अनाज मिलना शुरू होता है। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि जिनका e-KYC किन्हीं तकनीकी कारणों से नहीं हो पाया था, उन्हें पिछले महीनों का रुका हुआ चावल भी प्रदान किया जाए। जैसे कि जनवरी में e-KYC नहीं हुआ, लेकिन उसका मार्च में e-KYC हो गया, तब उसको जनवरी से मार्च का चावल भी मिलना चाहिए।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, e-KYC आवश्यक है। इसे लेकर बहुत-सी शिकायतें मिलती हैं।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। सुशांत जी।

बेलतरा विधान सभा क्षेत्र की राशन दुकानों के बचत स्टॉक का सत्यापन

[खाद्य, नागरिक आपूर्ति तथा उपभोक्ता संरक्षण]

2. (*क्र. 748) श्री सुशांत शुक्ला : क्या खाद्य मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :-
(क) बेलतरा विधान सभा क्षेत्र में सार्वजनिक वितरण प्रणाली अंतर्गत राशन दुकानों में माह जनवरी, 2025 से मार्च, 2026 तक के बचत स्टॉक का सत्यापन कब-कब किया गया? विकासखंडवार राशन दुकानों के नाम सहित जानकारी उपलब्ध करावें? (ख) सत्यापन उपरांत कौन-कौन सी राशन सामग्री कितनी-कितनी मात्रा में कम पाई गई? विकासखंडवार दुकानों के नाम पता सहित जानकारी उपलब्ध करावें? (ग) राशन दुकानों में पाई गई कमी के लिए जिम्मेदार/दोषियों पर क्या कार्रवाई की गई?

खाद्य मंत्री (श्री दयालदास बघेल) : (क) जानकारी संलग्न प्रपत्र² 'अ' अनुसार है। (ख) जानकारी संलग्न प्रपत्र 'ब' अनुसार है। (ग) जानकारी संलग्न प्रपत्र 'ब' अनुसार है।

श्री सुशांत शुक्ला :- धन्यवाद, अध्यक्ष महोदय। मैंने अपना मूल प्रश्न क्रमांक 748 के खंड 'क' में स्पष्ट रूप से जनवरी 2025 से मार्च 2026 तक बेलतरा विधान सभा, बिलासपुर जिला की राशन दुकानों के भौतिक सत्यापन की जानकारी मांगी थी। माननीय मंत्री जी ने जवाब में प्रपत्र 'अ' के माध्यम

² परिशिष्ट "दो"

से जानकारी सदन के पटल पर रखा है, उसमें केवल अप्रैल 2025 की तिथियां दर्ज हैं। मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि क्या विभाग ने शेष 14 महीनों, यानी मई 2025 से मार्च 2026 तक मैं बेलतरा विधान सभा क्षेत्र की राशन दुकानों का कोई भौतिक सत्यापन किया है या नहीं किया है? यदि भौतिक सत्यापन किया गया है तो यह जानकारी सदन से क्यों छिपाई जा रही है?

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जानकारी छिपाने का प्रश्न ही नहीं उठता है। हमने जांच करवाई है। बेलतरा विधान सभा क्षेत्र में कुल 87 राशन दुकानें हैं, जिनकी हमने जांच करवाई है और उसमें तारीखें भी दर्ज हैं। यह जमा करने की तारीख है। उसके पहले हमारे अधिकारियों को 25 दिनों का समय दिया गया था और उस समय उन्होंने एक-एक दुकान की जांच की है। इसमें कुछ दुकानों के खिलाफ शिकायतें भी प्राप्त हुई हैं, जिसके बारे में यदि विधायक जी पूछेंगे तो मैं उसके बारे में भी बताऊंगा।

श्री सुशांत शुक्ला :- अध्यक्ष महोदय, यह प्रपत्र आपके पास भी है, आप स्वयं अध्ययन कर सकते हैं। यह प्रशासनिक लचरता का प्रमाण है। हालांकि, मैं इस विषय को अभी छोड़ देता हूं। मैं माननीय मंत्री जी से एक और प्रश्न पूछना चाहता हूं कि राशन दुकानों में से कौन-कौन सी राशन दुकानों द्वारा आमजनों को उचित मूल्य के तहत राशन दिए जाते हैं और उसके कितने के स्टॉक राशन दुकानों को मेंटेन करना है? उसके जिम्मेदार अधिकारी कौन होते हैं?

श्री दयालदास बघेल :- क्या है अध्यक्ष महोदय, विभाग के अधिकारी फुड ऑफिसर राशन दुकानों का भौतिक सत्यापन कराते रहते हैं और अलग-अलग एरिया में फुड अधिकारी होते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, उन लोग हर महीने 15 दिन के भीतर निरीक्षण करते रहते हैं और इसी के तहत हमने उस पीरियड में निरीक्षण कराया है। यहां कुछ निरीक्षण पर भौतिक सत्यापन में शिकायतें प्राप्त हुई हैं और उसके ऊपर हम लोग कार्यवाही भी किये हैं।

अध्यक्ष महोदय :- उनका प्रश्न यह है कि राशन दुकानों में क्या-क्या सामग्री मिलता है ? यह पूछना चाहते हैं।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राशन दुकानों में चावल तो मिलता ही है...।

अध्यक्ष महोदय :- और कुछ देते हैं तो बताईये ?

श्री दयालदास बघेल :- चावल के अलावा ट्राईवल एरिया में गुड़ वगैरह मिलता है, यहां शक्कर भी देते हैं...।

अध्यक्ष महोदय :- चना भी देते हैं, नमक भी देते हैं...।

श्री दयालदास बघेल :- नमक एक किलो देते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- नमक, चना अलग-अलग एरिया में अलग-अलग देते हैं, इतना ही तो बता रहे हैं मंत्री जी।

श्रीमती शेषराज हरिवंश :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शक्कर पूरे प्रदेश में कहीं नहीं मिल रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- थोड़ा रुक जाइये ।

श्री सुशांत शुक्ला :- अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूँ कि क्या राज्य सरकार ने राशन दुकानों में मसालों की बिक्री की व्यवस्था की है ?

अध्यक्ष महोदय :- यह नया प्रश्न आया है ।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे मसाला के संबंध में कोई जानकारी नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय :- इस पर जानकारी इसलिये नहीं है कि प्रशासनिक संरक्षण में दबावपूर्वक राशन दुकानों से मसाले बेचे जा रहे हैं । (शेम-शेम की आवाज) मेरे पास दस्तावेजी प्रमाणीकरण है, आप कहें तो मैं उसे पटल पर रख देता हूँ । स्टॉक मेंटेन करने के लिये ऐसे राशन दुकानों को छूट दी गई है । मैं माननीय मंत्री जी से आपके माध्यम से आग्रह करूँगा कि क्या प्रदेश में अधिकारियों के संरक्षण में दबावपूर्वक स्व-सहायता समूहों को मसाला खरीदी करके बेचने के लिये कोई व्यवस्था बनाई गई है और अगर यह हुआ है तो दोषी अधिकारियों के खिलाफ क्या कार्यवाही करेंगे ?

डॉ.चरणदास महंत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय सदस्य जी से निवेदन करूँगा कि मसाला का दो अर्थ होता है, एक तो खाना बनाने में सब्जी में डालने वाला या देख लीजिए इधर वाला भी मसाला है । (हंसी) आप कौन से मसाले की बात कर रहे हैं ?

श्री सुशांत शुक्ला :- माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, वरिष्ठ सदस्य हैं, मसाला यानी जो खाने में मसाले का उपयोग होता है, वह मसाला उचित मूल्य की दुकानों पर महिला स्व-सहायता समूहों के तकनीकी दस्तावेजी प्रमाणीकरण में जो कमियां हैं, उस पर दबाव बनाते हुये उनको बेचने के लिये बाध्य किया जा रहा है और इसीलिए उनको स्टॉक मेंटेन करने में छूट दी जा रही है । मैं स्पष्ट कह रहा हूँ ।

अध्यक्ष महोदय :- इनका दो ही विषय है, स्टॉक में कमी है और मसाला, इन दोनों का जाँच करा लीजिए ।

श्री दयालदास बघेल :- जी ।

अध्यक्ष महोदय :- दिखवा लीजिए कि कहीं पर बेचा हो ?

श्री दयालदास बघेल :- अध्यक्ष महोदय, जहां पर ऐसी शिकायतें आई कि कोई मसाला बेचता है तो उसके संबंध में जानकारी उपलब्ध करा दें ।

श्री सुशांत शुक्ला :- अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे आग्रह कर रहा हूँ कि कल भी आश्वासन में जाँच कमेटी बनेगी बोले थे । मैं निवेदन कर रहा हूँ कि माननीय मंत्री जी जाँच की घोषणा कर दें । मैं दस्तावेज उपलब्ध करा दूँगा, माननीय मंत्री जी जाँच की घोषणा कर दें ।

श्री दयालदास बघेल :- आसंदी से जांच करने का आदेश हुआ है, लेकिन कल ही कागज देने का था, लेकिन मुझे मिला नहीं है ।

श्री सुशान्त शुक्ला :- अध्यक्ष महोदय, आप जाँच की घोषणा कर दें, मैं दस्तावेज उपलब्ध करा दूँगा । अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से आग्रह है कि जाँच की घोषणा कर दें, मैं दस्तावेज उपलब्ध करा दूँगा, यह हाथ में रखा हुआ हूँ । मैं अभी पहुंचा देता हूँ ।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो बता रहा हूँ वह दे दे जो भी है...।

अध्यक्ष महोदय :- वह बोल रहे हैं, मंत्री जी आपसे सहमत हैं । श्री नीलकंठ टेकाम जी ।

विधानसभा केशकाल क्षेत्र अंतर्गत संचालित एवं प्रस्तावित नवीन धान खरीदी केंद्र

[खाद्य, नागरिक आपूर्ति तथा उपभोक्ता संरक्षण]

3. (*क्र. 253) श्री नीलकंठ टेकाम : क्या खाद्य मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :-
(क) वर्तमान में केशकाल विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत कुल कितने समर्थन मूल्य में धान खरीदी केंद्र संचालित हैं ? (ख) क्या नये खरीदी केंद्र के प्रस्ताव विधानसभा क्षेत्र की जनता की ओर से प्राप्त हुए हैं ? यदि हां, तो कितने नये खरीदी केंद्र चालू किये जायेंगे? यदि नहीं, तो क्यों?

खाद्य मंत्री (श्री दयालदास बघेल) :(क) वर्तमान में केशकाल विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत कुल 32 समर्थन मूल्य में धान खरीदी केन्द्र संचालित हैं। (ख) जी हां। नवीन धान खरीदी केन्द्र खोलने हेतु 13 प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। जिसमें से विकासखण्ड फरसगांव के ग्राम फुण्डेर का 01 प्रस्ताव जिला स्तर पर परीक्षण उपरांत निर्धारित मापदण्ड के अनुरूप नहीं पाया गया। शेष 12 प्रस्ताव विचाराधीन हैं। शेष प्रश्नांश उपस्थित नहीं होता।

श्री नीलकंठ टेकाम :- अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न धान खरीदी को लेकर है और उसमें माननीय मंत्री जी का जवाब आया है, मेरे केशकाल विधान सभा क्षेत्र में कुल 32 धान खरीदी के केन्द्र हैं । मैंने दूसरा प्रश्न किया था कि नये धान खरीदी केन्द्र के लिये क्या मेरे विधान सभा क्षेत्र से प्रस्ताव आये हैं तो उनका जवाब आया है कि 13 प्रस्ताव आये थे, उसमें से 12 प्रस्ताव जो है वह पात्रता में आते हैं । मैं इस पर माननीय मंत्री जी से चाहूँगा कि 12 प्रस्ताव पात्रता में आते हैं, वह कौन-कौन से हैं, कृपया बताने का कष्ट करें ?

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय हमारे विधायक जी के 32 धान खरीदी केन्द्र हैं और इसमें जो 13 मांग आई है, यह मांग पत्र है ग्राम पंचायत बड़बतर जो कि कलेक्ट्रेट के द्वारा आया है और ग्राम पंचायत बालेंगा, यह भी कलेक्ट्रेट के माध्यम से आया है । ग्राम पंचायत मारंगपुरी, ग्राम पंचायत साल्हेभाट, ग्राम पंचायत बनियागांव, ग्राम पंचायत कर्बोंगा, ग्राम पंचायत

सिक्कागांव, ग्राम पंचायत चिंगनार, ग्राम पंचायत चिचाड़ी, ग्राम पंचायत कानागांव, ग्राम पंचायत बाड़ागांव, ग्राम पंचायत भानपुरी, ये जितने 12 आवेदन प्राप्त हुए हैं, वह कलेक्टर के द्वारा प्रस्ताव करके भेजा गया है, इसमें एक दुकान जो फुंडेर है, उसमें माननीय विधायक जी का कहना है कि इसको अपात्र क्यों किया गया है? इसमें अपात्र की जानकारी दी गई है, किसलिए अपात्र किया गया है। उसे नियम प्रक्रिया के तहत अपात्र किया गया है। मैं माननीय विधायक जी से कहना चाहूंगा कि धान खरीदी के संबंध में ये 12 प्रस्ताव हैं। इसमें दिखवा लेंगे क्या है।

श्री नीलकंठ टेकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये सारे खरीदी केंद्र लगभग ऐसे हैं, जिसमें किसानों को 25 किलोमीटर, 30 किलोमीटर तक के दूसरे केंद्र में धान बेचने के लिए जाना पड़ रहा है। अगर ये केंद्र स्वीकृत हो जाते हैं तो किसानों को इसका बहुत लाभ मिलेगा और मैं आपको ये भी बताना चाहता हूं कि इसमें अधिकांश ऐसे प्रस्ताव हैं, जो अभी हमारे नक्सलवाद से मुक्त हुए क्षेत्र हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी को आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि ये जो 12 खरीदी केंद्र हैं जिसको पात्र पाया गया है, उसको इस वर्ष की जो खरीदी है, उसमें स्वीकृति प्रदान करने का कष्ट करेंगे।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये जो 12 खरीदी केन्द्र हैं, इसके लिए कलेक्टर से आवेदन मिला है इसका परीक्षण करा लेते हैं, इन 12 केन्द्रों में वास्तव में ये कितनी दूरी पर हैं। हम इसकी डिटेल जानकारी कलेक्टर से मंगा लेते हैं और जो उपयुक्त है, वह करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- नीलकंठ जी का कहना ये है कि नक्सल प्रभावित क्षेत्र हैं, अब शांति हुई है तो जो भी ज्यादा से ज्यादा दुकान खुलवा सकते हैं तो खोल दीजिये। ये उनका आग्रह है, ये भरोसा दिला दीजिए।

श्री दयालदास बघेल :- जी, जो अच्छा हो सकता है, हम निश्चित रूप से खोलेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- उमेश पटेल जी।

महतारी वंदन योजना हेतु अपात्रता का आधार

[महिला एवं बाल विकास]

4. (*क्र. 724) श्री उमेश पटेल : क्या महिला एवं बाल विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि:- प्रदेश में महतारी वंदन योजना के प्रारंभ में कितनी पात्र महिलाओं का पंजीयन कर योजना का लाभ दिया गया है और जून, 2026 तक कितनी पात्र महिलाओं को योजना का लाभ दिया जा रहा है ? जिलेवार जानकारी दें? कितने अपात्र हुए और किस कारण से अपात्र होकर योजना से बाहर किए

गए? जानकारी जिलेवार देवें? क्या ई.के.वाई.सी. नहीं होने के कारण भी अपात्र किया गया है? जानकारी देवें?

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े) : प्रदेश में महतारी वंदन योजना के प्रारंभ में कुल 70,27,154 प्राप्त आवेदन में से अद्यतन स्थिति तक पात्र 70,09,658 महिलाओं का पंजीयन कर लाभ दिये जाने हेतु प्रथम किस्त का भुगतान प्रेषित किया गया है। जून 2026 की स्थिति में 68,54,003 पात्र महिलाओं को योजना का लाभ दिया जा रहा है, जिलेवार जानकारी **संलग्न प्रपत्र- 'अ'**³³ अनुसार है। प्रश्नांश अनुसार मार्च 2024 के बाद अपात्र हुए महिलाओं की जानकारी **संलग्न प्रपत्र- 'ब'** अनुसार है। जी नहीं, अब तक किसी भी हितग्राही को ई.के.वाई.सी. नहीं होने के कारण योजना से अपात्र नहीं किया गया है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रश्न पूछने से पहले आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। प्रश्न के उत्तर में मुझे जो प्रपत्र अ और प्रपत्र ब मिला है, आप देख लीजिये, प्रपत्र अ में इन्होंने जो कुल संख्या बताई है, महतारी वंदन योजना के प्रथम किस्त मिलने के बाद कितने लोगों को अब नहीं मिल रहा है तो उसकी संख्या 1 लाख 55 हजार 655 हितग्राही निकल के आ रही है जिनको आज नहीं मिल रही है और उसके बाद जिन हितग्राहियों का नाम काटा गया है, वह प्रपत्र ब में है और उसका कुल योग 54,100 है तो ये दोनों आंकड़े अलग-अलग दिख रहे हैं, एक तो अभी तक जितने हितग्राही हैं, जो प्रथम किस्त मिलने के बाद आज के दिन में एक्टिव हैं, उनकी संख्या को अगर आप माइनस करोगे तो 1 लाख 55 हजार 655 हितग्राही हो रहे हैं और जो काटे गए हैं, उनकी संख्या सिर्फ 55 हजार बता रहे हैं। माननीय मंत्री जी, मैं पहले ये जानना चाहूंगा कि आपका कौन सा आंकड़ा सही है?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने महतारी वंदन योजना के विषय में जो जानकारी चाही थी, वह प्रपत्र अ और प्रपत्र ब में पूरी जानकारी दी गई है। जो आंकड़ा है, ये ऐसे आंकड़े हैं जिसमें 1 लाख 55 हजार 655 की जो बात कर रहे हैं, इसमें ऐसी महिलाएं हैं या हितग्राही हैं जिनका ई-केवाईसी नहीं हुआ है, कुछ मृत हुए हैं, कुछ अपात्र हो गए हैं, इसलिए उसके आंकड़े में अंतर दिख रहा है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप प्रपत्र ब को देख लीजिए। इसमें सारे क्राइटेरिया के आधार पर कांटे गये महिलाओं की संख्या दी गई है। पहले दिया गया है, दो या दो से अधिक आवेदन होने के कारण निरस्त लोगों की संख्या, अपात्र की शर्त के अनुसार शासकीय सेवक अथवा उनके परिजन के प्रकरण, आवेदक की आयु 21 वर्ष से कम होना, आवेदक के अविवाहित होने के संबंध में, आवेदक के छत्तीसगढ़ के स्थानीय निवासी नहीं होने के कारण, आयकरदाता होने के कारण, योजना के मापदंड के

³³ परिशिष्ट "तीन"

अनुसार पात्र न होने के कारण और प्रथम किशत के उपरांत अपात्र। इसके बाद तो कुछ बचा ही नहीं है, जिससे अपात्र हो सकते हैं। अपात्र के जितने सारे डेफिनेशन हैं तथा आपकी महतारी वंदन योजना में आपने जो क्राइटेरिया रखी है, वे सारे आपने यहां पर दिखा दिये हैं। तो इसके बाद जिन 1 लाख महिलाओं को लाभ नहीं मिल रहा है, वे कौन हैं?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरी स्पष्ट बात है कि ऐसे लोग जो प्रथम भुगतान के बाद अपात्र हुए हैं, इसमें पूरे अपात्र हुए हितग्राहियों की अपात्रता का कारण भी बता दिया गया है। जिसमें दो या दो से अधिक आवेदन होने के कारण निरस्त लोगों की संख्या, अपात्र की शर्त के अनुसार शासकीय सेवक होने या 21 वर्ष से कम या अविवाहित या छत्तीसगढ़ के स्थानीय निवासी नहीं हैं या आयकरदाता होने के कारण या फिर योजना के मापदंड के अनुसार नहीं आ रहे हैं। प्रपत्र 'ब' में यही दिखाया गया है। जो माननीय विधायक जी कह रहे हैं, वे ऐसे हितग्राही हैं जिनको ई-केवाईसी की वजह से रोका गया है।

अध्यक्ष महोदय :- रोका गया है।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- अध्यक्ष महोदय, वे अपात्र नहीं हैं, ई-केवाईसी की वजह से उनको रोका गया है। जैसे ही ई-केवाईसी होता है, उनको महतारी वंदन योजना का लाभ मिलेगा।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है, आप अगला प्रश्न करिए।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष जी, तो कुलमिलाकर यह है कि ई-केवाईसी के कारण 1 लाख महिलाओं का आज महतारी वंदन योजना का लाभ रोका गया है। ठीक है, आपने उत्तर में दिया है, आप उत्तर में देखिए, मेरा बहुत स्पष्ट प्रश्न था कि ई-केवाईसी के कारण कितने लोगों को अपात्र किया गया है? इन्होंने कहा है कि जी नहीं, एक भी नहीं है और आप कह रहे हैं कि ई-केवाईसी के कारण आप 1 लाख महिलाओं को रोक रहे हैं।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अपात्र होना और रोकना, ये अलग-अलग चीजें हो जाती हैं। अपात्र तो हम उसे कहेंगे, जो मापदंड में नहीं आते।

श्री उमेश पटेल :- अच्छा, ई-केवाईसी कराने का आखिरी दिन क्या है? आपने लास्ट डेट क्या रखा है?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- लास्ट डेट 30 जुलाई है।

श्री उमेश पटेल :- लास्ट डेट 30 जून को है? आज की स्थिति में आपने ई-केवाईसी।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- 30 जून नहीं, 30 जुलाई हो गया है। पहले 30 जून था, लेकिन उसको बढ़ाकर 30 जुलाई किया गया है।

श्री उमेश पटेल :- आपने 1 महीना और बढ़ा दिया है।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- क्योंकि ई-केवाईसी नहीं हो पाया था, इसलिए 30 जुलाई किया गया।

श्री उमेश पटेल :- चलिए, ठीक है। आप यह बताइए कि आज की स्थिति में ई-केवाईसी के कारण आपने प्रदेश में कितना प्रतिशत महतारी वंदन योजना का लाभ रोका है?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ई-केवाईसी के कारण जो रुका हुआ है, वह 0.2 प्रतिशत है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 0.2 प्रतिशत कितना हुआ?

अध्यक्ष महोदय :- 0.25 प्रतिशत।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 0.25 प्रतिशत कितना होता है?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, वह आंकड़ा लगा सकते हैं। जब माननीय सदस्य कह ही रहे हैं कि 1 लाख 66 हजार लोग बचे हुए हैं तो आंकड़े में वही आ जाते हैं। अभी कुछ दिन पहले फिर 10 हजार हितग्राहियों का ई-केवाईसी हो चुका है तो परसेंटेज धीरे-धीरे करके घट रहा है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे पास मई का आंकड़ा है। मैं मई का आंकड़ा दिखाता हूं, जून का नहीं। ये तो आज की स्थिति बता रही हैं। अगर आप चाहें तो मैं आपको मई का आंकड़ा दिखाता हूं। मई के आंकड़े के अनुसार रायगढ़ जिले में करीब 1014, बालोद में 449, बलौदाबाजार में 1253, इस तरह से आप जोड़ेंगे तो कुल 37,000 लोगों का ई-केवाईसी मई महीने में बचा हुआ था और ये 1 लाख का आंकड़ा दे रही हैं। मैं यही जानना चाहता हूं कि आपके पास 1 लाख का आंकड़ा कहां से आया? मई के महीने में आपके विभाग के अधिकारियों ने बताया है कि 37,000 ई-केवाईसी बचा है।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब माननीय विधायक अपने जिले की बात करेंगे, एक-दो जिले की बात करेंगे और उसमें हम इतना बड़ा आंकड़ा देंगे तो कहां से संभव हो पाएगा?

श्री उमेश पटेल :- अच्छा आप 0.25 को 70 लाख में करेंगे तो वह कितना होता है? 17000।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- 2 प्रतिशत बचा हुआ है।

श्री उमेश पटेल :- आपने 0.25 बोला था न?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- 2 प्रतिशत।

श्री उमेश पटेल :- 2 प्रतिशत ? माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे जानना चाहूंगा कि मंत्री जी 0.25 प्रतिशत बोल रही है कि 2 प्रतिशत बोल रही है ?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 2 प्रतिशत।

अध्यक्ष महोदय :- 2 प्रतिशत।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनके अधिकारी मई के महीने में जो जवाब दे रहे हैं, वह 37 हजार के आस-पास है और पहले जो इन्होंने 0.25 प्रतिशत कहा था, वह सही है क्योंकि आज के दिन तक 0.25 प्रतिशत महिलाएं ही ई-के.वाई.सी. के लिए बची हुई हैं। इन्होंने इतनी सारी महिलाओं

का नाम काटा है, वह अब तक क्यों रोका हुआ है, यह बता दीजिये ? आपने ई.के.वाई.सी. के कारण 1 लाख 17 हजार महिलाओं को पेंडिंग रखा, हम उसको मान गये लेकिन उसके अलावा 17 हजार को छोड़कर जो 1 लाख लोग बच रहे हैं, वह कौन है ?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कितने लोगों को प्रथम किस्त में लाभान्वित किया है, जून के डेट में कितने लोगों को हमने दिया है...।

अध्यक्ष महोदय :- आप पूरी जानकारी उपलब्ध करा देंगी। बहुत सारी जानकारी है तो वे जो-जो प्रश्न किये हैं, आप वह पूरी जानकारी शीघ्र उपलब्ध करा देंगी।

श्री उमेश पटेल :- नहीं, माननीय अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय :- वह आपको जानकारी उपलब्ध करा देंगी। अगले प्रश्न में आ जाइये।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यही प्रश्न है। मंत्री जी 2 प्रतिशत बोल रही है, उसके हिसाब से 1 लाख 40 हजार हो जायेंगे, जो कि उनका आकड़ा मैच नहीं हो रहा है। अगर 0.25 कह रही हैं तो 17 हजार हो जायेंगे, तब भी मैच नहीं हो रहा है और इन्होंने 1 लाख महिलाओं का नाम काट दिया है, यह इनके ही आंकड़े हैं। इनके अधिकारी बोल रहे हैं कि मई के महीने में 36 हजार पेंडिंग है। यहां पर जवाब अलग आ रहा है। मंत्री जी, आप भले ही टाइम ले लीजिए, मैं उसके लिए रुक जाऊंगा, लेकिन आप सही आंकड़ा दे दीजिये।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, काटने वाला कोई विषय ही नहीं है।

श्री उमेश पटेल :- आपने ही तो कहा है।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- रुका हुआ है, अपात्र हुए नहीं है। जब ई-के.वाई.सी. होगा, सत्यापन होगा, पात्र है, नहीं है, उसके बाद तो होगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, हम यह नहीं कह रहे हैं कि हम नाम काट दे रहे हैं। जब ई-के.वाई.सी. संपूर्ण हो जायेगा तो जितने महीने के पैसे नहीं दिये गये होंगे, उतने महीने के पैसे उनके खाते में दे दिये जायेंगे।

श्री दिलीप लहरिया :- अध्यक्ष महोदय, फिर उन्हें शुरू में राशि कैसे दी गयी ? जब वे पात्र नहीं थे तो क्या उस समय चुनाव जीतने के लिए दी गयी थी?

श्री उमेश पटेल :- मैं आपके आंकड़े में ही बात कर रहा हूं, कोई आंकड़े बनाकर बात नहीं कर रहा हूं। आपने ही कहा है कि अभी 68 लाख 54 हजार 03 लोग एक्टिव हैं और आपने जो पहली किस्त दी थी उसमें 70 लाख 09 हजार 668 लोग थे। दोनों का अंतर करेंगे तो 1 लाख 55 हजार हो रहे हैं। मैं इस अंतर की बात कर रहा हूं। इसमें से आपने 55 हजार लोगों को काट दिया और यह 1 लाख लोग कौन हैं ? आप कह रही है कि ई-के.वाई.सी. के पेंडिंग होने के कारण 1 लाख लोग नहीं आये हैं। लेकिन आपका आकड़ा मिस मैच हो रहा है। आप उसको दिखवा लीजिए फिर बोलिये।

अध्यक्ष महोदय :- आप आंकड़े दिखवा लीजिये, थोड़ा बहुत अंतर आ सकता है।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं स्पष्ट कर दूँ। यह वह लोग हैं जो मृत हुए हैं। 1 लाख 23 हजार 700 के आस पास ऐसे लोग हैं, जो मृत हो चुके हैं।

श्री उमेश पटेल :- कितने लोग ?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- 1 लाख..।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं इसमें क्या पूछूँ, आप बताइये ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, अनिला भेंडिया जी।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- 1 लाख 23 हजार..।

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, एक सेकंड। दो साल के अंदर 1 लाख महिलाएं मृत हो गयी हैं। मैं अब इसमें क्या पूछूँ ? आप इसको फिर से दिखवा ले। मैं अगला प्रश्न पूछ लेता हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, आप बोल रहे हैं तो मैं आगे बढ़ जाता हूँ। इन्होंने अपने उत्तर में कहा है कि प्रथम किस्त के उपरांत काटे गये हितग्राहियों की संख्या 27,050 हैं। इसमें उन्होंने कारण नहीं बताया है, सिर्फ इतना लिखा है कि प्रथम किस्त के उपरांत अपात्र। वह 27,050 लोग किस कारण से कटे हैं, वह बता दीजिये ?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रपत्र "ब" में स्पष्ट कारण है कि वे हितग्राही किस वजह से कटे हैं, वह लिखा हुआ है।

श्री उमेश पटेल :- मैडम, आपने लिखा है कि प्रथम भुगतान के उपरांत कुल अपात्र किये गये हितग्राहियों की संख्या 27,050 हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि प्रथम किस्त के उपरांत ऐसा क्या हुआ कि यह अपात्र हो गये ?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अल्प समय में महतारी वंदन योजना का फॉर्म भराया गया था। इस बीच में दो या दो से अधिक फॉर्म भी आये, उस वजह से भी लोग अपात्र हुए, कुछ शासकीय सेवक भी फॉर्म भर दिये थे, प्रथम भुगतान के बाद वह भी अपात्र हुए, 21 वर्ष से कम उम्र वालों ने भी फॉर्म भर दिया था, उसका आंकड़ा दिया हुआ है, इसकी वजह से यह कम हुए हैं।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है।

श्री उमेश पटेल :- कारण क्या है, आप वह तो बता दीजिये ? आप वह तो बता ही नहीं रही हैं।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- इसमें कारण स्पष्ट है, दिया हुआ है।

श्री उमेश पटेल :- क्या कारण है ? अध्यक्ष महोदय, आप ही बता दीजिये। इसमें यह लिखा है कि प्रथम किस्त के उपरांत अपात्र होने के कारण। अब आप मुझे अपात्र होने के कारण बता दीजिये, मैं यही तो पूछ रहा हूँ। उसका कुछ तो कारण होगा ? हो सकता है कि वह छत्तीसगढ़ का निवासी न हो, हो सकता है आयकरदाता हो, कुछ तो होगा ? आप वह बता दीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- वह आपको कारण उपलब्ध करा देंगी। चलिये, अनिला भेंडिया जी।

श्री उमेश पटेल :- चलिये, अध्यक्ष महोदय ठीक है।

अध्यक्ष महोदय :- 05 प्रश्न हो गये हैं।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या एक प्रश्न का भी उत्तर आया है, आप बता देंगे। आप ही बता दीजिए, एक प्रश्न का भी उत्तर नहीं आ रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- उन्होंने कहा है कि आपको पूरी जानकारी उपलब्ध करा देंगी।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कारण लिखा हुआ है, अब मैं क्या कारण बताऊं, बार-बार वही कारण बता रही हूँ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप बता दीजिए न, हम आपसे सुनना चाह रहे हैं।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- अच्छा, आप सुनना चाहते हैं, मैं सुना रही हूँ। माननीय विधायक जी अगर बैठ जायें तो फिर मैं सुना दूँ।

श्री उमेश पटेल :- आप उत्तर दे रही हैं?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- हां, मैं उत्तर दे दे रही हूँ। आप सुनना ही चाहते हैं तो फिर उत्तर सुना रही हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, जो अपात्र किये गये हैं, उनके कारण भी दिये गये हैं और अपात्र हुए हितग्राहियों का कारणवार विवरण भी प्रपत्र-ब में है। दो या दो से अधिक आवेदन वाले हैं।

श्री उमेश पटेल :- मेडम, आप प्रश्न को समझ नहीं रही हैं, एक सेकंड सुन लीजिए। मैं अध्यक्ष जी आपसे निवेदन कर रहा हूँ, इस प्रपत्र में टोटल 8 कारण दिये हुए हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आप दोनों एक दूसरे को समझा नहीं पा रहे हो, दुर्भाग्य ये है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्योंकि माननीय मंत्री महोदय समझ नहीं पा रही हैं। आपके निर्देश पर संचालन हो रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- आपके और आपके बीच अंतर इतना ही है।

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, मैं अक्षम हूँ, मैं मंत्री जी को समझा नहीं पा रहा हूँ। इसलिए आपसे निवेदन कर रहा हूँ कि उन्होंने जो प्रथम खाने में लिखा है कि मार्च 2024 प्रथम भुगतान के उपरांत कुल अपात्र किए गए हितग्राहियों की संख्या 27050 है तो उसका कारण बता दीजिए कि अपात्र का कारण क्या है?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उसी का तो कारण है, अपात्र होने का कारण तो इसमें लिखा हुआ है। अब वही तो कारण है। (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, ठीक है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक आखिरी प्रश्न कर लेता हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- और क्या आप प्रश्न पूछेंगे?

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री (श्री श्याम बिहारी जायसवाल) :- आप उसको पढ़ नहीं पा रहे हैं तो दादी से पढ़वा लीजिए। दादी पढ़ेंगे तो सुना सदन को शांत होना पड़ेगा।

श्री उमेश पटेल :- मैं नहीं पढ़ पा रहा हूं। मैं यह नहीं बोलूंगा कि माननीय मंत्री जी जवाब नहीं दे रही हैं। माननीय मंत्री जी जवाब नहीं दे रही हैं, मैं चला रहा हूं, महिला हैं इसलिए कुछ नहीं बोल रहा हूं।

श्री रामकुमार यादव :- महिला मन के बीच मैं मत आवा, छत्तीसगढ़ के महिला मन बहरी मुडिया में मारी।

अध्यक्ष महोदय :- চলিয়ে, উমেশ জী আপ বোলিয়ে। আখিরী প্রশ্ন আর ছোট প্রশ্ন কর লীজিএ।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये एकदम आखिरी प्रश्न है। यह तो वह जानेंगे ही, इसमें कोई वो नहीं है। जब से महतारी वंदन योजना चालू हुई है, तब से पोर्टल बंद है। मार्च 2024 के बाद ये पोर्टल खुला नहीं है। मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहूंगा कि ये पोर्टल कब खुलेंगे और नये शादीशुदा महिलायें हैं, उनका नाम कब जोड़ेंगी?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये माननीय विष्णु देव साय जी का सुशासन है कि सरकार आते ही 2 महीने में महतारी वंदन योजना को प्रारंभ कर दिया गया। (मेजों की थपथपाहट) वर्ना घोषणा उधर भी की गई थी, लेकिन पूरा नहीं कर पाये। हमारी सरकार ने जो घोषणा की थी, हमने वह पूरा करने दिखाया है। और ये चिंता न किया जाये कि पोर्टल कब खुलेगा। उसके लिये विष्णुदेव साय जी की सरकार चिंता कर रही है।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- ढाई साल हो गये। .. (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- ढाई साल हो गये, पोर्टल नहीं खुला है। .. (व्यवधान)

श्री दीपेश साहू :- आप लोग 5 साल तक नहीं दिये, आप लोग तो 5 साल में 500 रुपया भी नहीं दे पाये।.. (व्यवधान)

(पक्ष एवं प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा परस्पर विरोधी नारे लगाये गये)

श्री आशाराम नेताम :- पांच साल में 5 रुपया नहीं दे पाये, आज 1 हजार रुपये की बात करते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आप हर विषय में चर्चा कर सकते हैं। आपके लिये आप का दिन काफी उपयोगी रहेगा। इसलिए इस विषय में जो जवाब आ गया है, आपकी संतुष्टि हो गई है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कौन सा प्रश्न पूछूंगा, वह डिसाइड करेंगे। उन्होंने कहा कि ये प्रश्न न पूछा जाये।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न आपको करना है।

श्री उमेश पटेल :- अब मैं इस सदन में किसी से डिक्टेशन लूंगा क्या कि मुझे क्या प्रश्न पूछना चाहिए?

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, आप प्रश्न करिये, आपको जो प्रश्न करना है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वह ऐसा बोल रही हैं। ट्रेजरी बैंच से अगर ऐसा आयेगा तो हम क्या प्रश्न पूछेंगे। अध्यक्ष महोदय, यह तो गलत है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप बैठिये, हो गया।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम बहिर्गमन करते हैं।

समय

11.39 बजे

बहिर्गमन

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों द्वारा शासन के उत्तर के विरोध में।

(डॉ. चरणदास महंत, नेता प्रतिपक्ष के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों द्वारा शासन के उत्तर के विरोध में सदन से बहिर्गमन किया गया।)

तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर (क्रमशः)

श्री रोहित साहू :- आप लोगों ने महिलाओं को ठगने का काम किये थे। आपने 5 साल में 5 रुपया नहीं दे पाये।

श्री आशाराम नेताम :- ये लोग 33 प्रतिशत आरक्षण के साथ नहीं हैं।

अध्यक्ष महोदय :- श्रीमती अनिला भेंडिया जी । प्रश्न क्रमांक-05 ।

श्री अजय चंद्राकर :- आप नहीं गयीं ?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- मैं अपनी जनता का प्रश्न पूछ रही हूँ । (हंसी)

संसदीय कार्यमंत्री (श्री केदार कश्यप) :- आप जो 500 रुपये नहीं दे पाये, आप वह बताना चाह रही हैं ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अभी आप लोग नहीं दे रहे हैं, मैं उसको बता रही हूँ।

श्री केदार कश्यप :- आप लोगों ने 500 रुपये नहीं दिये, आप उसके लिये दुख व्यक्त करिये ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- जहां बेईमानी हुई है, भ्रष्टाचार हुआ है, अभी उसको बताना है । आप मेरा मुंह मत खुलवाईये ।

श्री सुशांत शुक्ला :- आप पी.डी.एस. में स्वसहायता समूह का भी बताना । माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्या जी आज बतायेंगी कि पी.डी.एस. में स्वसहायता कैसे गायब किये थे ।

अध्यक्ष महोदय :- आप प्रश्न करिये ।

श्री आशाराम नेताम :- जितना बोलना है, बोल दीजिये । महतारी वंदन योजना का आपके खाता में आता है या नहीं आता है ?

अध्यक्ष महोदय :- आप बैठिए । यह प्रश्नकाल है ।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना में वित्तीय विसंगति

[महिला एवं बाल विकास]

5. (*क्र. 669) श्रीमती अनिला भेंडिया : क्या महिला एवं बाल विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- (क) 'मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना' के तहत बालोद जिले में पिछले दो वर्षों में मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत कुल कितने सामूहिक विवाह आयोजित हुए ? उन पर कुल कितना वित्तीय व्यय हुआ? वित्तीय सहायता में से उपहार सामग्री और विशेष रूप से आभूषण (मंगलसूत्र, बिछिया आदि) के लिए प्रति जोड़ा कुल कितनी राशि निर्धारित है? (ख) क्या विभाग को उपहार सामग्री की गुणवत्ता में भारी कमी और वित्तीय विसंगतियों के कारण सप्लायर फर्म के बिलों से कटौती (रिकवरी) करनी पड़ी है? यदि हाँ, तो कितनी? क्या उक्त फर्म को ब्लैकलिस्ट (काली सूची) में डाला गया है? (ग) क्या वहाँ वितरित सामग्री की गुणवत्ता की कोई लैब टेस्टिंग या वित्तीय ऑडिट कराया गया है? यदि नहीं, तो शासन इस गंभीर लापरवाही की उच्च स्तरीय या थर्ड-पार्टी जांच कब तक कराएगा?

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े) : (क) मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत बालोद जिले में पिछले दो वर्षों में कुल 07 सामूहिक विवाह आयोजित हुए हैं एवं उन पर कुल 1,99,95,294/- रुपये की राशि व्यय हुआ है। योजनांतर्गत प्रति जोड़ा उपहार सामग्री अंतर्गत श्रृंगार सामग्री हेतु राशि 7,000/- रुपये की व्यय सीमा निर्धारित है। जिसके अंतर्गत वर-वधू के कपड़े, श्रृंगार सामग्री, जूते-चप्पल, चुनरी, साफा, मंगलसूत्र इत्यादि सामग्री तथा अन्य आवश्यक सामग्री जैसे क्रय समिति उचित समझे का प्रावधान है। प्रति हितग्राही मंगलसूत्र, बिछिया आदि हेतु पृथक से लागत राशि निर्धारित नहीं है। (ख) जी नहीं, सप्लायर फर्मों के बिलों से कटौती (रिकवरी) नहीं करनी पड़ी है। शेष प्रश्नांश की जानकारी निरंक है। (ग) जी नहीं, वितरित सामग्री की गुणवत्ता की कोई लैब टेस्टिंग या वित्तीय ऑडिट नहीं कराया गया है। गंभीर लापरवाही के प्रकरण प्राप्त न होने से उच्च स्तरीय या थर्ड पार्टी जांच की आवश्यकता प्रतिपादित नहीं है।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहूँगी कि बालोद जिला में मुख्यमंत्री विवाह योजना के आंकड़े मुझे दिये हैं कि 7 बार सामूहिक विवाह हुआ है और 1,99,95,294/- रुपये की राशि व्यय हुई है तो मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहूँगी कि

कितने जोड़ों का सामूहिक विवाह हुआ है और कितने आवेदन आये थे, माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेगी?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने 2 वर्ष के कन्या विवाह की जानकारी मांगी है तो मैं माननीय सदस्य को यह बताना चाहूंगी कि वर्ष 2024-25 में दिनांक 20.03.2025 में पहला जो विवाह हुए हैं वह 15 जोड़ा का हुआ है और दिनांक 07.03.2025 में जो हुआ है वह 35 जोड़ों का हुआ है । दिनांक 23.08.2025 में 50 जोड़ों का हुआ है और दिनांक 25.03.2026 में 56 जोड़ों का हुआ है और दिनांक 21.03.2025 में 44 जोड़ों का हुआ है तो कुल मिलाकर 200 जोड़ा, यह वर्ष 2024-25 का है । वर्ष 2025-26 में दिनांक 29.05.2025 में 37 जोड़े और दिनांक 10.02.2026 में 163 जोड़ों का मतलब कुल 400 जोड़ा का विवाह संपन्न हुआ है ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप इसमें भी गलत आंकड़े दे रहे हैं । जो 1,99,95,294/- रुपये की राशि आहरण की गयी है । आपने वर्ष 2024-25 का और कुल 400 जोड़ों का बता रहे हैं लेकिन मेरे हिसाब से चूंकि मैंने 371 जोड़ों की जानकारी निकाली थी और आपने 7 बार सामूहिक विवाह किया है तो आपने यह नहीं बताया कि कितने आवेदन आये थे और कितने का सामूहिक विवाह किया है ?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आवेदन की जानकारी माननीय सदस्य को उपलब्ध करा दूंगी कि कितने आवेदन आये हुए थे लेकिन जो विवाह संपन्न हुए हैं वह 400 जोड़े का विवाह संपन्न हुआ है ।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है ।

श्री अजय चंद्राकर :- आदरणीय भाभी जी ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चूंकि जो आवेदन आये उनके अनुरूप सामूहिक विवाह नहीं हुआ है, कई जोड़ों को वापस कर दिया गया है, यह हमारे जिले की शिकायत थी तो क्या आपने इसमें कार्रवाई की है ?

श्री अजय चंद्राकर :- आपसे एक छोटा सा प्रश्न पूछ रहे हैं कि आपके कार्यकाल में...

श्रीमती अनिला भेंडिया :- मैं वहां जाऊं क्या ? (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय ।

श्री अजय चंद्राकर :- एक मिनट । आप सुन तो लीजिये, आप तो बड़ी सहनशील हैं । आप यह बताईये कि आपके कार्यकाल में वह सुधाकर खलखो सक्ति अधिकारी होते हुए भी महासमुंद में क्यों अनशन में बैठा था ?

श्री भूपेश बघेल :- अनिला जी, भटकने की जरूरत नहीं है। उन्होंने कल नियम बनाया था। वह पूछने वाले, उत्तर देने वाले, मैं कौन हूँ ? है न। (हंसी) आज यह पूछ रही हैं, उनको उत्तर देना है, आप कौन ? (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- वह विधानसभा में चलता है, आपने उससे बड़ी-बड़ी परिस्थितियाँ देखी हैं।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय मंत्री जी, कितने आवेदन आये हैं और आपने कितने जोड़ों की शादी कराई है, आप मुझे रिकॉर्ड दे देना। अगर इसमें शिकायत भी हुई है लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई तो आप विभाग के द्वारा इसमें जाँच कराएँगे क्या ?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आवेदन आने और विवाह संपन्न न होने के सम्बन्ध में कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई है।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं हुई है, चलिये।

श्री सुशांत शुक्ला :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दीपेश जी की शादी भी उसी में हुई है।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यहां शिकायत कर रही हूँ तो क्या आप जांच करा देंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- अभी शिकायत कर रही हैं, उसकी जांच के लिये।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हुआ है, इनकी जानकारी में नहीं है। मैं अब दूसरे प्रश्न में आ जाती हूँ। आपने दूसरे प्रश्न में दिया है कि योजनांतर्गत प्रति जोड़ा वर, वधु को कपड़े, श्रृंगार सामग्री जो भी देते हैं उसमें आप 7 हजार रुपये खर्च करते हैं तो बाकी आप 35000 रुपये तो ऑन रिकॉर्ड उनके खाते में डालते हैं, फिर आपके पास कुछ 16 हजार रुपये बच जाता है तो वह राशि किसमें खर्च करते हैं ? और इसके साथ-साथ एक और प्रश्न पूछ लेती हूँ जो आप लोगों की कमेटी निर्धारित करती है..।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पहले जवाब दे देती हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- आप उनको ब्रेकअप दे दीजिएगा। आप अलग-अलग मद में ब्रेकअप बता दीजिएगा।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसा बोलते हैं कि इस योजना में कमेटी सामग्री लेने के लिए निर्धारित करती है। जब वहां पर शिकायत आयी है कि हमको नकली मंगलसूत्र दिया गया है तो इसमें क्या आपकी कमेटी ने इसकी जांच नहीं की या आपकी कमेटी ने यह निर्धारित कर दिया कि आप उन्हें नकली मंगलसूत्र दें। यह बताने की कृपा करेंगे।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य महोदय इस योजना की हर बात से अवगत हैं वह ऐसा इसलिए भी है क्योंकि वह पूर्व में महिला बाल विकास विभाग की मंत्री रह चुकी हैं। मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत एक जोड़े के विवाह में लगते हैं और जिसमें 8000

रूपये अलग खर्च किये जाते हैं, श्रृंगार सामग्री हेतु 7000/- रूपये खर्च किये जाते हैं और इसमें वधु के खाते में 35000 रूपये डी.बी.टी. किये जाते हैं तो 8000 रूपये जो है यह जिले स्तर या ब्लॉक स्तर पर आयोजन होता है, उसमें टेंट का सामान, वर-वधु के साथ जो आये रहते हैं उनके खाने-पीने की व्यवस्था और पूजा की सामग्री में खर्च किये जाते हैं मतलब इसमें अन्य खर्च भी एड होते हैं...।

अध्यक्ष महोदय :- इसमें पर्याप्त उत्तर हो गया।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कमेटी ने जो नकली मंगलसूत्र दें, ऐसा तय किया है, मैंने उसके बारे में प्रश्न किया है। मैं तो यह पूछा ही नहीं कि इस योजना में किसमें कितना खर्च किया जाता है। आपके विभाग द्वारा जो नकली मंगलसूत्र दिया गया है यहां पर आपने अपने उत्तर में यह दिया है कि इसमें वेंडर के ऊपर कार्यवाही नहीं करने की आवश्यकता है। आप उसके ऊपर कार्यवाही क्यों नहीं करना चाहते हैं ? आपके समय में उन्हें बहुत कम राशि में चांदी का मंगलसूत्र दिया। हमारे समय में हम लोगों ने बहुत कम राशि थी जब हमारी सरकार आयी तब हमने प्रति जोड़े के लिए 50000 रूपये किया है तो इतने पैसे होने के बाद आप उन्हें नकली मंगलसूत्र दे रहे हैं तो आपने उन्हें क्यों दिया ? आप यह बताने की कृपा करें इसमें आपकी समिति या वेंडर, सबकी मिलीभगत होगी, आपने इसमें बिना जांच के कैसे आदेश दे दिया ?

श्री रामकुमार यादव :- माननीय मंत्री महोदय, मोला ए चिंता हो गे हे कि नकली मंगलसूत्र हे ता ओ दिपेश जी के का होही ?

श्री दिपेश साहू :- माननीय रामकुमार भाई, एक बार बिहाव कर ले, पता चल जही मंगलसूत्र हा असली हे या नकली हे।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- का हा असली या नकली हे । मंगलसूत्र या ओ हा ?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बालोद जिले की ऐसी कोई शिकायत नहीं आयी है जिसमें इस तरीके से माननीय सदस्य महोदय जो कह रही है कि वहां नकली मंगलसूत्र दिये जा रहे हैं। बालोद जिले की ऐसी कोई शिकायत नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई है।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर बालोद जिले में ऐसी कोई शिकायत नहीं आयी है तो फिर प्रदेश में तो शिकायत आयी है, यह उसी से संबंधित है।

अध्यक्ष महोदय :- आप प्रदेश का अलग से प्रश्न कर लेंगे।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कम से कम मेरे प्रश्न का उत्तर तो आ जाये।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी में मेरा भी एक पूरक प्रश्न है। यह मेरे जिले से संबंधित है तो मेरा एक प्रश्न है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री महोदय से यह जानना चाहती हूँ कि इस योजना के तहत विवाहित जोड़े की निर्धारण प्रक्रिया क्या है ?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मतलब ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस योजना में जो जोड़े विवाह के लिए तैयार होते हैं, उसकी जो नियम-प्रक्रिया होती है, आप यह कैसे निर्धारित करते हैं कि इसमें किस जोड़े को विवाह में शामिल करेंगे ?

श्री अजय चन्द्राकर :- पंडित जी से पूछकर निर्धारित करते हैं।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसी के घर में ऐसे बहुत सारे परिवार हैं जब आप तात्कालिक मुख्यमंत्री थे तब आपने यह योजना लायी थी। मैं ऐसे निर्धन परिवार कह सकती हूँ जिनके ऊपर बेटी के जन्म के बाद कोई भार न आये या उसके विवाह में कोई ज्यादा समस्या न आये, किसी को विवाह कराने के लिए जमीन न गिरवी रखनी पड़े, आपने इसके लिए यह योजना लायी थी और इसमें जो शादी करने या कराने का मापदण्ड है या हम कहेंगे कि मुख्यमंत्री खाद्यान्न राशन कार्डधारी को इस योजना का लाभ दिया जाता है, जो इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष जी, मेरे क्षेत्र में शिकायत है कि कई जोड़ा ऐसा है, जिनकी शादी हुए दो साल हो चुके हैं, कई जोड़ा ऐसा है, जिनकी शादी को 15 महीने हो गए हैं। ऐसे कई लोग हैं तो उसमें प्रक्रिया होती है, जिसमें सामाजिक पदाधिकारियों का उसमें समर्थन चाहिए होता है। वह लिस्ट आपके पास है क्या, अगर वह लिस्ट है तो मंत्री जी मुझे उपलब्ध करा देंगी।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष जी, अगर ऐसा कुछ विषय है तो हम उपलब्ध करा देंगे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय, इसमें मुझे कार्रवाई चाहिए क्योंकि बालोद जिले में..

अध्यक्ष महोदय :- आपने कहा कि उपलब्ध करा दें तो मंत्री जी ने कहा कि उपलब्ध करा देंगी। मूल प्रश्नकर्ता बैठ गई हैं, आपका प्रश्न छोटा है, केवल एक प्रश्न है। इतना ही होगा।

महतारी वंदन योजना के तहत पंजीकृत महिलाएं

[महिला एवं बाल विकास]

6. (*क्र. 732) श्री धर्मजीत सिंह : क्या महिला एवं बाल विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि:- (क) प्रदेश अंतर्गत जून, 2026 तक महतारी वंदन योजना अंतर्गत कुल कितनी महिलाओं का पंजीयन किया गया है? (ख) कंडिका "क" की पंजीकृत कितनी महिलाओं को नियमित रूप से योजना का लाभ मिल रहा है और कितनी महिलायें लाभ से वंचित हैं? लाभ से वंचित महिलाओं को

योजना का लाभ कब तक दिया जायेगा? (ग) क्या कंडिका "क" योजनांतर्गत प्रदेश की बहुत सारी महिलाओं को लाभ नहीं मिल रहा है? यदि हां, तो कब तक उनको पंजीकृत किया जाएगा? यदि नहीं तो कारण सहित बताएं?

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े) : (क) प्रदेश अंतर्गत प्रारंभ से जून 2026 तक महतारी वंदन योजना अंतर्गत कुल पात्र 7017433 हितग्राहियों का पंजीयन किया गया है। (ख) कंडिका "क" की पंजीकृत महिलाओं में से जून 2026 की स्थिति में 6854003 महिलाओं को लाभ दिया गया है तथा 35930 हितग्राहियों को विभिन्न कारणों से जैसे लंबित ई-केवाईसी, वांछित दस्तावेज, स्थानीय निवासी प्रमाण पत्र प्रस्तुत न करना आदि कारणों से वर्तमान में लाभ नहीं दिया गया है, इन कारणों के निराकरण के उपरांत उन्हें लाभ दिया जाएगा। (ग) कंडिका "क" योजना अंतर्गत निर्धारित तिथि तक आवेदन न करने वाली तथा बाद में पात्र होने वाली महिलाओं के लाभ से वंचित होने की संभावना है। नए आवेदन लिए जाने की प्रक्रिया प्रारंभ करने पर तथा पात्रता होने पर लाभान्वित किया जा सकेगा। निश्चित तिथि बताया जाना अभी संभव नहीं है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने माननीय मंत्री जी से महतारी वंदन के विषय में पूछा था, उन्होंने उत्तर दिया है कि 68,54,000 महिलाओं को इस योजना का लाभ दिया जा रहा है। 35930 हितग्राहियों को विभिन्न कारणों से जैसे लंबित ई-केवाईसी, वांछित दस्तावेज, स्थानीय प्रमाण-पत्र प्रस्तुत न करना आदि कारणों से वर्तमान में लाभ नहीं दिया गया है, इन कारणों के निराकरण के उपरांत उन्हें लाभ दिया जाएगा। मैं यह पूछना चाहता हूँ कि निराकरण करने के लिए उनके पास कितना समय है, अंतिम तिथि कब तक है और दस्तावेज उपलब्ध कराने के बाद आप इनको भुगतान सुनिश्चित कर देंगी क्या ?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष जी, माननीय वरिष्ठ सदस्य ने महतारी वंदन योजना का प्रश्न किया है, जिसमें 35930 हितग्राहियों को लाभ नहीं दिया जा रहा है क्योंकि कुछ ऐसे हितग्राही हैं, जिनका ई-केवाईसी नहीं हो पाया है, कुछ हितग्राही ऐसे हैं, जो बैंक खाता या राज्य से बाहर वाले हितग्राही हैं और कुछ हितग्राही सत्यापन के पते पर न पाये जाने पर सम्पर्क विहीन हैं और कुछ हितग्राही अधिक भुगतान के समायोजन वाले हैं। इसकी वजह से उनको योजना का लाभ नहीं दिया जा रहा है। जब यह स्पष्ट हो जाएगा तो आपको अवगत करा दिया जाएगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे अवगत नहीं होना है। आप सिर्फ यह बताईए कि उसमें समय है क्या कि कितने तारीख तक उनको दस्तावेज प्रस्तुत करने पर योजना का लाभ मिलेगा और कब तक का समय है, उसके बाद दस्तावेज प्रस्तुत करने के बाद योजना का लाभ नहीं मिलेगा, ऐसी कोई समय-सीमा है या दस्तावेज कभी भी दे सकते हैं।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें ऐसा कोई समय-सीमा नहीं है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दूसरा, मैंने आपसे यह पूछा था कि बाकी और बची हुई पात्र महिलाएं, माताएं और बहिनें हैं, उनको इस योजना के अंतर्गत और भी नाम जोड़कर उनको लाभ देंगे क्या ? आपने कह दिया है कि बाद में पात्र होने वाली महिलाओं के लाभ से वंचित होने की संभावना है, नये आवेदन लिए जाने की प्रक्रिया प्रारंभ करने पर तथा पात्रता होने पर लाभान्वित किया जा सकेगा तो पात्रता के लिए नया आवेदन या पात्र महिलाओं को आवेदन देने के लिए आपकी योजना शुरू हो गई है क्या और शुरू हो गई है तो कब से शुरू हो गई है ? जो महिलाएं योजना के लाभ से वंचित हैं, उनको लाभ देने के लिए विचार करके कोई कार्रवाई कर रही हैं क्या, यह बता दीजिए । क्योंकि हम गांव के दौरे में जाते हैं तो सारी माताएं, बहिनें आकर बोलती हैं कि महतारी वंदन योजना के लाभ मोला नहीं मिलथे, मोला नहीं मिलथे । इसलिए मैंने इस प्रश्न को पूछा था, ताकि आप एक बार क्लीयर कर दें । आप जैसा बताएंगी, वैसा ही जाकर हम वहां बता देंगे । आप बताईए कि नये जो छूटे हुए हितग्राही हैं, उनको आप इस योजना में जोड़ेंगे क्या, उसके लिए कोई प्रक्रिया आपके पास विचाराधीन है क्या ? अगर प्रक्रिया विचाराधीन है तो कब से आप इस नये वाले प्रोग्राम को लांच करेंगी, यह बता दीजिए ।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- अध्यक्ष महोदय, महतारी वंदन योजना में प्रथम चरण में 70 लाख से अधिक महिलाओं को महतारी वंदन योजना का लाभ दे रहे थे । मैं मानती हूं कि कुछ महिलाएं छूटी हुई हैं और कुछ महिलाएं विवाहित होकर आ भी रही हैं, लेकिन सरकार की नीयत साफ है, इसमें पुनः पोर्टल खोला जाएगा और जो छूटी हुए महिलाएं हैं, उनको महतारी वंदन योजना का लाभ दिया जाएगा ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी, आपने तो उत्तर में लिख दिया है कि जब पोर्टल खुलेगा, तब उनको लाभ देंगे । मैं आपसे यह पूछ रहा हूं कि वंचित लोग जो छूट गए हैं, उनके बारे में भी सहानुभूतिपूर्वक आपके पास विचार करने का कोई कार्यक्रम है या नहीं है ? यदि है तो यही बता दीजिये। जब खुलेगा तब खुलेगा। आप यह बोलिये कि आप इस पर विचार करके उनको जोड़ने की प्रक्रिया आगे बढ़ायेंगी। योजना बनायेंगी या नहीं बनायेंगी, यह बता दीजिये।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, सभी के लिए एक साथ पोर्टल खोला जायेगा और महतारी वंदन योजना का लाभ दिया जायेगा।

धमतरी जिलांतर्गत उचित मूल्य की दुकानों का संचालन

[खाद्य, नागरिक आपूर्ति तथा उपभोक्ता संरक्षण]

7. (*क्र. 473) श्रीमती अंबिका मरकाम : क्या खाद्य मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि:- (क) धमतरी जिला अंतर्गत कौन-कौन से विकासखण्ड में कितनी-कितनी उचित मूल्य की दुकानें

संचालित हो रही हैं ? उक्त दुकानों को कितने वर्षों के लिए आवंटित किया जाता है? कितनी दुकानों की समय अवधि पूर्ण होने के बाद भी संचालित हो रही हैं ? कितनी दुकानों की समय अवधि में वृद्धि की गई है ? विगत तीन वित्तीय वर्षों की विकासखण्डवार जानकारी दें ? संचालन/आवंटन और समय वृद्धि का नियम क्या है ? नियम की प्रति उपलब्ध कराएं ? (ख) धमतरी जिला अंतर्गत कौन-कौन से विकासखण्ड में कितने-कितने लोग गरीबी रेखा कार्डधारी और अन्त्योदय कार्डधारी परिवार हैं ? क्या उक्त सभी गरीब परिवारों को राशन दिया जा रहा है ? यदि नहीं, तो क्यों ? क्या उक्त सभी परिवारों को 5 किलो राशन योजना (PMGKAY) का लाभ भी दिया जा रहा है ? यदि नहीं, तो क्यों ? विकासखण्डवार पिछले 3 वर्षों की जानकारी वर्षवार उपलब्ध कराएं ?

खाद्य मंत्री (श्री दयालदास बघेल) :(क) धमतरी जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत संचालित उचित मूल्य दुकानों की 03 वर्ष की विकासखण्डवार जानकारी संलग्न प्रपत्र 'अ' अनुसार है। उचित मूल्य दुकानों का आवंटन छत्तीसगढ़ सार्वजनिक वितरण प्रणाली (नियंत्रण) आदेश 2016 के प्रावधान अनुसार आवंटित किया जाता है। उचित मूल्य दुकानों के आवंटन की समय अवधि निर्धारित नहीं है। शेष प्रश्नांश उपस्थित नहीं होता। उचित मूल्य दुकानों के आवंटन के प्रावधान की जानकारी संलग्न प्रपत्र 'ब' अनुसार है। (ख) धमतरी जिले में प्रचलित अन्त्योदय, प्राथमिकता, निराश्रित एवं निःशक्तजन राशनकार्डों की 03 वर्षों की विकासखण्डवार जानकारी संलग्न प्रपत्र "स" अनुसार है। जी हां, प्रचलित राशनकार्डों को राशन सामग्री प्रदाय किया जा रहा है। जी हां, उपरोक्त प्रचलित राशनकार्डों में से प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पी.एम.जी.के.ए.वाई.) के अन्तर्गत प्रचलित 1,58,250 प्राथमिकता राशनकार्डों को योजनान्तर्गत निर्धारित मासिक पात्रता 05 किलो खाद्यान्न प्रति सदस्य प्रति माह तथा 29,421 अन्त्योदय राशनकार्डों को 35 किलो खाद्यान्न प्रति कार्ड प्रति माह का लाभ निःशुल्क दिया जा रहा है। विकासखण्डवार 03 वर्ष के खाद्यान्न वितरण की वर्षवार जानकारी संलग्न प्रपत्र "द"⁴ अनुसार है।

श्रीमती अम्बिका मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री से पूछना चाहती हूँ कि गरीबी रेखा एवं अन्त्योदय कार्डधारी में से राज्य योजना के हितग्राही एवं केन्द्रीय योजना के हितग्राही कार्ड कितने-कितने हैं ? दूसरा प्रश्न है कि इसमें से मोदी जी की घोषणा अनुसार देश में 25 करोड़ परिवार गरीबी रेखा से ऊपर आ चुके हैं, उसमें हमारे धमतरी जिले के कितने लोग शामिल हैं ?

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय विधायक जी के द्वारा धमतरी जिले के सम्बन्ध में प्रश्न किया गया है। आप 3 साल का पूछी हैं। इसमें विकासखण्डवार जानकारी है। धमतरी जिले में प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पी.एम.जी.के.ए.वाई.) प्राथमिकता वाले एवं अन्त्योदय की संख्या 14,574 है, यह केन्द्र का है और राज्य का 11,603 है। यह प्रापर धमतरी विकासखण्ड का

⁴ परिशिष्ट "चार"

है। इसमें कुरुद भी आता है। कुरुद की संख्या 12,955 है, यह केन्द्र से मिलता है और राज्य से 11,713 मिलता है। इसमें मगरलोड भी है, यहां भी केन्द्र का 6,543 और राज्य का 6,448 है। इसमें नगरी भी आता है।

श्रीमती अम्बिका मरकाम :- माननीय मंत्री जी, आपने जानकारी तो दी है, लेकिन मैं यह पूछ रही हूं कि धमतरी जिले के कितने लोग शामिल हैं ? आपने जानकारी दे दी है। माननीय मंत्री जी, मैं एक प्रश्न और पूछना चाह रही हूं कि उचित मूल्य की दुकानों से राशनकार्डधारियों को शक्कर एवं राशन समय सीमा में नहीं मिल पाता है। तो इसका क्या कारण है ? कौन दोषी है ? आप जांच की घोषणा करेंगे क्या ?

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चावल तो समय सीमा में पहुंच रहा है। शक्कर मिलने में कुछ विलंब हुआ है। शक्कर उपलब्ध नहीं था, इसलिए विलंब हुआ है। लेकिन अब कन्टीन्यू हो गया है। शक्कर भी मिलना शुरू हो गया है।

श्रीमती अम्बिका मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी, उसके पहले शिकायत मिली थी कि राशन एक महीने बाद आता था। पिछले महीने का नहीं आया तो इस महीने आ रहा है। इस महीने का नहीं आया तो अगले महीने आ रहा है। आपकी इस तरह की व्यवस्था थी। आप उस व्यवस्था में सुधार करेंगे क्या ?

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, निश्चित रूप से व्यवस्था में सुधार करेंगे। जो चावल है, वह तो कन्टीन्यू जा रहा है। अभी 3 महीने का चावल जाना है। इस तरह से चावल कन्टीन्यू पहुंच रहा है। शक्कर में थोड़ा सा विलंब हुआ है। लेकिन अब शक्कर भी जाना शुरू हो गया है, वहां पहुंचना और मिलना शुरू हो गया है।

श्रीमती अम्बिका मरकाम :- माननीय मंत्री जी, एक और प्रश्न है। जो उचित मूल्य की दुकानें संचालित हो रही हैं, उसमें 7 दुकानों को निरस्त किया गया है, यह आपने जानकारी दी है। लेकिन क्यों निरस्त किया गया ? जो उचित मूल्य की दुकानें हैं, वह कई जगहों पर भवन के अभाव में दुकानें कहीं रंगमंच में लग रही हैं, कहीं किराये से लग रही हैं, कहीं किसी के घर पर लग रहा है। तो आप उसकी व्यवस्था बनायेंगे क्या ? आप भवनों का निर्माण करायेंगे क्या ? आप कब तक निर्माण करायेंगे, यह मैं आपसे पूछना चाहती हूं।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पी.डी.एस. की दुकानें निश्चित रूप से अतिआवश्यक है। पी.डी.एस. की दुकानों के लिए कुछ अन्य मदों से स्वीकृतियां मिल रही हैं। दूसरा, आपका जो प्रश्न है, उसमें मैं कहना चाहूंगा कि धमतरी जिले में वर्ष 2023-24 में कुल 72 नये उचित मूल्य की दुकानें स्वीकृत हुई हैं। वर्षवार जानकारी निम्नानुसार है :- वर्ष 2023-24 में 8 दुकानें, 2024-

25 में 46 दुकानें, 2025-26 में 15 दुकानें और वर्ष 2026-27 में 3 दुकानें स्वीकृत हुई हैं। इस तरह से 72 दुकानें ..।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्नकाल समाप्त। मंत्री जी बैठ जाईये।

(प्रश्नकाल समाप्त)

समय :

12.00 बजे

पत्रों का पटल पर रखा जाना

दिनांक 31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष हेतु भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का स्थानीय निकायों पर प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़ शासन, वर्ष 2026 का प्रतिवेदन संख्या-07 (स्थानीय निकाय)

वित्त मंत्री (श्री ओ.पी.चौधरी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं भारत के संविधान के अनुच्छेद-151 के खण्ड (2) की अपेक्षानुसार दिनांक 31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष हेतु भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का स्थानीय निकायों पर प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़ शासन, वर्ष 2026 का प्रतिवेदन संख्या-07 (स्थानीय निकाय) पटल पर रखता हूँ।

समय :

12.00 बजे

प्रतिवेदनों की प्रस्तुति

(1) पटल पर रखे गये पत्रों का परीक्षण करने संबंधी समिति का तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम प्रतिवेदन

सभापति महोदय (श्रीमती गोमती साय) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पटल पर रखे गये पत्रों का परीक्षण करने संबंधी समिति का तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम प्रतिवेदन प्रस्तुत करती हूँ।

(2) याचिका समिति का षष्ठम् एवं सप्तम् प्रतिवेदन

सभापति महोदय (श्री धर्मजीत सिंह) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं याचिका समिति का षष्ठम् एवं सप्तम् प्रतिवेदन प्रस्तुत करता हूँ।

(3) शासकीय आश्वासनों संबंधी समिति का अष्टम्, नवम् एवं दशम् प्रतिवेदन

सभापति महोदय (श्री भईयालाल राजवाड़े) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं शासकीय आश्वासनों संबंधी समिति का अष्टम्, नवम् एवं दशम् प्रतिवेदन प्रस्तुत करता हूँ।

पृच्छा

श्री धर्मजीत सिंह (तखतपुर) :- अध्यक्ष जी, 1 मिनट, आपकी आज्ञा हो तो एक समस्या है।

अध्यक्ष महोदय :- शून्यकाल।

श्री धर्मजीत सिंह :- जी। शून्यकाल।

अध्यक्ष महोदय :- आप शून्यकाल में बोल सकते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- हां, वही बोलना चाह रहा हूं। अध्यक्ष महोदय, तखतपुर विधान सभा के ग्राम घानापारा, ग्राम अजयपुर, ग्राम लारीपारा, ग्राम कलमीटार, ग्राम चकरकुंडा। ये गांव पिछड़ा वर्ग और आदिवासी बाहुल्य गांव हैं, लेकिन ये गांव राजस्व ग्राम अभी तक के नहीं बन पाए हैं। उसके लिए गांव वाले लगातार आवेदन दे रहे हैं, पूरी कोशिश करते हैं। अध्यक्ष महोदय, तो, मैं समझता हूं कि जब तक कि ये राजस्व ग्राम नहीं बनेगा, इस गांव का विकास भी नहीं होगा। उनको जो सरकार की सुविधा है, वह भी नहीं मिलेगी। उनको खेती-किसानी में मिलने वाले लाभ भी नहीं मिलेंगे और इस गांव में अगर कोई काम भी भेजो तो इस गांव के नाम से नहीं जाता, वह ग्राम पंचायत का आश्रित पाराटोला करके जाता है। तो ये राजस्व ग्राम बनाना बहुत जरूरी है और राजस्व ग्राम बनाने के लिए कोई बहुत ज्यादा सरकार के ऊपर बोझा भी नहीं आना है। तो, कृपा करके विभाग के मंत्री जी से भी आग्रह है और आपके माध्यम से शासन से आग्रह है कि इन पांचों गांवों को राजस्व ग्राम बनाने के लिए त्वरित निर्देश जारी किए जाएं और वहां राजस्व ग्राम बना करके लोगों को सुविधा दी जाए।

अध्यक्ष महोदय :- धर्मजीत जी, आप दोनों धरम हैं। जीरो ऑवर।

श्री रिकेश सेन (वैशाली नगर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एशिया का सबसे बड़ा स्टील प्लांट भिलाई स्टील प्लांट है। विगत 40 वर्षों से दस्तावेज के साथ, प्रमाणित के साथ राष्ट्रीय संपत्ति का नुकसान हो रहा है। 10,000 करोड़ रुपये से अधिक का लोहा चोरी भिलाई स्टील प्लांट से हुआ है। मैं चाहता हूं कि इसमें राज्य सरकार संज्ञान ले और इसे केंद्रीय जांच एजेंसियों को सौंपे, जिससे कहीं न कहीं जो लोहा चोर है, वह जेल के गिरफ्त में जाए और राष्ट्रीय संपत्ति को नुकसान होने से बचे।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है ।

श्री ब्यास कश्यप (जांजगीर-चांपा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जांजगीर-चांपा जिले के नवागढ़ विकासखंड में ग्राम पंचायत धुरकोट और ग्राम मरकाडीह की लगभग 1000 की आबादी हो गई है। मरकाडीह में विगत 20 वर्षों से लग हुए हैं कि अलग से हमें राजस्व गांव बनाया जाए। आग्रह है कि छत्तीसगढ़ सरकार के पास ये प्रकरण लंबित है। ग्राम पंचायत मरकाडीह नवीन राजस्व घोषित किया जाए।

अध्यक्ष महोदय :- आप बोलिए ।

श्री अटल श्रीवास्तव (कोटा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले करीब 15-20 दिनों से लोरमी के जंगलों में, कोटा के जंगलों में फर्जी वन अधिकार पट्टे बांटे जा रहे हैं और 30 हजार रुपये लेकर ये पट्टे बांटे जा रहे हैं, ए.आई. जनरेटेड पट्टे हैं। वहां के डी.एफ.ओ. ने भी अपना स्टेटमेंट दिया है कि फर्जी हैं और लगातार कम से कम 400 से 500 आदिवासियों को पैसे लेकर फर्जी पट्टे बांटे जा रहे हैं।

इसकी जांच वन मंत्री जी कराइए। लगातार डी.एफ.ओ. का स्टेटमेंट भी आ चुका है। राजस्व अधिकारी कौन-कौन ..।

अध्यक्ष महोदय :- शून्यकाल इतना ही होता है। अब आप बैठ जाइए।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल (डोंगरगढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने पिछले सत्र में भी कहा था कि मेरे विधानसभा के गांव ठेलकाडीह में एक ही भवन में स्कूल और कॉलेज दोनों का संचालन हो रहा है और वहीं जो थाना है, साहू भवन में चलाया जा रहा है, जो कि तीन साल से इसकी मांग है और बार-बार इस बात को हम यहां पर रख रहे हैं, लेकिन उस पर विशेष ध्यान देकर अगर करवा दें तो अच्छा ही हो जाएगा। वहां की विशेष मांग है।

अध्यक्ष महोदय :- सुशांत जी।

श्री सुशांत शुक्ला (बेलतरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बिलासपुर में अतिवृष्टि के कारण लगभग 100 बस्तियां जलमग्न हो गई हैं और बहुत से परिवार डूब की चपेट में आ गए हैं। उनकी संपत्तियों का भी भारी नुकसान हुआ है। इसलिए आपके माध्यम से प्रशासन से आग्रह है कि वहाँ तत्काल मुआवजे के साथ-साथ भोजन और अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने का कष्ट करें।

श्री अनुज शर्मा (धरसीवा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कुरुद स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का गाँव है और वहाँ का रेलवे स्टेशन सिलियारी है। अब वहाँ की आबादी इतनी अधिक हो गई है कि दोनों को पृथक-पृथक ग्राम पंचायत बनाया जा सकता है। मेरा माननीय राजस्व मंत्री जी से आग्रह है कि कृपया इन दोनों को अलग-अलग ग्राम पंचायत बनाया जाये।

श्री लालजीत सिंह राठिया (धरमजयगढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे जिले में पोस्ट मैट्रिक और प्री मैट्रिक में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या बढ़ रही है और वे बाहर हॉस्टल में रहना चाहते हैं। चूँकि हॉस्टल की सीटें फुल हो गई हैं, इसलिए वहाँ अतिरिक्त सीटें बढ़ाने की व्यवस्था की जाए।

अध्यक्ष महोदय :- साहू जी।

श्री दलेश्वर साहू (डोंगरगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजनांदगांव जिले के डोंगरगढ़ विकासखंड के बोरतलाव गाँव में फोर्थ लाइन के निर्माण के लिए रेत का अवैध उत्खनन किया गया था, जिसके कारण वहाँ एक बड़े गड्ढे का निर्माण हो गया जो तालाब जैसा बन गया है। कल वहाँ डूबने से 3 बच्चों की मृत्यु हो गई। मैं इसकी शिकायत की है। मैं चाहता हूँ कि इस मामले की उचित जाँच कराई जाए।

अध्यक्ष महोदय :- मुख्यमंत्री जी सुन रहे हैं, आप चिंता मत करिये।

श्री कुंवर सिंह निषाद (गुण्डरदेही) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नगर अर्जुन्दा में पोस्ट मैट्रिक छात्रावास में बालकों और बालिकाओं के लिए पर्याप्त सीट नहीं है। बालिकाओं के लिए मात्र 50 सीटें हैं, जबकि उद्यानिकी कॉलेज और बड़े महाविद्यालयों के कारण छात्राओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। मैंने

पहले भी निवेदन किया था और पुनः आपके माध्यम से आग्रह कर रहा हूँ कि छात्राओं के लिए सीटों की संख्या 50 से बढ़ाकर 100 की जाए और ओ.बी.सी. छात्रावास की सीटों में भी वृद्धि की जाए।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है।

श्रीमती अंबिका मरकाम (सिहावा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नगरी विकासखंड में कन्या शाला है, जहाँ बच्चों के बैठने की उचित जगह नहीं है। यह विद्यालय भवन अत्यंत जर्जर हो चुका है, इसलिए वहाँ नया भवन निर्माण कराया जाना आवश्यक है। साथ ही वहाँ हायर सेकेंडरी स्कूल की भी सुविधा नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। एक मिनट, राघवेन्द्र जी बैठ जाइए। आप बोलिये।

श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी (भानुप्रतापपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चाहे मेरे कांकेर जिले के अंतागढ़ विधान सभा हो, चाहे भानुप्रतापपुर विधान सभा हो, वहाँ पर बालिकाओं के लिए जो आश्रम हैं, उनमें केवल 50 सीटें ही हैं। बहुत सी बालिकाएं सीट न मिल पाने के कारण पढ़ाई छोड़ देती हैं। मेरी मांग है कि इन आश्रमों में सीटों की संख्या बढ़ाई जाए ताकि हमारी बालिकाएं शिक्षा प्राप्त कर सकें।

अध्यक्ष महोदय :- राघवेन्द्र जी।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह (अकलतरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ग्रेस ग्रीन रेजिडेंशियल सोसाइटी में एक माली की विद्युत करंट लगने से मृत्यु हो गई थी। उसकी मृत्यु के बाद 6 महीने तक एफ.आई.आर. दर्ज नहीं की गई थी। जब परिजनों ने प्रेस-कॉन्फ्रेंस की, तब जाकर एफ.आई.आर. दर्ज हुई है, लेकिन अब तक जिम्मेदार व्यक्तियों के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है।

श्री भोलाराम साहू (खुज्जी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे विधान सभा क्षेत्र खुज्जी के ग्राम पंचायत कुमारदा को नगर पंचायत का दर्जा दिए जाने की माँग स्वयं ग्रामीणों और पंचायत द्वारा की गई है। साथ ही यह मुख्य मार्ग पर स्थित है, इसलिए वहाँ एक रेस्ट हाउस का निर्माण भी कराया जाए।

अध्यक्ष महोदय :- भावना जी।

श्रीमती भावना बोहरा (पण्डरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे विकासखंड लोहारा में कई वर्षों से अवैध रूप से क्रशर और खनन का कार्य चल रहा है। वहाँ खनन के कारण इतने गहरे गड्ढे बन गए हैं कि हाल ही में एक व्यक्ति की उसमें गिरने से मृत्यु हो गई है। मेरा निवेदन है कि नियमों के अनुसार वहाँ उचित कार्रवाई की जाए।

श्री दीपेश साहू (बेमेतरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बेमेतरा पी.जी. कॉलेज में बी.ए. इंग्लिश लिटरेचर शुरू करने की मांग लंबे समय से है। संस्था पिछले 10 वर्षों से इसकी मांग कर रही है। वहाँ एम.ए. इंग्लिश तो उपलब्ध है, लेकिन बी.ए. इंग्लिश लिटरेचर के लिए मैं पिछले ढाई वर्षों से प्रयास कर रहा हूँ, जो अब तक नहीं खुल पाया है। इसके लिए आपसे निवेदन करता हूँ।

श्री विनायक गोयल (चित्रकोट) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरी विधान सभा क्षेत्र में पिछले वर्ष बाढ़ और आपदा आई थी..।

अध्यक्ष महोदय :- यह इस सत्र का आखिरी दिन है और शून्यकाल में अधिक से अधिक लोगों को बोलने का अवसर दूँगा, क्योंकि इसके बाद आप लोग इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा करेंगे, जिसमें सब कुछ समाहित हो जाएगा। आप लोगों को बोलने का अवसर है, इसलिए अभी आप अपने क्षेत्र की छोटी-छोटी समस्याओं को संक्षिप्त में रखें, इसके लिए मैं आप लोगों को अवसर दे रहा हूँ, कृपया धैर्य रखें।

श्री विनायक गोयल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे विधान सभा क्षेत्र में पिछले वर्ष भीषण आपदा आई थी, जिसके कारण अभी तक पुल-पुलिया टूटी पड़ी है। न तो उनकी मरम्मत हुई है और न ही इसके लिए कोई नया बजट आया है। पुल टूटने के कारण बच्चों को स्कूल जाने में बहुत तकलीफ हो रही है। अतः इस पर तत्काल ध्यान दिया जाए।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है।

श्रीमती रायमुनी भगत (जशपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे विधान सभा क्षेत्र में चाम्पा से फूलझर पहुँच मार्ग पर बारिश के कारण पुलिया बह गई है। उसे त्वरित रूप से बनवाने की कृपा करें। दूसरी बात ग्राम पंचायत छिरोडी और दुरजुडी के बीच की दूरी 20 किलोमीटर है, अतः दोनों ग्राम पंचायतों को पृथक करने की कृपा करें।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। साहू जी।

श्री रोहित साहू (राजिम) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजिम सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र है, यह गरियाबंद जिले में आता है वहाँ पर ट्रामा सेंटर की जरूरत है। वहाँ कोई घटना घटती है और एक्सीडेंटल केस होता है तो वहाँ पर ट्रामा सेंटर की स्वीकृति हो, ताकि जो रायपुर रिफर करना पड़ता है, वह सुविधा राजिम को मिल सके। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह आपसे आग्रह है ।

श्री विक्रम मण्डावी (बीजापुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बीजापुर जिले से भोपालपटनम तक विद्युत लाईन टॉवर की आवश्यकता है, वह बहुत बड़ा क्षेत्र है, इस पूरे ब्लॉक मुख्यालय में बिजली गुल होने से बहुत तकलीफ होती है । कृपया बीजापुर से भोपालपटनम तक विद्युत लाईन टॉवर की स्वीकृति प्रदान करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- अब मंत्रिमंडल के अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा होगी । डॉ. चरणदास महंत, नेता प्रतिपक्ष ।

समय

12.11 बजे

मंत्रिमंडल के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा

नेता प्रतिपक्ष (डॉ.चरणदास महंत) :- अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि यह सदन मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय एवं उनके मंत्रिपरिषद के विरुद्ध अविश्वास व्यक्त करता है ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ कि यह सदन मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय एवं उनके मंत्रिपरिषद के विरुद्ध अविश्वास व्यक्त करता है ।

अध्यक्ष महोदय :- आरोप पत्र प्रस्तुत करने की अनुमति मांग लीजिए ।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ.चरणदास महंत) :- अध्यक्ष महोदय, आपके आदेश पर मैं 136 बिन्दुओं का आरोप पत्र प्रस्तुत करता हूँ ।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है । मंत्रिमंडल के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा प्रारंभ होने के पहले मैं आप सभी से विनम्रतापूर्वक यह निवेदन करना चाहता हूँ कि स्वस्थ लोकतंत्र का यह एक ऐसा विशिष्ट उदाहरण है कि विश्वास प्रस्ताव द्वारा सरकार की कमियाँ और चूकों पर लोकतंत्र के पवित्र मंदिर में प्रतिपक्ष को डिबेट करने का अवसर मिला है । लोकतंत्र के संसदीय प्रक्रिया की उत्कृष्ट और सराहनीय परम्परा है, जिसे जीवन्त रखना आपकी और हमारी जवाबदारी है । कबीरदास जी की एक दोहे को मैं उद्धृत करता हूँ- निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटी छबाय, बिन पानी साबुन बिना, निर्मल होय, सुभाय । चूँकि आप अविश्वास प्रस्ताव प्रारंभ करने वाले हैं, आपके लिये भी यह अवसर है कि आप अपनी बात, अपने विचार, अविश्वास प्रस्ताव में रखें और मेरा आग्रह है कि व्यक्तिगत और अनावश्यक आरोप से बचें । स्वस्थ संसदीय परम्पराओं की शालीनताओं के साथ जितनी बात आपको रखना है, आपको पूरा अवसर दिया जायेगा । आप अपनी बात समय को ध्यान रखते हुये बोलें क्योंकि अधिकांश सदस्यों ने अपने नाम भेज दिये हैं । मैं अब तय कैसे कर पाऊँगा, यह नेता प्रतिपक्ष जी और मुख्यमंत्री जी को करना है, मैं नाम कैसे कम कर सकता हूँ, मगर समय की मर्यादा है और उस मर्यादा को आप संक्षिप्त तौर पर रखें । आशा है कि आप इन सब बातों का ध्यान रखेंगे । माननीय नेता प्रतिपक्ष, डॉ.चरणदास महंत जी । (मेजों की थपथपाहट)

नेता प्रतिपक्ष (डॉ.चरणदास महंत) :- अध्यक्ष महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री अजय चन्द्राकर :- नेता प्रतिपक्ष जी, एक सेकण्ड । मैं आपको टोक नहीं रहा हूँ। अध्यक्ष महोदय...।

श्री रामकुमार यादव :- टोकत नहीं हस त काय ए ?

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ बनने के बाद । आप हर बात में मत खड़ा हो । सुन लो ।

श्री रामकुमार यादव :- नेताजी, शुरू नहीं होए हे अऊ खड़ा होंगे । का बात ए।

श्री अजय चन्द्राकर :- इसीलिए तो सुन लो, बोल रहा हूँ । सीखोगे । माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि राज्य बनने की परम्पराओं का उल्लेख करूँ तो या पहले भी उल्लेख करूँ तो अविश्वास प्रस्ताव में यह पहली बार हो रहा है कि माननीय नेता प्रतिपक्ष जी उसको शुरू कर रहे हैं और उसका संदेश यह जाता है कि उनको अपने बाकी सदस्यों के ऊपर भरोसा नहीं है, इसलिये वह सारा विषय खुद रखना चाहते हैं। (शेम-शेम की आवाज)

अध्यक्ष महोदय :- नेता जी, बात शुरू करेंगे ।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, इसको विलोपित करना चाहिये । न कोई व्यवस्था का प्रश्न था और न कुछ था । आप इस बात को अपने भाषण में बोल सकते थे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने आपकी तरह अनुमति ली है ।

श्री भूपेश बघेल :- मैं वही अनुमति मांग रहा हूँ ना । यह जो बोलें हैं उसका कोई अर्थ नहीं है, इसे विलोपित करिये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- विलोपित करने वाली आपत्तिजनक चीजें मैंने बोली नहीं है । 25 साल की परम्परा में पहली बार नेता प्रतिपक्ष बात शुरू कर रहे हैं और इसलिये शुरू कर रहे हैं कि बाकी के ऊपर भरोसा नहीं है, इतना ही कहा है ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं देख लूँगा । आप शुरू करें ।

श्री भूपेश बघेल :- हमारे पूरे सदस्य हाथ उठाकर बता देते हैं कि हमें नेता प्रतिपक्ष जी के ऊपर विश्वास है । (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- यह और कॉमेडी हो गई और बड़ी कामेडी हो गई कि नेताजी विश्वास मत प्राप्त कर रहे हैं । (हंसी)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब इस विधान सभा में नेता प्रतिपक्ष की ये स्थिति आ गई कि उनको प्रमाणित करने के लिए हाथ उठाना पड़ रहा है कि आपके साथ हैं। (हंसी)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- नहीं, आपने जो आरोप लगाया उसे प्रमाणित भी तो करना पड़ेगा।

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर एको झन होही तो हाथ खड़ा करके बताव चलो।

श्री देवेन्द्र यादव :- इतना घबराए हुए हैं कि आप लोग नेता प्रतिपक्ष जी की बातें नहीं सुनना चाहते।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- पहले ही डर गए?

श्री अमर अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वैसे हाथ नहीं उठा रहे थे, भूपेश बघेल जी के कहने के बाद हाथ उठा रहे थे, आप उनकी स्थिति को समझ लीजिए। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- चलिए नेताजी शुरू करिए। नेता जी की बात है, आप गंभीरतापूर्वक सुनिए, नेता जी प्रारंभ कर रहे हैं। आप सबसे आग्रह है कि गंभीरता से सारी बातें सुनें। (मेजों की थपथपाहट)

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- चंद्राकर जी, यह अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत करने से पहले, मैंने हमारे पूर्व मुख्यमंत्री से पूछा था कि आप शुरू करेंगे कि मैं शुरू करूं? उन्होंने कहा कि आप शुरू करिए, मैं बीच में बोलूंगा और इसी तरह सब साथियों ने...

श्री अजय चंद्राकर :- अच्छा है, आप पूछ-पूछ कर काम करते हैं।

वित्त मंत्री (श्री ओ.पी.चौधरी) :- आप उनको पूछकर ही करते हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- ढाई साल में आपका स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं बन पाया।

श्री देवेन्द्र यादव :- आदरणीय चंद्राकर जी, इतनी बातचीत आज के मंत्रिमंडल में हो जाती तो ये हाल नहीं होता। आपके यहां दरकिनार करके सब लोग साईड कर दिए गए। हमारे यहां बातचीत होती है। (व्यवधान)

श्री अटल श्रीवास्तव :- आपको तो कोई पूछ भी नहीं रहा है। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आज अगर ऐसा होता तो आप मंत्रिमंडल में रहते। आपको अलग कर दिए हैं। (व्यवधान)

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- आप गुजरात से पूछकर काम कर रहे हैं।

डॉ. चरणदास महंत :- हमारे यहां पूर्ण सामंजस्य है। हम लोग मिलजुलकर काम करते हैं, लोकतंत्र पर विश्वास करते हैं।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री केदार कश्यप) :- पूछ पूछ कर काम करते हैं।

डॉ. चरणदास महंत :- जी, पूछने में कोई हर्ज नहीं है। चूंकि माननीय संदेश दे ही चुके हैं। मुख्यमंत्री जी, मैं आपको नमस्ते करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज 17 जुलाई, 2026 है, इस सरकार ने 13 दिसंबर 2023 को बड़े-बड़े वादे तथा गारंटियों के साथ या कहूं कि गारंटियों के रथ पर सवार होकर यहां छत्तीसगढ़ में सरकार में बैठी है। विष्णुदेव साय जी इस डबल इंजन सरकार के प्रदेश के मुख्यमंत्री बने हैं और उनको मुख्यमंत्री बने हुए, उनकी सरकार को चलते हुए 135 सप्ताह हो गए हैं और यह जो अभी शुरू हुआ है, वह 136 वां सप्ताह है। मैंने हर सप्ताह के हिसाब से 136 बिंदु का यहां अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। मैंने, मेरे साथियों ने, हम सब ने मिलजुलकर देखा और बारीकियों से अध्ययन किया। माननीय चंद्राकर जी मुझे बताते हुए अपार पीड़ा है कि सरकार का हर हफ्ता हमारे अन्नदाताओं, हमारे आदिवासी भाइयों, हमारे युवाओं, हमारे माताओं और बहनों के खिलाफ रचे गए एक नए षड्यंत्र का हफ्ता रहा है। अध्यक्ष महोदय, मैं इस पवित्र सदन में कोई हवा-हवाई बात नहीं करूंगा। आज मैं इस सरकार के 136 वें हफ्ते के जवाब में 136 ठोस, अकाट्य और प्रमाणित आरोप लेकर खड़ा हूं। हर हफ्ते का एक पाप, हर हफ्ते का एक धोखा, हर हफ्ते की एक नाकामी, आज सरकार को हमारे एक-एक आरोप का

जवाब देना होगा, क्योंकि यह महज अविश्वास नहीं है, यह हमारे छत्तीसगढ़ के 3 करोड़ छत्तीसगढ़वासियों के छले गए विश्वास का दस्तावेज है और यह मेरा ही आरोप नहीं है, हमारे आम जनता का आरोप है, यह मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, मुझे पूरा विश्वास है, आपको ज्ञान ही होगा कि भारतीय लोकतंत्र में एक अत्यंत गरिमामय परंपरा का निर्वहन कर रहा है। वर्ष 1963 में जब आचार्य जे. बी. कृपलानी ने स्वतंत्र भारत के इतिहास का प्रथम अविश्वास प्रस्ताव पंडित जवाहरलाल नेहरू जी की सरकार के विरुद्ध लोकसभा में प्रस्तुत किया गया था। तब स्वयं नेहरू जी ने उस बहस का स्वागत करते हुए यह भाव व्यक्त किया था कि लोकतंत्र में यदि समय-समय पर सरकार की ऐसी परीक्षा होती रहे तो यह एक स्वस्थ परंपरा है। जो आपने अभी व्यक्त किया। यह ऐतिहासिक दृष्टांत आज भी हमें यह सिखाता है कि अविश्वास प्रस्ताव कोई राजनीतिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि सरकार की समग्र विफलता को तथ्यों और कानून के तराजू पर तौलने का एक संवैधानिक अवसर है।

समय :

12.20 बजे

(सभापति महोदय (श्री धर्मजीत सिंह) पीठासीन हुए)

श्री अजय चंद्राकर :- नेता प्रतिपक्ष जी, जे.पी. कृपलानी साहब ने जब रखा तो उस समय लोक सभा में कोई नेता प्रतिपक्ष नहीं था। आप कम से कम नेता प्रतिपक्ष जैसे बोलिये। उन्होंने तो ऐसे ही प्रस्तुत कर दिया था।

डॉ. चरणदास महंत :- मगर जवाहर लाल नेहरू जी प्रधानमंत्री थे, यह तो आप मानेंगे न या वे भी नहीं थे? जब सन् 1979 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई को यह आभास हुआ कि उनकी सरकार के पास सदन के प्रश्नों का समुचित उत्तर शेष नहीं रहा तो उन्होंने मतदान की प्रतीक्षा किये बगैर त्यागपत्र देना उचित समझा। सभापति महोदय, आप बीच में आ गये, कब आये, यह मैं नहीं समझ पाया।

सभापति महोदय :- मैं सुन रहा हूं।

डॉ. चरणदास महंत :- माननीय सभापति महोदय, यही वह परंपरा है, जिसकी आज इस सदन में हम अपेक्षा करते हैं। चंद्राकर जी, यहां तक ठीक है। आदरणीय माननीय मुख्यमंत्री जी, आप जानते ही होंगे। मेरे ख्याल से संत पवन दीवान जी, हमारे लोक सभा के सदस्य, हमारे विधान सभा के सदस्य, संत और एक महापुरुष रहे हैं, जिनसे आप भी अच्छी तरीके से परिचित होंगे। आदरणीय अध्यक्ष महोदय ने तो कबीर साहब की परंपरा सुना दी-निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छाया। उसी बात को दूसरे अंदाज में मैं कहना चाहूंगा कि यह हम सबके लिए है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को नहीं सुनाना चाहता, यह हम सबको सुनना चाहिए, जो छत्तीसगढ़ के वासी हैं और इसके अर्थ पर ही मैंने इस पूरे अविश्वास के प्रस्ताव को जमाने की कोशिश की है। उनकी एक कविता है -

चुप-चुप रहकर, सबकुछ सहकर, सबका मान बढ़ाते हैं,

बार-बार अपमानित होकर, गैरों का गुण गाते हैं,

मेहमानों को खूब खिलाकर, भूखे ही सो जाते हैं,

छत्तीसगढ़िया इसीलिए तो परबुधिया कहलाते हैं। (मेजों की थपथपाहट)

वित्त मंत्री (श्री ओ.पी. चौधरी) :- माननीय सभापति महोदय, यह घोर आपत्तिजनक है। यह हमारे छत्तीसगढ़ के लिए ऐसी भावना रखते हैं।

श्री रामकुमार यादव :- ओमा का आपत्ति हे? परदेसियों मन ला यहां आगे बढ़ाहूं ता नहीं कहिबो?

डॉ. चरणदास महंत :- ओ.पी. जी, आपने क्या बोला?

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय, आप 5 साल तक ऊपर थे, तब यह छत्तीसगढ़िया, फिर उन्होंने परदेसिया बोला। मैंने माननीय भूपेश बघेल जी को विधान सभा में 10 बार बोला होगा कि आप यहां के लिए कोई डोमिसाइल पॉलिसी बनाइए, उसके बाद किसी को देसी-विदेशी बोलिए।

डॉ. चरणदास महंत :- आप दो लाइन सुन लीजिये।

श्री अटल श्रीवास्तव :- परबुधिया की बात हो रही है।

श्री अजय चंद्राकर :- आपके सदस्य परदेसिया करके शुरू कर रहे हैं और आप परबुधिया करके शुरू कर रहे हैं और आप कह रहे हैं कि हम सुनें।

डॉ. चरणदास महंत :- अच्छा, मत सुनिए।

श्री मोतीलाल साहू :- सभापति महोदय, यह छत्तीसगढ़वासियों का अपमान है। इस शब्द को वापस लिया जाए।

डॉ. चरणदास महंत :- क्या संत पवन दीवान की कविता छत्तीसगढ़ का अपमान है? वाह रे छत्तीसगढ़िया।

श्री अजय चंद्राकर :- आप कहीं भी किसी की कविता कोट करें, ऐसा थोड़ा होता है?

श्रीमती भावना बोहरा :- आपके पीछे वाले सदस्य जो बोल रहे हैं, वह छत्तीसगढ़ का अपमान है। आपके पीछे जो सदस्य बैठे हैं।

सभापति महोदय :- वह कविता कोट कर रहे हैं। आप बैठिये।

डॉ. चरणदास महंत :- क्यों, क्या यह अच्छी कविता नहीं है?

सभापति महोदय :- आप अपनी रिप्लाइ में बोल लीजिएगा, उनको अपनी बात कहने दीजिए।

डॉ. चरणदास महंत :- सभापति महोदय, क्या यह अच्छी कविता नहीं है?

सभापति महोदय :- आप बोलिए।

डॉ. चरणदास महंत :- मैंने तो दो लाइनें बचायी थीं। परबुधिया यानी कोई दुश्मन थोड़ी हो गया, भाई? दूसरे की बुद्धि पर चलने वाला।

श्री अजय चन्द्राकर :- जैसे अभी आपने कहा पूछकर लाया हूं, उसको परबुधिया बोलते हैं। (हंसी)
 डॉ. चरणदास महंत :- मैं भी छत्तीसगढ़िया हूं तो परबुधिया ही हूं। उसमें कोई दिक्कत नहीं है।
 मैं हम सब की बात कर रहा हूं, मैं अकेले मुख्यमंत्री जी की, मेरी, भूपेश जी की, आपकी थोड़ी बात कर रहा हूं। छत्तीसगढ़िया समाज की बात हो रही है।

सभापति महोदय :- आदरणीय, आप बोलिये ना।

डॉ. चरणदास महंत :- साहब, ये कहां बोलने दे रहे हैं।

सभापति महोदय :- आप बोलिये न, मैंने उन्हें मना कर दिया है।

डॉ. चरणदास महंत :- यह हर बात में ऊंगली करते हैं, डिस्टर्ब करते हैं।

सभापति महोदय :- आप लोग नेता प्रतिपक्ष जी का भाषण शांति से सुनिये।

डॉ. चरणदास महंत :- सभापति महोदय, मैं पहली बार तो प्रस्तुत कर रहा हूं। फिर बोल देता हूं
 “छत्तीसगढ़िया इसीलिए तो परबुधिया कहलाते हैं,

छत्तीसगढ़ में सब कुछ है, मगर कमी है स्वाभीमान की,
 मुझसे सही नहीं जाती है ऐसी चुप्पी वर्तमान की।”

भैया, कहां पर गलत है ? कहां पर गलत हे गा, बता देवव ?

श्री ओ.पी. चौधरी :- छत्तीसगढ़ परबुधिया नहीं, सबले बिढ़िया कहलाते हैं, आप यह जोड़ लीजिये। (मेजों की थपथपाहट)

डॉ. चरणदास महंत :- अच्छा, छत्तीसगढ़िया परबुधिया भी कहलाते हैं और सबसे बढ़िया भी कहलाते हैं। चौधरी साहब, आप कब पैदा हुए मुझे तो पता लग जायेगा। मगर छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया, यह नारा मेरे पिता जी ने दिया था, जब वे मंत्री थे। (मेजों की थपथपाहट)

श्री ओ.पी. चौधरी :- और आपने उसको छोड़ दिया। आप उसको परबुधिया ले आये। आदरणीय बिसाहु दास महंत जी को धन्यवाद।

डॉ. चरणदास महंत :- नहीं, नहीं। छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया। लेकिन यह कविता तो पवन दीवान जी की है।

सभापति महोदय :- बैठिये, उनको बोलने दीजिये। उनका पहला भाषण है, उनको बोलने दीजिये।

डॉ. चरणदास महंत :- पवन दीवान की कविता आपको अच्छी लगनी चाहिए मगर क्यों नहीं लग रही है, यह समझ में नहीं आ रहा है।

श्री अटल श्रीवास्तव :- उनको गुजराती में बताइये ना ?

डॉ. चरणदास महंत :- अच्छा, मुझे गुजराती नहीं आती।

श्रीमती भावना बोहरा :- हिड़मा की भाषा आती होगी तो उसमें बता दीजिये। हिड़मा की भाषा तो आती है ना ?

श्री सुशांत शुक्ला :- इटली की भाषा में भी बता सकते हैं।

सभापति महोदय :- सब कोई बैठिये।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- अदाणी वाली सुनेंगे क्या ? (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति महोदय, इटली की भाषा में भी बोलना चाहिए। (व्यवधान)

श्रीमती भावना बोहरा :- हिड़मा की भाषा में बता दीजिये, वह भी तो आपको आती है। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- इटली की भाषा बोलिये। इटली की भाषा में बताइये। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आप बैठिये तो। बैठिये, बैठिये। (व्यवधान) भावना जी, बैठिये। (व्यवधान)

श्री शेषराज हरवंश :- छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ के हिसाब से कहां चल रहा है ?

सभापति महोदय :- बैठिये, बैठिये। दो मिनट रुकिये। (व्यवधान)

श्री आशाराम नेताम :- वह आपका रोल मॉडल है, आप अपने रोल मॉडल की बात करिये।

सभापति महोदय :- बैठिये। देखिये, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी अविश्वास प्रस्ताव की शुरुआत कर रहे हैं। कृपा करके नेता प्रतिपक्ष जी के सम्मान करिये। चूंकि वह विपक्ष के बहुत बड़े नेता हैं, उनके भाषण में व्यवधान न डाले। आप लोगों से भी आग्रह है कि नेता जी को आप लोगों की मदद की आवश्यकता नहीं है। कृपया करके उनकी बात शांति से सुन लीजिये। आपको जवाब देने का अवसर मिलेगा, आप उसमें जवाब दे दीजियेगा। अभी उनके भाषण में कोई भी व्यवधान न डाले, ऐसा मेरा आग्रह है।

डॉ. चरणदास महंत :- सभापति महोदय, हम छत्तीसगढ़ की मूल भावना, चरित्र को रख रहे हैं, उसमें भी छत्तीसगढ़िया लोगों को तकलीफ हो रही है। मुझे समझ में नहीं आता। माननीय सभापति महोदय, मगर आपको याद होगा और इस सदन की दीवारों को भी याद है। शायद वह पुराना सदन था। 26 जुलाई, 2022 को हम लोगों ने एक ऐतिहासिक निर्णय लिया था। हम इस पवित्र सदन के उस निर्णय की ओर आपको ले चलते हैं। हमने और आपने, सत्ता पक्ष ने भी मिलकर सर्वसम्मति से एक संकल्प लाया था कि हम हसदेव में आवंटित कोल ब्लॉक को रद्द करते हैं और भविष्य में जो भी खुदाई होने की दशा है, उसको निरस्त करते हैं। महाराज, मैं आपको इसलिए याद करा रहा हूं कि जब यह सरकार बनी, उस समय मुख्यमंत्री जी ने शपथ नहीं ली थी। मंत्रिमंडल ने शपथ नहीं ली थी। इन्होंने 13 तारीख को शपथ ली और यह जो कार्रवाई शुरू हो गयी, वह 11 दिसंबर को शुरू हो गई, जिसको हम मध्य भारत का फेफड़ा कहते हैं, हसदेव अरण्य, जिस जंगल से हम लोगों को पर्यावरण के लिए ऑक्सीजन भी मिलता है और जिसके माध्यम से हसदेव बांगो परियोजना बनी है। उसमें ओ.पी. जी का रायगढ़, हमारा बिलासपुर, जांजगीर, सक्ती, इन सब जगहों में पानी भी मिलता है। जो उसका मुख्य कारण है वहां के घने जंगल गये और हम लोगों के लिये तो घना जंगल है, मगर जो आदिवासी वहां रहते हैं, उनके लिये उनका भगवान है, उनकी आस्था है, उनका जीवन है। उसको इस सरकार ने

मंत्रिमंडल आने से पहले राजस्थान विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड को खनन करने के लिये सौंप दिया और 11 तारीख को ही 91 हेक्टेयर वन भूमि को उनको सौंप दिया और मुख्यमंत्री के शपथ लेने के पूर्व उसमें खड़े 15,307 पेड़ को काटने की अनुमति नहीं कहना चाहिए, डेथ वारंट जारी कर दिया। ये छत्तीसगढ़ की संप्रभुता पर किया गया प्रहार है, माननीय चन्द्राकर जी, ऐसा मैं मानता हूं। स्थिति अब इतनी लज्जाजनक हो गई है कि राजस्थान की विधान सभा वाले हमारे बारे में क्या कहते हैं, छोड़िये। आपके और हमारे बारे में मजाक उड़ाते हैं। और आप कहेंगे कि ये कहां मिला? मेरे पास वहां के विधान सभा का थोड़ा सी वीडियो रिकार्डिंग भी है। जो कह रहे हैं कि विष्णु जी आ गये, हमने कहा तो 3 दिन में जारी कर दिया, हमने कहा कि देओ और उनने दे दिया। सभापति महोदय, आते ही आपकी जो करनी है, उसका आपको और छत्तीसगढ़ को, छत्तीसगढ़ के लोगों का क्या-क्या फल भुगतना पड़ रहा है। आप अपनी जड़ें काटकर के दूसरों का महल बनाना चाहते हैं। आप वहां की कीमती-कीमती लकड़ी को कटवा देते हैं। ये कोई गोदाम थोड़ी है कि जब चाहे उसमें आरी चला दो। दिल्ली और छत्तीसगढ़, चूंकि अध्यक्ष महोदय ने मुझे पहले ही सचेत कर दिया है, दिल्ली और राजस्थान के उद्योगपतियों के इशारे पर छत्तीसगढ़ की धरती के फेफड़े को चीरने का अधिकार देना छत्तीसगढ़ का अपमान है। इसमें कोई कांग्रेस और बी.जे.पी. वाली बात नहीं हो रही है। यहां जो रक्षक बनकर आये हैं, आपके माननीय प्रशासनिक अधिकारी होंगे, उन लोगों ने जिस ढंग से इसका मुख्यमंत्री के आने से पहले अनुमति दी, मैं उसकी निंदा करता हूं, भर्त्सना करता हूं और आप लोगों की भी भर्त्सना करता हूं। आप लोग राम जी को भगवान हैं, हमारे भांजा हैं, कहते हो और जिस वन पर, जिस अरण्य पर उन्होंने अपनी यात्रा की, जिन क्षेत्र में भगवान राम के पदचिन्ह हैं, आपने उन पदचिन्हों को खयाल नहीं रखा। और अपने मित्र, मित्रों का नाम नहीं लेना है, ये तो आप जानते हो, इसलिए नाम नहीं लेना है और अन्य बड़े-बड़े उद्योगपतियों को आपने सौंप दिया और आज वह उद्योगपति अकेले पूरे छत्तीसगढ़ में राज कर रहा है। और हम लोग कहां मर रहे हैं, हाथियों और इंसानों के बीच जो खूनी संघर्ष हो रहा है, उसका सामना करना पड़ रहा है।

माननीय सभापति महोदय, यह पूरा सदन चिंतित होगा। हाथियों का और इंसानों का जो संघर्ष हो रहा है। यहां जो हमने नैतिक मूल्य का खयाल नहीं रखते हुए राजनीतिक और संवैधानिक अधिकार को यहीं भूला दिया है। और जिस ढंग से वहां के कोयला के भंडारण का दुरुपयोग होने लगा है, जिस ढंग से जिनको आपने सौंपा है, वह 15 साल के लिये जिनको मिला था, वह कोयला को 9 वर्ष में ही खाली कर दिये हैं। और ऐसे दुर्लभ पक्षियों के बीच वह अखंडित वन है, उस जंगल में है, हसदेव अरण्य में है, जहां 170 प्रकार के जड़ी-बूटी, पेड़-पौधे पाये जाते हैं। अब कहिये इनका मैं किस प्रकार से आपको शाबासी दूं या आपको विवेकहीन मुख्यमंत्री कहूं ? विवेकहीन सरकार कहूं ? मुझे समझ में नहीं आता है कि मैं क्या कहूं ?

समय :

12.35 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए)

महाराज, उसकी कटाई से हमारे जल क्षेत्र में जो फर्क पड़ा है। हसदेव बांगो जिसको मिनीमाता बांगो के नाम से हम लोग जानते हैं, उस बांध में सिल्ट जमा हो रहा है। यह पर्यावरण मंत्री हैं। इनको पता होगा कि किस प्रकार से बांध में सिल्ट हो जाने से पानी धीरे-धीरे कम होता है और वह हसदेव का पानी जो आज तक हमको धान देता है, हमारी जीवनदायिनी है। उसमें जांजगीर-चांपा, कोरबा, रायगढ़ सबकी पेयजल की व्यवस्था करता है। आज हम लोग इस बात के लिए चिंतित हैं कि हे ईश्वर वह दिन कब आएगा कि हमें पूरा पानी मिले और कब ऐसा आएगा कि पर्यावरण पर हमारे जल-जंगल का संरक्षण होगा? मैंने कोई तकलीफ तो नहीं दी, चंद्राकर जी कहाँ गये? माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने आपकी अनुपस्थिति में भी किसी व्यक्ति का नाम नहीं लिया है। आप जब यहाँ नहीं थे, मैंने किसी व्यक्ति का नाम लिया ही नहीं है। महाराज, दूसरी बात सबसे बड़ी घटना हुई।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप नहीं भी ले सकते हैं।

डॉ. चरणदास महंत :- जी।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप नाम भी ले सकते हैं क्योंकि आज तो नाम ले-लेकर ही सब बात होनी है न तो क्या दिक्कत है।

डॉ. चरणदास महंत :- मैं फिर आपसे यह कहूँगा कि हम आपका नाम नहीं ले रहे हैं तो आप भी हमारा नाम मत लो।

श्री धर्मजीत सिंह :- नहीं-नहीं, सर। आपका नहीं लेंगे लेकिन कहीं कोई नाम को न इधर-उधर करने की जरूरत नहीं है। आपको जिसके बारे में बोलना है, आप डायरेक्ट बोल सकते हैं।

डॉ. चरणदास महंत :- अब आप वहाँ से बात कर रहे होते तो मैं आपका आदेश मानता। आप यहाँ से बात कर रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं वहाँ से अपनी बात नहीं कह सकता।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी ने एक बात भर कही है कि नाम भी आप लीजिये लेकिन प्रक्रिया का पालन कीजिए। हम नाम लेंगे तो प्रक्रिया का पालन करेंगे तो आपको कोई प्रतिबंध नहीं है। आप लिखकर दे दीजिये, कोई आरोप लगाना है तो आरोप लगा दीजिये।

डॉ. चरणदास महंत :- हमने आरोप-पत्र में सब आरोप लगा दिये हैं और आप लोग कहते हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- बात करेंगे, उस पर हम आर्येंगे, हम लोग बात करेंगे। आप तो बढ़िया भाषण दे रहे हैं, उसको चालू रखिये।

श्री केदार कश्यप :- अब तो बाजू वाले भी नहीं हैं, आप अच्छे से बोल सकते हैं ।

डॉ. चरणदास महंत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बात है कि जो व्यक्ति सदन में नहीं है, नियम तो यह कहता है कि उसका नाम नहीं लेना चाहिए ।

श्री अजय चंद्राकर :- देखिये, आप उसको व्यवस्था का प्रश्न न मानें लेकिन इसको क्लियर कर लीजिये कि उस स्थिति में हम नाम नहीं ले सकते जब उनको स्पष्टीकरण की जरूरत पड़े । अभी आपने नेहरू जी का नाम लिया है, नेहरू जी का जिन संदर्भों में उल्लेख किया है, उनको स्पष्टीकरण की जरूरत नहीं है लेकिन आप आरोपात्मक करेंगे तो उस आदमी को आना पड़ेगा फिर उसका नाम लीजिये इसलिए उसको कहा जाता है ।

डॉ. चरणदास महंत :- जी । मैंने नेहरू जी का नाम जिन संदर्भों में लिया । जिन संदर्भों में मोरार जी का नाम लिया ।

श्री अजय चंद्राकर :- मान लो कि मैं भाषण में सोनिया जी का नाम भी लूंगा तो मैं आरोपात्मक नहीं लूंगा । आपके और उनके संबंधों को बताऊंगा ।

डॉ. चरणदास महंत :- ठीक है । आप पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं । मेरे ख्याल से इस सदन में सबसे ज्यादा होशियार माने जाते हैं ।

श्री रामकुमार यादव :- होशियार नहीं, महाज्ञानी हैं ।

डॉ. चरणदास महंत :- आप उसका इस तरह से दुरुपयोग कर-करके हमारे साथियों को परेशान करेंगे यह उचित नहीं है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बलौदाबाजार की घटना पर आता हूँ । हमारे गुरु बाबा घासीदास जी, गिरोधपुरी में जहाँ उनको ज्ञान मिला । यह हमारे बाबा जी बैठे हैं, वहाँ पर जैतखंभ को किसी दुष्ट व्यक्ति ने काट दिया और जो आक्रोश बना । वहाँ पर 10 जून को ही यह अल्टीमेटम इनके सतनामी समाज के लोगों ने दे दिया था कि इसका परिणाम उग्र हो जाएगा और इसके बावजूद भी वहाँ के कलेक्टर, एस.पी. किसी ने ध्यान नहीं दिया । ऐसी घटना तो देश में शायद कहीं नहीं हुई है । चंद्राकर जी बता सकते हैं, अगर उनके यहां हुई हो ।

श्री अजय चंद्राकर :- मैं बिल्कुल बता सकता हूँ । आपने इतनी सदाशयता का परिचय दिया कि उसको शांत कराने के लिए आपने श्री देवेंद्र यादव जी को भेजा ।

डॉ. चरणदास महंत :- ठीक है । आप उल्टे-सीधे आरोप लगाने में ही विश्वास रखते हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय नेता जी, आपको भी अजय चंद्राकर जी जब तक खड़े न हों, मजा नहीं आता । (हंसी) आप उनको खड़े होने के लिये उनको बीच-बीच में तैयार करते हैं । क्या यह पहले तय कर लेते हो ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नहीं । यह तो इनके अवैध संबंध का मामला है और उसके कारण दोनों को एक-दूसरे के बिना चैन नहीं है । (हंसी)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- वह संबंध तो माननीय अध्यक्ष महोदय से है, जो आप बोल रहे हैं। (हंसी)

डॉ. चरण दास महंत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह मेरे परम दुश्मन भी हैं प्रिय दुश्मन भी हैं और जैसा कि कौशिक जी ने कहा, उनको पता है कि हमारे दोनों के बीच में अवैध संबंध भी है। (हंसी) इसलिए कभी-कभी हम लोग एक दूसरे को उचकाते भी हैं..।

श्री अमर अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आजकल उसको हाईकोर्ट में मान्यता प्राप्त भी है।

डॉ. चरण दास महंत :- आपको फिर क्या दिक्कत हो रही है? आपको तो खुश होना चाहिए कि हम उसके उदाहरण हैं।

श्री अमर अग्रवाल :- मैंने यह बोला कि अब तो न्यायालय ने भी फैसला दे दिया है, आप जिसका जिक्र कर रहे हैं, वह मान्य भी है।

डॉ. चरण दास महंत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ठीक है। मैं यह कह रहा था कि देश, प्रदेश के इतिहास में इस तरह की पहली घटनाएं हैं, जिसमें हमारा एस.पी.कार्यालय और जो कलेक्टर का कम्पोजिट बिल्डिंग है, उसमें आग लगी और उस आग की आंच कहां तक पहुंची? यह आंच हमारे मान्यताओं, धर्मों, छत्तीसगढ़ियापन, समाज तक पहुंची और उसने छत्तीसगढ़ समाज को पूरी तरीके से उद्वेलित कर दिया और इसमें हमारे साथी कई साथी गये थे। चूंकि उसमें यहां के देवेन्द्र यादव जी भी गये, उनके कई साथियों को जेलों में भेज दिया गया। उसमें क्या हुआ? आप इतने दिनों तक जांच नहीं कर पाये? उसमें कैसे, क्यों और क्या हुआ? आप हमारे संरक्षक बने हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी तरीके से कोरिया जिले में 16 नवम्बर को 29 वर्षीय युवती के साथ जो सामूहिक बलात्कार हुआ, उसे जिंदा जला दिया गया। इसी प्रकार 4 जुलाई 2024 को एस.डी.एम. कार्यालय में फरियादी को ही पीट-पीट कर मार दिया गया, आदरणीय मुख्यमंत्री जी के जिले में ही राखी के दिनों में एक बहन के साथ किस तरह से बलात्कार की घटना हुई। प्रदेश के जिलों में किस-किस प्रकार से लोगों की हत्याएं हो रही हैं, यहां गोलियां चल रही हैं और इस प्रदेश की बेटियां सुरक्षित नहीं हैं। यहां पर अपराध इतने बढ़ गये हैं। अब इसको मैं जंगलराज नहीं कहूँ तो क्या कहूँ? अब इसमें शामिल कर लेता हूँ कि आपके जिले कवर्धा में क्या हालात हैं? वहीं के हमारे गृहमंत्री जी हैं अगर मैं इन बातों का जिक्र नहीं करूँ, मैं आरोप नहीं लगाऊँ तो मैं क्या सकता हूँ, आप यह बताइये? यहां जिस ढंग से आप लोग प्रजातांत्रिक मूल्यों का चौरहरण कर रहे हैं। मुख्यमंत्री तो मुख्यमंत्री, उनके मंत्रिगण, उनके जो नौकरशाह हैं, वह एक भी आलोचना को नहीं सह पाते हैं। आपने कितने सुन्दर ढंग से निंदक नियरे राखिये की बात कही है। इनके सामने कुछ बात करें या जेब से हाथ डालकर घूमें तो इनको ऐसा लगता है कि यह हमारा अपमान कर रहे हैं। इनको ऐसा लगता है कि यह हमारे अंहकार को चोट पहुंचा रहे हैं। यह अंहकार मैं डूबी सरकार, आते ही जिस ढंग से मैं सरकार बनने की बात करता हूँ।

यह सरकार आते ही हमारे विधायकों के जितने काम गांवों में चल रहे थे, वह तत्काल प्रभाव से बंद हो गये, चाहे वह पंचायत का काम हो, चाहे मनरेगा का काम हो, इनकी सरकार आते ही इन्होंने यह जारी कर दिया कि जो काम स्वीकृत हैं, ठीक है, बंद हो गये, अभी जो काम चल रहे हैं उनको भी तत्काल बंद कर दीजिए। महाराज, यह कौन सा लोकतंत्र है? अभी तक उनके भुगतान रोक दिये गये हैं। यह कौन सा तरीका है? यह सरकार जनहित में सिर्फ अपने और अपने लिए खजाना भरने का काम कर रही है और आम जनता को कुचलने का काम कर रही है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री ओ.पी. चौधरी जी हमें सपने दिखाते हैं कि वर्ष 2047 में कैसा छत्तीसगढ़ होगा। आपने इसे कहां से बनावाया और इस सपने को किनने गूथा, किनने बूना? वह तो छत्तीसगढ़िया हैं ही नहीं। मुम्बई से करा लिए या दिल्ली से करा लिए या अपने अन्य मित्रों से करा लिए, वे जानें, मगर जिस छत्तीसगढ़ में 70 प्रतिशत जनता कृषि पर आधारित है, उसी के बारे में आपने उसको थर्ड स्तर पर रख दिया, आपने सेवा धर्म को बढ़ा दिया, आपने उद्योगों को बढ़ावा दे दिया और जो हमारा आल रेडी छत्तीसगढ़ का कृषि क्षेत्र है, उसका 15 प्रतिशत भाग कर दिया। यह क्या सिखाता है महाराज कि आप धीरे-धीरे-धीरे करके किसानों को बंद करिए और आपके जो पिछले ढाई साल में काम शुरू हुए हैं, यह किसानों को परेशान करने के लिए है, ये कृषि की दशा खराब करने के लिए है, ये किसानों को हम लोग चिल्ला रहे हैं कि यहां खाद नहीं मिल रहा है, यहां बिजली नहीं मिल रही है, यहां डीजल की व्यवस्था नहीं है, पेट्रोल की व्यवस्था नहीं है। ये सब सोची समझी राजनीति है, आप अपना पूरा छत्तीसगढ़ बड़े-बड़े औद्योगिक घरानों को सौंपकर मुक्त रहना चाहते हैं, फ्री घूमना चाहते हैं, उस 10 प्रतिशत में अपना नाम लिखाना चाहते हैं, जो सिर्फ पूंजीपति हैं, सिर्फ बड़े लोग हैं, बाकी के 90 प्रतिशत जहां जाते हैं, जाएं, आपको कोई चिंता नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने तो बेरोजगारों को नौकरी नहीं दी थी तो शिक्षित लोगों को बेरोजगारी भत्ता देते थे। जिनको हम भत्ता देते थे, आपने आते ही 17,64,843 शिक्षित बेरोजगारों को भत्ता देना तत्काल प्रभाव से बंद कर दिया। पता नहीं आपने कहां से युवा एजुकेटर, स्पेशल एजुकेटर के पदों का निर्माण भी कर लिया, आऊट सोर्सिंग का रास्ता भी खोज लिया और आऊट सोर्सिंग के माध्यम से क्या-क्या होता है, वह तो हमारे यहां के कुछ साथी बेहतर जानते हैं। हमें जिस ढंग से जान-बूझकर पूरे किसानों को, किसानों के बच्चों को, उनके परिवार को छत्तीसगढ़ की उन्नति और विकास के लिए रोका जा रहा है, उसकी ओर मैं आपको ध्यान भी दिलाना चाहता हूं, आपको याद कराना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, पेशा कानून। माननीय मुख्यमंत्री जी, आप तो आदिवासी हैं। पेशा कानून की क्या हालत है? कल ही भूपेश बघेल जी पेशा कानून में तो नहीं, मगर बता रहे थे कि किस तरह से हमारे जमीन को लूटने में आप काम कर रहे हैं, किस तरह का पेशा कानून का दुरुपयोग कर रहे हैं, किस तरह से गांव में, छत्तीसगढ़ में, आदिवासी क्षेत्रों में जमीनों को कैसे लूट रहे हैं, कैसे आप पुनर्वास

के रास्ते बंद कर रहे हैं, कैसे आप खनिजों के जहां पर खदानें हैं, वहां के लोगों को किस प्रकार से आप भगा रहे हैं, यह तो सभी जानते हैं। आपके जमाने में भू माफिया बढ़ गए, आपके जमाने में उद्योगपति बस्तर, बीजापुर, दंतेवाड़ा, सुकमा, नारायणपुर में जिस पैमाने से बढ़ रहे हैं तो हमारे आदिवासी भाइयों का क्या होगा ? हमारी पुश्तैनी जमीन आप छीनने लगे हैं, हमारा क्या होगा ? आदिवासियों की प्राकृतिक आजीविका के साधन जल-जंगल-जमीन हैं, जिसके रक्षक आदिवासी हैं, किस तरह से हमारे जंगलों की लूट मची है। मैं एक-एक बात का जिक्र करूंगा तो बहुत समय हो जाएगा, मैं सांकेतिक रूप से आपको बोल रहा हूं, मेरे साथियों ने मुझे बताया। उन्होंने चिंता की, वे बात करना चाहते हैं, मगर इतना जरूर कहूंगा कि अबूझमाड़ में क्या हो रहा है ? अबूझमाड़ के जंगलों की कटाई शुरू हो गई है। कौन आ रहा है, कौन ले जा रहा है, कौन अंतर्राष्ट्रीय गिरोह वहां काम करने लगा है ? ये खोज-खबर आप रखेंगे ? बस्तर के जंगलों को साफ कर दिया। क्या आप दुबई बनाना चाहते हैं? अमेरिका जैसे बड़े सपनों का शहर बनाएंगे, आप क्या करना चाहते हैं ? माननीय मुख्यमंत्री जी और उनकी सरकार में बैठे हुए मंत्रियों से मैं पूछना चाहता हूं। आपने हमारा सबसे बहुमूल्य हमारी इज्जत, सब कुछ जिसके नाम से हम जाने जाते थे-धान का कटोरा के नाम से जाना जाता था, आपने उस धान के उत्पादन में इस बार किसानों को कितने-कितने दुःख दिए हैं ? किसानों को खून के आंसू रोना पड़ा है। हमारे यहां कुछ बुड़े-बुड़े, बुजुर्ग किसान लोग कहते हैं कि बेटा, अंग्रेजों के जमाने में भी ऐसा नहीं हुआ था। हमारे घर में कितनी जांच हुई, कितना धान हुआ, आप हमारी बहु सामने, बेटे के सामने जांच करने भेजते हो। इस बात की क्या जरूरत है। आप क्या बताना चाहते हैं ? एक तरफ धान कम हो रहा है तो भी आप उसका उत्पादन ज्यादा बताते हो। आप ज्यादा खरीदते हो, फर्जीवाड़ा कर रहे हो, 2 नंबर से कर रहे हो, 3 नंबर से कर रहे हो, आपके खरीफ में कितना उत्पादन हुआ, आपने बताया था। आपने कितना धान बेचा, आपने बताया था, आपको पता है। आपके आजू-बाजू के प्रदेशों से कितना धान आया, आपको पता है। इन सब बातों का जिक्र हमारे साथी करेंगे। मगर, आपने किसानों को जो आंसू दिया है, किसानों को धान बेचने में परेशानी पैदा की है, चाहे भुइया एप के कारण हो, चाहे आपके नक्शा क कारण हो, चाहे फिंगर लेने में जटिलता की बात हो, इस तरह से परेशानी पैदा की है। आपके खुद के ही जशपुर जिले के 50 हजार किसान, अगर गलत होगा तो आप मुझे बता दीजियेगा, पंजीकृत किसान में से कितने किसान धान नहीं बेच पाये ? लगभग 8-9 हजार की संख्या है। आपके जिले में ऐसा हो रहा है तो दूसरे जिले में क्या होगा ? खरीफ के फसल में 25 लाख पंजीकृत किसानों में से 2 लाख 21 हजार किसान अपना धान नहीं बेच पाये। यह क्या दिशा दे रहा है, यह क्या संकेत दे रहा है, आप छत्तीसगढ़ के किसानों के हित में काम कर रहे हैं ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने, आपकी अनुमति से भारतमाला का प्रश्न उठाया था। भारतमाला परियोजना में क्या हुआ ? 500 करोड़ रुपये से ज्यादा का भ्रष्टाचार हुआ है। चाहे अभनपुर के पास हुआ

हो, चाहे सोमनी में हुआ हो, चाहे सांकरा में हुआ हो, चाहे इन्द्रावती में हुआ हो, चाहे गांव में असिंचित भूमि को कृषि भूमि दिखाकर आप वर्गफीट में बांटकर भ्रष्टाचार किया है, चाहे खुले आम बंदरबाट किया हो। आपने ग्राम देवादा के खसरा नं. 165 को 40 टुकड़ा बनाकर बेच दिया, वहीं का खसरा नं. 162 को 21 टुकड़े बनाकर बेच दिया। अध्यक्ष महोदय, ये पैसे किसके हैं ? हमारे हैं न ? आप हमसे टैक्स वसूलते हो, हमारे पैसे को जमा करते हो, हमारे पैसे में भ्रष्टाचार कर रहे हो तो मैं किसको दोष दूं ? आपका संरक्षण और आपका निरीक्षण बिल्कुल शून्य हो गया है। इसलिए मैं आप पर आरोप लगाता हूं कि अब यह आपके काम का नहीं है आप दूसरी जगह तलाश करिये, वह ज्यादा बेहतर है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम धान के रखरखाव की बात करें तो वहां मुश्किल है। गांव-गांव और गली-गली में इतना धान सड़ा है, वह मुश्किल रहा है। आप केन्द्र सरकार को शॉर्टेज बताते हो, विपणन संघ के संग्रहण केन्द्रों में शॉर्टेज है, आप उसका भी शॉर्टेज बताते हो। आप उनसे मूल्य वसूली भी करते हो। आपने संग्रह का जो रास्ता चुना है, उस ट्रांसपोर्ट के माध्यम से भी पैसा खाया जा रहा है। कोई बोरे के माध्यम से पैसा खा रहा है। मैं यहां बात ला-लाकर थक गया और हमारे लोग भी थक गये कि बोरा कम वजन का है, पूरा तौलिये, आप वह भी तौलने को तैयार नहीं हो। इस तरह से इस राजकोष में 4400 करोड़ रुपये की अतिरिक्त हानि हुई है। यदि कुल राशि कहूं तो धान के रखरखाव में जो विफलता पैदा की इससे 11,000 करोड़ का नुकसान हुआ है, जो आपको हम किसान, हम गरीबों के माध्यम से मिलता है और आप जमा करते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कल बात आई थी कि हमारे जमाने, मैं डॉ. मनमोहन सिंह जी का नाम ले रहा हूं, आप टोकियेगा मत, मनमोहन सिंह जी की सरकार में 2000-2006 में वन भूमि अधिनियम बना था, उसमें सामूहिक पट्टा देने की जवाबदारी सरकार की है। हम मानते हैं कि हम एक-दो साल आगे पीछे हो गए, मगर आप तो कर लो। आप आदिवासी हैं। आपके आते ही आदिवासियों ने क्या सोचा था? आदिवासियों के लिए ऐसा हो गया था कि जो हमारे भाई आ गए हैं, अब तो हमारी रक्षा करेंगे। आप नहीं कर रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, ऐसा है, आपको आदिवासी क्षेत्र से पूरे सरगुजा, पूरे बस्तर से शत-प्रतिशत सीटें मिली थीं और शत-प्रतिशत आपके हाथ से निकल क्यों गईं, उसकी चिंतन तो आप कीजिए, आप हमको मत बताइए ।

डॉ. चरणदास महंत :- कर लेते हैं। मैं समझता हूं भाई जी, आप आज इधर से आकर बोल लीजिए न। आप इधर आ जाइए न, आपको पूरा अवसर मिलेगा, मैं भी बैठ जाता हूं। आप हमारी तरफ आ जाइए और पूरा भाषण दे दीजिए। हम तो तैयार हैं। हमें कोई आपत्ति नहीं है। (हंसी) अभी-अभी प्रश्न आया था— महतारी वंदन योजना। आप इस कारण बने हो— महतारी वंदन योजना। अगर महतारी वंदन योजना का खयाल नहीं आया होता, आप उनको एक-एक हजार देते नहीं, वादा नहीं करते, तो आप कहीं

नहीं थे। आपका भी राम नाम सत्य हो गया था। हमने तो किसानों को खूब पैसा बांटा, हमारी सरकार ने बांटा, भूपेश भाई ने बांटा, ऐसा करके बता रहा हूं। मगर किसानों को वह ख्याल में नहीं आया। महतारियों को ख्याल में रहा। मगर आज क्या कर रहे हैं? कैसा षड्यंत्र आपने शुरू कर दिया? उसके पतिदेव को डबल-तिबल दारू पिला रहे हो। उसके बच्चों को दारू पिला रहे हो।

स्वास्थ्य मंत्री (श्री श्याम बिहारी जायसवाल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय...

डॉ. चरणदास महंत :- एक मिनट, तुम्हारे पर भी आऊंगा।

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आप लोग तो हमसे ज्यादा घोषणा किए थे, लेकिन आपके ऊपर छत्तीसगढ़ के माताओं ने भरोसा नहीं किया, तो उसको भी देख लीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- ऐसा नहीं है। घोषणा हमारी घोषणा के बाद किए तो मैंने कहा केयरटेकर मुख्यमंत्री नहीं घोषणा कर सकता, उसमें कोई भरोसा नहीं करेगा करके। मैंने यह कहा था।

डॉ. चरणदास महंत :- आप दुनिया भर के नए-नए शब्द खोज के आ जाइए। मगर आज आप क्या कर रहे हैं? एक माह में 1,000 करोड़ की दारू बेच कर आप देश में रिकॉर्ड बनाना चाहते हैं? 1,000 देते हैं इस हाथ से, दाएं हाथ से— इसको दायां कहते हैं न? दाएं हाथ से देते हैं और बाएं हाथ से 2,000 की दारू उसके घर में पहुंचा देते हैं। चाहे बच्चों के माध्यम से हो, चाहे पतिदेव के माध्यम से हो, वह दारू पी-पी कर, पी-पी कर रोज गाली देता है, रोज गाली खाता है। आप इस पर कोई कमेंट्स नहीं करेंगे कि ये दारू आपका बनाया हुआ नहीं है? ये दारू दूसरे ने बनाया है। आप थोड़ी बनाए हैं। मगर ये षड्यंत्र है, जो आप लोग हमारे छत्तीसगढ़ के परिवार के लिए रच रहे हो।

श्रम मंत्री (श्री लखनलाल देवांगन) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी शराब के बारे में बोल रहे हैं, उनकी सरकार में शराब में क्या खेल हुआ, उसको भी थोड़ा बता देते तो अच्छा हो जाता।

डॉ. चरणदास महंत :- हमारे यहां शराब में कोई खेल नहीं हुआ। शराब को तो लोग पीते हैं और उसके ऊपर चढ़ कर खेलते हैं।

श्री अनुज शर्मा :- दो गल्ला रहता था न?

डॉ. चरणदास महंत :- भैया, आपका मेरे पास वीडियो है, दिखाऊं? आपने कहा था कि शराब बेचने से जो पैसा आता है, उसी पैसे को तो हम महिला वंदन को देते हैं।

कृषि मंत्री (श्री राम विचार नेताम) :- अब देखिए, नेताजी शराब के बारे में बात कर रहे हैं। इनके समय की जो शराब बनती थी, इतना नकली और इतना घटिया स्तर का था, रात में लोग पीकर के बोलते थे कि पिकअप नहीं ले रहा है। (हंसी)

श्री विक्रम मण्डावी :- माननीय मंत्री जी, आपको कहां से मालूम चला?

श्री अनुज शर्मा :- तभी उनकी सरकार का इंजन बैठ गया।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- आदरणीय अध्यक्ष जी, अब क्या शराब में कीड़ा और मेंढक भी निकल रहा है, ये भी है।

श्री राम विचार नेताम :- और दूसरी बात ये हुई, इतनी..। (हंसी)

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, श्री भूपेश बघेल जी मुख्यमंत्री थे, हम लोग उधर बैठे थे। आप भी थे। तो नारायण चंदेल जी ने एक प्रश्न पूछा था कि नकली शराब पानी वाली बिक रही है। उसकी जांच कराओ। तो मैंने बोला कि ये सरकार तो जांच करा नहीं सकेगी, उसकी जांच का एक ही फार्मूला है। असली जब पीकर आदमी आता है तो अंग्रेजी बोलता है, और नकली पीकर जाता है तो चुपचाप घर चल देता है, उसके ऊपर असर ही नहीं होता है। तो वह सब शराब बिक रही थी।

श्री राम विचार नेताम :- अध्यक्ष जी, मैं बोल रहा था, उस समय इतना नकली शराब का अवैध कारोबार हुआ, नकली शराब। गांव-गांव में नकली शराब बना कर बेची जा रही थी।

समय :

1.00 बजे

अध्यक्ष जी, मेरे यहाँ अंबिकापुर में एक मामला पकड़ा गया, जहाँ नकली शराब की पैकिंग की जा रही थी। जो बोतलें आप ओरिजिनल पैक करके भेजते हैं, उन्हीं में बाल्टी-बाल्टी पानी मिलाकर शराब भरी जा रही थी। उसे पीकर न जाने कितने लोगों की किडनी खराब हो गई है। आप प्रदेश भर में पिछले 2-3 वर्षों का रिकॉर्ड निकाल देखिए, सर्वाधिक किडनी के मरीजों की मृत्यु हो गई। इसका दोषी कौन है? आदरणीय भूपेश बघेल जी, आप यह स्वीकार करिये कि इसके असली दोषी आप लोग ही हैं।

डॉ. चरणदास महंत :- जी नहीं, इसका असली दोषी कोरोना है।

श्री रामविचार नेताम :- इसका असर यह हुआ कि उस समय जो तत्कालीन आबकारी मंत्री थे, उन्होंने भी वह नकली शराब घूंट लिये तो उनकी हालत भी खराब हो गई थी। (हंसी) आप स्वयं देख लीजिए।

श्री बघेल लखेश्वर :- मंत्री जी, आपने वह नकली शराब कितनी बार ली है? (हंसी)

डॉ. चरणदास महंत :- हाँ, आप इसका जवाब दीजिए। आप तो जानते नहीं हैं कि असली और नकली शराब की पहचान कैसे होती है। क्या उसका कोई लिटमस टेस्ट होता है?

श्री अजय चन्द्राकर :- आप कैसे जानते हैं कि वह कुछ नहीं जानते हैं। (हंसी)

डॉ. चरणदास महंत :- मैं जानता हूँ कि वह कुछ नहीं जानते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- वह सब कुछ जानते हैं।

डॉ. चरणदास महंत :- जब वह मुझे खाने पर बुलाते हैं, तब वह कहते हैं कि यहाँ कुछ नहीं मिलेगा, भैया। चलिए, शराब से आप लोगों को तकलीफ है, आपने उससे इतना पैसा लूट लिया, उस पर हम अभी कुछ नहीं कहेंगे। मैंने यहाँ जोर-जबरदस्ती की बात की है और यह भी बताया है कि किस तरह

हमारे क्षेत्रों में जानबूझकर हमारा गला घोंटा जा रहा है। अभी महिलाओं की बात हुई। माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने राज्य में माइक्रो फाइनेंस और चिटफंड कंपनियाँ खुलवाई हैं। उनके माध्यम से इन्होंने गाँव-गाँव में लगभग 3,000 से 4,000 महिलाओं को Finance दिलवाया है। यह खेल हमारे कोरबा, रायगढ़, जांजगीर-चांपा, मुंगेली, बालोद, दुर्ग, राजहरा, धमतरी, कांकेर और बस्तर, सब जगह हुआ है। मैंने कई बार माननीय मुख्यमंत्री जी को पत्र लिखा है, कई बार पीड़ित लोग यहाँ के मंत्रियों से मिलने आए, लेकिन क्या आप लोगों ने उन पर कोई ध्यान दिया है? उनको 30-30 हजार रुपये का लोन दिलाकर आज 40-50 हजार महिलाएँ रो रही हैं। उनके पास अपने बच्चों को स्कूल भेजने तक के पैसे नहीं हैं। इसको हम लोगों को देखना है। यही तो जनता की आवाज है, जिसे हमने अविश्वास प्रस्ताव के जरिए आपके सामने लाया है कि आप आदिवासी, सरगुजा संभाग और कोरबा का नाम ले-लेकर, पानी पी-पीकर गाली देकर यहां आए हैं तो क्या आप उनके लिए कुछ करेंगे? आपने उन्हें बर्बाद कर दिया है। आपने हमारे आने वाली पीढ़ी को बर्बाद करने की सोच लिया है क्योंकि आपको तो यह पढ़ाया गया है कि इस राज्य के केवल 10% लोग ही बड़े आदमी बनेंगे, वही कॉर्पोरेट बनेंगे, वही पैसा कमाएँगे और वही ठेकेदारी करेंगे, बाकी गरीब के बच्चों को नौकरी नहीं मिलनी चाहिए। गरीबों को फ्री में चावल दे दो, फ्री में रहने के लिए घर दे दो, लेकिन उनके बच्चों को पढ़ाने की कोई व्यवस्था मत करो। आपने हमारे 10,000 स्कूल बंद कर दिए। यहाँ कई बार प्रश्न पूछे गए, कितने ही लोगों ने इस पर बात की है। आपके ही स्कूल शिक्षा विभाग में 91,000 से ज्यादा शिक्षकों के पद रिक्त हैं। बजट भाषण के दौरान पूर्व मंत्री ने कहा था कि 33,000 शिक्षकों की भर्ती होगी। जब मैंने उनसे पूछा कि क्या लोक सभा चुनाव से पहले आप भर्ती करने विज्ञापन निकालेंगे, तब उन्होंने Yes कहा था कि हम लोक सभा चुनाव के भर्ती का विज्ञापन जारी करेंगे। अब आपने बेचारे को लोक सभा भेज दिया कि उन्हें लोक सभा चुनाव की चिंता थी तो उन्हें लोक सभा जाने को कह दिया। अभी बेचारे को नकटी गांव की चिंता थी कि वहां के लोगों को बचाना है, तब आपने तत्काल उनके दिल्ली जाने के बाद वहां बुलडोजर चलवा दिया। आप हमारे साथ नहीं, बल्कि आप अपने ही लोगों के साथ ऐसा बर्ताव कर रहे हैं, उसको आप देखिये। आज आप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उल्लंघन कर रहे हैं। युक्ति-युक्तीकरण से किसका फायदा हुआ है? न किसी विधायक का, न किसी मंत्री का फायदा हुआ है। बेचारे गरीब लोग किसी तरह से अपना पेट काटकर स्कूल से पढ़ाई करके आज गुरुजी बने हैं, वे कितने महीनों से आज सड़क में घूम रहे हैं ? युक्तियुक्तकरण में बेटा यहां है, पढ़ रहा है और चांपा के आदमी को सरगुजा भेज दिया गया, चांपा के आदमी को बस्तर भेज दिया, यह युक्तियुक्तकरण है ? युक्तियुक्तकरण में तो जो नौकरी कर रहा है, उसका भी ध्यान रखते हुये उसको सुख सुविधा देते, ताकि आपके सामाजिक वातावरण को छत्तीसगढ़ के समाज को एक सुखमय जीवन देने के लिये वह कुछ कर सकता था, आज वह आपको नहीं सहा गया है ? अध्यक्ष महोदय, आपने पाठ्य पुस्तक निगम में किताबें इतनी छाप दी है, उसमें कितने करोड़ का

भ्रष्टाचार हुआ, इसे माननीय मंत्री जी बतायेंगे, उसे मैं नहीं बताऊंगा, मगर उसका क्या हुआ ? आपने उन किताबों को सिलयारी में, राजनांदगांव में बेच दिया । ट्रक से पूरा भरकर ले जाते थे, आप उसको रद्दी में बेचते थे, पेपर वाले छापते थे, पेपर वालों को आप क्या-क्या कहकर चुप करा देते थे, उसे आप जानों ? अध्यक्ष महोदय, उच्च शिक्षा का भी वही हाल है, 335 शासकीय विद्यालयों में केवल 129 प्राचार्य कार्यरत हैं, प्राध्यापक के 769 स्वीकृत पद खाली हैं, 2300 सहायक प्राध्यापक के पद खाली हैं और आप क्या विधेयक ला रहे हैं ? माननीय मंत्री जी ने एक विधेयक लाया है, यह किसके सलाह पर लाये हैं, यह मुझे नहीं मालूम है। मगर लिखा है, उद्देश्य और कारणों का कथन है । भारत सरकार के मंत्रिमण्डल सचिवालय के विनियमन प्रकोष्ठ के अनुशंसा की है कि राज्य उच्च शिक्षा संस्थान हेतु विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिये न्यूनतम भूमि की आवश्यकता को समाप्त करने पर विचार कर सकते हैं । यह लिखा है, उसने इशारा तक नहीं किया, आप विचार करो । इशारा तक नहीं किया कि जल्दी करो, विचार कर सकते हैं । अब कहाँ गया, 5 एकड़ जमीन लगेगा, 15 एकड़ जमीन लगेगा, अब आप दांत में खुजलाईये, एक किराये के कुरिया में महाविद्यालय और विश्वविद्यालय चलाओगे, यह आपने छूट दे दी है और यही बच्चे पढ़ेंगे, यह बच्चे हमारे अधिकारी होंगे, तब क्या होगा ? आप ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट का लाईन लगाओगे, यही आपका शासन है, इसे करते रहिये । आप जितनी जल्दी अच्छा काम करोगे, हम लोगों को फायदा होगा, जो आप कर रहे हैं, वह अच्छा काम है ।

अध्यक्ष महोदय, अब जायसवाल जी पर आ जाता हूँ, इसमें कुछ कहूँगा नहीं। सरकारी अस्पतालों में विशेषज्ञ चिकित्सकों के 1418 पद खाली हैं, सुन रहे हो ना है कि नहीं है, आप पांच-दस कमबेशी कर सकते हैं ? चिकित्सा अधिकारी के 305 पद खाली हैं, स्टॉफ नर्स के 2379 पद खाली है तो भरने में क्या दिक्कत है, ढाई साल तो हो गये हैं, भर डालो । छत्तीसगढ़ में बहुत सारी बेचारी लड़कियां घूम रही हैं, आप इसे भरना क्यों नहीं चाहते हैं ? कल भूपेश जी का क्वेश्चन आया था, जीवन रक्षक दवाईयों का क्या हाल है, MRI, सोनोग्राफी की मशीनें कौन सी फाईल में उलझी है, आपके यहां है कि मुख्यमंत्री के यहां हैं ? आम्बेडकर अस्पताल परिसर में 700 बिस्तर के लिये हम लोगों ने जो भूमिपूजन किया था, उसका टेण्डर नहीं हुआ है, यह क्यों नहीं हुआ है, हिसाब-किताब नहीं हुआ है क्या ? केन्द्र सरकार की योजना के तहत आपने 211 करोड़ की लागत से जगदलपुर में सुपर स्पेशलिटी अस्पताल बनाया था, वह कहाँ गया ? आपने कांटीनेंटल अस्पताल प्रायवेट लिमिटेड को PPP मोड पर सौंप दिया, ठीक बोल रहा हूँ ? आप मेरी तरफ देखिये, नाराज क्यों हो रहे हो, इतना तो कर ही सकता हूँ, आप मनेन्द्रगढ़ के हो इतना तो कह ही सकता हूँ। आपके यहां कैथ लैब नहीं है। 70% से ज्यादा आपके जो हार्ट पेशेंट हैं, हृदय रोगी हैं, वह 350 किमी दूर जगदलपुर से लोग रायपुर आ रहे हैं, कई लोग तो रास्ते में तड़प-तड़प के मर जा रहे हैं। आयुष्मान भारत योजना का लगभग 600 करोड़ का भुगतान लंबित है। मैं नहीं कह रहा हूँ कि आपने लंबित रखा है, मगर है ना? जब तक आप उन गरीबों के लिए पैसे नहीं लाओगे, केंद्र

सरकार से अनुमति नहीं दिलाओगे, ये सब कहां से होंगे ? बस्तर जैसे क्षेत्र में तो आप जानते ही हो, 80% महिलाएं एनीमिया से पीड़ित हैं। हम लोगों ने बहुत कम किया था और फिर इतनी दया करो, यार। आपके यहां पैड़ा में ले देके एक गरीब कलेक्टर पहुंचा था। पैड़ा में एक अस्पताल है, पता नहीं कौन सा अस्पताल है, मैंने देखा नहीं, जाना नहीं, सुना नहीं, मगर शिकायत इतनी थी कि उस अस्पताल में दो आदिवासी महिलाएं मर गईं। बेचारे जांच करने चल दिया। वहां पर यह पाया कि वहां का अस्पताल यहां है। उस चिकित्सालय से कैंची लेके नर्स आती है, इस चिकित्सालय से कैंची लेकर नर्स आती है, वहां से डॉक्टर आता है, यहां से एनेस्थेटिक आता है, जो उनको नशा देता है और ये वाला डॉक्टर जो उधारी का है, वह उसका ऑपरेशन करता है, यह बात सही थी ? आपके कलेक्टर ने सही पाया। आपके कलेक्टर ने उसको बंद कर दिया। क्या दोष किया भैया गरीब आदमी काम कर रहा है? स्वास्थ्य मंत्री जी, आपने खूब डांटा है सुना हूं। आपने उनको यहां से वहां तक उतार दिया। वह गरीब घर का बच्चा है। मैं उनको जानता हूं, चांपा का रहने वाला है, उसकी मां रोजी-रोटी कमाती थी, बच्चे को पढ़ाया, बाप शायद नहीं था। उस समय थोड़ी बहुत सिफारिश चलती थी, हम लोगों ने कर दिया होगा। डिप्टी कलेक्टर हो गया होगा। आपके रामविचार ने भी उनको दो-चार झापड़ दे दिया था, क्योंकि वह आप लोगों की बात ही नहीं सुनता, आपकी बात नहीं सुनता? गलत बात नहीं सुनता तो आपने भी उसको मारा था। आपके कहने से अस्पताल को ठीक नहीं किया तो आपने भी उनको दो महीने में ट्रांसफर कर दिया, ऐसा कहां होता है? क्या बताऊं, राज्य सरकार के जितने मेडिकल कॉलेज अस्पताल हैं, जिला अस्पताल हैं, कई जगह ठप पड़े हैं, कहीं ताला नहीं लगा है, किसी की चाबी नहीं मिल रही है, कहीं कीट नहीं है, कहीं मशीन खराब है, अब आपको क्या बताया जाए? ये तो चिकित्सा का मामला है और चिकित्सा का मामला आपके-हमारे घरों से जुड़ा हुआ है। उसमें आपका योगदान होना चाहिए, आप बड़े स्मार्ट मंत्री हो। मैंने मनेंद्रगढ़ जाकर आपकी तारीफ की, मैं यहां भी तारीफ करता हूं, माननीय मुख्यमंत्री जी नहीं रहते तो शायद जायसवाल को आगे कुछ सोच करके विधान सभा का अपना कार्यभार सौंप के चल देते हैं। ये छोटी-मोटी तारीफ थोड़ी है।

श्री भूपेश बघेल :- वह तारीफ भी बर्दाश्त नहीं हो रहा है।

डॉ. चरणदास महंत :- तारीफ भी बर्दाश्त नहीं। आप कभी गलती से मुझे बुलवाते हो, मैं आपके साथ मनेंद्रगढ़ जाता हूं। हम लोग आपके साथ मंदिर में ताली बजा-बजाकर पूजा करते हैं। हमको मालूम है कि पहले वे यूथ कांग्रेस में थे। (हंसी) हम गए थे।

स्वास्थ्य मंत्री (श्री श्याम बिहारी जायसवाल) :- साहब, मैं तो पॉलिटिक्स में था ही नहीं, मैं पहली बार आपके ब्लॉक कांग्रेस के अध्यक्ष को हराकर बीडीसी जीता। मैं कभी था ही नहीं। हां ये है कि हम आपका बड़ा सम्मान करते हैं। आप हमारे सांसद रहे हैं।

डॉ. चरणदास महंत :- इसीलिए तो मैं प्यार करता हूँ। मैं आपको प्यार करता हूँ तो प्यार को तमाचा मत मारो, अच्छी बात नहीं है।

श्री भूपेश बघेल :- इससे भी संबंध हैं ?

डॉ. चरणदास महंत :- नहीं, इसके संबंध तो सबसे हैं। डॉक्टर विनय जायसवाल से भी हैं, मेरे से भी हैं।

कृषि मंत्री (श्री रामविचार नेताम) :- नहीं, आप तो प्यार करते हैं लेकिन छुरी भी चलाते हैं तो प्यार से ही चलाते हैं।

डॉ. चरणदास महंत :- हां, छुरी आगे से चलाओ न, पीछे डालने से क्या मतलब है? मनरेगा को आपने ठप्प कर दिया। 38 लाख 25 हजार 309 परिवार आज भूखे मर रहे हैं। गांव के रहने वाले लोग हैं। आप उनको काम नहीं दे रहे हैं। 600 करोड़ रुपये से अधिक की मजदूरी का भुगतान अभी शेष है। बहाना है कि केंद्र से फंड नहीं मिल रहा है। बहाना है कि केंद्र नाम बदलने वाला है। बदल दो न, बदल ही तो दिया तो पैसे तो भेजो। राम जी के नाम से नियम-कानून बनाये हो तो नियम तो बना दो। कलेक्टर यहां बैठे हुए हैं, कब वहां नियम आएगा, तब हम बनाएंगे, काम करेंगे। हैं? वर्ष 2023-24 का मेरे पास कागज आया है। आपके प्रशासनिक किताब में है कि वर्ष 2023-24 में 11 लाख 11 हजार 605 परिवारों को 100 दिनों के कानूनी रोजगार से वंचित कर दिया गया। मुख्यमंत्री जी एवं मंत्री जी दिल्ली जाकर डबल इंजन सरकार से गिड़गिड़ा चुके हैं, महाराज। अब केंद्र सरकार आपके साथ कैसा सौतेला व्यवहार कर रही है, इसके जवाबदार तो हम नहीं हैं। मंत्री जी के क्षेत्र बलरामपुर, रामानुजगंज जिले के हरगवा ग्राम पंचायत में प्रधानमंत्री आवास में भी गड़बड़ी हो रही है। आपने तो प्रधानमंत्री आवास को ऐसा बना दिया है कि रोड में देखते हैं तो लगता है कि हर जगह प्रधानमंत्री आवास बन जाएगा। मगर वहां भ्रष्टाचार शुरू हो गया है। जहां पैसे भी नहीं हैं, जहां जमीन भी नहीं है, वहां आपने पैसे अलॉट कर दिये और दो-दो नाम को एक कर रहे हैं। विस्टा, पैकरा। विस्टा-वी और उसके बाद बिस्टा, दोनों को एक आदमी मान लेते हो और पैसे निकाल लेते हो। ये कलेक्टर लेता है या एसडीएम लेता है, कौन लेता है, इसकी जांच करवा दो। हमारी राष्ट्रपति महोदया हैं। ऐसा मानते हैं कि कवर्धा में उनके दत्तक पुत्र हैं। माननीय धर्मजीत जी, नागडबरा ग्राम में जो बैगा लोग हैं, आप हर दूसरे दिन उनके लिए सवाल उठाते हैं कि ये हमारे राष्ट्रपति जी के दत्तक पुत्र हैं। एक ही परिवार के तीन लोगों की जघन्य हत्या हुई थी। कुल्हाड़ी और खून के धब्बे मिले थे। पुलिस ने बिना परिजनों को बताये बगल के खेत में पोस्टमार्टम कर दिया और आगजनी बताकर जो आरबीसी से 12 लाख रुपए से मिलते हैं, उतना देकर उसको रफा-दफा कर दिया। चलिए, यह तो दूसरी बात है। बलरामपुर-कुसमी में अवैध बॉक्साइट खनन होता है। उसका विरोध करने पर एसडीएम, जिसका खाली स्थान नाम है, मैं नाम नहीं बताऊंगा और उसके साथियों ने 15 फरवरी को एक निर्दोष आदिवासी की हत्या कर दी। मैं मृतक का तो नाम बता सकता हूँ। रामनरेश

राम की लाठियों से पीट-पीटकर हत्या कर दी। एसडीएम और तहसीलदार के संरक्षण में प्रतिदिन चार-पांच ट्रक बॉक्साइट झारखंड, लोहरदगा भेजा जा रहा है। वह आपकी शिकायत करता है तो आतंकवादी बन जाता है। आप उसको आतंकवाद बना देते हो। जो जंगलराज चल रहा है, वह चरम पर है। बारोद-गुरुर में पुलिस प्रताड़ना और 25,000 रुपये की अवैध वसूली से तंग आकर एक व्यक्ति जिसका नाम पुराणिक जोशी था, उसने शिकायत की लेकिन आपने कुछ दर्ज नहीं किया तो जाकर उसने फांसी लगा ली। अब उसने फांसी लगा ली तो आप सीधा-सीधा उसको आत्महत्या तो बताएंगे ही। माननीय उप मुख्यमंत्री जी हैं। आपके कवर्धा जिले में जो खूनी खेल चल रहा है या खूनी संघर्ष चल रहा है, उसके बारे में हम लोग कुछ कह सकते हैं? आप प्रदेश के लिए जवाबदार हैं, भागीदार हैं। 16 नवंबर, 23 को कोरिया जिले में 19 साल की लड़की के साथ सामूहिक बलात्कार हो जाता है। क्या हुआ उसका? उसको जिंदा जलाने का प्रयास किया गया और वह बेचारी आज भी अपनी जिंदगी, मौत से जूझ रही है। कोरबा में ढाई साल के मासूम बच्ची की हत्या हो जाती है। हत्या करके सागौन बाड़ी में फेंक दिया जाता है। उसके मां-बाप भटक रहे हैं। क्या हुआ उसका? जांच हो पाई कुछ? यह जंगलराज नहीं है तो और क्या है? सूरजपुर में एक एस.डी.एम. अपनी समस्या को लेकर आए फरियादी को ही कमरे में बंद करके पीटता है। कबीरधाम में जो हुआ सो आप देख ही रहे हैं। कोमल साहू की हत्या कर शव पेड़ में लटका दिया जाता है और खैरागढ़ में राजेश्वर वर्मा की गला घोटकर हत्या कर दी जाती है। अध्यक्ष महोदय, राजनांदगांव क्षेत्र आपका है। राजनांदगांव से राजधानी तक जिस ढंग से खुलेआम गोली चल रही है, चाहे उसे गैंगवॉर कहें, चाहे रेतवॉर कहें, इस तरह से जो अपराध खुलेआम हमारे राजधानी तक पहुंच गए। आजकल बोलते हैं कि 3 लाख में खून हो जाता है। बहुत लड़के फ्री में घूम रहे हैं और 3 लाख में लोग आ जाते हैं। इस तरह के लोग पैदा करने के लिए पीछे एक ही कारण है कि सूखा नशा जो गली-गली, घर-घर घूम रहा है। हर बच्चा उसी में संलिप्त हो गया है। मेरे दूर का रिश्तेदार अभी परसो-नरसो मर गया, हंसते-हंसते मर गया। गोली खाया होगा, शराब पिया होगा। वह घर गया तो उसके पिता ने कहा बेटा तुम नशे में क्यों हमारे समाज को बदनाम कर रहे हो? पिता ने बस इतना कह दिया, वह कमरे के अंदर गया और कहा कि अब जाथो में, देखिए तुमन, बड़े आदमी हो। वह फांसी लगा लिया, मर गया। अध्यक्ष महोदय, जो नशे की गोलियां आ रही हैं, उनके क्या-क्या नाम हैं आप बताओगे? उसको खाने से ताकत बढ़ जाती है, हिम्मत आ जाती है। हमारे जैसा आदमी जो एक चाकू नहीं मार सकता, आप मुझे गोली खिला के देखिये, तो मैं 25 चाकू एक आदमी को गोद सकता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- किसे मारेंगे?

डॉ. चरणदास महंत :- आप जिसको कहें। कोई नहीं तो चंद्राकर जी तो हैं ही। (हंसी)

श्री धर्मजीत सिंह :- दूसरी बात, मारने का इशारा किस तरफ है? बाजू में है कि आगे है?

श्री कवासी लखमा :- आपके बाजू में है।

डॉ. चरणदास महंत :- आज जो सामाजिक परिस्थितियां बन रही हैं, ढाई साल में आपकी कृपा से जो कुछ हो रहा है, मैं वह बता रहा हूं। मैं शायद आरोप किसी पर नहीं लगा रहा हूं। 16 जून को चलिए, कहां गए? कोई है यहां? कोरिया जिले में जो दिल दहला देने वाली हत्या हुई है, जहां आप सब हमारे साथी लोग होकर आए हैं। घटना तो रेत की है। भाई, रेत की लड़ाई-झगड़े में समझौता होता है, पुलिस वाले करा देते हैं। उसको गाड़ी के अंदर घुसा कर, तेल डाल कर, ज्वलनशील तेल डाल कर, आग लगा के जला दिया जाता है। छोटी-मोटी लड़ाई में तीन व्यक्तियों की हत्या हुई है, कभी सुना है? हसौद के विधायक कहां हैं? हसौद में रात में दो लड़के घुस जाते हैं, वह विधायक नहीं आए हैं क्या? लड़के को गोली से मार के चले जाते हैं और उसके बाप को कहते हैं, ऐ, तोर लईका ला मार दे हन और ले जाते हैं। वहां लड़की बैठी है, उसको कहते हैं कि दिखाओ, तुम्हारा मोबाइल दो। उसका मोबाइल भी ले जाते हैं। यह दुस्साहस हसौद जैसे क्षेत्र में? मेरे सक्ती क्षेत्र में अभी दो लोग मोटरसाइकिल में बैठ के आए, एक युवती थी, उसके घर में पूछा, यह लड़की कहां है। उसके पिता समझे कोई काम के लिए आया होगा, [XX]⁵ बुला दिये, क्या नाम था पता नहीं, मैं नाम नहीं ले रहा हूं। वह चौहान थी। हमारे लोग जांच करने गए थे। जैसे ही लड़की आई, धड़-धड़-धड़ करके तीन गोली मार के चले गए। सर पर मारे हैं, जानकार लोग हैं, कुछ लोग पकड़े गए हैं। पता चला कि 3 लाख में मारने वाले आए थे। यादव जी, यही हुआ न कि और सस्ता था? कोटमी जो पेंड्रा का बाजार है, वहां पर दुकान में अपना सोना, चांदी का सामान बेचने गये। गरीब लोग हैं, छोटा बाजार लगता है, वहां उनको लूटने की कोशिश किये और नहीं दिये तो गोली मारकर चले गये। ये बाजार की हालत है। हम अपने हाटबाजार में चिकित्सालय भेजते थे, डॉक्टर रहता था, सूजी लगाता था, बीमारी दूर करते थे। वह कहां गया? अब आपके यहां खून बिक रहे हैं, बंदूक बिक रही है, गोली बिक रही है। क्या हो गया? ढाई साल में इतना खराब समाज कहां से आ गया? रेत उत्खनन का मामला तो मैं कह ही चुका हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं मानता हूं कि नदियां हमारे पर्यावरण की रीढ़ हैं। अगर हम नदियों को खराब कर देंगे, खोद डालेंगे तो हमारा भविष्य क्या होगा? महाराज, हम तो 5-7 साल में मर जायेंगे और सब लोग यहां के लोग 10-15 सालों में जाने वाले हैं। हमारी पीढ़ियां यहां क्या करेंगी? वह कैसे पर्यावरण की रक्षा करेंगी? इस बारे में भी सोचना चाहिए। इसलिए हम लोगों को ऊपर वाले ने किसी को एम.एल.ए., किसी को मंत्री, किसी को मुख्यमंत्री, आपको अध्यक्ष, मेरे को नेता प्रतिपक्ष बनाकर भेजा है तो कुछ तो करने के लिये भेजा होगा। अगर ऊपर भगवान है तो कुछ तो सोचते होंगे कि तुम लोग जाओ, अपने समाज की रक्षा करो। अध्यक्ष महोदय, ये बरबाद करने तो हम लोग नहीं आये हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अब रिकार्डतोड़ शराब की बिक्री के बारे में मैं कह रहा था। ये लोग कहते थे न, बदनाम करते थे कि हम लोग गंगा जल उठाकर कसम खाये हैं। हमने गंगा जल कभी नहीं

⁵ [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

उठाया था। आप लोग छपवाते थे कि ये लोग ऐसा कर रहे हैं, वैसा कर रहे हैं। हम आयेंगे तो गांधी जी की फोटो छपवा रहे हैं। क्या हुआ? रायपुर में ही 210 करोड़ रुपये की शराब बेची गई है। 2026 को एकमात्र महीना ऐसा रहा जहां आपने एक महीने में 1 हजार करोड़ रुपये पार कर लिया। और उसका क्या हश्र हो रहा है। रोज 4-5 लोग, तीन सवार, दो सवार मोटर साइकिल में बैठकर जाते हैं, किसी से भी भिड़ जाते हैं, कभी ट्रक की चपेट में आते हैं, कहीं हाईवा की चपेट में आते हैं। आपके पुलिस के अधिकारियों के बच्चे दारू पी-पीकर मर रहे हैं। दारू पी-पीकर पूरी सड़क में जहां भी जाओ डर लगता है कि इस सड़क में मृत्यु हो गई तो यहां रुकेंगे तो ये लोग हमको मारेंगे या हम बचने की कोशिश करेंगे। हम लोग पुलिस वालों को बोल देते हैं कि भैया देख लो क्या हो गया। मगर ऐसा कौन या यहां कार में यात्रा करने वाला यात्री बैठा है जो हर पहले, दूसरे दिन अपनी गाड़ी के सामने या बाजू में दारू पीकर गिरे हुए आदमी को नहीं देखता। तो इनको बंद करिये। चिफफंड आपने कर ही लिया। औद्योगिक दुर्घटनायें, उद्योग मंत्री जी ने आपने ही जवाब दिया है कि 242 उद्योग ऐसे हैं, जहां लोग मरे। आप जिस अपने चन्द्रपुर की चर्चा कर रहे थे, मैंने उस दिन विस्तार से नहीं पूछा क्योंकि आपके पास समय कम था। बायलर के सामने 25 लोग बैठे थे और वह मर गये। उसकी गरम-गरम हवा निकली और वह मर गये। अच्छा बताओ भैया, बायलर में इतने लोगों का क्या काम है? आपने तो कह दिया कि बायलर के नीचे खाना खा रहे थे, छुट्टी थी। क्या वह वहां के रेगुलर मजदूर थे? उस वेदांता की फैक्टरी में रेगुलर मजदूर काम करने आये थे। वह ठेके के मजदूर थे। वहां क्या कर रहे थे? आपको पता है कि क्या कर रहे थे? आपने तो मेरा नाम लिया कि माननीय मंत्री जी गये थे। आपको पता है कि वहां मजदूर क्या कर रहे थे?

सदन को सूचना

अध्यक्ष महोदय :- आज भोजनअवकाश नहीं होगा। मैं समझता हूं सभा सहमत है।

(सभा द्वारा सहमति प्रदान की गई)

अध्यक्ष महोदय :- भोजन की व्यवस्था माननीय सदस्यों के लिये लाबी स्थित कक्ष में, पत्रकारों के लिये प्रथम तल पर पत्रकार कक्ष के समीप की गई है। कृपया सुविधानुसार भोजन ग्रहण करें।

डॉ. चरणदास महंत :- सर, दिन का ही मिला है या रात को भी मिलेगा ?

अध्यक्ष महोदय :- अभी तो लंच है, डिनर की बाद में घोषणा करूंगा।

संसदीय कार्य मंत्री (केदार कश्यप) :- विधान सभा की ओर से है।

मंत्रिमंडल के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा (क्रमशः)

डॉ. चरणदास महंत :- हां, ठीक है न। ऐसे में तो कोई हिलाने की हिम्मत नहीं करेगा। मैं भी करूंगा तो आप बाहर जाकर कहोगे कि मिली-जुली सरकार है। इनका रिश्ता विष्णुदेव साय जी से अच्छा है या वह व्यवस्था कर देंगे तो मेरे ऊपर आरोप लग जाएगा, उनके ऊपर आरोप लग जाएगा तो सबसे अच्छी जगह है कि माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेश पर कुछ भी करते रहो, सब फ्री हैं, उन पर आरोप नहीं लगता। मैं चंद्राकर जी पर आरोप नहीं लगा रहा हूं, मैं चंद्राकर जी की प्रशंसा करते हुए पूछना चाहता हूं कि आपने आउटसोर्सिंग के बारे में पूछा था। यह बहुत अच्छी बात है। आप ही पूछो, मेरे कहने से शायद जवाब नहीं देंगे कि यह आउटसोर्सिंग क्या बला है साहब? हमारे यहाँ के बच्चे हाथ में हाथ धरे बैठे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- अभी आदरणीय भूपेश बघेल जी जा रहे हैं, मैं आउटसोर्सिंग में बता देता हूँ।

डॉ. चरणदास महंत :- वह जा रहे हैं इसलिये आउटसोर्सिंग का बता रहे हैं। भैया, दो मिनट बैठ जा।

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं, उनको ही सुनाना था। वह आपको नहीं सुनाना था, आप आउटसोर्सिंग के बारे में सुन लीजिये।

डॉ. चरणदास महंत :- सुनाइए।

श्री अजय चंद्राकर :- आपके जन घोषणा-पत्र में आउटसोर्सिंग समाप्ति लिखा था और आउटसोर्सिंग आपने कैसे किया, बताऊँ?

डॉ. चरणदास महंत :- हां, बताइए।

श्री अजय चंद्राकर :- आप 3 राज्यसभा सदस्य दिल्ली से लाये।

डॉ. चरणदास महंत :- इसको आउटसोर्सिंग नहीं कहते।

श्री अजय चंद्राकर :- वही असली आउटसोर्सिंग है। आप शॉर्टकट में समझ लीजिये, श्री टी.एस. तुलसी साहब और रंजिता रंजन और एक और कोई है।

डॉ. चरणदास महंत :- आप नाम क्यों ले रहे हैं?

श्री अजय चंद्राकर :- मैं आरोप लगाने का समय नहीं ले सकता लेकिन असली आउटसोर्सिंग यह है कि आपने जन घोषणा-पत्र में कहा कि हम आउटसोर्सिंग बंद कर देंगे और आपने आउटसोर्सिंग कर दिया।

डॉ. चरणदास महंत :- इसके अलावा आउटसोर्सिंग का आपके पास कोई अच्छा उदाहरण नहीं है। (हंसी) आपका यह उदाहरण अमान्य किया जाता है। मैं तो बच्चों की जगह दूसरे क्षेत्र के, दूसरे

प्रदेश के बच्चों को, चाहे डॉक्टर की नियुक्ति हो, चाहे चिकित्सालय हो, नर्स तक बाहर से ला रहे हो, वार्डबॉय आप बाहर ला रहे हैं, सूजी लगाने वाले बाहर से ला रहे हैं । यहाँ भी तो बच्चे पढ़े-लिखे हैं । इतने बेरोजगार घूम रहे हैं । छत्तीसगढ़ के प्रति आउटसोर्सिंग पर दया करिए और अब थोड़ा सा लोक निर्माण की बात कर लेते हैं । मैं नहीं जानना चाहता कि कौन मंत्री जी हैं । आपके जो रोड फटे-फटे हैं, हॉठ नहीं रोड । (हंसी) आपके रोड वहीं फटे हैं जहां-जहां वहीं उचकते हैं, हम जैसे बुजुर्गों की कमर तत्काल आवाज देने लगती है, बात करने लगती है । उसका क्या होगा, वह कब तक बनेगी ? माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं गलत अंदाज में कुछ नहीं कह रहा हूँ, मैं यही कह रहा हूँ कि पी.डब्ल्यू.डी. के काम हैं, यह हमारा पवित्र मंदिर है, बहुत सुन्दर बना है । सभी लोग तारीफ करते हैं । चंद्राकर जी, लेकिन हमने देखा कि पहली बरसात में इस विधानसभा में जगह-जगह बाहर पानी चुहने लगा । हमने बनाया है, क्या मैंने गलत कर दिया ? हमने ही शुरू किया था, अब मैं नाम लेता हूँ । सोनिया जी को हम बुलाये थे, उनसे हमने पत्थर रखवाया था । आपने हमारे प्रधानमंत्री जी को बुलाया था, नरेन्द्र मोदी जी तो आपके रहे नहीं, वह हमारे हैं । हमारे प्रधानमंत्री जी को बुलाया था, इतना शानदार उद्घाटन हुआ, भव्य विधानसभा । कौन, किस व्यक्ति ने बनाया होगा ? शंकर जी की मुंडी में उसमें पानी चुहा रहा है या वह कोई तंत्र-मंत्र किया है ? यह क्या है ? पहली बरसात में, साहब, आपको लोगों ने डर के मारे बताया नहीं होगा, खूब पानी चुहा । बाहर भी और अंदर भी और हम लोग गीले नहीं हुए वह बात अलग है । आने से पहले बना दिया गया था तो ऐसे लोगों को माफ मत करिए । इसमें 300 करोड़ रुपये से ज्यादा पैसे लगे हैं । आप देखियेगा, आप जाते नहीं हैं, देखते नहीं हैं, एक भी कोर ठीक नहीं है, मैं इसी का कोर देखता हूँ, यहां ऐसा है, मैं इस बात को कह देता हूँ, हाथ हिल जायेगा, जल्दी का बहाना करने के बाद चूंकि हमारा विधानसभा है, हमारे बच्चों का विधानसभा है, हमारे बुजुर्गों के सपनों का है । इस तरह से जो दरारें आ रही हैं, सड़कों पर दरारें आ रही हैं, पुल बनते ही ढह जा रहे हैं, पुल पहले बरसात में जैसे ढह रहे हैं, कम से कम विधानसभा में पानी नहीं चुहना चाहिए । साहब, ऐसे उस महारथी को कुछ करिए । माननीय मुख्यमंत्री जी, आपके क्षेत्र में भी रायगढ़ में, हमारे क्षेत्र चंद्रपुर में, जांजगीर-चांपा में, सिवनी, छुरी में और कई जगह कोसा के कपड़े बनाये जाते थे और कम से कम मुझे इस बात का गर्व है कि हमारे क्षेत्र के कपड़े विदेशों में जाया करते थे। वहां हमारे जांजगीर-चांपा, चन्द्रपुर के बच्चों ने दुकान खोल ली थी और इसको हमने बड़े मुश्किल से ठीक किया था। मैं आपको यह बता दूँ कि यहां का कोसा का कपड़ा कितना कीमती और बेहतर माना जाता था। जब वर्ष 1969 में मेरे पिताश्री लोक निर्माण मंत्री रहें तब उन्होंने इसको बढ़ावा देने के लिए यह आदेश किया था कि अगर यहां पर जितने भी हमारे विश्रामगृह में परदा किसी हाथ करघा का लगेगा तो वह कोसे का होगा। हमें उस कोसे के कपड़े को बढ़ावा देने का इतना फायदा मिला कि हमारे कोसे के कपड़े विदेशों में जाने लगे। आज यहां कोसा का कपड़ा नहीं मिलता है। बस्तर में कोसा पैसा होना बंद हो गया है। यह क्यों पैदा होना बंद हो गया है ?

अर्जुन के पेड़ में कोसा होता है, उसमें जो फल, कीड़ा लगता है उससे कोसा बनाते हैं और आपने कोसा बनाने वालों की दुर्दशा देखी होगी। आप भी गांव के आदमी हैं वह कैसे अपने जांघ में एक-एक सूत को भरते हैं, भईया, फिर उसका धागा बनाते हैं, उसका कपड़ा बनता है। आज वह काम बंद है, उन मजदूरों को काम नहीं मिल रहा है। मैंने तो यह सुना है कि आज 20 हजार मजदूर काम खोज रहे हैं। अब उनको काम दे दीजिए। कम से कम उनको कपड़े का काम दे दीजिए। जब यहां हमारे प्रधानमंत्री जी आये थे तब उस समय हमारे लोगों ने उनको यह भेंट किया था। वह चांपा के केले से बना हुआ कपड़ा था। उसे केले की पीथ, मतलब पेड़ से कटोरी में रोखड़-रोखड़ कर यानी ऐसा-ऐसा कंधी बनाकर, रेशा बनाते हैं। फिर उस रेशे से धागा बनाकर, कपड़ा बनाते हैं। हमने उसे प्रधानमंत्री जी को दिलवाया था, आप यह प्रधानमंत्री जी को दे दीजिए। यह हो सकता है कि उनकी कुछ कृपा बरसे और यहां पर कुछ पैसे आ जाएं और यहां के हाथकरघा वालों को कुछ काम मिले, लेकिन कुछ नहीं हुआ। मंत्री जी सुनिये, सिवनी में सरसों के पेड़ की डंठल से ...।

कृषि मंत्री (श्री रामविचार नेताम) :- माननीय नेता जी, सरसों के पेड़ की डंठल नहीं, उसे अलसी के पेड़ की डंठल से बनाया जाता है।

डॉ. चरण दास महंत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माफी चाहूंगा। उसे अलसी के पेड़ की डंठल से बनाया जाता है। आप उसे पहनते हैं। हम लोग तो अलसी को खाते हैं, उसमें ओमेगा-3 होता है, मैं अलसी भूल गया था। यहां चांपा-सिवनी में अलसी के पेड़ की डंठल से कपड़ा बनता है। मैंने अपने साथियों से निवेदन किया था कि अगर हम अलसी की खेती को बढ़ावा देते हैं तो अलसी के पेड़ की डंठल से कपड़ा भी बन जाएगा और अलसी, हमारे लोगों के खाने-पीने के काम आ जाएगी। यह जानवरों के भी काम आ जाएगा। जिस ढंग से किसानों की उन्नति होगी, वह एक नया समाज पैदा करेगा। मगर ऐसा नहीं हो पाया। मैं यह कह रहा हूँ कि एक तो आप बस्तर में कोसे के पौधे का संरक्षण करिये, जिससे हमें कोसे का फल मिले। आप कृषि विभाग के माध्यम से अलसी के पेड़ लगाने को बोलिये ताकि यहां ज्यादा से ज्यादा लोग अलसी का पेड़ लगाएं और उससे कपड़े बनाएं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे बड़ी ही खुशी होगी, शायद अध्यक्ष महोदय, आपको जानकारी नहीं होगी, माननीय मुख्यमंत्री जी को तो जानकारी नहीं है, यह मुझे पता है। हमारे यहां पूर्व वित्त मंत्री श्री रामचन्द्र सिंहदेव हुआ करते थे, अब वह चले गये। उनको कपड़ों में कारीगरी करके नई-नई चीजें बनाने का बड़ा शौक था। उन्होंने चन्द्रपुर में एक बहुत बढिया सुन्दर साड़ी बनवाई। उन्होंने उसे मुझे दिखाया तो उन्होंने कहा कि मैं यह हेमामालिनी जी के लिए साड़ी बनवा रहा हूँ। आप सुन लीजिए। उन्होंने हेमामालिनी जी के लिए साड़ी बुनवाई। मैंने उनसे गलती से यह पूछ लिया कि सर, यह कितने की साड़ी है, इसे मैं ले जा सकता हूँ। उन्होंने बताया कि यह 90 हजार रुपये की साड़ी है। यह केवल एक ही साड़ी बनी है जो हेमामालिनी जी के लिए है। जिस चन्द्रपुर में हेमामालिनी और कई अभिनेत्रियों के लिए

स्पेशल साड़ी बनती है, उनकी कला को सुरक्षित रखने की जरूरत है। उनकी कला को ज्यादा से ज्यादा और कोई कलात्मक रूप दें तो यह बहुत अच्छा होगा। मेरे बहुत से साथी मुझसे नाराज भी हो सकते हैं कि मैं ज्यादा समय ले रहा हूँ। यह निर्दोष आदिवासियों की रिहाई का मामला है, नक्सलवाद खत्म हो गया। आप लोगों ने विधान सभा में माननीय प्रधानमंत्री जी को, माननीय गृह मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया, हम लोग उस दिन नहीं थे क्योंकि हम लोगों के मन में इच्छा थी कि जो नक्सलवाद में हमारे गांव के लोग मरे हैं, बीजापुर के लोग मरे हैं, सुकमा, दंतेवाड़ा के लोग मरे हैं, उनके लिए दो शब्द बोल देते। आपने कुछ नहीं बोला, सिर्फ धन्यवाद दिया। हम लोग मरने वालों के साथ हैं, गरीबों के साथ हैं। हमने कहा कि यहां से चलो, यहां तो चमचाई चल रही है तो हम लोग चले गए। उनके जमाने में कोई कंडिल पकड़ने वाला, कोई पानी देने वाला, कोई गरीब आदमी उनको रास्ता बताने वाला जो बच गया है, जिसको आपने जेल में रखा है और बड़े-बड़े बंदूक चलाने वालों, मर्डर करने वालों को आपने छोड़ दिया। उनके पुनर्वास की व्यवस्था हो रही है। मेरा निवेदन है कि उन गरीबों का ख्याल करिए, यह मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ।

अध्यक्ष महोदय, हमने रेत की बात जरूर की है, मगर असली बात नहीं कर पाए हैं कि रोज, हर रोज, जब शाम हो जाती है, रात हो जाती है तो ट्रक चला जाता है, हाईवा चला जाता है। आपने रेत का धंधा शुरू किया है, रेत का व्यापार आपके संरक्षण में चल रहा है।

श्री भूपेश बघेल :- नेता जी, थोड़ा जोर से बोलिए, मुख्यमंत्री जी सो रहे हैं।

डॉ. चरण दास महंत :- ऐसा नहीं है।

श्री भूपेश बघेल :- उनके विभाग का है, थोड़ा जोर से बोलिए।

श्री रामकुमार यादव :- ओ व सोवत नहीं हे, चिंतन करथे।

डॉ. चरण दास महंत :- तो रेत के जो धंधे चल रहे हैं, हो सकता है कि मेरा उबासी वाला भाषण चल रहा होगा।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री केदार कश्यप) :- आपने सही कहा, आप उबासी वाला भाषण दे रहे हैं, ऐसा लग रहा है।

डॉ. चरण दास महंत :- हो सकता है। जिस बात को सुनना नहीं हैं, आंखें बंद करके चुपचाप पड़े रहो, बढ़िया रहता है। मेरी जानकारी में (माईक की ओर देखते हुए) इसको और ऊपर कर दें, पहले आप करवा दीजिएगा, सचिव जी नहीं हैं। मेरी आवाज कम है, मैं क्या करूँ? खनिज, पर्यावरण, पुलिस विभाग, संरक्षण आजकल दोस्ताना संबंध हो गया है और 200 करोड़ के अवैध रेत खनन का उन्होंने 2000 करोड़ रुपये वसूल किया। अब ठीक है। मैं सिर झुकाकर कहूंगा तो ये कहेंगे कि अपने मन से नहीं बोल रहे हैं, पढ़-पढ़कर बोल रहे हैं। इसलिए मैं कभी-कभी सिर ऊपर कर लेता हूँ। बलरामपुर में पुलिस आरक्षक को गाड़ी से कुचलकर मार दिया, वन विकास निगम के अधिकारी को पीट-पीटकर

मरणासन्न कर दिया । राजनांदगांव के मुढीपार में 800 हाईवा से 2 लाख रूपए अवैध रेत वसूली किए, बस्तर में एनएमडीसी के लौह खदानों से निकलने वाले लाल पानी से हमारी डंकिनी और शंखनी नदियों को एशिया की सबसे प्रदूषित नदियां बना दी गईं । 100 से अधिक गांव में आदिवासियों के पीने का पानी, पानी नहीं रह गया, जहर बन गया है । मवेशी ब्लू डस्ट से कीचड़ में दब-दबकर मर रहे हैं, रायपुर के उरला, सितलरा, बिरगांव आसपास क्षेत्रों में जो ताप विद्युत संयंत्र हैं, मैं कोरबा को भी जोड़ता हूं, कोरबा है, रायगढ़ है, इसमें जो राखड़ निकल रहे हैं, इसमें जो जहरीले धुंए निकल रहे हैं, ऑक्सीजन की कमी हो रही है, अभी-अभी यहां के धरसीवा में, सिलतरा में कई लोगों की मृत्यु हुई है। उन पर भी आपकी दया की जरूरत है, आप उन पर दया करिए । हमारी बेटियां जो आदिवासी कन्या छात्रावास में हैं, उनकी रक्षा करने में सरकार पूरी तरह से विफल रही है। जब हम उनकी बात करेंगे तो ऐसा लगता है कि हम अपनी जांघ खोल रहे हैं, जांघ दिखा रहे हैं । अब बच्चियों को 10-11 साल में गर्भवती करके बाथरूम में बच्चे पैदा करो, इतनी सारी हमारी महिला सदस्य इधर भी हैं, उधर भी हैं, इस बात को कहूं तो वे क्या सोचेंगी ? उन बातों की ओर कौन देखेगा । आपके पण्डरिया में ही छात्रा के साथ व्याख्याता ने जो कृत्य किया है, आप शायद उसको रख चुके हैं, सुकमा में जो कुछ हुआ, उसे सुकमा वाले बताएंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- नेता जी, आप सिर ऊंचा करके आत्मविश्वास से बोलिए। आपका कांफीडेंस लूस दिख रहा है । हम लोग बुरा नहीं मानेंगे । आप आत्मविश्वास से बोलिए न । आरोप नहीं है तो हम बता देते हैं कि क्या बोलना है ? आपसे मजाक नहीं कर रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, इसके बाद आप ही को बोलना है।

श्री अजय चन्द्राकर :- नेता प्रतिपक्ष का भाषण आत्मविश्वास के साथ होना चाहिए। वह सदन की प्रापटी है।

डॉ. चरणदास महंत :- इसीलिए तो इन्होंने कहा कि जोर से बोलो।

श्री रामविचार नेताम :- यदि ऐसा है तो कुछ दिनों के लिए प्रतिनियुक्ति पर ले जाईये। (हंसी)

डॉ. चरणदास महंत :- मैं तो बोल रहा हूं कि आज ही आ जाओ। कुछ दिनों के लिए प्रतिनियुक्ति पर आज आ जाओ, फिर चले जाना।

श्री भूपेश बघेल :- ये तो वहीं से कर रहे थे। हम लोगों को उधर वहीं से पूरी भूमिका दिला रहे थे, लेकिन आपने ई.डी. को भेज दिया, तब से आपके सुर बदल गये।

श्री अजय चन्द्राकर :- ई.डी. मेरे यहां नहीं आया है।

श्री भूपेश बघेल :- हां, परिवार में गया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं बोलने के लिए खड़ा होऊंगा तो उस पर जरूर बोलूंगा, आप जिस ई.डी. पर बोल रहे हैं।

डॉ. चरणदास महंत :- वह तो आपका पारिवारिक मामला है। आप कहां छोड़ सकते हो।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या ?

डॉ. चरणदास महंत :- आप दोनों के भी अटूट संबंध हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- वह संबंध अवैध नहीं है। अवैध तो आप ही के साथ है।

डॉ. चरणदास महंत :- मैं समझ गया न, वैध सम्बन्ध गिलासों से होती हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने और मेरे मित्रों ने, मेरे साथियों ने, मेरे विधायकों ने इस तरह के बहुत सारे आरोप लगाये हैं। चूंकि मैंने बहुत सारे आरोपों को अभी छूआ नहीं है। क्योंकि 136 आरोप लगाना और उसको नहीं छूयेंगे तो आप कहोगे कि यह [xx] बना रहे हैं। कुछ बातें छूट गई हैं, मैं उसको गिनती में कह देता हूं। मैं उस पर भाषण नहीं दूंगा। गौवंश की दुर्दर्शा, इसके बारे में बोलने की कोई जरूरत नहीं है। हमारे यहां रोड-रोड में कितनी गायें और बैल इस प्रकार से रोज दुर्घटनाओं में खत्म हो रहे हैं, आपने एस.आई.आर. में नाम काटे, मैं अभी उस पर कुछ बोला नहीं हूं। मैं महिला अपराध पर बोलने जा रहा था कि सामने से टोकाटाकी शुरू हो गई। हम लोगों ने किसानों से अवैध हमाली करवाई, जबकि हमाली का पैसा केन्द्र सरकार देता है। अंधाधुंध पेड़ों की कटाई शुरू हो गई है। बस्तर में हो गया, राजनांदगांव में हो गया, सरगुजा में हो गया है। तेन्दूपत्ता संग्राहकों के साथ धोखा किया है, जो आपने मोदी की गारन्टी के नाम से 4500 रूपया देने का वादा किया है, वह कहां है, अभी पता नहीं चला है। फ्लाइएश और राखड़ की वजह से एक्सीडेंट हो रहे हैं। वे गाड़ी अंधाधुंध भगाये जा रहे हैं। आपको उसके बारे में विचार करना चाहिए, प्रशासन को विचार करना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, एक सबसे बड़ी बात बिजली कर दर का है। पहले 20 पैसा, फिर 20 पैसा फिर 50 पैसा बढ़ा है। बिजली का दर तो बढ़ गया है। बिजली का दर इतना बढ़ने के पीछे क्या कारण है ? आप बोलते हो कि हमारे अधिकारी बहुत अच्छे हैं, लेकिन वह समझ से परे है। यहां तक की पदोन्नति में भ्रष्टाचार हो रहा है। आयुष्मान भारत योजना, नकल और नकली दवाओं का गठजोड़, केन्द्रीय पुल में चावल का कोटा नहीं मिलने से 4400 करोड़ रुपये का नुकसान, सहकारी दुग्ध संघ में देवभोग अलोकतान्त्रिक हस्तान्तरण, बी.पी.एल. कार्डों में 5 लाख 11 हजार की वृद्धि, चिटफण्ड का नया जाल फ्रोडामेक्स, 2 लाख 11 हजार किसान धान बेचने से वंचित, पर्यटन मण्डल करोड़ों रुपये का अपव्यय, किताबों की रद्दी का महाघोटाला, मार्कफेड की स्वेच्छाचारिता, एकलव्य विद्यालय में आऊटसोर्सिंग खेल, मैं जो अभी कह रहा था, अफीम की खेती पर हमारे साथी बोलेंगे, जिनके-जिनके पड़ोस में हो रहा है, प्लास्टिक के बोतलों में शराब की बिक्री शुरू हो गई है। आप उसका फायदा किसको दे रहे हैं, उसको आप जानें। आप मरने की व्यवस्था कर रहे हैं, यह मैं कहना चाहता हूं। पुलिस प्रताड़ना से कई जगह ग्रामीण आत्महत्या करने लगे हैं। कामधेनु विश्वविद्यालय निर्माण में अभी आपने विधानसभा में सुना होगा। सी.एस.पी.डी.सी.एल. बिजली विभाग का निविदा घोटाला, रायपुर में क्या हो रहा है? ट्रांसफार्मर कैसे

खराब हो रहे हैं? कैसे टैंडर बेचे जा रहे हैं? यह आपने सुना होगा। जगदलपुर के सुपर स्पेशलिटी को तो आपने बेच ही डाला। प्रधानमंत्री आवास का बहुत बड़ा घपला है महाराज, आप लोग खुश हो रहे हैं, अपने प्रधानमंत्री जी को खुश करने के लिए, यह उचित नहीं है। एन.जी.टी. के निर्देशों की आप लोग पूरी अवमानना कर रहे हैं, खुला आपने जो किया है, जो भ्रष्टाचार से लिप्त होने पर आप लोगों ने जो उसको छूट दे दिया है, वह बहुत चिंता का विषय है। मक्का खरीदी से आपने इनकार कर दिया। आपने आजकल गन्ना खरीदी से भी इनकार कर दिया। वनरक्षकों की, पुलिस की भर्ती अभी तक रुकी पड़ी है, आप करना नहीं चाहते। अध्यक्ष महोदय, आपके राजनांदगांव में पुलिस भर्ती में धांधली हुई। हम लोगों को पढ़-पढ़ के लज्जा आती था कि हमें तो हमें, लोगों ने आपको भी नहीं छोड़ा। योग दिवस के नाम पर 10 करोड़ का अपव्यय हो गया। सहकारी संस्थाओं को तो बिल्कुल आप मारने पर तुले हैं। पाटेश्वर धाम जिसके लिए हमारी बहन जी रोज चिल्लाती हैं, कोई सुनवाई नहीं है। बीरगांव के नगर निगम में अवैध निर्माण, बारपारा में शिकार करने वालों को पूरा संरक्षण आप दे रहे हैं। रायपुर के नकटी में गरीबों के आवासों पर आपने जो बुलडोजर चलाया है, यह सब हमारे आरोप में शामिल हैं। धर्मांतरण के कानून आप बना रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आपने सब 151 पेज रख तो दिया है।

डॉ चरणदास महंत :- नहीं, मैं सुना देता हूं, एक-एक पेज। हो ही गया, कुछ बचे हैं, सुना ही देता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, अब सुना रहे हैं तो सुना दीजिए।

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- माननीय नेता जी, आप सिंहदेव साहब के रिकॉर्ड के एकदम नजदीक पहुंच गए हैं। आप चाहें तो तोड़ सकते हैं।

डॉ चरणदास महंत :- हां, इसलिए बता रहा हूं, कितने मिनट बच गया बताओ, मैं तोड़ूंगा?

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- 10-12 मिनट बचा है।

डॉ चरणदास महंत :- तो झेल लो।

श्री अजय चन्द्राकर :- वे 2 घंटा 50 मिनट बोले थे। अभी बहुत टाइम बाकी है।

डॉ चरणदास महंत :- लगातार आप असत्य बोलते हो।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं-नहीं, आप रिकॉर्ड निकलवा लीजिए, सचिवालय से पूछ लीजिए।

डॉ चरणदास महंत :- कुछ नहीं, कुछ नहीं। 1 घंटा 50 मिनट भाई।

श्री अजय चन्द्राकर :- 2 घंटे।

डॉ. चरणदास महंत :- 1 घंटे 50 मिनट।

श्री राम विचार नेताम :- हां, ठीक है, जो भी है।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप बोलिए न सर।

श्री भूपेश बघेल :- आपका मुकाबला नहीं कर सकते भैया ।

श्री राम विचार नेताम :- बोलिए, बोलिए, बोलिए जी।

डॉ चरणदास महंत :- नहीं कर सकते, करने तो दो। (हंसी) कोशिश करते हैं। अब बच गया स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के failure की कहानी, जिसको हमारे भाई जी सुनाएंगे। जल जीवन मिशन, बस्तर के सड़कों पर पुल का घटिया निर्माण, बढ़ते साइबर अपराध, इसको मैं भी सुनाना चाहता था। छत्तीसगढ़ी संस्कृति व भाषा की उपेक्षा, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की अनदेखी, आपकी सरकार किसानों के आत्महत्या के आंकड़े को छुपाना चाहती है । उद्योग में 70% स्थानीय रोजगार छत्तीसगढ़ियों को देने का आपका वादा था। डी.एम.एफ. फंड का क्या हुआ? डी.एम.एफ. फंड का क्या हुआ, आप कहेंगे। कोचिंग सेंटर में जो मनमानी चल रही है, आप कहेंगे। इलेक्ट्रिक वाहन पॉलिसी का फेल हो जाना, मध्याह्न भोजन, 91 पर आ गया हूं सर, थोड़ा सा बचा है। गोमूत्र और गोबर खरीदी को आपने बंद कर दिया। वन अधिकार पट्टे, आउटसोर्सिंग पर बच्चों के साथ, सिंचाई पंपों पर कनेक्शन में भारी देरी, नकली कीटनाशक, पदोन्नति के आरक्षण को टालमटोल, आपने हमारे राजीव युवा मितान क्लब को बंद कर दिया, लघु वनोपज का समर्थन मूल्य पर आपने खरीदी बंद कर दी, सड़कों का जो हाल है मैं बता ही चुका हूं, राजस्व मामलों में भ्रष्टाचार, गौण खनिज जो गिट्टी-मुरुम का अवैध खनन चल रहा है, हर लोग जानते हैं। क्यों चुप बैठे हैं, पता नहीं। छत्तीसगढ़ी फिल्मों के कलाकार के साथ जो आप व्यवहार कर रहे हैं, छत्तीसगढ़िया लोगों के साथ, वह उचित नहीं है। पशु चिकित्सालयों का हाल भी दयनीय है । बायोमेडिकल वेस्ट का कहाँ अवैध निष्पादन हो रहा है? राज्य परिवहन और ग्रामीण बस सेवा की खस्ता हालत है। सिंचाई व्यववर्धन योजना, वृद्धाश्रमों और अनाथालयों में भ्रष्टाचार व्याप्त है तथा छत्तीसगढ़ी तीज-त्यौहारों में जो सरकारी सम्मान था, वह आपने बंद कर दिया है। मत्स्य पालकों से आप जो टैक्स वसूली कर रहे हैं और जो अवैध प्लॉटिंग कर रहे हैं, इन सब बातों का मैंने नियम 136 में जिक्र किया है। अध्यक्ष महोदय, मैंने बहुत सी बातें कह ली हैं, अब आप जैसा चाहते हैं, मैं अपनी बात समाप्त करते हुए, सिर्फ दो-एक लाइन बची हैं, जिसको अंतिम कहते हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी, मैंने अपने राजनीतिक जीवन में एक बात सीखी है, जो कि कुछ लंबा हो गया है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन कर रहा हूँ, आप हमारे हमेशा सहयोगी रहे हैं। मैं एक बात सीखी है कि सरकारें आती हैं, सरकारें जाती हैं, दल बनते हैं और दल बिगड़ते हैं। परंतु यह देश रहना चाहिए, यह प्रजातंत्र रहना चाहिए।

श्री अमर अग्रवाल :- धन्यवाद। आप अटल जी के शब्दों को आप दोहरा रहे हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद कि आप हमारे नेता को मानते हैं। यह अटल जी के बोले हुए शब्द हैं। आपके पास तो कोई प्रेरणा है नहीं, लेकिन आपने अटल जी से जो प्रेरणा ली और उसे आत्मसात किया, आपकी इस सहृदयता के लिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। (मेजों की थपथपाहट)

डॉ. चरणदास महंत :- मैं अटल जी का नाम ही ले रहा था।

श्री अमर अग्रवाल :- मैंने भी तो आपको धन्यवाद दिया है, मैं कोई आलोचना थोड़ी कर रहा हूँ।

डॉ. चरणदास महंत :- मैंने कहा कि मैंने पढ़कर सुना है और सीखा है, इसलिए इधर और उधर देखा।

श्री अमर अग्रवाल :- मैंने इसीलिए आपको धन्यवाद दिया कि आपको और किसी दूसरी जगह से तो प्रेरणा मिल नहीं सकती। आपको सही जगह से प्रेरणा मिली है और सहृदयता से आपने कोट किया, उसके लिए धन्यवाद। मैं भी तो आपको धन्यवाद दे रहा हूँ।

डॉ. चरणदास महंत :- यह प्रजातंत्र तभी जीवित रहेगा, जब तक सत्तासीन व्यक्ति यह स्मरण रखे कि वह शासक नहीं, सेवक है। यह किसके लिए है? अटल जी ने यह आपके लिए कहा था। आप सेवक बने रहे या शासक रहे? जब आप मंत्री रहे, तब क्या रहे? आज के मंत्री क्या हैं? सेवक हैं या शासक हैं? अटल बिहारी जी ने कहा था, इसलिए आप लोग तो उस पर अटल रहिए।

श्री अमर अग्रवाल :- अभी तो आपने बोल लिया, इसके बाद जब हम उत्तर देंगे, तब आपको पता लगेगा कि हम सेवा कर रहे हैं या क्या कर रहे हैं। आप सुनिए तो सही। आप पहले से ही यह धारणा क्यों बना लेते हैं कि आप जो बोल रहे हैं, वही सही है?

डॉ. चरणदास महंत :- चलिए, तो फिर बताइए।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, इसका मतलब यह है कि मंत्रिमंडल का फेरबदल जल्दी होने वाला है। इसलिए अमर जी सक्रिय हो गए हैं। (हंसी)

श्री अमर अग्रवाल :- धन्यवाद, चिंता करने के लिए।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, अमर जी तभी सक्रिय होते हैं जब कुछ होने वाला होता है और आजकल अजर जी के सुर बदले हैं इसलिए संभावनाएँ हैं। कुछ लोग उदास दिख रहे हैं। हो सकता है कि उनका दिल्ली बुलावा हो जाए।

श्री अजय चन्द्राकर :- उनसे ऐसे ही भाषण करवाना था। फिर आप क्या पढ़ा रहे थे?

श्री भूपेश बघेल :- नेता जी एक-एक करके गिन-गिन के सारे आरोप लगा दिए, चुन-चुन के बाण चलाए हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- पढ़-पढ़कर?

श्री भूपेश बघेल :- भैया, पढ़-पढ़ के नहीं, वे बिंदु देख रहे थे। आपके यहाँ श्रद्धांजलि भी पढ़-पढ़ के ही दी जाती है। (हंसी)

श्री धरमलाल कौशिक :- उन्होंने क्या आरोप लगाए हैं, उसे मैं बता देता हूँ। अभी हमारे नेता जी ने कहा कि डी.एम.एफ. घोटाला हुआ है। डी.एम.एफ. घोटाला कहाँ हुआ, कब हुआ, जेल में है या बेल में है? यदि बेल हुई है तो प्रदेश आने की उन्हें अनुमति नहीं है, वे आ नहीं सकते। अनुमति लेकर भी नहीं

आ सकते। यही तो उन्होंने बताया है कि आपने 5 साल में क्या किया है, उसे महंत जी अभी फुर्सत से रख रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- कौशिक जी, बात यह है कि अजय जी बार-बार आपको इशारा करके रोक रहे हैं और मेरा भाषण यदि आप पहले ही बोल देंगे, तब मैं क्या बोल्ँगा? उन्हें इसी की चिंता है। (हंसी)

श्री धरमलाल कौशिक :- ज्ञान का अपार भण्डार है, इसलिए चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

श्री भूपेश बघेल :- छत्तीसगढ़ी में ओला ज्ञान बईहा कइथे। (हंसी)

डॉ. चरणदास महंत :- सर, मैं किसी का रिकॉर्ड नहीं तोड़ना चाहता हूँ, मगर यह जरूर कहता हूँ कि जिस सरकार का जन्म ही 164 (4) (क) के उल्लंघन से हुआ हो, क्या उसे संविधान की शपथ लेने का नैतिक अधिकार था ? जिस सरकार ने अपने गृह मंत्री के जिले में निर्दोष नागरिकों का रक्त बहाया, क्या वहां कानून का राज हो सकता है ? जिस सरकार के राज में बलौदाबाजार जैसी मुख्यालय जलाकर राख कर दिया जाये, क्या वहां सुशासन हो सकता है ? जिस सरकार के अपने परिसर से चंदन के वृक्ष की चोरी हो जाये, क्या वहां प्रदेश के जंगलों की रक्षा का दावा करेगी? जिस सरकार के राज में हसदेव वन कटते रहे हैं, डंकिनी-शंखिनी नदी का जल विष बनते रहे हैं, वहां के बाघ मरते रहे हैं, हाथी को करंट लगे, क्या यह लोग पर्यावरण के संरक्षक हो सकते हैं ? जिस सरकार के राज में 19 लाख से अधिक मतदाताओं के नामों की चोरी हो जाये और उसकी जानकारी न हो, क्या उस राज्य में लोकतंत्र स्थापित रह सकता है ? जिस सरकार के राज में किसान का धान बेचने से रह जाये, मजदूर मनरेगा के भुगतान से रह जाये, क्या वह स्वयं जनकल्याणकारी सरकार दे सकता है ? जिस राज्य के एक अल्पसंख्यक समुदाय को अपने ही मृत माँ-बाप को दफनाने के लिये दिल्ली के सर्वोच्च न्यायालय में द्वार खटखटाने पड़े, क्या वह सरकार आम्बेडकर जी के संविधान की रक्षा कर सकती है ? जिस सरकार को अपनी सफलतायें जनता की नजरों से छिपाने की जरूरत पड़े और उसको छिपाने के लिये 1100 करोड़ के विज्ञापन मीडिया को बांटे, जो सर्वाधिक है, उस सरकार से हम क्या अपेक्षा कर सकते हैं ? जिस सरकार के 50 कैबिनेट बैठक में एक भी दिन किसानों की चर्चा न हो, कृषि विभाग की चर्चा न हो, मैं उसको क्या कह सकता हूँ ?

अध्यक्ष महोदय, मैं यही कह सकता हूँ कि मैंने अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत किये हैं, यह मेरे नहीं है, यह हमारे साथियों के भी नहीं है, यह आम जनता की आवाज है और मैं आपसे निवेदन कर रहा हूँ कि इनके प्रति आम जनता क्या सोच रही है, अविश्वास कैसे प्रकट कर रही है, मैंने उसे रखने का प्रयास किया है और मैं अपनी बात समाप्त करते हुये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ, जिन साथियों ने सुना, जिन साथियों ने टोका, उनको भी बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ । धन्यवाद । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- श्री अजय चन्द्राकर जी । (मेजों की थपथपाहट)

श्री रामकुमार यादव :- माननीय अध्यक्ष जी, ए लबारी मार ही त मैं घर चल दिहंव ।

श्री सुशांत शुक्ला :- तोला घरे भेजे लायक बना देहन ।

श्री रामकुमार यादव :- ए धरती मैं 1लाख लबरा मरिस होही त ये जन्मे हे ।

श्री धर्मजीत सिंह :- तैं हा आमिर खान के पास जा । ऊंहे ले ज्ञान ले के आबे तभे इंहा बड़्ठे के लायक रहिबे । (हंसी)

श्री रामकुमार यादव :- ऐहा फिलिम के अमरीशपुरी ए । (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर (कुरुद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज पहली बार अविश्वास प्रस्ताव में ढाई साल बाद नेता प्रतिपक्ष जी ने भूमिका निभाने की कोशिश की है, जैसा कि उन्होंने प्रदेश की जनता के बारे में कहा तो प्रदेश की जनता उनके और उनके दलों के परफार्मेंस को देख रही हैं ।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बता दूँ कि 151 पेज का यह है, इसमें 136 बिन्दु हैं, 10,13,29,55,57,61,84,85,86,109,118,119 यह कुल 13 हैं, जो वनाधिकार से संबंधित है । 7,9,23,28,44, 45,49,70,98,113 धान खरीदी समर्थन मूल्य से संबंधित है । यह कितना हल्का आरोप पत्र है, मैं आपको बता रहा हूँ । आप इसको पढ़वा लीजिए, मैं गलत नहीं बोल रहा हूँ । 57,58,59,72,77,81,87,89,111 सहकारी संस्थायें धान उपार्जित केन्द्र से संबंधित है, टोटल 9 है । मैं उसके बाद स्वास्थ्य से संबंधित पढ़ूंगा तो टाईम लगेगा, वह 6 है । 17,42,43,68,90,125, आप खोलकर पढ़ लीजिए, सब कोई कांग्रेस वाले हैं । मैं इस बात को अकेले नहीं बोल रहा हूँ, यह स्वास्थ्य से संबंधित है । 16,40,53,69,88 शिक्षा व्यवस्था राष्ट्रीय शिक्षा नीति से संबंधित है, 6, 14, 76, 80, 142, पांच आदिवासी एवं जनजाति से संबंधित है, 2, 4, 2, 20, 21, 27, 106 पांच गृह विभाग कानून व्यवस्था से संबंधित है, 8, 26, 60 दो मनरेगा से संबंधित है, 31, 34 दो रेत खनन से संबंधित है, 63, 64 शराब से संबंधित है, 31, 33 सड़क व्यवस्था से संबंधित है, 1, 22 और 52 तो ये कुल 66 आवृत्त हैं, 136 कहा है, ऐसी हल्की आरोप पत्र जिसमें कोई विषय ना हो, एक विषय बार-बार पुनरावृत्त हुए, मैंने कम से कम आठ आरोप पत्र देखे हैं पर इतना हल्का आरोप पत्र नहीं देखा। कांग्रेस विचार शून्य अकर्मण्य हो गई। (शेम-शेम की आवाज) इनका दायित्व जनता के प्रति नहीं है। विपक्ष वेस्टमिनिस्टर प्रणाली में वॉचडॉग होता है, उसको बड़ी महत्ता बड़ा स्थान दिया गया है लेकिन ऐसा विपक्ष किस काम का? माननीय नेता प्रतिपक्ष जी मैं आपका सम्मान रखते हुए आपसे अनुरोध करूंगा कि इसको वापस ले लीजिए, आपने औपचारिकता पूरी कर दी। भूपेश बघेल जी मध्य प्रदेश की विधानसभा में रहे हैं, इस भाषा को सुने हैं कि इसको [xx] बनाकर उचित स्थान में रख लीजिए। (मेजों की थपथपाहट) इससे ज्यादा इसका कोई उपयोग नहीं है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय अध्यक्ष जी, 5 साल में तुंहर दिमाग में गोबरेच भराय रिहिस हे। जब भी उठव तो गोबर-गोबर बात करा। मोला लगत हे वो अभी तक हिटे नई हे।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी आप मेरी आग्रह पर विचार करेंगे, वापस लेंगे? आवृत्त है, आप अपने विधायकों से पढ़वा लीजिए, मैं फिर से रख देता हूँ। मैंने माननीय अध्यक्ष महोदय से कहा, विधानसभा में रिसर्च होता है, देख लीजिए कि वह सारे आरोप आवृत्त है कि नहीं है। चलिए, नहीं लेते हैं तो मैं आपके ही विषयों पर बातचीत करूँगा और आपसे कुछ आग्रह करूँगा जो बीच-बीच में आपने कहा है। एक लेखक अख्तर उल ईमान थे। नेता जी, 1965 में राजकुमार की एक पिकचर आई थी, यश चोपड़ा ने निर्देशित किया था, जिनके अपने घर शीशे के होते हैं वो दूसरों के घर पत्थर नहीं फेंका करते। (मेजों की थपथपाहट) नेता जी, आपने बार-बार भाषण में कहा, अरे यार, बार-बार 2 साल का उल्लेख क्यों करते हो? ठीक है ना? आपने कई बार कहा है। इतिहास में हम गजनवी को पढ़ते हैं, तैमूर को पढ़ते हैं, अब्दाली को पढ़ते हैं, नादिर शाह के समय दिल्ली में सबसे ज्यादा लूट हुई। आपका पिछला 5 साल का कार्यकाल नादिर शाह के बराबर ही था। (शेम-शेम की आवाज) वह लूट हुई। मैं जो बोलूँगा, आप टेबल करने के लिए बोलेंगे तो टेबल करूँगा, इस नैतिकता के साथ बोलूँगा। (मेजों की थपथपाहट) इसलिए अविश्वास प्रस्ताव के चर्चा शुरू करने के पहले आईना बेचने के बजाय आप आईना देखिए। साहब, हमको मत दिखाइए। (मेजों की थपथपाहट) ढाई साल के शासन में विष्णु देव जी ने क्या किया, मैं आपको वह भी बताऊँगा और ऐतिहासिक बताऊँगा, आपको तथ्यों के साथ बताऊँगा, अब आपको मैं एक बात और कहता हूँ। मैं ये रखा हूँ, मैं इनको आपके पिताजी की जीवनी पढ़ा रहा था, पूछ लीजिए, कितनी बार विधायक रहे, कितनी बार मंत्री रहे। मैं आपसे एक आग्रह करता हूँ, फिर बात शुरू करूँगा। आपकी निष्ठा छत्तीसगढ़ की जनता के प्रति है या किसी परिवार के प्रति है? यदि आपकी निष्ठा किसी परिवार के प्रति है तो अविश्वास प्रस्ताव वापस लीजिए। क्यों, अब मैं उसको बोल देता हूँ। कांग्रेस का इतिहास 1885 से 1835 तक सीता भाई पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा, एक। 50 साल पूरा होने में वह इतिहास एक खंड था। फिर 35 से 47 तक के घटनाक्रम, इनको मालूम नहीं होगा, किसी दिन मुझे बुला लीजिएगा, मैं भाषण दे दूँगा। 50 साल तक एक, फिर 47 तक दो इतिहास लिखे गए, आप अपना भी लिखवाइए। दो वाक्य, आजादी के बाद या आजादी तक कांग्रेस का इतिहास लिखा गया है पर मैं दो लाइन उल्लेख कर रहा हूँ, जो ऐतिहासिक हैं, आई ओपनिंग हैं। कैसे आप फ्लैटरिंग करते हैं उसका एक उदाहरण है, जो फ्लैटरर होता है वह जनता के प्रति जवाबदेह नहीं होता, उसकी निष्ठा किसी और चीज के प्रति होती है। आपातकाल के समय एक देवकांत बरुआ जी थे। उन्होंने कहा, इंदिरा इज इंडिया इंडिया इज इंदिरा। एक सज्जन आप पैदा हुए, जिसने कहा कि मैं सोनिया गांधी के कहने से झाड़ू भी लगा सकता हूँ। (शेम-शेम की आवाज) अब झाड़ू लगाने वाले आदमी से हम क्या अपेक्षा करेंगे? छत्तीसगढ़ की जनता क्या अपेक्षा करेगी? (शेम-शेम की आवाज) तो जब जनता के प्रति आपकी निष्ठा नहीं है, परिवार के प्रति आपने निष्ठा जाहिर की है तो यह दूसरा कारण है कि आप इसको वापस लीजिए। क्या आपने बाहुबली पिकचर देखी है? बाहुबली देखी है तो कटप्पा को तो सुना होगा?

श्री रामकुमार यादव :- ओकरे कस तुहरे चुंदी लागत हे, मुड़ हा। (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- आपने कटप्पा को तो सुना होगा। कटप्पा बिना सोचे-समझे माहिष्मती, एक काल्पनिक साम्राज्य के प्रति जवाबदेह था। कटप्पा ने बाहुबली को क्यों मारा? तो आपकी तुलना उसी कटप्पा से की जा सकती है कि माहिष्मती साम्राज्य है, महारानी है, उसके प्रति आप समर्पित हैं तो छत्तीसगढ़ की जनता के प्रति आप कहां समर्पित हुए? इसके कारण से आप इसको वापस ले लीजिए। तीसरी बात, क्या आपने धुरंधर देखी है? (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- वह पिकचर देखते ही नहीं हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- जमील जमाली। राकेश बेदी के उस कैरेक्टर की एक विशेषता थी। क्या विशेषता थी? वह सब तरफ मिले हुए थे। शाहबाज से भी मिले हुए थे, आईएसआई से भी मिले हुए थे, उनकी निष्ठा सब तरफ थी। आपने एक बार बयान दिया, बयान की तारीख भी मैं बता सकता हूं। इसलिए मैंने बोला कि मैं सब चीजें टेबल कर सकता हूं। आपने अंबिकापुर में बयान दिया कि अगला चुनाव टीएस सिंहदेव के नेतृत्व में होगा। रायपुर में जैसे भूपेश बघेल जी का चेहरा आपने देखा, बयान वापस ले लिया। (हंसी) (मेजों की थपथपाहट) अब जिस नेता की विश्वसनीयता नहीं हो, उस पर छत्तीसगढ़ कैसे भरोसा करेगा? लाख टके का सवाल यह है, इसलिए आप अविश्वास प्रस्ताव वापस लीजिए। आपके पास फिर अवसर है। (मेजों की थपथपाहट) माननीय नेता प्रतिपक्ष जी।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- क्या आपको चुभ रहा है? क्या मेरा अविश्वास प्रस्ताव इतना चुभ रहा है?

श्री अजय चंद्राकर :- मैं उसपर आगे बोलूंगा।

डॉ. चरणदास महंत :- नहीं, बता दीजिये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दूसरी बात, जिस पार्टी से आप संबद्ध रखते हैं, जिसका चाल, चेहरा, चरित्र जैसा है, उस पार्टी का प्रतिनिधित्व करने के नाते क्या आपको यह अविश्वास प्रस्ताव लाना चाहिए? क्या आप किसी राजनीतिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं कि भाजपा की 54 सीटों की ऐसी लोकप्रिय निर्वाचित सरकार ने सबसे बड़ा जनादेश आपके [xx] के कारण पाया (मेजों की थपथपाहट) यदि मेरी बात बुरी लगेगी तो कृत्यों के कारण कह सकते हैं। कृत्यों के कारण सबसे बड़ा जनादेश पाया तो आप जिस दल का प्रतिनिधित्व करते हैं, क्या उसके पास इतनी नैतिकता है कि ऐसे लोकप्रिय नेता या उसकी लोकप्रिय सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव ले आये? चलिए, मैं आपसे एकाध-दो चीजें पूछ लेता हूं। यह बताइये।

डॉ. चरणदास महंत :- जल्दी पूछिये। हमको भी कहीं जाना है।

श्री अजय चंद्राकर :- जी। नवजोत कौर सिद्धू का बयान था कि दिल्ली में 500 करोड़ की अटैची देनी पड़ती है। मैं तारीख भी बता देता हूं, पंजाब गये हैं। तो 500 करोड़ की अटैची देनी पड़ती है। अब

उसके बाद दिनांक 21 फरवरी, 2026 को आपके एक मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी जी का बयान आता है कि हम 1,000 करोड़ रुपये चंदा गांधी परिवार को दे सकते हैं, कार्यकर्ताओं को चंदा देने के लिए तैयार रहिये। कर्नाटक में ढाई-ढाई साल का पालन हो गया। क्या राजा साहब के पास लुलु माल नहीं था? (मेजों की थपथपाहट) इसलिए ढाई-ढाई साल का छत्तीसगढ़ में पालन नहीं हुआ। तो इस चरित्र के कारण इस दोहरे मापदंड का आप प्रतिनिधित्व करते हैं, ऐसी विचारधारा के साथ, जिसको एक तरह से आजकल कल्ट पॉलिटिक्स कहा जाता है। कल्ट पॉलिटिक्स का मतलब यह है कि आचार, विचार तथा व्यवहार किसी की चिंता नहीं करनी है, मेरा नेता डकैत भी हो तो उसको नेता मानना है, चोर भी हो तो नेता मानना है, सिद्धांत नहीं है तो भी नेता मानना है। (शेम-शेम की आवाज)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- यह अंधभक्ति आप लोग ही करते हैं। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- यही तो आप लोग कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- यह अंधभक्ति आप ही लोग करते हैं। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- यही तो आप लोग कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री अटल श्रीवास्तव :- आप लोग रंगा, बिल्ला के गुलाम हैं। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- राम के नाम पर चंदा ले रहे हैं। (व्यवधान)

श्री अटल श्रीवास्तव :- आप लोग रंगा, बिल्ला के गुलाम हैं। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- छद्मवादियों के समर्थकों, चुप रहिये। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- राम के नाम पर चंदा लेकर, भगवान को भी नहीं छोड़ने वाले (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप लोग तो भगवान के नाम को भी नहीं छोड़ रहे हैं। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- राम के पैसे को खाये हैं। राम के नाम पर चंदा लेकर खाये हैं। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- (व्यवधान) कर्मकारों, चुप रहो। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये भाई, बोलने दीजिये।

श्री लखेश्वर बघेल :- सर, टोका-टाकी होगी तो। पूरे 60 साल से नेतृत्व कर रहे हैं, उस पार्टी में, ऐसे आदमी के साथ इस तरह का व्यवहार करेंगे तो बोलना तो पड़ेगा ही।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय, क्या हम राज्य के बाहर बात कर सकते हैं ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- आपने तो एक व्यक्ति के कारण देश बेच दिया।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- अध्यक्ष महोदय, जनता के हित में आप लोगों ने ढाई साल में जो काम किये हैं, आप उसकी बात करिये। (व्यवधान)

श्री दिलीप लहरिया :- मोदी के कारण आज पूरा देश गर्त में है। आप इसको तो बताइये। (व्यवधान) अंधभक्ति करके आज पूरा देश बेचा जा रहा है। देश बर्बाद है।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- किसी के बयान पर बात मत करिये। यहां के जो (व्यवधान) उसकी बात करिये।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, अजय जी।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या हम अविश्वास प्रस्ताव में राज्य से बाहर बात कर सकते हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, मैंने राज्य के बाहर की कोई बात नहीं की है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आपने केंद्र की बात की है। आपने राज्य से बाहर की बात की है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने किसी राजनीतिक दल के चरित्र, वैचारिक पृष्ठभूमि पर बात की है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आपने राज्य से बाहर बात की है। हमने राज्य के लिए अविश्वास प्रस्ताव लाया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- न मैंने आरोप लगाया है।

श्री दिलीप लहरिया :- (व्यवधान) डकैत कौन है, यह बता दीजिये ? आप यह स्पष्ट करिये।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप केंद्र सरकार में जा रहे हैं, आप मोदी जी पर जा रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, हम भी अपनी बात में मोदी जी की बात रखेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये ठीक है। आप बैठिये।

वित्त मंत्री (श्री ओ.पी. चौधरी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे वालों ने थोड़ा ज्यादा अति कर दिया है। ओपनर बॉलर के हिसाब से ओपनर बैट्समैन देना था। थोड़ा ज्यादा ही हो जा रहा है। (हंसी)

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- भैया, मुंह मिया मिट्टू बनना बंद कर दीजिये। अपनी तारीफ करना, क्या पूरे समय आपको मुंह मिया मिट्टू बनना है ?

श्री भूपेश बघेल :- ओ.पी. जी, ज्यादा खुश मत होइये।

श्रीमती भावना बोहरा :- वह अपनी तारीफ नहीं कर रहे हैं, वह तारीफ किसी और की कर रहे हैं जो आपको हजम नहीं हो रहा है।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- आपको बोलने की आवश्यकता नहीं है।

श्रीमती भावना बोहरा :- हम आपसे परमिशन लेकर तो नहीं बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- नहीं, आप मुझको मत बोलिय ना। मैं तो उनसे बात कर रहा हूँ। (व्यवधान)

श्रीमती भावना बोहरा :- मुझे आपके परमिशन की जरूरत है भी नहीं। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- अध्यक्ष महोदय, लुलु मॉल रिपीट करियेगा।

अध्यक्ष महोदय :- देखिये, अविश्वास प्रस्ताव में गंभीर चर्चा हो रही है। यदि आपसे मैं ही बात करने लग जायेंगे तो भी वक्ता का क्या महत्व रह जायेगा ? कम से कम इन बातों में आपत्ति है। सब का नाम लिखा हुआ है। सब का समय आयेगा। अपने समय में अपनी बात को स्पष्टता के साथ रख सकते हैं। मैं सबको समय दूंगा।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं ओ.पी. चौधरी जी से कहना चाहूंगा कि ज्यादा खुश मत होइये। वह मिस गाइडेड मिसाइल है, वह कभी-भी आपकी तरफ घूम सकती है। (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजनीति का एक नया शब्द है, कल्ट पॉलिटिक्स। नेता चोर, डकैत हो, सिद्धांतवादी हो या मत हो, उसको महिमामंडित करना। अब यह जिस दल से प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। मान लीजिए आपको आपत्ति है कि मैं प्रदेश के बाहर का उदाहरण दे रहा हूं तो प्रदेश में क्या घटना घटी, मैं वह बता देता हूं। तीन साल तक प्रदेश कांग्रेस का कोषाध्यक्ष कौन था ? अभी कोषाध्यक्ष कौन है ? कहां है ? ऐसा हमने कभी उदाहरण देखा है कि कोई पार्टी बिना कोषाध्यक्ष के चलती है ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- क्या यह आरोप पत्र में है ? (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- क्या यह विधान सभा का मामला है ?

श्री भूपेश बघेल :- एक मिनट, आपके राष्ट्रीय महामंत्री एक अरूण सिंह हैं, वही दस्तखत करके निकलते हैं, उन्हीं भर को जानते हैं और कितने हैं ? आज तक पता नहीं। अभी [XX]⁶ नितिन नबीन को राष्ट्रीय अध्यक्ष बना दिये। क्या उसकी कमेटी बनी है ?

श्री सुशांत शुक्ला :- अध्यक्ष महोदय, लोकतांत्रिक व्यवस्था के आधार पर बने हैं। यहां परिवार की चाटुकारिता नहीं है कि इसका बेटा ही राष्ट्रीय अध्यक्ष बनेगा। यह लोकतांत्रिक व्यवस्था से राष्ट्रीय अध्यक्ष बने हैं। यह आपत्ति का विषय है।

अध्यक्ष महोदय :- आप कंटीन्यू करिये। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- यह आठ राज्यों के मुख्यमंत्री है ना ? (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- आप उनको वोट देने कब गये थे ? (व्यवधान) कब वोटिंग हुई ? इनके खिलाफ कौन खड़ा था ? (व्यवधान)

श्री किरण देव :- अध्यक्ष महोदय, [XX] शब्द को विलोपित करिये। [XX] शब्द (व्यवधान), वह 5 बार के विधायक हैं, मंत्री रह चुके हैं।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- लोकतंत्र को खरीदते हुए देखा है। (व्यवधान) बड़ा लोकतंत्र के (व्यवधान) की बात करते हैं। (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- माननीय मुख्यमंत्री, किरण देव जी, आप कुछ बोल रहे थे ? (हंसी)

⁶ [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

श्री किरण देव :- मैं यह बोल रहा था कि जो पांच बार के विधायक रह चुके हैं, मंत्री रह चुके हैं और आज देश के सबसे बड़े राजनीतिक दल के अध्यक्ष हैं।

श्री भूपेश बघेल :- मैंने आपको मुख्यमंत्री नहीं कहा। हमारे मुख्यमंत्री विष्णु देव जी हैं। लेकिन विष्णु जी ने आपको मुख्यमंत्री कहा है इसलिए मैं कह रहा हूँ। किरण देव जी, आपको विष्णु देव जी ने मुख्यमंत्री कहा।

श्री किरण देव :- वह विषय नहीं है। (हंसी) मैं दूसरे विषय में बोल रहा हूँ। आपने जो विषय बोला। हमारी भारतीय जनता पार्टी देश की ही नहीं बल्कि विश्व का सबसे बड़ा दल है (मेजों की थपथपाहट) राष्ट्रीय अध्यक्ष 5 बार के विधायक रहे हैं, उनके लिये ये [XX]⁷ शब्द जिस तरीके से यूज किया है, उसका विरोध किया हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है, विलोपित। अजय चन्द्रकार जी, आप जारी रखिये।

श्री अजय चन्द्रकार :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे देश के राजनीतिक इतिहास में चलिये 1952 से ले लें, जिस दिन से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पहली बार चुनाव हुआ। राजनीतिक दल पंजीकृत हुए। आज तक ऐसा उदाहरण देश में नहीं आया है कि साहब उसका कोषाध्यक्ष लापता हो और जिसके बारे में ये लिखा गया हो कि वसूली के पैसे किसी राजनीतिक दल के खाते में जाते हों, वसूली होती थी। (शेम-शेम की आवाज) तो ऐसी विचारधारा, ऐसे कामों के कारण नेता जी आपको ये नैतिक अधिकार नहीं है कि आप किसी लोकप्रिय सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लायें। तो इसलिए मैं आग्रह करना चाहता हूँ कि आप वापस ले सकते हैं। यदि वापस नहीं लेते हैं तो उनकी मर्जी है। कोई बात नहीं। माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं कुछ अविश्वास प्रस्ताव के मुद्दे पर मैंने कहा कि आईना बेचने वालों को थोड़ा ये जरूर सिखाऊँ कि आईना थोड़ा देखिये करके। महाभारत जब शुरू हुआ, अर्जुन ने कहा कि थोड़ा निरीक्षण करते हैं। फिर युधिष्ठिर उधर पैदल गये और सबको प्रणाम किया। आप तो ज्ञाता हैं। और एक नीति नियम बने कि कैसे-कैसे युद्ध लड़ा जायेगा। युद्ध लड़ा जायेगा तो देवेन्द्र यादव जी कहाँ गये। पहले तो यह कर लो कि मैं बोलूंगा तो अपने कुर्ते मत फाड़ें। उनकी फोटो वायरल हुई थी कि वह अपना कुर्ता खुद फाड़ रहे हैं। अपने हाथ-पैर नोच लें, अपना कुर्ता फाड़ लें और इधर के लोगो को बतायें तो युद्ध शुरू होने के पहले थोड़ा बहुत आप लोग नैतिकता का पालन करना। लोकप्रिय होने के लिये अपने आप को नोच मत लेना। मैं आपको इतना आत्मग्लानि से भरपूर नहीं करूंगा। ये मेरी ओर से गारंटी है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं छोटा सा उदाहरण आरक्षण का बता देता हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- आप महाभारत में थे। (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ज्ञान अधिक होने से यही तकलीफ हो जाती है।

⁷ [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आरक्षण के बारे में बताना चाहता हूं। माननीय पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी बैठे हैं। आज तक ऐसा नहीं हुआ। छत्तीसगढ़ के लोगों के भावनाओं के साथ कैसा खिलवाड़ किया गया? जो आरक्षण बिल मेरे पास है, ओरिजनल ये रखी है, मैं दैनिक कार्यसूची भी रखा हूं। 2 दिसंबर 2022 आरक्षण का बिल होगा और उसके नीचे एक संकल्प था, मैं अभी संकल्प को पढ़ दूंगा, इसको 9वीं अनुसूची में जोड़ा जाये। 76 प्रतिशत कुल आरक्षण का बिल लाया गया। ये जानते थे कि ये पारित नहीं होगा। वह विधान सभा से पारित हुआ और कहा कि अभी मेरे 5 मंत्री दस्तखत कराने जायेंगे, जायेंगे, जाने दो। लेकिन उससे महत्वपूर्ण बात जो मैं बताना चाहता हूं कि कैसे छत्तीसगढ़ की जनता के साथ छल किया गया। एक संकल्प आया कि इसको 9वीं अनुसूची में जोड़ा जाये। पहली बार तमिलनाडु को यदि परमीशन मिली तो सरकार बचाने के लिये न्यायिक समीक्षा से बाहर वहां अनुमति दी गई। हमारी ओर गेंद फेंकने की कोशिश हुई कि हम 76 प्रतिशत में ताली भी बजवा लेते हैं। ये बोल रहे थे न कि छत्तीसगढ़िया परबुधिया होते हैं तो ये समझते वैसी हैं। ये भी समझ रहे थे कि छत्तीसगढ़ के लोग परबुधिया मेरी किसी बात को नहीं समझेंगे और कहा कि 9वीं अनुसूची में जोड़ा जाये, न्यायिक समीक्षा से बाहर रहेगी। केन्द्र सरकार के ऊपर बोल दिया और लोग कहते रहे कि साहब ये लोग लेट कर रहे हैं। अरे, आपमें दम था तो आपको किसी भी विषय में लागू करना था। क्यों आपने छत्तीसगढ़ के लोगों के साथ ऐसा किया? इस तरह का शासन-प्रशासन बी.जे.पी. नहीं चलाती, विष्णु देव साय जी नहीं चलाते, उसके मंत्री नहीं चलाते कि संकल्प पारित हुआ है, बाहर नहीं निकला है, विधेयक पारित नहीं हुआ है, विधेयक नहीं बना है, उसको 9वीं अनुसूची में जोड़ने के लिये संकल्प ला रहे हैं। आप कुछ बोल रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जो बातें उठाईं, वह बिल्कुल विधान सभा का हिस्सा है। दूसरा आपको ये भी कहना चाहूंगा, क्योंकि सार्वजनिक रूप से राज्यपाल महोदय ने कहा था कि आप बिल पारित करके लाईये, मैं एक मिनट में हस्ताक्षर करूंगी। ये राज्यपाल महोदय जी ने कहा था। इसीलिये हमने रात में भेजा था। लेकिन वहां किसी का फोन आ गया। फोन आ गया, दस्तखत करने से इंकार कर दिया और अभी भी आप 50 परसेंट की बात करते हैं, अभी भी 58 परसेंट चल रहा है। वह हमारे कारण चला।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय रमन सिंह जी बैठे हैं, 58 परसेंट उनके कार्यकाल का है। मैं उसमें आगे आने वाला था।

श्री भूपेश बघेल :- हम सुप्रीम कोर्ट में लड़े तब वह 58 परसेंट है। वह तब बचा है नहीं तो वह भी नहीं मिलता।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप शुरू करिये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वह आपके कार्यकाल का 58 परसेंट है लेकिन मैं महामहिम राज्यपाल का उल्लेख नहीं कर सकता, मैं ज्यादा उल्लेख नहीं करूंगा। उनको यह नहीं बताया गया कि हम नौवीं अनुसूची में जोड़ने का संकल्प तत्काल पारित कर रहे हैं करके, उनको यह बताया गया कि हम विधायक भेज रहे हैं। कितना परसेंट होगा, क्या परसेंट होगा, कितना बढ़ा रहे हैं, किसके लिए, यह नहीं बताया गया। राजभवन यह संवैधानिक संस्था को भी अंधेरे में रखा गया, उसे असत्य कहा गया। (शेम-शेम की आवाज) माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे जो दूसरी बात कहना चाहता था कि मेरे हाथ में यह एक चिट्ठी है, शासन कैसे चलता था, माननीय टी.एस. सिंहदेव साहब जी की चिट्ठी है। मैं इसको टेबल कर दूं या पढ़ूं? पुराने जितने विधायक हैं सब जानते हैं।

श्री रामकुमार यादव :- साहब, ओला टेबल कर देवा।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रमुख चीजों को पढ़ देता हूं। सारे नये विधायक आये हैं, वह नहीं जानते हैं। माननीय पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी को लिखा है, यह आपके आरोप का ही जवाब है, इसी में जवाब है इसीलिए मैंने कहा कि हमको आईना दिखाने की बजाय आप अपना आईना देखियेगा। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत प्रदेश में आवासविहीन लोगों को आवास बनाकर दिया जाना था जिसके लिए मैंने कई बार आपसे चर्चा कर राशि आवंटन का अनुरोध किया था किन्तु इस योजना में राशि उपलब्ध नहीं की जा सकी फलस्वरूप प्रदेश के 8 लाख लोगों के लिए आवास नहीं बनाया जा सके। (शेम-शेम की आवाज) मैं, गेप करके दूसरी लाइन पढ़ देता हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, आप टेबल करने की अनुमति देंगे तो मैं उसको कर देता हूँ। समग्र ग्रामीण को जारी करने के लिए बिजनेस रूल के खिलाफ जाकर मंत्री के अधिकारों को कटौती करके चीफ सेक्रेटरी की अध्यक्षता में एक कमेटी बनायी उसको जानबूझकर अपमानित किया गया। (शेम-शेम की आवाज)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, उसको कोड कर दीजिये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कोड भर कर रहा हूँ। मैं तो आगे बढ़ रहा हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है, आगे बढ़िए।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके आरोप पत्र में पेसा है। मैं पेसा को पढ़ देता हूँ। पेसा अधिनियम आदिवासी भाई-बहनों के अधिकारों के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण कदम है। इसे प्रदेश में लागू करने के सम्बन्ध में जन घोषणा पत्र में वादा किया गया था, काफी मेहनत से नियम बनाये गए ताकि सफलतापूर्वक लागू किया जा सके लेकिन भारसाधक मंत्री को विश्वास में लिए बगैर इसमें कोई कार्रवाई नहीं की गयी, यह पेपर है, चिट्ठी। अब उसके बाद पंचायत के अधिकारों के बारे में इसमें उल्लेख है और हड़ताल के कारण 550 करोड़ की मजदूरी का भुगतान प्रभावित हुआ। नौकरी से जिनको हटाया गया था, बिना मंत्री को विश्वास में लिये उनको फिर से लिया गया और इसमें सबसे महत्वपूर्ण दो बातें थीं जो आरोप पत्र में है, प्रधानमंत्री आवास और पेसा। आपके मंत्री जी ने इस्तीफा

दिया था, आपको दिया। उन्होंने सदन में सार्वजनिक घोषणा की कि मैं इस विभाग को छोड़ता हूँ करके। ऐसा शासन चलता था, ऐसा अपमान अपने सहयोगियों का होता था। माननीय अध्यक्ष महोदय, आप बाहर चल दिए थे इसलिए मैं थोड़ा इधर से उधर बढ़ गया था। मैं आपको एक-दो चीजें बता देता हूँ। आपको मालूम है कि छत्तीसगढ़ में केवल आपके खिलाफ ही अविश्वास प्रस्ताव आया था, हम लोग लाये थे। आपसे चर्चा करके वापस ले लिए। अविश्वास प्रस्ताव क्यों लाये थे? यदि मैं उसमें ज्यादा बोलूंगा तो आसंदी के खिलाफ जाएगा इसलिए आसंदी के खिलाफ नहीं बोल सकता लेकिन आपका मौन और आपका हर गलत बात में संरक्षण, हम यदि प्रिविलेज का नोटिस देते थे तो वह कक्ष में रद्द हो जाता था। आप यदि प्रिविलेज का नोटिस देते थे तो वह विचाराधीन होता था, विपक्ष के साथ आपका यह व्यवहार था तो आप एकमात्र अध्यक्ष थे जिसके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव था, वह तो माननीय वर्तमान अध्यक्ष हैं जिन्होंने कहा कि आगे बढ़कर हम अविश्वास प्रस्ताव...

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसके पहले जब गौरीशंकर अग्रवाल जी थे न तब हम लोगों ने लाया था, यह बात मत भूलिए।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय वर्तमान अध्यक्ष महोदय जी ने कहा कि हम वापस लेते हैं लेकिन आपको जहां बोलना चाहिए, जहां चेक करना चाहिए, वहां पर मौन थे, मैं आगे बोलते जा रहा हूँ। मैंने बोला है कि मैं जो बात बोल रहा हूँ, वह मैं टेबल कर सकता हूँ। श्री टी.एस.बाबा के इस्तीफे के बाद एक विधायक विधान सभा में सार्वजनिक रूप से घोषणा करते हैं आपने अध्यक्ष के नाते उस पर क्या कार्यवाही की? इसलिए मैंने उसका उल्लेख किया कि टी.एस.बाबा से मेरी जान का खतरा है, मेरी हत्या करवा सकते हैं, यह विधान सभा के अंदर कहा गया, आपने उसको क्या संरक्षण दिया? आप यह बताइये कि आपने क्या कदम उठाया। यह सबसे बड़ा मंदिर है तो इस सबसे बड़े मंदिर में आपके संरक्षण में रहते थे, आप यहां पर बड़े-बड़े उदाहरण देने के बाजए, थोड़ा सा यह बताइये?

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह माननीय नेता प्रतिपक्ष आसंदी पर बैठे थे, आप उस समय की चर्चा कर रहे हैं। मतलब आप आसंदी पर आरोप लगा रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं बोल चुका हूँ, मैं ज्यादा बोलूंगा तो ...।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप आसंदी पर आरोप लगा रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं, उनको व्यक्तिगत तौर पर बोल रहा हूँ। मैंने आसंदी से क्षमा मांगी थी।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें व्यक्तिगत क्या है। जब वह आसंदी पर बैठे थे तब आप आरोप लगा रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने आसंदी से क्षमा मांगी थी।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बार-बार बोल रहे हैं। यह कैसे आरोप लगा सकते हैं।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी तक आधे घण्टे से ऊपर हो गया, इन्होंने अविश्वास प्रस्ताव में बोलना ही शुरू नहीं किया है। इन्होंने सरकार की उपलब्धियों के बारे में बोलना ही शुरू नहीं किया है। यह केवल, हमने जो अविश्वास प्रस्ताव लाया है, उसमें बात करिये। आप तो व्यक्तिगत बातों में ऊतर आये हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने जो प्रदेश की सेवा की है उसको नये विधायकों को बताना जरूरी है।

श्री दिलीप लहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां आम जनता त्रस्त है, आप उसके बारे में बोलिए।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप अपने सरकार की उपलब्धियों के बारे में बोल लीजिए।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य सिर्फ व्यक्तिगत बात कर रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- 20 मिनट में इन्होंने सिर्फ कांग्रेस पार्टी के बारे में बोला है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप जनता, युवा साथी और किसानों की बात करें।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय संगीता जी, इस सरकार की उपलब्धि जीरो बटे सन्नाटा है, आप उसको तो बोल नहीं पा रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं उसमें आऊंगा।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय भूपेश जी एक मिनट। अजय चन्द्राकर जी, अब ट्रैक बदलिये। आप सरकार की उपलब्धियों में आ जाइये।

श्री दिलीप लहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप ट्रैक के साथ इंजन भी बदलिये।

श्री रामकुमार यादव :- लेकिन तुंहर डबल इंजन पूरा फेल है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अविश्वास प्रस्ताव में यह बिन्दु है कि यहां जनप्रतिनिधियों को सम्मान नहीं दिया जा रहा है, उन्हें मिटिंग में नहीं बुलाते हैं, उनकी कदर नहीं होती है, यह लिखा हुआ है तो पुराने समय में जनप्रतिनिधियों का कितना सम्मान था, वह बता रहे हैं। आप ही आप उसका जवाब हो रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- आप कन्टीन्यू करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आरक्षण में धोखा फिर छत्तीसगढ़ के इतिहास में नग्न प्रदर्शन हुआ। माननीय तात्कालीन मुख्यमंत्री जी ने उस नग्न प्रदर्शन को देखा था। (शेम-शेम की आवाज) और वह क्यों हुआ था, यह मैं आपको बता रहा हूँ। एस.सी., एस.टी. के फर्जी नौकरी कर रहे हैं,

आप उसकी जांच नहीं कर रहे हो, करके। उस नग्न प्रदर्शन का यह विषय था। पूरे विधायकों ने देखा कि सत्र चल रहा है यह छत्तीसगढ़ के लिए लज्जाजनक घटना थी।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ ने यह भी देखा है कि यहां पर बलौदाबाजार ..(व्यवधान)

श्री कुंवरसिंह निषाद :- ग्राम नकटी में भी जो प्रदर्शन हुआ, यह छत्तीसगढ़ क्या, पूरे देश की जनता देख रही है। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, और ऐसी घटनाओं के कारण (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- इहां कइसे उजाड़े जथे, एला छत्तीसगढ़ के जनता देखे हे। (व्यवधान)

श्री कुंवरसिंह निषाद :- वहां आपने लोगों को बेघर किया है इसे पूरे देश की जनता ने देखा है। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर सरकार में बरसात में गरीब मन के घर ला फोड़ जथे।

अध्यक्ष महोदय :- आप कन्टीन्यू करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसी घटनाओं के कारण जब जांच नहीं हो रही है, लोग स्वाभाविक अधिकार से वंचित हो रहे हैं तो छत्तीसगढ़ का आदमी औसाद में गया और वह औसाद में कैसे गया, मैं उसका उदाहरण बता देता हूँ कि पाटन में 5 एस.सी. परिवार के लोगों ने आत्महत्याएं कीं। यह अवसादग्रस्त होने का सबसे बड़ा उदाहरण था कि पाटन में एक परिवार के 5 लोगों ने आत्महत्या की। वह लोग भी एस.सी.लोग थे। ऐसा शासन विष्णु देव शासन नहीं है। यह लोककल्याणकारी राज्य है, जिसको संविधान में लोककल्याणकारी राज्य कहा जाता है।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस छत्तीसगढ़ में रोज 4 हत्याएं हो रही हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं उस समय की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं में प्रकाश डालते हुए, आगे बढ़ता हूँ। माननीय भूपेश बघेल जी यहां बैठते थे। तब आपने टोका था। मैं, बोधघाट परियोजना बनाकर रहूंगा। आपने यह कहा था कि आप सर्वे करवाकर भी देख लो तो मैं मान जाऊंगा। आपकी बात सत्य निकली। अब उसमें क्या हुआ। उसमें 12 करोड़ रुपये फूंक दिये गये। आप हम विष्णु देव शासन की उपलब्धियों पर बात करते हैं तो आप यह ठीक से पढ़िये कि बोधघाट को फिर से बनाने पर विचार किया जायेगा, नक्सलमुक्त हो गया है और राष्ट्रीय परियोजना की संकल्पना उसके लिए की जायेगी। यह विष्णु देव शासन की सोच है, जिसको आप सुनना चाहते हैं। आपने तो मूँछ में ताव दिया था कि मना करने के बाद ऐसा नहीं हो सकता है। आपके मूँछ का ताव कहाँ गया ? माननीय अध्यक्ष महोदय, यही जोर से घोषणा कर दी कि हम रबी फसल को एम.एस.पी. में खरीदेंगे। आपने कौन सी एम.एस.पी. में कब खरीदा और कितना खरीदा। यह छत्तीसगढ़ की जनता जानना चाहती है...।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, रबी फसल की घोषणा कहाँ हुई थी। आप कुछ भी मत बोलिए।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप तथ्यों को छुपा रहे हैं। एथेनाल की अनुमति मिलने पर रबी फसल को ...।

श्री अजय चन्द्राकर :- बिल्कुल मैं बयान को टेबल कर सकता हूँ।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप टेबल करिये। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- बिल्कुल, मैं उसको टेबल कर सकता हूँ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- एथेनाल की अनुमति को आपने रूकवाया। एथेनाल की अनुमति हुई थी।

श्री उमेश पटेल :- आप कौन सी बात कर रहे हैं, उसको टेबल में रखिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- बिल्कुल करूंगा।

श्री रामकुमार यादव :- अभी तो धान लेवत में तुम्हरे हाथ-पांव उलझ जावत है, धान ला किसान के घर पुलिस भेजत हव, पटवारी भेजत हव धान लेबर, आप मन का किसान के बात करत हव।

श्री उमेश पटेल :- आप सदन को गलत जानकारी मत दीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक नई शासन प्रणाली विकसित की गई—sub-let, शासन को sub-let कर दिया गया कि दारू को आप देखो, राज्य शासन का नुकसान हो तो हो, खाद्य विभाग को कहा किया कि राइस मिल को आप देखो। कोयला लेवही वसूली आप करो, आप DMF का उल्लेख कर रहे थे, पूरे प्रदेश का DMF घोटाला आप संभालो। आप अभी धान खरीदी में बोल रहे थे कि उसमें नुकसान हुआ, सिर्फ दो साल, सिर्फ दो साल अभी सेस में बोलूंगा। मैं, शिवरतन जी अध्यक्षीय दीर्घा में बैठे हैं, बृजमोहन अग्रवाल जी, नारायण चंदेल जी— हम चारों हाई कोर्ट गए हैं, अभी सुनवाई शुरू नहीं हुई। दो साल का घाटा, अगर आप कहेंगे तो मैं पटल पर रख दूंगा। आपके प्रश्नों के उत्तर में है, वह भी दिखा दूंगा। सिर्फ दो साल का 1,198 करोड़ रुपये का घाटा, शुरुआत के सिर्फ दो साल का। नेता जी, अब आप बताइए या आगे चलें?

माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं MOU के बारे में थोड़ा-सा पढ़ देता हूँ। विष्णु देव साय जी ने औद्योगिक नीति नहीं लाया है ? आपके समय में 192 MOU हुए, 9 निरस्त किए गए, 23 में उत्पादन प्रारंभ हुआ, 168 को भूमि आवंटन ही नहीं किया जा सका। 1,15,906 लोगों को रोजगार सृजन का लक्ष्य था, पर केवल 7,000 लोगों को रोजगार दिया गया। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आप MOU के बारे में किसी से भी कमरे में बुला के पूछ लीजिए कि प्रति टन कितनी लेवही देनी पड़ती थी कि आपको 10 साल इतने की छूट, इसकी छूट, उसकी छूट, उसकी छूट, यहाँ जमा कर दो। हम लोग विधान सभा में RG टैक्स बोलते थे। यह ऐसी शासन प्रणाली है, जिसमें आप एक भी आरोप ऐसा नहीं

लगा सके । मैं इसको टेबल कर दूँगा, यह आपका उत्तर है। आरोप इसको बोलते हैं । (मेजों की थपथपाहट) मैं आपको बता दूँ, पहली कैबिनेट में PSC घोटाले का निर्णय हुआ । एक कमरे में 51 लोग सलेक्ट हो गए। हिंदुस्तान में ऐसी परीक्षा हुई है? अब बताइए, तीन साल में PSC की दो बार परीक्षा हो गई, विष्णु देव शासन के ऊपर क्यों उँगली नहीं उठ रही है ? यही विष्णु देव शासन की उपलब्धि है।

श्री रामकुमार यादव :- बिलासपुर में सब-इंजीनियर के भर्ती होए रिहीस हे । सब-इंजीनियर के भर्ती कैसे होईस, ओला पूरा देश देखे आवत हे । अऊ पुलिस भर्ती में तो भर्ती करईया मन फँसिया के मर गे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी ED की बात हो रही थी कि ED मेरे रिश्तेदारों के घर पहुँची। भारतमाला घोटाले की बात हो रही थी । माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, मैं आपको अभी एक कागज दूँगा, आपके खिलाफ नहीं बोलूँगा, ना किसी के खिलाफ बोलूँगा । आपने सभी सड़क का उल्लेख किया, रायपुर से धनबाद सड़क का उल्लेख कीजिए और जांच की माँग कीजिए । एक भी जमीन का अधिग्रहण विष्णु देव शासन में नहीं हुआ, भारतमाला प्रोजेक्ट में यदि सारे जमीन का अधिग्रहण यदि हुआ है तो श्री भूपेश बघेल जी मुख्यमंत्री थे, उस दौरान हुआ है। आप क्या कहना चाहते हैं ? मैं बैठूँ? आपके उत्तर को सुनूँगा । आपमें नैतिकता होगी तो रायपुर से धनबाद रोड के लिए भी जाँच की माँग करिए और मैं आपको लिस्ट दूँगा, मेरे पास है। अभी बोलेंगे तो मैं दो मिनट रुक के कागज निकाल के आपके पास भेज देता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, फिर ED की बात हो रही थी। मैं ED, EOW क्या कर रहा है, इसमें जाना नहीं चाहता, यह मुझे व्यक्तिगत लगते हैं। मैं व्यक्तिगत बोलना नहीं चाहता, पर भूपेश बघेल जी ने उसको छेड़ दिया। मेरे खिलाफ नामजद ED के द्वारा, ED के बयान पर महादेव सट्टा का आरोप नहीं है कि इसने महादेव सट्टा में FIR किसके खिलाफ किया है, पूरा प्रदेश की जनता जानती है, मैं उसका नाम नहीं लेता ।

श्री विक्रम मण्डावी :- यह विकास दर कौन है भैया? विकास दर कौन है ?

श्री राजेश मूणत :- कोई भी होगा, वह अंदर गया ।

श्री सुशांत शुक्ला :- यही सुशासन का संकल्प है ।

श्री विक्रम मण्डावी :- किस पार्टी से जुड़ा है?

श्री रामकुमार यादव :- अभी सट्टा-वट्टा बंद नहीं होत हे, यहाँ-वहाँ तुम्हरे सरकार है, सट्टा-वट्टा काबर बंद नहीं होत हे ।

अध्यक्ष महोदय :- रामकुमार जी, आपको समय देंगे भाई, आप बोलना।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने अपने PA को कहा था कि छोटे-छोटे भ्रष्टाचार को मत लिखना । मैंने ही निकाला था । शिक्षा विभाग का यह 22 करोड़ रूपए किल्लोल पत्रिका का लिख दिया, जिसे निकालते थे, बटेगी करके। अब वह लिख दिया है कि पुरखौती मुक्तांगन में 2 करोड़ रूपए का टिकट घोटाला हुआ, उसको लिख दिया है। जहाँ हाथ दिखा, वहाँ हाथ साफ किए हैं। अब उसमें मेरे PA को क्या दर्द हो रहा है, वह मुझे समझ में नहीं आता । (हंसी) अब मैं आपको एक लाईन बताता हूँ कि शासन कैसे चलता था । सेस लगाया गया । इस सरकार ने भी सेस लगाया है, ढाई साल निकल गये। हम सेस में भी चारों हाईकोर्ट में गये हैं, सुनवाई शुरू नहीं हुई है। प्रश्नाधीन अवधि तक 3,648.54 करोड़ रूपया सेस से मिला। इसमें प्रश्न का नंबर भी है। अब उसमें क्या उल्लेख होना था ? स्वास्थ्य के लिए, कोरोना के लिए सेस लगाया गया था। उस समय स्वास्थ्य मंत्री कौन थे ? माननीय टी.एस. बाबा थे। आप कोरोना के समय का शराब का उल्लेख कर रहे थे तो आपने क्या किया था, मैं उसको बता देता हूँ। आपने घर पहुंच सेवा दी थी, डिलीवरी ब्वाय का क्वालीफिकेशन तय है, आप प्रश्न के उत्तर को निकालकर पढ़ लीजिये कि डिलीवरी ब्वाय में कौन घर में पहुंचाकर दारू देगा और कितने रेट में देगा। आपने उसमें पैसे खा लिए। (सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा शेम-शेम की आवाजें) घर पहुंचायेगा तो इतना पैसा पौच्चा में ऊपर देना पड़ेगा, अर्द्धी में इतना देना पड़ेगा, बोटल में इतना देना पड़ेगा। आपने किसी को नहीं छोड़ा। छोड़िये, माननीय अध्यक्ष महोदय ने जल्दी खत्म करने को कहा है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी, इसलिए आप लोगों ने हर जगह पान के ठेले में, सब जगह दारू बिकवाना शुरू करवा दिया।

श्री रामकुमार यादव :- ये मन चखना दुकान मा ए.सी. लगात है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- खुले आम सरकारी चखना दुकान चल रहा है। सब जगह चल रहा है।

श्रीमती भावना बोहरा :- रामकुमार भाई, तै कब चखना दुकान गय रहे ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने मांग की थी कि जांच की घोषणा होनी चाहिए और लोकधन का दुरुपयोग रूकना चाहिए। हम आऊट सोर्सिंग के लिए संस्थाएं नहीं बनाये हैं। उसके नियम कानून बने तो राज्य के हित में बने। यदि सफल नहीं होगा तो बाद में देखेंगे कि इसको किसको दिया जाये। अब गोधन न्याय योजना में 2713 करोड़ रुपये सेस की राशि व्यय की गई है। इसमें और भी है। सेस की राशि को गौठान बनाने में, नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी में लगाया गया। स्वास्थ्य के लिए सेस के माध्यम से पैसा वसूला गया। हम हाईकोर्ट में गये हैं, लेकिन सुनवाई शुरू नहीं हुई है। यदि आप खण्डन करना चाहते हैं तो मैं बैठ जाता हूँ। नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी में मैं लगाया है। अधिकांश पैसे लगाये गये, 15वें वित्त आयोग के पैसे “मिशन क्लीन सिटी” भारत मिशन के लगाये गये और केन्द्र सरकार की आलोचना भी करते रहे। मैंने केन्द्र सरकार की बात कर दी। माननीय अध्यक्ष

महोदय, आप मुख्यमंत्री थे, माननीय मनमोहन सिंह जी को टेक्नीकल यूनिवर्सिटी के उद्घाटन में बुलाये थे, एस.आई.आर.डी. के उद्घाटन के लिए बुलाये थे। जब वह कांग्रेस भवन में थे, कार्यक्रम में गये थे वहां से फोन आया कि एस.आई.आर.डी. में माननीय प्रधानमंत्री जी जल्दी आना चाहते हैं। मैं आपको बता दूं कि क्यों आना चाहते थे ? एक पूर्व मुख्यमंत्री जी ने उनकी बैठक में हुल्लड़ कर दिया था। मैं उनका नाम नहीं लेता, वह आज हमारे बीच में नहीं हैं। लेकिन माननीय प्रधानमंत्री जी बैठक में भी हुल्लड़ किया गया था। 5 साल में माननीय भूपेश बघेल या तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने भारत सरकार के साथ क्या व्यवहार किया ? हमने अर्जुन सिंह को बुलाया। हमने माननीय अर्जुन सिंह से जो मांगा, उन्होंने वह दिया। दंतेवाड़ा का पॉलीटेक्निक कॉलेज, खैरागढ़ की यूनिवर्सिटी, कांकेर और कोरिया कॉलेज, यह सब माननीय अर्जुन सिंह ने दिया। हमने उस दिन जो-जो मांगा, उन्होंने दिया। आपके समय में श्री मणीशंकर अय्यर जी आये, पंचायती राज एक्टिविटी मैपिंग के साथ एम.ओ.यू. हुआ। तो हमने संघीय व्यवस्था का सम्मान किया तो आप एकाध उदाहरण बता दो। क्या संघीय व्यवस्था हमारे लिए है या आप उसका एकाध लाइन बता दो कि एक आदमी को बुलाकर उद्घाटन करवाया या हमने आमंत्रित किया ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, पैरा दुलाई में सेस की राशि व्यय की गई थी। मैं हमेशा इस बात का उल्लेख करता हूं कि 53 करोड़ सेस की राशि से पैरा दान हुआ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, महतारी वंदन में दारू की राशि, मंत्री जी का सार्वजनिक रूप से बयान आया था।

श्री राजेश मूणत :- जब आप बोलोगे तो अपने बयान में जितना बोलना है, वह बोलना।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 53 करोड़ रुपये सेस की राशि पैरा दान की दुलाई में लगा था। सरकारी खजाने का ऐसा खुला लूट कभी किसी ने देखा नहीं है और सुना नहीं है। सेस की राशि से गोबर-गौ मूत्र, वर्मी कम्पोस्ट जीवश्म-ब्रमहास्त्र, यह क्या है भईया ? किसने बनाया, कितना बनाया, कहां बनाया, कौन बेचा, कौन खरीदा, इसका कोई रिकार्ड नहीं है। परन्तु इसमें 120 करोड़ रुपये वर्मी कम्पोस्ट में व्यय कर दिया गया। मैं विधान सभा में दिए गए उत्तर को पढ़ रहा हूं। मैं अपनी ओर से एक भी आरोप कपोल-कल्पित नहीं लगा रहा हूं। गोबर पेन्ट, विधान सभा की 25वीं वर्षगांठ में एक दिन और बोला था। भूपेश बघेल जी, आप सब कर सकते थे। लेकिन सब कर सकते थे मैं एक कहानी है, मैं आपसे तुलना नहीं कर रहा हूं। क्षमा कर दीजिएगा। दुर्योधन को लोगों ने बहुत समझाया कि अधर्म के मार्ग पर मत चलो। तो दुर्योधन का उत्तर बड़ा रोचक था- अरे, मेरी बुद्धि अधर्म में ही लगती है, तुम लोग मेरा क्या कर लोगे? मेरा मन धर्म में लगता ही नहीं तो मैं क्या करूं? (मेजों की थपथपाहट) तो प्रदेश की सेवा करना विषय नहीं था। विषय जिस काम के लिए हम आए हैं, वह काम करेंगे और हो रहा है। पेंट बनाया, मेरे जिले में भी 17 लाख रुपये का पेंट खरीदा गया। उसमें भी सेस की राशि, डी.एम.एफ. की राशि नहीं मालूम। कलेक्टरों में होड़ लग गई कि गोबर की पेंट खरीदेंगे। उसका कहां

उपयोग किया गया, वह बताने को तैयार नहीं हैं। आप पूछ लीजिए, उस गोबर पेंट की पोताई कहां हुई? और आदेश क्या निकला था कि हम भवन को, सरकारी भवनों में पोतवाने के लिए अनिवार्य करेंगे। मैं पूछते-पूछते थक गया, एकाध भवन तो दिखा दो कलेक्टर साहब, जो पेंट लिए हो उसको कहां पर पोते हो? और उसके लिए मशीन भी खरीद ली।

श्री भूपेश बघेल :- क्या है, अजय जी, आजकल कोई कलेक्टर आपकी बात सुनता नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मुख्यमंत्री उन्नयन विकास प्राधिकरण किसलिए बना, कैसे बना? आत्मानंद स्कूल की तनखाह, बिजली बिल इसी में 800 करोड़ रुपये सेस की राशि उसमें स्थानांतरित की गई। माननीय अध्यक्ष महोदय, अब एक मेरा प्रिय विषय है। आप आगे भी मदद कर दें। राम वन गमन पथ, राम राज्य की परिकल्पना, जितनी जगह मूर्ति बनी है, उसका आपको रेट बता देता हूं। चंदखुरी का रेट है 69 लाख रुपये, शिवरीनारायण का 1 करोड़ रुपये, चंपारन का 77 करोड़ रुपये, राजिम का 105 करोड़ रुपये, रामगढ़ का 70 करोड़ रुपये। यह मूर्ति का रेट है न। मूर्ति कौन सी बनेगी, कैसे बनेगी, किसी को नहीं बताया गया। चंदखुरी की मूर्ति में तो एक हफ्ते की घोषणा किए हैं। अब उसके बाद मैं आपको आमंत्रित कर देता हूं। अटल जी के साथ वह पर्यटन मंडल में थे, धमतरी में सप्तऋषियों की मूर्ति बनाई गई है। वह सप्तऋषियों की कैसी मूर्ति है, आप देखिएगा। उसमें भी 34 लाख रुपये व्यय किए गए। हम लोगों के ऊपर तो 100 आरोप लगाते हो। कोई मापदंड नहीं, जैसी मूर्ति बनानी है। टी.सी.आई.एल. को क्या मूर्ति बनाने का अनुभव है? उसको क्या मूर्ति बनाने का अनुभव है?

श्री रामकुमार यादव :- राम मंदिर में 40% कमीशन खाए के चलत हे अभी।

श्री अजय चन्द्राकर :- ते अभी बोलबे न।

श्री रामकुमार यादव :- राम मंदिर में 40% कमीशन खाए गए, तेखरो बारे में बताओ।

श्री अजय चन्द्राकर :- और ऋषि की फोटो को देखोगे, तो आपको पूरी स्पिरिचुअल परिकल्पना हो जाएगी कि अरे ऋषि ऐसा होते थे या तो घृणा हो जाएगी कि ऐसे भी ऋषि होते थे, जिसके मार्ग में हम चलें। अब उसके बाद शबरी की प्रतिमा, लक्ष्मण जी की प्रतिमा को भी देखना चाहिए और हम कहते हैं, पूरे छत्तीसगढ़ में पर्यटक आएंगे। कहां से पर्यटक आएंगे? इसको देखने के लिए कहां से पर्यटक आएंगे? अब आपको एक बात बता देता हूं। मोहसिना किदवई जी की लड़की को स्प्रिंग बॉक्स को 28 करोड़ रुपये में इसी तरह के कार्यक्रम को करने के लिए, आयोजित करने के लिए आदिवासी नृत्य महोत्सव के लिए दिया गया। 5.5 करोड़ रुपये तो शिवरीनारायण में रामायण करवाने में व्यय कर दिया गया। हम गांव में नवधा रामायण तीन दिन का कराते हैं, गांव वाले मिलकर लाख, डेढ़ लाख, दो लाख में करवा देते हैं। 5.5 करोड़ रुपये में कौन सा रामायण हुआ, कौन सी रामायण पढ़ी गई, मैं आज तक नहीं समझ पाया। 28 करोड़ रुपये और जितने का आयोजन नहीं, उससे दोगुना राशि की इनाम। कहां की समिति की इनाम, माननीय अध्यक्ष महोदय, अब क्या लंबा हो जाएगा। ऐसी-ऐसी कहानी है, इसमें महाकाव्य लिखा

जा सकता है। गोबर, 246 करोड़ रुपये का गोबर बह गया, हिसाब ही नहीं है। बड़ा अजीब है भाई। दो अरब रुपये पैसे कहां गए, किसी के पास हिसाब नहीं। रीपा में 300 पार्क बनाने का लक्ष्य था। 600 करोड़ रुपये आखिरी साल बजट प्रोविजन। मेरे क्षेत्र में सबसे पहले गए थे। मैं 10 बार पूछ लिया, 10 बार बोल दिया। रीपा में क्या होगा, कैसे बजट होगा, क्या उसका लेजिस्लेटिव सपोर्ट दोगे, कैसे होंगे उसको स्पष्ट करो, क्या ट्रेनिंग होगी, कौन से संस्थान को अधिकृत किये, नहीं, उसको कलेक्टर देखेगा। कलेक्टर को जो मर्जी है मुख्यमंत्री जी से, रीपा बनाना है और फीता कटवाना है, तो उसको रीपा नाम दे दो और पैसा खा दो। पैसा खाने की मशीन खरीदने, आपको गोबर वाला बताया न। गोबर की ट्रेनिंग नहीं हुई, पेंट खरीदी हुई। पेंट कहां गयी, कोई नहीं जानता। अब गोठान में, आदर्श गोठान, मेरे क्षेत्र में आदर्श गोठान का उद्घाटन करने यह गए हैं दादी, वहां डांस भी किए हैं। आदर्श गोठान को भी परिभाषित कर लो, जैसे मैं आपको कल पूछा न। सेवाग्राम का क्या मतलब होगा? यह तो बताइए कि आदर्श गोठान में क्या होगा? क्या वहां पीने का पानी होगा, चारागाह होगा? उसमें कुछ तो होगा? नहीं, सिर्फ आदर्श गोठान होगा। आदर्श गोठान कैसा होगा? जैसा तत्कालीन मुख्यमंत्री चाहते हैं, उसे ही हम आदर्श गोठान बोलेंगे। जो उन्हें पसंद आए, वही काम करेंगे, वही आदर्श गोठान है। पैसा कहाँ से आएगा? तो पंचायती राज प्रतिनिधियों का फंड, डी.एम.एफ. से पैसा आएगा या स्वच्छ भारत मिशन का पैसा आएगा। मैं इसीलिए कहता हूँ कि जो लोग सार्वजनिक जीवन में नैतिकता और मापदंडों की लंबी-लंबी बातें करते हैं, वे रामवन गमन पथ की जाँच करवा लें, तब समझ में आ जाएगा। अब आरोप लगाते हैं कि हमने राजीव गांधी मितान क्लब बंद करवा दी। चुनाव के दो-तीन महीने पहले 140 करोड़ ट्रांसफर कर दिए गए। न कोई ऑडिट, न कोई खर्च का हिसाब, बस चुनाव में जाओ, पियो, खाओ, ऐश करो और पंजा छाप का प्रचार करो।

श्री रामकुमार यादव :- 10,000 करोड़ रुपये के धान ला मूसवा हर खा हे, तेकर बारे में आप कुछ बतावव।

श्री अजय चन्द्राकर :- चलिए भाई, अब मैं दूसरी तरफ बढ़ता हूँ। यह बोरे-बासी के विशेषज्ञ हैं, यह सब उठाते हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय चन्द्राकर जी, आप पूर्ववर्ती सरकार की योजनाओं की बात तो कर रहे हैं, लेकिन आज ढाई साल में आपकी सरकार कौन सी योजना लेकर आई है, उसके बारे में भी थोड़ा बता दीजिए। उस पर चर्चा कीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं बता रहा हूँ, आप सिर्फ 5 मिनट रुकिए। मैं आखिरी बिंदु की ओर बढ़ रहा हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पुरखौती मुक्तांगन टिकट जैसे छोटे-छोटे विषयों को छोड़ देता हूँ। उद्योग कंपनियों के 10,000 करोड़ रुपये के विद्युत शुल्क माफ हुए हैं। अभी माननीय नेता प्रतिपक्ष जी कह रहे थे कि बड़े लोगों का नाम लूंगा तो लफड़ा हो जाएगा। उनके कार्यकाल में किन-किन औद्योगिक

घरानों के विद्युत शुल्क माफ किए गए, यदि नेता प्रतिपक्ष दोबारा उत्तर देना चाहें, जो सदन की परंपरा है कि मुख्यमंत्री के बोलने के बाद वे बोल सकते हैं तो उन्हें इस पर जरूर प्रकाश डालना चाहिए कि कौन-कौन से औद्योगिक घराने थे, जिनके विद्युत शुल्क को माफ किया गया और उनसे कितनी उगाही की गई? आज विद्युत विभाग पर आरोप लग रहे हैं कि स्मार्ट मीटर में बिलिंग ज्यादा हो रही है। मैं दस्तावेज रख देता हूँ कि वर्ष 2021 में स्मार्ट मीटर लगना शुरू हुआ था, उस समय आप ही मुख्यमंत्री थे, आपका ही शासन था और आप ही ऊर्जा मंत्री थे। जब आप विपक्ष में आए तो बिलिंग ज्यादा हो गई। मैंने एक कांग्रेस के नेता से कहा कि 2x120 मेगावाट संयंत्रों को 172 करोड़ रुपये में नीलाम कर दिया गया। कैसे किया गया, कब हुआ, क्या हुआ, उसको कोई नहीं जानता। मैंने उस नेता से कहा, अरे यार, मुझे पता नहीं चला, वरना उतने में तो सिर्फ वहां लोहा ही निकलता। 172 करोड़ रुपये कबाड़ के भाव में घोषित करके विद्युत संयंत्र को बेच दिया गया। यह परिसम्पत्ति बेची गई थी। उमेश बाबू, अब मैं आपको प्रणाम करता हूँ। आपके प्रति मेरे मन में सद्भावना बहुत है, मैं ईमानदारी से बोल रहा हूँ कि आपने 4 महीने में 6 बार ओलंपिक कैसे करवा दिए? (हंसी) देख लीजिए, इसमें तारीख समेत लिखा है। ऐसा मत करना, आप आगे नेता बनेंगे।

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, ये गलत बातें कर रहे हैं। ये बिना प्रमाण के बात कर रहे हैं। 4 महीने में 6 ओलंपिक नहीं हुए हैं। यह अलग-अलग स्तर पर, ब्लॉक से लेकर जिले और फिर प्रदेश स्तर तक आयोजित हुआ है। ये कुछ भी बोल देते हैं। रबी फसल की घोषणा भी नहीं हुई, जबकि ये कह रहे हैं कि हो गई है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं उसे टेबल पर रखूंगा।

श्री उमेश पटेल :- बिल्कुल रखिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी रुकिए न।

श्री उमेश पटेल :- और ये 6 बार ओलंपिक कहाँ-कहाँ हुए हैं, उसकी सूची भी रखिएगा।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आपने सिर्फ बस्तर में ही ओलंपिक गेम शुरू किया है। बाकी जगहों पर क्यों नहीं किया है, जब आप इतने समर्पित हैं?

श्री अजय चन्द्राकर :- करेंगे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हाँ, करिए न तो

श्री अजय चन्द्राकर :- अब मैं अविश्वास प्रस्ताव के समय थोड़ी कर दूँ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आपको कहीं न कहीं विश्वास है इसलिए आपने बस्तर में ओलंपिक गेम का आयोजन किए हैं।

श्रीमती शकुंतला सिंह पोर्ते :- सरगुजा में भी हुआ है।

श्री रोहित साहू :- अपने मालिकों से पूछ लीजिएगा कि बस्तर के अलावा और कहाँ करना है।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब उमेश बाबू, मैं बहुत दुखी मन से बोल रहा हूँ कि 5 साल में ये नौजवान लड़का बेरोजगारी की परिभाषा ही तय नहीं कर पाया था।

श्री उमेश पटेल :- क्या आपने ढाई साल में करवा लिया है? यह बताइए।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप मेरी बात तो सुनिए।

श्री विक्रम मण्डावी :- आपने ढाई साल में करवाया है या नहीं करवाया है, यह बताइए।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, उन्होंने कुछ लोगों को बेरोजगारी भत्ता दिये तो अर्हता के 22 कॉलम थे, उसे छत्तीसगढ़ का कोई भी आदमी, जिसे नेता प्रतिपक्ष परबुधिया बोलते हैं, वह भर भी नहीं सकता था। अब ये परिभाषा तय करने के लिए एक गैर-मान्यता प्राप्त कंपनी CMII को 2 करोड़ रुपये दे दिए। अगर यह भी गलत है तो आप बताइए कि 2 करोड़ रुपये सिर्फ परिभाषा बनाने के लिए दे दिए।

श्री उमेश पटेल :- आप गलत बोल रहे हैं, मैं आपको इसका जवाब दे दूंगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय विष्णुदेव जी की तरफ बढ़ूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- जल्दी बढ़िये, टाइम बहुत हो गया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2023 का आर्थिक सामाजिक सर्वेक्षण क्यों किया गया, क्या उपयोग किया गया, उसमें 12 करोड़ रुपये व्यय किये गये हैं। क्या उपयोग हुआ, उसको टेबल क्यों नहीं किया गया, हम लोग भी पढ़ते कि क्या होता है? अध्यक्ष महोदय, मैं इसीलिए बोलता हूँ कि यह नियम प्रक्रिया होनी चाहिये कि एक व्यक्ति की स्वेच्छाचारिता कानून मत बने, उस कानून का सम्मान करना राज्य का उद्देश्य मत बने, राज्य परम्पराओं से चले, नियम से चले, वह कानून से चले। यह सुनिश्चित होना चाहिये, मैंने इसलिये कल यह बात कही थी। अध्यक्ष महोदय, आपने क्वांटिफाइबल डाटा बना दिया है, उसके कार्यकाल 10 बार बढ़ाये गये हैं तो क्वांटिफायबल डाटा की रिपोर्ट क्यों टेबल नहीं की गई है, जो किसी को नहीं बताया गया है। हम लोग क्यों नहीं जानते हैं कि छत्तीसगढ़ के लोगों की आर्थिक और सामाजिक पृष्ठभूमि क्या है, यह इनकी असलियत है। अध्यक्ष महोदय, मैं दो-तीन बातें और कह देता हूँ, कांग्रेस के घोषणा पत्र को पहले अभिभाषण में आत्मसात किया। राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में कहा कि हमने इसको आत्मसात किया है। आत्मसात किया है तो यह सरकारी दस्तावेज हो गया। सरकारी दस्तावेज हो गया तो शराबबंदी में गंगा जल चुहके थे या नहीं चुहके थे, यह एक बड़ा यक्ष प्रश्न है। कांग्रेस में इस बारे में बड़े मतभेद है कि गंगा जल चुहका गया कि दारू चुहका गया कि क्या किया गया, लेकिन शराबबंदी नहीं हुई। (मेजों की थपथपाहट) शिक्षा के अधिकार के तहत 12 वीं तक मुफ्त शिक्षा करेंगे...।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, माननीय अजय जी, वह आर.पी.एन.सिंह ही लिये थे। वह आपकी पार्टी में है, उसे पूछ लीजिएगा कि किसका शपथ लिये थे?

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, जल संसाधन नीति बनायेंगे, इसमें सिंचित क्षेत्र ही कम हो गया ? आपने उनके समय में बोला था, 200 फुड पार्क बनेंगे, बलौदाबाजार में कहीं फुड पार्क है ? माननीय लखेश्वर बघेल जी, सुनिये । आज तक स्वतंत्र भारत में जेएण्डके राष्ट्रीय समस्या घोषित थी, आपके द्वारा पैदा की हुई समस्या, मैं उसके इतिहास पर नहीं जाता, चाहे नार्थ या ईस्ट हो । मैंने उस दिन नक्सलवाद के भाषण में कहा था कि जैसे भगवान राम ने निशिचरहीन करने की प्रतिज्ञा ली थी, सरदार पटेल ने 1947 में जो प्रण किया था कि सोमनाथ का पूर्ण उद्धार होगा, अमित शाह जी माननीय मोदी जी के मार्गदर्शन में यही कहा था कि इस प्रदेश को 31 मार्च 2026 तक पूरा नक्सलविहीन करेंगे । (मेजों की थपथपाहट)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- अध्यक्ष महोदय, असली प्रतिज्ञा जंगलविहीन का है भांचा जी, आप उसको भी बताईये ? आप मेरे से अच्छे बता सकते हैं । मैं इसलिये आपसे निवेदन कर रहा हूँ ।

श्री अजय चन्द्राकर :- 28 लोगों का नाम है मामा ? माननीय अध्यक्ष महोदय, उसे करके बताया, छत्तीसगढ़ में नेतृत्व किसने किया, माननीय विष्णुदेव साय जी ने किया, उनके सहयोगी विजय शर्मा जी ने किया, नक्सल समाप्ति के बाद क्या होगा ? (मेजों की थपथपाहट) अब छत्तीसगढ़ 2047 नहीं, जिस विजन डाकुमेंट्स की आप आलोचना कर रहे थे, आपके पास सपने ही नहीं होंगे तो हमको क्यों दोष देते हो ? आप लूटते हैं और हम सपने देखकर पूरा करते हैं, अंतर यह है। (मेजों की थपथपाहट) विष्णुदेव साय की सरकार सपना देखती है और उसे पूरा करती है, हम समय मिलने पर दोनों हाथों से लूटते नहीं हैं । (शेम-शेम की आवाज) अध्यक्ष महोदय, आज पेपर में है कि कांकेर में फिर धर्मान्तरण के कारण गड़बड़ हुआ है । वर्ष 1968 में नियोगी साहब ने रविशंकर शुक्ल जी के कहने से धर्मान्तरण के लिये जो कानून बनाया तो कम्युनल नहीं थे और हम बनाये तो कम्युनल हो गये । कांग्रेस का मुख्यमंत्री बनाता है तो वह ठीक है और हम बनाते हैं तो फंडामेंटलिस्ट हो गये, आर्थोडाक्स हो गये दस तरह की बातें हो गई।

समय :

3.00 बजे

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक प्रण की अब 20 साल तक चक्की पीसोगे। छत्तीसगढ़ की परंपरा संस्कृति से छेड़छाड़ करने की कोशिश की, यह दृढ़ता किसने दिखाई? यह दृढ़ता दिखाई तो विष्णु देव साय जी ने दिखाई। (मेजों की थपथपाहट) कल छत्तीसगढ़ ईज ऑफ़ डूइंग बिजनेस में हमने खूब बहस की है, उसमें नहीं बोलूंगा। लेजिसलेटिव हाउस का मुख्य काम, मुख्य बहस यही है कि हम कानून बनाएं और ऐसे कानून बनाएं जिसमें लोगों का लाभ हो। यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि सरकार के आकार सिकुड़ रहे हैं, विशेषज्ञताएं बढ़ रही हैं, दूसरी तरह के प्रशासन दुनिया में आ रहे हैं, उस बीच में यदि वैकल्पिक रोजगार की व्यवस्था हो सकती है, छत्तीसगढ़ का कौशल उन्नयन हो सकता है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके नेतृत्व में इसी विधानसभा से वह पवित्र कानून कौशल उन्नयन का निकला जिसको आकार देने में, लाभ देने में, ये विधेयक लाने वाली कोई सरकार है तो विष्णु देव की सरकार है। (मेजों की थपथपाहट) माननीय पूर्व विधायक जी गैलरी में बैठे हैं। उनका एक संकल्प था, प्रदेश में भी यू.सी.सी. लागू की जाए, समान नागरिक संहिता लागू की जाए, इस सदन ने सर्वसम्मति से पारित किया था, आपके शासन में पारित किया था, बहुत सारे संकल्प पारित होते हैं, पर सीधे सादे सरल मत समझिएगा। राठिया जी, आपके इन चीजों लिए बहुत पर्याप्त हैं। विष्णु देव जी ने कहा, रंजना प्रकाश देसाई, एम के राउत और भी कमेटी बनी, एक पुलिस अधिकारी हैं, साहब, इस देश में समान नागरिक संहिता होनी चाहिए, यही बात बी आर अंबेडकर साहब ने डॉक्टर अंबेडकर साहब ने संविधान सभा में कही है। यही संविधान में समान नागरिक संहिता लिखा गया है, उसको लागू करने का संकल्प छत्तीसगढ़ में किसी ने लिया तो विष्णु देव साय जी ने लिया। (मेजों की थपथपाहट)

श्री लालजीत सिंह राठिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी से चाहूंगा कि हमारे आदिवासी समाज के मुख्यमंत्री हैं, हमारे अंबेडकर साहब के रास्ते पर चलने वाले मुख्यमंत्री हैं, अपने संसदीय क्षेत्र को उद्योगपतियों से बचा देंगे, माइंस से बचा देंगे। मैं इसी सदन में उनसे कहना चाहता हूं, जल, जंगल, जमीन पांचवीं अनुसूची का है, उससे छत्तीसगढ़ को बचाएंगे।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, न्यायमूर्ति शत्रुहन सिंह, न्यायमूर्ति मोहन पवार जी, एम के राउत जी, ज्योति रानी सिंह, यह उसके मेंबर हैं। छत्तीसगढ़ में समान नागरिक संहिता हम जल्द देखने जाएंगे। लाख आलोचना कर ले ना, केयरटेकर मुख्यमंत्री बनने के बाद घोषणा कर रहे हैं, भाजपा के घोषणा पत्र देखने के बाद हम ऐसा करेंगे। 3100 रूपया 25 क्विंटल में हिंदुस्तान में सबसे ज्यादा रेट पर सबसे ज्यादा मात्रा में खरीदने वाली कोई सरकार है तो वह विष्णु देव की सरकार है। आप आलोचना करें। (मेजों की थपथपाहट) तेलंगाना में आपकी सरकार है, हिमाचल में आपकी सरकार है, तनखाह देने के पैसे नहीं है। धान की क्या बात करते हो। सेब उत्पादकों को जो नुकसान हुआ।

श्री विक्रम मण्डावी :- यहां पैसा मिल रहा है ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप तो 15वें वित्त का पैसा नहीं दे रहे हैं। सरपंचों को पैसा नहीं दे रहे हैं। मतलब सरपंच लोग तरस गए हैं, भाई। किसी को वृद्धा पेंशन नहीं मिल रहा है, 4 माह का पेंशन बचा है, दिव्यांग लोग का पेंशन बचा है। उसको देने की कृपा की जाये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज डिप्टी साहब विजय शर्मा जी नौजवान गृह मंत्री जी बैठे हैं। आज से धर्म स्वातंत्र्य विधेयक के नियम लागू हो गए हैं, प्रकाशित हो गए, आज उसका बयान आया। पहली कैबिनेट में पहले दिन, मैंने उल्लेख किया कि टी.एस. सिंहदेव साहब ने इस्तीफा क्यों दिया था? यह विभाग क्यों छोड़ा था? माननीय मुख्यमंत्री जी ने आते ही 18 लाख आवास में मुहर लगाई, (मेजों की थपथपाहट) 7,81,000 आवास छत्तीसगढ़ में जो केंद्रीय शासन ने, मोदी जी ने स्वीकृत

किया था, उसको वापस करने वाली कोई सरकार है तो वह भूपेश बघेल जी की तत्कालीन सरकार है जिन्होंने 7,81,000 मकान को वापस किया और यह विधानसभा के उत्तर में है, मैं इस बात को नहीं बोल रहा हूँ। माननीय सभापति महोदय, किसान सम्मान निधि दी जा रही है। सामने बैठे हैं, जिस दिन से यह योजना लागू हुई, छत्तीसगढ़ में केन्द्र की किसान सम्मान निधि लागू नहीं होने दी। अपने शासन में 1 रुपये नहीं दिए। ममता दीदी भी केंद्रीय शासन को रोकने में निपटी।

श्री उमेश पटेल :- ये गलत बात है।

श्री अजय चंद्राकर :- बिल्कुल सही बात है।

श्री उमेश पटेल :- कभी नहीं रोका गया है।

श्री भूपेश बघेल :- ये एकदम असत्य बोल रहे हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- इतना असत्य मत बोलिए। किसान सम्मान निधि हमने दिया है।

श्री अजय चंद्राकर :- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि आपके समय लागू नहीं थी, मैं जिम्मेदारी से बोल रहा हूँ।

श्री भूपेश बघेल :- ये बिल्कुल असत्य कथन है।

श्री अजय चंद्राकर :- आपके समय लागू नहीं था। मैं जिम्मेदारी से बोल रहा हूँ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उस समय लागू था। (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- आप टेबल करो। बिल्कुल असत्य। आप टेबल करिए। जो बात कह रहे हैं, उसको टेबल करिए। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नरेन्द्र सिंह तोमर उस समय पंचायत मंत्री थे और नरेन्द्र सिंह तोमर जी ने पत्र लिखा था। उसके बाद वहां के अधिकारी ने पत्र लिखा और जब हमारे पंचायत मंत्री बदल गए, तब छत्तीसगढ़ सरकार को पत्र लिखा गया। प्रधानमंत्री आवास के लिए तीन-तीन पत्र आये, लेकिन उसका कोई रिप्लाई नहीं किया, क्योंकि ये चाहते ही नहीं थे कि छत्तीसगढ़ के लोगों को प्रधानमंत्री आवास का लाभ मिले। (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पैसा जमा किया जाये, यह भी लिखा गया था। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय, हम सम्मान निधि की बात कर रहे हैं, आवास की बात नहीं कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री विक्रम मण्डावी :- यह गरीबों को लूटने के लिए है। (व्यवधान)

श्रीमती यशोदा निलाम्बर वर्मा :- प्रदेश की जनता आपकी बात सुन रही है। इसमें कितनी सच्चाई है, ये सब देख रहे हैं। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- आप असत्य बोल रहे हैं। आप सदन को गुमराह कर रहे हैं। आप गुमराह मत करिए। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- अध्यक्ष जी, असत्य बोलने की बात हुई है। (व्यवधान)

श्रीमती यशोदा निलाम्बर वर्मा :- आप सदन में असत्य मत बोलिये।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- यह बोल रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- उमेश जी, बैठिये। अजय जी, और कितना समय लेंगे?

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, ये डिस्टर्ब करते हैं, उसको मेरे खाते से हटाइए।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वैसे भी भाषण वगैरह ठीक जम नहीं रहा है, जल्दी खत्म करो, भूख लगी है। हम आपका भाषण सुनने के लिए बैठे थे।

अध्यक्ष महोदय :- समाप्त करिए।

श्री अजय चंद्राकर :- जी। मत्स्य यानी नीली क्रांति माननीय प्रधानमंत्री जी की एक स्वप्निल योजना है। छत्तीसगढ़ में मत्स्य संपदा योजना में 320 करोड़ रुपये के केंद्रीय अनुसंधान के स्वरूप 606 करोड़ रुपये के मत्स्य बीज का उत्पादन कर देश में चौथे स्थान में शामिल होने वाला कोई प्रांत है तो छत्तीसगढ़ है और नेतृत्वकर्ता व पालनहार उधर बैठे हैं। (मेजों की थपथपाहट) सनातन परंपरा में विष्णु भगवान पालनहार माने जाते हैं। मातृ वंदन में शामिल करने के लिए अभी पोर्टल खुलेगा कि नहीं खुलेगा? भाई, कोई ऐसी योजना हो कि संगीता जी को जरूर मिले। वह कार्यवाहक अध्यक्ष हैं। वह पूरी बन भी नहीं सकती। वह तो भूपेश बघेल जी ने जोर लगाया है तो बन गई, नहीं तो छन्नी साहू के लिए टी.एस. सिंहदेव जी भिड़े थे। समझे न? (हंसी) तो आप बन ही नहीं सकती। वह कार्यवाहक हैं, तब तक कम से कम सांत्वना पुरस्कार दे दीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- ये तो कार्यवाहक बन गई, आप कभी कुछ बनोगे? आप कब बनोगे, ये तो बताओ? (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- मुझे छत्तीसगढ़ की जनता ने 5 बार विधायक बना दिया, माननीय अध्यक्ष महोदय ने 10 साल तक मंत्री बना दिया। (मेजों की थपथपाहट)

श्री रामकुमार यादव :- ये कुछ नहीं बनने वाला, अंडा बटे पराठा है।

श्री भूपेश बघेल :- ये तो दूसरे बार मैं कार्यवाहक अध्यक्ष बन गई, आप 5 बार मैं भी कुछ नहीं बन पा रहे हैं?

श्री रामकुमार यादव :- ये जीरो बटे पराठा अंडा वाला है, ये कुछ नहीं बन पाये।

श्री अजय चंद्राकर :- लखपति दीदी केंद्र सरकार की योजना है। विष्णु देव का संकल्प है, ग्रामीण विकास मंत्री जी बैठे हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी, ओ महतारी वंदन में आए रहे हस, तेला पूरा बता देना कि बुजुर्ग सियान महिला मन के पड़सा ला काबर काटे हव? (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- पोर्टल खुलही कि नहीं खुलही, तेला बताओ? महिला मन के फिर पंजीयन होही कि नहीं होही, तेला बताओ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- जिसको 1 हजार मिलना चाहिए, उसको आप 500 रुपये क्यों दे रहे हो? ढाई साल में जिनकी नयी शादी हुई है उनके लिए आप पोर्टल कब खोल रहे हो? ये भी तो बता दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- हाव, बतात हो। स्व सहायता समूह की 10 लाख 42 हजार महिलाएं हैं। योजना की विजय जी नेतृत्व कर रहे हैं। युवा कल्याण में विष्णु देव के निकटतम सहयोगी अरूण साव जी। युवा कल्याण के लिए कर्मचारी चयन मंडल आयोग बना। व्यापम खत्म करके बनाया। माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यापम आपने बनाया था, आपके मार्गदर्शन में मेरी भी छोटी सी भूमिका थी। प्रधानमंत्री कौशल उन्नयन में 26 जिलों में 29 करोड़ की लागत से 18,330 युवाओं का कौशल उन्नयन किया जा रहा है। ये छोटी-मोटी उपलब्धि नहीं है, आपने ही कानून बनाया। नगरीय प्रशासन में नगरोत्थान की नई योजना लाई गई। इस साल मुख्यमंत्री आदर्श शहरी समृद्धि योजना के लिए 200 करोड़ रुपये रखे गए। अब इसकी तुलनात्मक चीजों की चर्चा यदि मैं करूंगा तो समय लंबा लगेगा। माननीय अध्यक्ष महोदय का निर्देश है। 5 मेडिकल कॉलेजों को 50-50 सीटें मिली हैं। 2,900 प्लस डॉक्टर प्रतिवर्ष छत्तीसगढ़ में तैयार होंगे। (मेजों की थपथपाहट) आज जिस फैकल्टी की कमी की बात कर रहे थे, उसको माननीय जायसवाल जी बताएं कि कितने लोगों का प्रमोशन गैप था, कैडर गैप था, कितने लोगों के लिए उन्होंने कार्रवाई की और कितने लोग नियुक्त होंगे। छत्तीसगढ़ का काला दिन, 5 साल बाद आप देखिएगा कि मेडिकल कॉलेज से लेकर सारी स्वास्थ्य व्यवस्थाओं में मानव संसाधन की उपलब्धता कैसी होगी। बुनियाद डालने का काम यदि किसी ने किया, हर संसदीय क्षेत्र में खुलेगा, परंतु राज्य के कोटे से भी हम खोलेंगे, कवर्धा में हम राज्य के कोटे से खोलेंगे, दंतेवाड़ा में हम राज्य के कोटे से खोलेंगे, कुनकुरी में राज्य के कोटे से खोलेंगे, ये संकल्प यदि कोई लेते हैं तो आप ध्यान से देखिए कि वह सामने बैठे हैं, जिनका नाम है-विष्णु देव साय। (मेजों की थपथपाहट) अब डबल इंजन में मैं एक छोटी सी लाइन पढ़ देता हूं। आज 5 रेलवे स्टेशन के उद्घाटन होथे। इनको अमृत स्टेशन में जाना था। आप जाओगे, तो हवाई अड्डे का फील होगा। 32 स्टेशनों के लिए 1600 करोड़। बड़ी रेल लाइन डोंगरगांव, आपने उस संसदीय क्षेत्र का नेतृत्व किया है। कवर्धा, कटघोरा, यहां विजय जी बैठे हैं। गढ़चिरौली, बीजापुर, बचेली, सरडेगा, भालमुड़ा के लिए 1300 करोड़ रुपये, अंबिकापुर, बरवाडीह, खरसिया, नया रायपुर, परम कला, रावघाट, जगदलपुर। अब लिखना है, तो मैं धीरे-धीरे बोल दूं? धीमी गति के समाचार जैसे।

श्री रामकुमार यादव :- बिलासपुर से रायपुर लोकल ट्रेन नइ चलत है, एला कब चलवाथे एला बताओ? उहू बंद कर देहा। कोयला वाली मालहेच गाड़ी चलत है।

श्री अजय चन्द्राकर :- चलिए, सड़क में। मैंने डबल इंजन बोला तो भारतमाला ही बोल देता हूं, ज्यादा नहीं बोलता। उन्होंने सड़क की आलोचना की थी। अभी मैं राज्य के हेल्थ के बारे में बात करता कि ज्ञान, गति, संकल्प से लेकर किस कमिटमेंट के साथ विष्णु देव जी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ शासन का पूंजीगत व्यय कितना प्रतिशत है और कितना राजस्व व्यय है ? छत्तीसगढ़ की भूपेश सरकार पहली सरकार थी जो राजस्व व्यय के लिए कर्जा पटाने के लिए कर्जा लेती थी। तत्कालीन भूपेश सरकार एकमात्र सरकार थी, जो कर्जा पटाने के लिए कर्जा लेती थी। यह स्थिति नहीं है। (शेम-शेम की आवाज)

श्री अटल श्रीवास्तव :- आपने ढाई साल में कितना कर्जा लिया है?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अध्यक्ष महोदय, यह मेडिकल कॉलेज की बात कर रहे हैं। डी.के.एस. में देखें कि आपके पास न्यूरोसर्जन नहीं है। वह सबसे बड़ा अस्पताल है। मेकाहारा में उसके विभाग नहीं है, एम्स में डॉक्टर की कमी है और बड़ी-बड़ी स्वास्थ्य सुविधा की बात करते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- पर्यटन को उद्योग का दर्जा। हमारे अध्यक्ष जी जहां से आते हैं, घुड़मारास, आ हा हा हा। छत्तीसगढ़ के ऊपर यू.एन.ओ. की नज़र पड़ गई। (मेजों की थपथपाहट) बधाई । पर्यटन मंत्री जी कहां हैं? आपको बधाई । छत्तीसगढ़ फिल्म विकास निगम एवं संस्कृति परिषद का गठन छत्तीसगढ़ के प्रचार-प्रसार के लिए भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ के साथ एम.ओ.यू.। छत्तीसगढ़ का जो तीर्थ है, छत्तीसगढ़ की जो चीजें हैं, वह लोगों तक जाए। नया रायपुर में आई.बी. फर्म, फार्मा फर्म, एजुकेशन, आई.टी. पार्क, डेटा पार्क, फार्मा हब, मेडिसिटी, कॉमन फैसिलिटी सेंटर, यह सारी चीजें हो रही हैं।

अध्यक्ष महोदय, अबूझमाड़ और जगरगुंडा में एजुकेशन सिटी (मेजों की थपथपाहट)। आई.आई.टी. की तर्ज पर छत्तीसगढ़ के जो संस्थान हैं, जगदलपुर, बस्तर, कबीरधाम, रायपुर, रायगढ़ को उन्नयन किया जाएगा। अब आप योजना बंद करने की बात कर रहे थे। इतनी योजना आपने बंद कर दी, तो एक योजना का उदाहरण दे देता हूं, अब समय हो रहा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री तीरथ-बरत दर्शन को इन्होंने बंद कर दिया, जो आपने शुरू की थी। जेल को ही इन्होंने तीर्थ घोषित कर दिया। अधिकारी से लेकर सारे लोगों में होड़ लग गई कि चलो जेल। सब जेल जाने लगे। जेल जाना गर्व का विषय हो गया। जेल से छूटकर आते थे तो उनका वीरोचित स्वागत होता था। जैसे महाराणा प्रताप हल्दीघाटी जीत के आ रहे हैं, वैसे जेल से निकलते थे, जमानत होती थी तो। आदिवासियों के लिए चरण पादुका बंद कर दी गई, तब नेता प्रतिपक्ष जी के पेट में दर्द नहीं हुआ? वे तत्कालीन सरकार की बड़ी भूमिका में थे। उनकी तो एक मांग पूरी कर दी गई कि सक्ती को जिला बना दो, बस हो गया। बाकी तो

ठीक है। माननीय अध्यक्ष महोदय, ज्ञान और गति का जो बजट आया, मैं एक-दो चीजों को बोलकर अपनी बात समाप्त करूंगा। बहुत देर से बोल रहा हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- वैसे काफी हो गया।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, छोटा सा, बस जल्दी बोलकर समाप्त कर रहा हूँ। यह कोयला के ई-परमिट को क्यों निरस्त करके ऑफलाइन किया गया? उसको जब पूछा गया था, तो बोले कि राजस्व में वृद्धि हो रही है। राजस्व में वृद्धि नहीं हो रही थी, कांग्रेस के कोष में वृद्धि हो रही थी। जब पूरी दुनिया इलेक्ट्रॉनिक क्रांति की तरफ बढ़ रही थी, तो हमको इसमें जाने की क्या जरूरत थी? 7 करोड़ पौधे, एक पेड़ मां के नाम में लगाए गए। वन मंत्री जी कहां हैं? यहां बैठे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- अउ बाकी ला काखर नाम में कटवाए हवव ? अभी लगवाए हन, मैं तो कहे हन उहु जगह कटवा देत हन।

श्री अजय चन्द्राकर :- 1 लाख 44 हजार 92 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी आज तक का वर्ल्ड रिकॉर्ड है। क्या किसी सरकार ने घाटा खाकर भी इतनी बड़ी खरीदी की है? माननीय अध्यक्ष महोदय, यह आपको एक-दो चीज और छोटी-छोटी बता देता हूँ। मैं दो चीजें पढ़ देता हूँ। स्मार्ट मीटर परियोजना भारत सरकार आर.डी.एस. से लागू करती है और यह 2021 से लागू है। यह मैं आपके आरोप पत्र में बताना चाहता था। दूसरा, 2500 करोड़ के संभावित घाटे, जो आपने सब्सिडी दी थी। विद्युत मंडल को नहीं दी ना?। कैरी फॉरवर्ड कर दिया गया और टेबल पिटवा ली। हमने किसानों को यह-यह छूट दी करके और पूरा विद्युत मंडल डूबा दिया। माननीय अध्यक्ष महोदय, कुछ अच्छी फोटो शीट वाली योजनाएं इन्होंने बनाई। मैंने कल अंतर्राष्ट्रीय टेनिस अकादमी गिनाई थी, सेवाग्राम गिनाया था, अंतर्राष्ट्रीय स्कूल गिनाया था। मान लीजिए महात्मा गांधी की जन्म वर्ष में भी उसको लागू किया जाता है तो 700 सीटर आप स्कूल खोल रहे हैं, साढ़े 300, 328 सीटर हॉस्टल क्यों बना रहे हो? आपको हॉस्टल बनाना था तो पूरा बनाना था। अब छत्तीसगढ़ भवन दिल्ली, जेम्स ज्वेलरी पार्क, हज हाउस, माता कौशल्या धाम, रायपुर में झूला पुल ये सब फोटोशूट वाली योजना थी। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं परसाकोल ब्लाक के बारे में एक चीज बताकर दो मिनट में समाप्त करूंगा। माननीय नेता प्रतिपक्ष आपको और माननीय भूपेश बघेल जी को समर्पित है, लाईन पढ़ देता हूँ। 22 जून 2011 को वन सलाहकार समिति की अंतिम अनुशंसा तत्कालीन वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री जयराम नरेश के समक्ष प्रस्तुत हुआ। उन्होंने वन सलाहकार समिति की अनुशंसा से असहमत होते हुए इन दोनों कोयला खदानों की वन भूमि व्यपवर्तन की स्वीकृति जारी करने का निर्णय लिया। दिल्ली यू.पी.ए. सरकार के तत्कालीन वन एवं जलवायु परितर्वन मंत्री श्री जयराम नरेश जी द्वारा स्वीकृत देने के कारणों में यह स्पष्ट किया गया था कि यह कोल ब्लाक हसदेव अरण्य क्षेत्र के अंदर नहीं आता एवं हसदेव नदी के जलग्रहण क्षेत्र का भाग नहीं है। अब और दो लाईन पढ़ देता हूँ। वन संरक्षण अधिनियम के प्रकरणों में भारत सरकार

द्वारा जारी किये गये स्वीकृतियों में संभवतः इतिहास में यह पहला उदाहरण है जिसमें वन मंत्री ने वन सलाहकार समिति की अनुशंसा को परे रखकर किसी प्रकरण में स्वीकृति दी हो। ये कांग्रेस का मंत्री ही ऐसा कर सकता है और हमको लड़ा सकता है जो वो परबुधिया बोल रहे थे। (शेम-शेम की आवाज) अब सूरजपुर वनमंडल और सरगुजा वनमंडल दो स्वीकृति जिसका उल्लेख करते हैं, 23.02.2022 को स्वीकृति दी, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी किसकी सरकार थी? सरगुजा वनमंडल में स्वीकृति दी, उस दिन पर्यावरण की चिंता नहीं थी। उस दिन आपके पिताजी का पूरा परिचय क्यों रखा, आपको मालूम है। आपको बताने के लिये कि हसदेव का सपना माननीय बिसाहूदास महंत जी ने देखा था, दो बार रहे। इनसे पूछ लीजिए, उनको पूरा जीवन परिचय रखा हूं या नहीं रखा हूं। आज इस बात को याद दिलाऊंगा कि आप छाया से बाहर निकलिये। आप यशस्वी पिता के यशस्वी संतान हैं। पूछ-पूछ के करने के बजाय आप आगे बढ़िये। अब सूरजपुर में 24.03.2022 को स्वीकृति दी, कौन था भाई? अब कुछ बयान सुन लीजिए। माननीय भूपेश बघेल जी का बयान था कि इस साल 8 हजार पेड़ काटे जायेंगे, लेकिन कुछ लोग 8 लाख पेड़ काटने का हल्ला कर रहे हैं। जितने पेड़ कटेंगे, उतने वहां लगेंगे। जितनी जरूरत होगी, उतना कोयला दिया जायेगा। तक आपको कोई आपत्ति नहीं थी।

समय

3.18 बजे

(सभापति महोदया (सुश्री लता उसेन्डी) पीठासीन हुईं)

माननीय सभापति महोदया, कोयला चाहिए तो खदान चलानी पड़ेगी। उस समय के बयान की ये सारे पेपर कटिंग मेरे पास है। आपने दिये थे। जैसे ही कुर्सी बदली भाव बदल गया। भाव स्थायी रहना चाहिए। किसी भी दृष्टिकोण, स्टैण्ड रीढ़ की हड्डी होनी चाहिए कि हां, हमने किया है करके। जनता को भड़काने के लिये राजनीतिक इस्तेमाल ऐसी नाजुक चीजों का नहीं करना चाहिए। आप कुर्सी में रहें तो कुछ बोलें और विपक्ष में रहें तो कुछ बोलें। इसको नेता नहीं माना जा सकता। वह दल के विचार का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। माननीय विष्णु देव जी मैं अभूतपूर्व नेतृत्व छत्तीसगढ़ को सभी क्षेत्रों में प्रदान किया है। समय की एक सीमा होती है। जितनी सारी चीजें हैं, मैं एक लाइन को स्पर्श करते हुए आगे बढ़ा। मैं एक लाइन नेता प्रतिपक्ष जी को समर्पित करता हूं। फिर मुख्यमंत्री जी के लिये एक लाइन बोलकर मैं अपनी बात समाप्त करूंगा।

बातों से महल बनाने वाले, कर्मों से कंगाल मिले

वक्त ने जब हिसाब मांगा, सबके चेहरे लाल मिले। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय मुख्यमंत्री जी ने जिस तरह से शालीनता के साथ, सरलता के साथ, दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ, एक कल्पना के साथ, एक विजन के साथ डबल इंजन की सरकार में प्रदेश का नेतृत्व करते हुए जो सूरत बदलने की कोशिश की और एक विजय डॉक्यूमेंट प्रस्तुत किया कि 2047 तक छत्तीसगढ़ कैसा

होगा। ये एक छत्तीसगढ़ में आपने बहस का विषय बनाया, आपने वित्त मंत्री जी को ये दायित्व दिया कि छत्तीसगढ़ कैसा होगा, उसके लिये किस दिशा में बढ़ना है। उसके लिये चंद लाईनें समर्पित करके मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

दीपक बनकर राह सभी की रोशन करते हैं ।

हर पल मानवता का सन्देश ही भरते हैं ।

ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तित्व का अभिनंदन है जो अपने कर्मों से इतिहास रचते हैं । (मेजों की थपथपाहट)

श्री रामकुमार यादव :- महोदय, सुना न । अब एक ठन कौन मंत्री हटही तेन ला देख लेखा, अब तुंहर पक्का होगे ।

श्री दिलीप लहरिया :- कुल मिलाकर अंधा के बाजार में आईना बेचने से कोई फायदा नहीं है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, दूसरी पंक्ति समर्पित करते हुए -

जो स्वयं दीपक जलकर दीप बन जाते हैं ।

जो स्वयं जलकर दीप बन जाते हैं, वही दूसरों की राह सजाते हैं ।

ऐसे कर्मयोगी का अभिनंदन है, जो मानवता का मान बढ़ाते हैं । (मेजों की थपथपाहट)

माननीय सभापति महोदय, माननीय विष्णुदेव सरकार का अभिनन्दन, माननीय उनके सहयोगी मंत्रिमंडल के सहयोगी मंत्रियों का अभिनन्दन, जो बहुत अपनी क्षमता से आगे बढ़कर प्रदेश की सेवा कर रहे हैं, नीति बना रहे हैं । जो राज्य का काम है, नीति का ही काम है । जो कार्यपालिका है वह अब चोरी-डकैती में लिप्त नहीं है, शराब बेचने में लिप्त नहीं है । (व्यवधान)

श्री जनक ध्रुव :- आप गलत जानकारी दे रहे हैं । जगह-जगह शराब दुकान है। (व्यवधान) पूरा छत्तीसगढ़ में शराब दुकान है । (व्यवधान)

श्रीमती यशोदा निलाम्बर वर्मा :- पूरे छत्तीसगढ़ में शराब बिक रहा है । (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य :- बलौदाबाजार के सण्डी में नकली शराब की फैक्ट्री बन गयी है । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, शराब बेचने की सलाह देने के लिये झारखंड गये । मैं छत्तीसगढ़ की इज्जत बता रहा हूँ । झारखण्ड गये और ऐसा शराब बेचे कि वहाँ के आई.ए.एस. लोग भी जेल के अन्दर हो गए । माननीय सभापति महोदय, मैंने नेताप्रतिपक्ष जी से दिल से आग्रह किया था, आपके अविश्वास प्रस्ताव में कुछ भी नहीं है । आप जिस विचार दल से प्रतिनिधित्व करते हैं, वह नैतिकता में अनुमति नहीं देते कि आप किसी के प्रति अविश्वास व्यक्त करें । आपकी क्षमता को, आप यशस्वी पिता एक समृद्ध विरासत के नेतृत्वकर्ता हैं और आगे बढ़ा रहे हैं, उसको षड़यंत्रों में फंसाने की कोशिश हुई कि एक लचर बना दो, परम्परा को तोड़कर इससे बुलवा दो । इनकी सज्जनता से गुड़ गोबर करवा दो । वह तो आजतक किसी का विरोध नहीं किये हैं, थोड़ा बहुत तो वह

घबराते हैं। वह जनता से भी नहीं घबराते हैं, वह तो सज्जन आदमी हैं। वह थोड़ा बहुत घबरायेंगे तो भाभी जी भर से घबरायेंगे, वह और किसी से नहीं घबराते। (हंसी) और उनसे आरोप लगवा दो, उनकी सज्जनता का दुरुपयोग। यही लोग दिल्ली में जाकर बोलेंगे कि नेता प्रतिपक्ष लचर हैं, पकड़ नहीं है, कुछ नहीं है और यह आज जानबूझकर अविश्वास मत दिये, यह भी अजीब घटना घटी है कि हम लोग डॉ. चरणदास महंत में विश्वास व्यक्त करते हैं। यह अविश्वास प्रस्ताव नहीं है, यह एक बॉयस बना।

श्री धर्मजीत सिंह :- बोल चुके हैं इसीलिये तो यह अविश्वास प्रस्ताव आया है। नेता जी के खिलाफ बोल चुके हैं तभी यह अवश्वास प्रस्ताव आया है भई।

श्री अजय चंद्राकर :- चलिये, मैं सुधार लेता हूँ। माननीय सभापति महोदय, पहली बार छत्तीसगढ़ में नेता के पद का दुरुपयोग हुआ, नेता प्रतिपक्ष के पद का दुरुयोग हुआ और षडयंत्रपूर्वक इन लोगों ने किया। जो उनके विरोधी लोग हैं, उन लोगों ने किया। मैं आपसे फिर आग्रह करता हूँ कि हम आपकी पूरी भावनाओं का सम्मान करेंगे। सरकार के पूरे मंत्री मौजूद हैं। जो आप कहेंगे वह करेंगे। आप सम्मान बचाते हुए अपने अविश्वास प्रस्ताव को वापस ले लीजिये क्योंकि उसमें कुछ नहीं है। माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया इसके लिये धन्यवाद।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय सभापति महोदय, अजय जी बहुत लंबा बोले। हमने बहुत बार विधान सभा में उनका भाषण सुना, बहुत धाराप्रवाह भाषण सुना लेकिन आज बहुत ही लचर था और मतलब यह है कि मुंह से कुछ निकल रहा था, बाड़ी लेंग्वेज कुछ और था। अजय जी, अब मैं क्या बताऊँ। किसके कहने से अविश्वास प्रस्ताव रखा, मैं यह थोड़ी न भंडाफोड़ करूंगा। (हंसी)

सभापति महोदय :- अभी केवल प्रथम दो वक्ताओं द्वारा अपने विचार रखे गये हैं। मेरे पास वक्ताओं की सूची के अनुसार 40 से अधिक सदस्यों के नाम हैं। प्रथम दो वक्ताओं द्वारा ही लगभग 3 घंटे से ज्यादा समय लिया गया है। यदि इस प्रकार से सभी वक्ताओं द्वारा समय लिया जाएगा तो चर्चा में बहुत अधिक समय लगेगा। मेरा अनुरोध है कि समय को ध्यान में रखते हुए आप अपने विचार रखें। माननीय श्री कवासी लखमा जी।

श्री अजय चंद्राकर :- एक मिनट। माननीय सभापति महोदय, काला शर्ट वाला नहीं है। धुरंधर पिकचर में एक रहमान डकैत थे, रहमान डकैत को सब कोई मिलकर मरवा दिये। समझ रहे हैं न, उसमें जितने और किरदार थे। मेजर असलम, क्या-क्या नाम था? वह रहमान डकैत के सही किरदार हैं उसको भी सब मिलकर निपटायेंगे क्योंकि उन्होंने एक ऐसी बात कही है, भूपेश बघेल जी के क्षेत्र में युवा कांग्रेस का चुनाव करवाने 150 गाड़ी लेकर घुस गये। अब रहमान डकैत को तो निपटना ही है उसको कोई नहीं बचा सकते हैं। (हंसी)

श्री रामकुमार यादव :- अब इधर सुनिये।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी अजय चन्द्राकर जी ने पूरे इधर-उधर की बात की तो उसके दिल में झलक रहा था। अभी मंत्रिमण्डल चेंज होगा तो उनको जगह मिलेगी। उन्होंने उसी उम्मीद में आज भाषण दिया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- दादी, जब हमने आपके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया था, आप उस समय मंत्री थे तो वह बात बता देता हूँ।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उस समय मैं मंत्री नहीं था।

श्री अजय चन्द्राकर :- दादी, यह गांव का नाम बता देंगे। मैं भूल रहा हूँ, उस आरोप पत्र में यह लिखा था कि आप वहां जुआ खिलवाते हो। (हंसी)

संसदीय कार्य मंत्री (श्री केदार कश्यप) :- उस गांव का नाम डोंडा था।

श्री अजय चन्द्राकर :- दादी, आप मंत्री रहते हुए डोंडा में जुआ खिलवाते थे, यह हमने आरोप पत्र में लिखा था और दूसरा मैंने आपको समझाया था कि आप दारू विभाग छोड़ दीजिए। मैंने आपको यह समझाया था या नहीं समझाया था, आप यह बोल दीजिएगा।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह पूरा गलत आरोप है। वहां मुर्गा बाजार हो रहा था और आप जुआ खिलाने की बात कर रहे थे।

श्री केदार कश्यप :- दादी, आप एक बार मेरे साथ चलिये। आप आपके क्षेत्र डोंडा में दिखाते हैं।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप उसी को दिखा दीजिए।

श्री केदार कश्यप :- मैं तो वहां गया था। मुझे ऐसा लगा कि मैं आंध्रा पहुंच गया हूँ तो बाद में पता चला कि यह कौंटा ही है।

श्री आशाराम नेताम :- माननीय दादी, वह रामकुमार कौन सा वाला नोट गिन रहा था।

श्री रामकुमार यादव :- ओ अयोध्या के चम्पत राय वाला पईसा तुम्हारे मेर आए हे, अइसे हमन सुने हन।

श्री आशाराम नेताम:- माननीय दादी, वइसे ओला मैं ही गिनत रेहेंव।

श्री कवासी लखमा (कौंटा):- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हमारे दल, हमारे नेता हमारे दल के विधायकों ने अविश्वास प्रस्ताव लाया है। नेता जी ने जो कहा, मेरी भी वही सोच है। यह अविश्वास प्रस्ताव हमारा व्यक्तिगत नहीं है। यह चाहे छत्तीसगढ़ की जनता, किसान, मजदूर, छत्तीसगढ़ के नौकरीपेशा, गुरुजी, शिक्षक, चरपासी हों, हर आदमी इस सरकार से इन ढाई सालों में विष्णु देव शासन की डबल इंजन सरकार से बहुत दुःखी है। हम जनता के उस दुःख को प्रगट करने के लिए हमारी पार्टी, हमारे नेता जी ने अविश्वास प्रस्ताव लाया है। इसमें बहुत लोगों को बोलना है। आसंदी से भी अनुमति मिली है तो मैं इसमें ज्यादा नहीं कहूंगा। लेकिन थोड़ा-थोड़ा इसमें बात करेंगे। यह जो भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने चुनाव में माननीय देश के प्रधानमंत्री मोदी जी के गारंटी का वायदा किया था, उस

गारंटी के साथ छत्तीसगढ़ में डबल इंजन की सरकार होगी, छत्तीसगढ़ के लोगों का विकास होगा और छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी का आदिवासी मुख्यमंत्री बना। हम लोग आदिवासी समाज से आते हैं। यह छत्तीसगढ़ आदिवासी बाहुल्य है। तो सब लोगों ने यह सोचा था कि यहां आदिवासी मुख्यमंत्री बनेगा तो यहां पर आदिवासियों की भलाई होगी। यहां कमजोर वर्ग के लोगों की भलाई होगी, लेकिन इस विष्णु देव सरकार और आदिवासी मंत्रिमण्डल में उसको दबाकर, उस सीधे-सादे का दुरुपयोग करके, आदिवासी लोगों को लड़ाने का काम, भारतीय जनता पार्टी की सरकार कर रही है। अभी हमारे नेता जी ने भी कहा। यह पहला उदाहरण है। मैंने एक बार विधान सभा में यह बोला था कि इस देश में लोकतंत्र में केवल तीन लोगों के पास पॉवर है, यहां देश में प्रधानमंत्री के पास पॉवर है, राष्ट्रपति बड़ा पद है, लेकिन हमारे देश में नहीं है, अमेरिका में है। इस देश में प्रधानमंत्री और प्रदेश में मुख्यमंत्री जिला में डी.एम., कलेक्टर को पॉवर होता है। यहां कलेक्टर ऑफिस सुरक्षित नहीं है।

श्री राजेश मूणत :- कहां का?

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बलौदाबाजार की घटना बता रहा हूँ।

श्री राजेश मूणत :- वहां आप नहीं गये थे।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं भी गया था।

श्री राजेश मूणत :- वहां आप क्यों नहीं गये थे, आप बाद में गये थे। आग लगाने वाली टीम आपने तो भेज दी थी, आप बाद में गये थे।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कोई टीम नहीं गयी थी, लेकिन हम लोग देश-दुनिया में बदनाम हो गए। विष्णु देव जी की सरकार में, एक आदिवासी मुख्यमंत्री के एरिया में कलेक्टर आफिस में आग लग गई।

श्री सुशांत शुक्ला :- अजय भैया अभी धुरंधर पिक्चर की व्याख्या कर रहे थे और बादशाह सलामत के खिलाफ जिल्ले इलाही करते हुए बलौदाबाजार कौन गया था, उसको जेल भी हुई थी। गड्डी जांदी ए छलांगा मारदी, कहिके सुकमा पहुंचे रिहीस हे, उहां से कहां गिस, पता कर लेवव।

श्री रामकुमार यादव :- फिल्म वक्त की आवाज देखे हव न।

श्री कवासी लखमा :- महाराज, ले-देकर खड़ा हुआ हूँ, अभी भटकाने का काम मत करना। (हंसी) मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि जिस समय रमन सिंह जी मुख्यमंत्री थे, उनके कार्यकाल में एस.पी. और कलेक्टर आफिस हमारे सुकमा और बलौदाबाजार में भी बना है, दोनों बिल्डिंग एक साथ बनी थी। देश में सबसे ज्यादा ताकतवर अधिकारी का आफिस जलना बहुत दुर्भाग्य की बात है, आजादी के बाद हिन्दुस्तान में कहीं पर भी कलेक्टर कार्यालय नहीं जला होगा, वह विष्णु देव की सरकार और बीजेपी की सरकार में जला है। कलेक्टर आफिस तो जला, साथ ही एस.पी. आफिस भी जला। दोनों

आफिस जलाने वाली हिन्दुस्तान की यह पहली सरकार है, छत्तीसगढ़ के नाम बदनाम हुआ है । उसके साथ अभी नेता जी कह रहे थे कि जंगल काट दिया ।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति जी, छत्तीसगढ़ का नाम बदनाम हुआ, इस शब्द पर आपति है ।

श्री कवासी लखमा :- क्यों आपति है, जल गया, पूरी दुनिया ने देखा है ।

श्री सुशांत शुक्ला :- अगर बदनाम हुआ है तो आपकी सरकार बदनाम हुई है । आपके समय की आधी सरकार जेल में है, आधी सरकार बेल में है और आप खुद बेल में हैं । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- एस.पी. आफिस जला, कलेक्टर आफिस जला, उसमें क्या आपति है । जो बात सही है, वह सही है ।

श्री सुशांत शुक्ला :- आपके समय की आधी सरकार जेल में है, आधी सरकार बेल में है और आप खुद बेल में हैं । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आप लखमा जी को बोलने दीजिए, आप दोनों खड़े मत होईए ।

श्री विक्रम मण्डावी :- आप लोग बोलते हैं तो बदनामी नहीं होती है, हम लोग इधर से बोल देते हैं तो बदनामी होती है ।

श्री सुनील कुमार सोनी :- सभापति जी, लखमा जी अकेले सदस्य हैं, जो नीचे नहीं देखते हैं कि क्या लिखा हुआ है । उनको जितना बताया गया, उतना ही बोल रहे हैं ।

सभापति महोदय :- लखमा जी के बोलते तक कोई टीका-टिप्पणी न करें ।

श्री विक्रम मण्डावी :- वे तो कम से कम बोल रहे हैं, बाकी लोग तो बोल भी नहीं रहे हैं ।

श्री कवासी लखमा :- आप तो देखकर बोल रहे हैं, मैं तो दिल से, अपने मन से बोल रहा हूँ ।

श्री सुशांत शुक्ला :- कहीं और से बोलना है तो बोल दीजिए ।

श्री रामकुमार यादव :- ये ह महतारी के पेट के सीखके आए है ।

श्री कवासी लखमा :- मैं पूरे हिन्दुस्तान के दिल को जानता हूँ, पूरा छत्तीसगढ़ घूमा हूँ । मैं आदिवासी आदमी हूँ, जंगल में रहता हूँ क्योंकि आदिवासी लोग जंगल, जमीन और भगवान भरोसे हैं । हम लोग बड़े-बड़े उद्योग नहीं खोलते, बड़े-बड़े आदमी नहीं बनते । जहां-जहां आदिवासी है, वहीं जंगल है । जहां-जहां पहाड़ है, वहीं आदिवासी रहता है । आपके तमनार में क्या हुआ ? बस्तर में नक्सली खत्म हुए तो इस सदन में सबसे पहले बधाई देने वाला आदमी मैं था । नक्सलाईड खत्म हुआ, हम लोगों के लिए बहुत बेकार थे । मैं पहला आदमी हूँ, जो यहां खड़ा होकर बधाई दिया हूँ । लेकिन आज उस बस्तर को दूसरे की नजर लग गई । वहां के लोग डर रहे हैं कि नक्सलाईड खत्म हुआ, वह तो ठीक है, लेकिन बस्तर का जंगल उद्योपतियों की नजर में आ गया, जंगल में बड़े-बड़े व्यापारी लोग घूम रहे हैं, वहां सफेद गाड़ियां घूम रही है । पहाड़ में टीना मिलेगा, सोना मिलेगा, कोरण्डम मिलेगा, अबूझमाड़ में क्या है, जगरगुण्डा में क्या है, दरभा घाटी में क्या है, बैलाडीला में क्या है ? लोग वहां पर इस सरकार

से बहुत परेशान हैं। हम लोग वर्षों से रेल लाईन की मांग कर रहे हैं कि जगदलपुर रेल लाईन हो। केरल के बराबर बस्तर है, बस्तर केरल से बड़ा है, लेकिन वहां अभी तक रेल लाईन नहीं है। उस समय बैलाडीला के कारण विशाखापट्टनम से रेल लाईन बना। हम लोग उसी रेल को देखते हैं, उससे मालगाड़ी जाती है, लेकिन पैसेंजर ट्रेन नहीं है। भारत सरकार ने अभी एक नया रेल लाईन चालू हुआ, जो आंध्रा के कोट्टागुड़ा से जंगल-जंगल होते हुए बैलाडीला रेल आएगी। आदमी जाने के लिए तो रेल नहीं है, लेकिन माल निकालने के लिए रेल लाईन बन रहा है। जापान में जो माल जा रहा है, वह बैलाडीला का माल रेल से जा रहा है। विशाखापट्टनम तक रेल लाईन बन गया और अब तेलंगाना के जंगल से अंदर-अंदर बैलाडीला का माल ले जाने के लिए बन रहा है। यह कैसी नीति है? पिछले 52 वर्षों से बैलाडीला के खदान का माल जापान जा रहा है। यहां अजीत जोगीजी मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने नगरनार का स्टील प्लांट खुलवाया था। नगरनार का स्टील प्लांट इसलिए खोला गया था ताकि वहां के लोगों को रोजगार मिले। नगरनार का स्टील प्लांट के बारे में विधान सभा में प्रस्ताव पारित हुआ कि नगरनार का स्टील प्लांट किसी निजी को नहीं देना है। यह तो एन.एम.डी.सी. उस प्लांट को चलाये, बैलाडीला प्लांट चलाये। यह भारत सरकार का उपक्रम है। इसलिए नगरनार स्टील प्लांट का नाम बैलाडीला हो, लेकिन अभी तक नाम नहीं दिया गया है। भूपेश बघेल जी के शासकीय प्रस्ताव को भारत सरकार के पास भेजा गया था। अगर बैलाडीला नहीं चला पायेगा, एन.एम.डी.सी. नहीं चला पायेगा तो छत्तीसगढ़ सरकार उस नगरनार प्लांट को चलायेगी, इसको अनुमति दो। लेकिन आज तक भारत सरकार की ओर से कोई सूचना भी नहीं आई है। जबकि यह प्रस्ताव विधान सभा से पास हुआ था।

सभापति महोदय, उसी प्रकार से आज हमारे आदिवासी भाईयों के लिए एक सिंगल पाईट लाईट है। यह विभाग मुख्यमंत्री जी के पास है। अभी गांवों में नया मीटर लग रहा है। गांव वाले उस मीटर को क्या बोल रहे हैं कि यह अड़ानी मीटर है। नया मीटर आ रहा है, मीटर लगा रहे हैं। आज आदिवासियों को बिजली थोप रहे हैं। एक हजार रुपया महतारी वंदन में मिल रहा है। अब लाईट का 5 हजार, 10 हजार का बिल आयेगा। अभी हाल ही में कितने लोगों को बिजली का बिल आया, नहीं आया, मुझे नहीं मालूम है। रायपुर के मेरे घर में 2-3 हजार रुपये का बिल आता था, लेकिन इस बार 10 हजार रुपये का बिल आया है। एक तरफ 1 हजार रुपया देकर 10 हजार बिजली बिल के माध्यम से लूटा जा रहा है। भारतीय जनता पार्टी ने अपने घोषणा-पत्र में कहा था कि आदिवासी लोगों को 500 रुपये में गैस मिलेगा, वह घोषणा-पत्र कब पूरा होगा? इसीलिए अमित शाह का प्रस्ताव आया है। मनमोहन सिंह की सरकार में 400 रुपये मिलने वाला गैस अभी 1,000/-, 1,100/- रुपये में मिल रहा है।

माननीय सभापति महोदय जी, हमारे बस्तर में लोग हक्का-बक्का हो रहे हैं, वहां पर बड़ी-बड़ी गाड़ी जाने से वहां के लोग डर रहे हैं। वहां का जमीन बेचा जा रहा है, अबूझमाड़ का जंगल काटा जा रहा है। हम लोग जंगल के साथ रहने वाले लोग हैं। हमारा जंगल से जुड़ा हुआ काम है, खेती-बाड़ी करना,

जंगल से लकड़ी लाना, सब काम जंगल से होता है। सरकार इस प्रकार से उस जंगल के ऊपर नजर रखी हुई है। वन विभाग के वन मंत्री हमारे बस्तर से हैं। पूरे छत्तीसगढ़ में वन विभाग द्वारा सभी जगहों के लिए टेण्डर-ठेका हुआ था। सिर्फ बस्तर जिले में जहां आदिवासी लोग तेन्दूपत्ता तोड़ते हैं, वहीं ज्यादा तेन्दूपत्ता है। उसको वन विभाग वाले तोड़े थे। एक दिन, दो दिन तुड़ाई किये, इससे आदिवासी लोगों को लाभ नहीं मिला। हमारे सुकमा हमारे बस्तर के तेन्दूपत्ता को उड़ीसा ले जाकर बेचा गया। यहां पर साढ़े पांच सौ रुपया सैकड़ा रेट है, वहां ले जाकर 3 हजार रुपये में बेचे हैं। सरकार का ये तो हाल है। लोगों को फायदा नहीं है। मैं अभी फिर बोल रहा हूं कि बड़े-बड़े नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया। मैं पहला आदमी हूं जो गृहमंत्री जी को धन्यवाद दिया हूं। जो आदमी मारने वाला है, वह रोड में घूम रहा है। जहां पंचायत में दिन दहाड़े पंचायत हजारों लोगों की मीटिंग लेकर लोगों को मार रहा था, जो आदमी उनको खाना खिला रहा था, उनके पास पानी पहुंचा रहा था, बंदूक के डर के मारे क्या करेंगे ? अभी वे लोग जेल में पड़े हैं। कल मेरा प्रश्न था, मैं नहीं आ पाया। अभी 3 हजार निर्दोष लोग अंदर हैं। हम लोग गृह मंत्री से उस दिन व्यक्तिगत रूप से बात किए। हर समय बात कर रहे हैं। अगर बंदूक वाले छोड़ दिए, नक्सलाइट खत्म हो गया, पूरे देश में खत्म हुआ, तेलंगाना में, आंध्रा में, ये छत्तीसगढ़ में ही नहीं है। इसलिए मैं उस समय बधाई दिया हूं। लेकिन वे बेचारे आदिवासी लोग तीन-तीन साल, चार-चार साल उनके पास पैसा नहीं है, उनके पास वकील के लिए और कोर्ट में केस लड़ने के लिए कुछ भी नहीं है, वे बंदूकधारी नहीं हैं, किसी का मर्डर नहीं किया है, उसको छोड़ा जाए। हमारी सरकार थी तो हम लोग 1,700 लोगों को छोड़े थे, उससे डबल अंदर में हैं। इसलिए हम लोग अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं, यह आदिवासी विरोधी सरकार है। तो हर जिला में अंदर है। उसके साथ आज जल मिशन योजना है। ये भारत सरकार की योजना है। माननीय नरेंद्र मोदी की योजना है। ये डबल इंजन की सरकार है। तो सब लोग चुनाव में बोल रहे थे कि हम लोग भाई, आपकी पार्टी के लोग हो, हम लोग हो, आने वाले समय में आप लोग बोरिंग से पानी नहीं लाओगे। आपके घर में पानी आएगा, पानी सुर-सुर निकलेगा। पकड़ोगे घर ले जाओगे। लेकिन एक तो गांव में बस्तर में पानी है ही नहीं, आपके छत्तीसगढ़ में है या नहीं पता नहीं। जल मिशन योजना को क्या हो गया? जब अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री थे, उसको हम लोग अभी तारीफ करते हैं कि गांव में प्रधानमंत्री सड़क बनाया। अभी गांव में अगर सड़क देख रहे हैं तो अटल बिहारी वाजपेयी की देन है। कोई भी अच्छा काम होता है तो उसको बधाई देना चाहिए। लेकिन ये पानी वाली योजना भी नरेंद्र मोदी की भी सबसे अच्छी योजना थी। गांव में, घर-घर में पानी हो, घर में गरीब लोगों को अगर खाना नहीं मिलेगा तो पानी तो मिले। खाना नहीं मिलने से एक दिन, दो दिन भूखा रह सकता है। पानी नहीं मिलेगा तो आदमी मरेगा न। तो इसलिए पानी को घर पहुंचाने की जो योजना चालू हुई थी, हमारी सरकार थी, उस समय कोरोना था, क्या-क्या लफड़ा था, वह काम चालू हुआ था, और अभी ढाई साल में गांव में भी नहीं हुआ है। ये मेरी रिपोर्ट नहीं है, कैंग की रिपोर्ट है। कोई

पंचायत में, कोई मोहल्ला में, कोई जनपद में, कोई ब्लॉक में भी ये पानी पहुंच नहीं रहा है, पहुंचा नहीं है। ये हिंदुस्तान में होगा। हर एक राज्य में हुआ है, तेलंगाना में भी चालू है। उड़ीसा में भी चालू है, वहां अच्छा है। लेकिन यहां छत्तीसगढ़ में..।

श्री राजेश मूणत :- दादी एक मिनट। आप तो बहुत सीनियर हैं, बहुत अनुभवी हैं। बस्तर के बारे में जितनी बात बोल रहे हैं, नक्सलवाद खत्म हुआ, आपने धन्यवाद दिया। लेकिन आप 5 साल वहां से मंत्री रहे, आप एक काम गिना दीजिए, जो वहां किया है।

श्री कवासी लखमा :- वहां शबरी नदी में आठ पुल बनवाया हूं, इंद्रावती में बीजापुर के विधायक को पूछिए, जगदलपुर के विधायक को पूछिए, पुल बनवाए हैं। सड़क, देवगुड़ी बनाए हैं। रामाराम मंदिर को राम वन गमन पथ में..।

श्री राजेश मूणत :- यादव जी बैठ जाइए न।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सिर्फ जंगल को खत्म किया है। आप लोग सिर्फ जंगल को काटने का काम किए हैं। हमारे मंत्री जी ने पुल बनवाया है।

श्री कवासी लखमा :- हम लोगों ने आदिवासी लोगों को पट्टा दिया है। जिसके पास राशन कार्ड नहीं था, आपकी सरकार में माननीय लता उर्सेडी ऊपर में बैठी है, वह बस्तर की हैं। वह मंत्री भी थीं। गांव में, जगरगुंडा में बस नहीं चल रहा था, बस चलाया हूं। वहां बाजार बंद था, बाजार चालू करवाया हूं। स्कूल बंद था, स्कूल चालू करवाया हूं। जिस गांव में राशन कार्ड नहीं जा रहा था, उसको चालू किया। बाजार बंद था।

श्री राजेश मूणत :- दादी भाई, वह कब?

श्री कवासी लखमा :- ये हमारी सरकार में।

श्री राजेश मूणत :- आपकी सरकार में कुछ नहीं हुआ है।

श्री कवासी लखमा :- वह उसी में हुआ है, जाकर देखिए, पूछिए न। एकाध दिन मेरे साथ चलिए।

श्री राजेश मूणत :- जो असली काम है, वह बता नहीं रहे हो।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, हमारी सरकार में तैदूपत्ता का भी रेट बढ़ाने का काम महोदय जी ने किया है।

श्री कवासी लखमा :- इसलिए धान का रेट हिंदुस्तान में अभी विष्णु देव सरकार 3,100 रुपये दे रहा है न, अगर भूपेश बघेल ने छत्तीसगढ़ कांग्रेस में अगर 2,500 रुपये नहीं रहता, तो 3,100 रुपये नहीं होता। ये रेट भी कांग्रेस पार्टी ने सरकार में किया है। कई-कई बात को जैसे नल-जल योजना, प्रधानमंत्री सड़क की मैं तारीफ कर दिया। लेकिन ये देश में कांग्रेस पार्टी की सरकार स्वर्गीय राजीव गांधी ने पंचायती राज लागू किया। पंचायती राज लागू करने के कारण मैं वार्ड पंच था, मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूं, स्कूल गया नहीं हूं, गरीब आदमी हूं। मेरा बाप स्कूल नहीं भेजा, हम लोग चारों भाई स्कूल नहीं गए।

लेकिन मैं वार्ड पंच बना, सरपंच बना, अगर पंचायती राज नहीं होता न तो मैं ये एम.एल.ए. नहीं बनता। तो इसलिए स्वर्गीय राजीव गांधी ने जो पंचायती राज चालू किया है..।

श्री राजेश मूणत :- दादी, आप तो इतने सीनियर हैं कि पंच व सरपंच से लेकर पांच बार एम.एल.ए. बनने के बाद मंत्री बन गये, लेकिन आपने फाइल के अंदर फर्जी साइन कर दी, उसके चक्कर में आप फंस गये। माल तो दूसरा कोई पीट कर चले गया।

श्री रामकुमार यादव :- ओ फंसे नइ है, फंसाय गे है।

श्री कवासी लखमा :- मूणत साहब, आप मंत्री रह चुके हैं। यह न्याययून मामला है, इसलिए उसके बारे में नहीं बताऊंगा। मैं उसको बाद में बता दूंगा। अभी हमने सरकार के खिलाफ में जो अविश्वास प्रस्ताव लाया है, उसके बारे में मुझे बताना है। सभापति महोदया, पंचायती राज व्यवस्था की बात करें तो पिछले ढाई वर्षों में पूरे छत्तीसगढ़ के 33 जिलों में से केवल सुकमा में जिला पंचायत अध्यक्ष कांग्रेस का है, बाकी 32 जिलों में बी.जे.पी. के अध्यक्ष हैं। लेकिन यदि आप पंचों और सरपंचों से पूछेंगे कि क्या चल रहा है तो पता चलेगा कि वे इस्तीफा दे रहे हैं। यह कौन सा काम है? अटल बिहारी वाजपेयी जी ने लोक सभा में विपक्ष में रहने में भी पंचायती राज के लिए समर्थन दिया था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का सपना था कि गांव का राज होना चाहिए। विधायक चुनकर रायपुर जाते हैं और सांसद चुनकर दिल्ली जाते हैं, लेकिन गांव की समस्याओं, जैसे आधार कार्ड बनवाना, राशन कार्ड की व्यवस्था, चावल वितरण, गांव में बिजली-बत्ती की व्यवस्था, नामांतरण या नाम काटने जैसे कार्यों को कौन देखेगा? पंचायती राज के पास जो अधिकार हैं, वे किसी और के पास नहीं हैं। यहाँ तक कि मुख्यमंत्री या मंत्रिमंडल को भी चेक काटने का जो अधिकार है, यह अधिकार सिर्फ सरपंच के पास है। लेकिन इस डबल इंजन की सरकार ने सरपंचों को डमी बनाकर रख दिया है। वे इस्तीफा दे रहे हैं। सरपंच इतने परेशान हैं कि वे कह रहे हैं कि दोबारा चुनाव नहीं लड़ेंगे। उनके पास विकास कार्यों के लिए कोई पैसा नहीं है। मूलभूत सुविधाओं के लिए जो पैसा आता है, उसका उपयोग सरकार त्यौहारों के नाम पर करवा रही है। यह लोग सुशासन तिहार के नाम पर सरपंचों को कह रहे हैं कि टेंट लगवाएं, चाय-नाश्ता कराएं और खाना खिलाएं। सुशासन तिहार में कोई काम नहीं होना है, वहां कोई आते ही नहीं है। यह कैसी सरकार है? इसलिए बस्तर का कुछ तो विकास हो। बस्तर में गृह मंत्री आते हैं, तब गृह मंत्री के लिए अलग त्यौहार मनाते हैं। बस्तर के त्यौहार के नाम पर भी राजनीति की जा रही है। ऐसा नहीं होना चाहिए। अगर त्यौहार मनाना है तो सरकार को उसके लिए पैसा देना चाहिए। त्यौहार मतलब उनके लिए खाने-पीने की व्यवस्था होनी चाहिए। इस तरफ के लोग मिठाई खाते हैं, हमारे तरफ दूसरा चीज खाते हैं। (हंसी) इसलिए बस्तर की जनता आज ठगा हुआ महसूस कर रही है। हमने जो बंद पड़े स्कूल खुलवाए थे और आंगनबाड़ी बनवाई थी। अभी गृह मंत्री जी यहां बैठे हैं। पहले लोग एयरपोर्ट से बस्तर जाने के लिए डरते थे। हम टी.व्ही. पर देखते थे कि बस्तर में आज इतना मर्डर हुआ है। मैं भी उड़ीसा प्रांत में रहता

हूँ, वहाँ के लोग भी देख रहे हैं कि रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर संभाग पर गली-गली में शराब बिकने के कारण वहाँ सिर्फ बलात्कार ही नहीं, बल्कि नक्सलाईट लोगों से ज्यादा लोग मर्डर कर रहे हैं। यहाँ कैसा कानून व्यवस्था चल रहा है? यहाँ प्रतिदिन मर्डर, बलात्कार हो रहे हैं, लोग घरों में सोते हुए मारे जा रहे हैं। यह अपराध सिर्फ रायपुर में कैसे हो रहा है? अपराध के मामले में राजधानी रायपुर बिहार राज्य को पीछे छोड़ दिया है। यह अपराध सिर्फ तीन संभाग में हो रहे हैं। सरगुजा और बस्तर की स्थिति बहुत शांत है। टी.व्ही., समाचार-पत्रों में देखेंगे तो हमारे क्षेत्र में ऐसे अपराध नहीं हो रहे हैं। लेकिन यह सिर्फ छत्तीसगढ़ के रायपुर, बिलासपुर और दुर्ग संभाग जैसे शांत एरिया में कैसे हो रहा है, आप इस पर रोक लगायें। जगह-जगह शराब बिक रही है, उसी वजह से नवजवान इसे अंजाम दे रहे हैं। सभापति महोदया, अभी नल-जल की बात कर रहे थे, वह अच्छा काम है, इससे देश का नाम होगा, यह जनता के हित का काम है। एक काम जो पूरा किया जाना है तो कभी ठेकेदार को पैसा नहीं मिल रहा है, टैंक बना है तो पाईप नहीं है, पाईप है तो वाल्व नहीं है, इससे मोदी की गारण्टी कब पूरी होगी? सभापति महोदय, मोदी जी की गारण्टी में चुनाव जीतकर आये गये हैं, पी.डब्ल्यू.डी. मंत्री भी हमारे सुकमा गये थे, मैं सुकमा में नहीं था, अतः उनसे नहीं मिल पाया। जगदलपुर से केशलूर के बाद दरबा जो है आपके प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव का क्षेत्र है, उस सड़क की हालत कैसी है, कांकेर घाटी से जगलपुर जाना है या रायपुर आना है तो दंतेवाड़ा से होकर आना पड़ रहा है, मंत्री जी भी उसी रास्ते से गये थे। यहाँ पर सड़क ही नहीं है और आने-जाने में परेशानी हो रही है। सभापति महोदय, हम लोग बस में जाने वाले लोग हैं, केशकाल घाटी के लिये बाईपास नहीं बन रहा है, इस कारण से परेशान है। केशकाल में कभी ट्रक फंस जाता है तो लोग परेशान हो जाते हैं, वहाँ पर खाने-पीने की चीज, आने-जाने की चीज जो है जाम में फंस जाते हैं। जब यह व्यवस्था होगी तभी तो बस्तर का विकास होगा, आदिवासियों का विकास होगा और इसीलिए हम लोगों ने स्थगन प्रस्ताव लाया है। बस्तर में न सड़क है, न रेल है एक व्यवस्था जगदलपुर से थी और डबल इंजिन की सरकार आने से वह भी बंद हो गया है। आपने बस्तर को छोड़ दिया है, जबकि बस्तर से आपके मंत्री जी हैं, आपके प्रदेश अध्यक्ष जी हैं, हमारी सरकार में 5 साल वह अच्छा चल रहा था, लेकिन आपकी सरकार आने से वह बंद क्यों हुआ? सभापति महोदया, बस्तर एक अलग राज्य होना चाहिये, तब यह सारी मांगें पूरी हो जायेगी। आज बस्तर की उपेक्षा हो रही है। जब मध्यप्रदेश राज्य था तो बस्तर बहुत दूर हुआ करता था, छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद बस्तर का विकास होना चाहिये। बस्तर में धीरे-धीरे आवाजाही भी बंद हो रही है, सड़क भी ठीक नहीं है, हम लोग इसलिये स्थगन प्रस्ताव लाये हैं। आज सरगुजा हो, बस्तर हो, रायगढ़ हो, जहाँ-जहाँ जंगल काटी जा रही है, वहाँ लोग परेशान हो रहे हैं। यह आदिवासियों का प्रदेश है, मुख्यमंत्री जंगल में रहने वाला आदिवासी है, लेकिन यह क्यों ऐसा हो रहा है? सभापति महोदय, अभी अजय चन्द्राकर जी बोल रहे थे कि आपकी सरकार तेलंगाना में है, हमें दूसरे प्रदेश से नहीं जोड़ा जाना चाहिये, क्योंकि वहाँ हमारी कांग्रेस सरकार है,

रेवंथ रेड्डी जी की सरकार है, यहां आप इंदिरा आवास की बात कर रहे हो, तेलंगाना में इंदिरा आवास के लिये 5 लाख रुपये मिल रहे हैं ।

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- दादी जी, आपकी सरकार थी तो 5 लाख तो दूर 5 हजार भी नहीं दिये हैं, उसको भी रोक दिये । यह बताईये ना ।

श्री कवासी लखमा :- हम लोगों ने इंदिरा आवास नहीं दिया, इसका फायदा आप लोगों को मिला और सरकार बना लिये, आप उसको बार-बार क्यों बोल रहे हो । यदि हम नहीं कर पाये, हमने गलती किया तो आप सरकार में आ गये, हम बना लेते तो उधर ही बैठ जाते ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय मंत्री जी, 10 लाख आवास हमारी सरकार में दी गई थी । यह रिकार्ड में है आप देख लीजिएगा ।

श्री कवासी लखमा :- 5 लाख तेलंगाना सरकार दे रही है । आपके गठबंधन से चन्द्रबाबू नायडू 3 लाख दे रहे हैं । वहां वृद्धावस्था को कितना मिल रहा है, 4 हजार रुपये । आन्ध्रा और तेलंगाना में 4 हजार रुपये मिल रहे हैं और छत्तीसगढ़ में डबल इंजन की सरकार 500 रुपये दे रही है । महतारी वंदन में केवाईसी करना है, वहां केवाईसी करने के लिये 100 किलोमीटर दूर जाकर अबूझमाड़ में केवाईसी के लिये आना पड़ता है, आपके जगरगुंडा में है। वह मोटरसाइकिल से दूर जाकर KYC करवाते हैं, लाइट नहीं है, नेट नहीं है। 10 बार जाने में 1000 रुपये खर्च होता है। 10 बार जाने के बाद 1,000 रुपये मिल रहा है, वह पैसा पूरा खत्म हो जा रहा है। आपके 1000 रुपये का ये हाल है। वहां पर नेट लगाइए, लाइट लगाइए। डबल इंजन की सरकार है, डबल नहीं ट्रिपल इंजन है। ग्राम पंचायत आपका है, जिला पंचायत आपका है। भूपेश बघेल की सरकार ने जिला पंचायत में जो 5,000 मिलता था उसको 25,000 रुपये कर दिया।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति महोदय, वरिष्ठ सदस्य डबल इंजन, ट्रिपल इंजन बोल रहे हैं। खुद की सरकार का तो चेचिस बेंड था।

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर सरकार में धुआं भर गेहे धुआं, कुछ नहीं है।

श्री कवासी लखमा :- शुक्ला जी, थोड़ी सी अच्छी बात सुनिए। उड़ीसा में बीजेपी की सरकार है? अभी वर्तमान सरकार वहां के सरपंच को 10,000 रुपये दे रही है। हमारी सरकार ने 2,000 से 4,000 किया। यहां न सरपंच का तनखाह बढ़ा, ना किसी गुरुजी का तनखाह बढ़ा, ना किसी चपरासी का तनखाह बढ़ा। इसलिए रोज छत्तीसगढ़ में धरना दे रहे हैं।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति महोदय, दादी, गोवा चलें गोवा ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- तुरंत।

सभापति महोदय :- सुशांत जी, बोलने दीजिए ना।

श्री कवासी लखमा :- आप जैसे बड़े आदमी लोगों का गोवा है, हमारे लिए बस्तर गोवा है। मेरे साथ बस्तर चलिए, सरगुजा चलिए।

श्री सुशांत शुक्ला :- बस्तर में क्या गोवा लेकर बैठेंगे ?

सभापति महोदया :- सुशांत जी मत टोकिए।

श्री कवासी लखमा :- माननीय सभापति जी, अविश्वास प्रस्ताव हमारी तरफ से नहीं, हमारी जनता खुश नहीं है, ना पंचायत सचिव खुश हैं, ना सरपंच खुश हैं, गांव वाले गुरुजी, किसान खुश नहीं हैं। धान का उठाव नहीं हो रहा है। हमारे सुकमा जिला के प्रभारी मंत्री हैं, इनको मालूम है या नहीं, अभी तक केंद्र से धान उठाव नहीं हो रहा है।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री केदार कश्यप) :- अभी तो आप वहां पर हो नहीं, आपको कैसे मालूम ?

श्री कवासी लखमा :- मैं नहीं मेरा दिल तो है, मेरा मन तो है, मेरा परिवार तो हैं, कार्यकर्ता हैं, वहां धान उठाव नहीं हो रहा है।

श्री केदार कश्यप :- वहां पर कहीं छुप-छुप कर आ तो नहीं रहे हैं। नक्सलाईड टाईप आ तो नहीं रहे हैं।

श्री कवासी लखमा :- पिछले साल 2024-25 का धान सुकमा से गोल हो गया, किसी के ऊपर कार्रवाई नहीं?

श्री केदार कश्यप :- दादी, सिक्का गिनने में इतना अंदर लग गया था, नोट गिनने में फिर ज्यादा टाईम लग जाएगा, फिर देख लेना भैया।

श्री भूपेश बघेल :- मतलब आप धमका रहे हो ?

श्री केदार कश्यप :- मैं धमका नहीं रहा हूं, मैं उनको बता रहा हूं।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय सभापति महोदय, मंत्री जी बिल्कुल धमकी दे रहे हैं।

श्री केदार कश्यप :- मैं वैसा नहीं बोल रहा हूं, मैं मजाक में बात कर रहा हूं।

श्री भूपेश बघेल :- ऐसा वैसा बोलने का मतलब क्या है ? आप सीधा-सीधा धमकी दे रहे हैं।

श्री केदार कश्यप :- सिक्का गिन रहे हैं बोल रहा हूं।

श्री भूपेश बघेल :- नहीं-नहीं, ये आप धमकी मत दीजिए।

श्री केदार कश्यप :- मैं धमकी नहीं दे रहा हूं।

श्री भूपेश बघेल :- आप इसको वापस लीजिए, इस प्रकार से बात मत करिए।

श्री केदार कश्यप :- उनके साथ हमारा पारिवारिक संबंध है।

श्री भूपेश बघेल :- पारिवारिक संबंध है तो आप बाहर बात कर लीजिए। इस प्रकार से हाउस में बात करेंगे तो ये धमकी है।

श्री अटल श्रीवास्तव :- केदार जी आप भी उनकी तरह दिल से बात करिए। जैसे उनका दिल वहां है वैसे बात कर लीजिए।

श्री कवासी लखमा :- माननीय सभापति जी, माननीय मंत्री जी को कुछ बोलने से [xx] लगती है, उल्टा-उल्टा बात करते हैं। ये क्यों? क्योंकि वहां के वन मंत्री होने के बाद हमारे बस्तर के लोगों का पूरा भरोसा है। आप लोग खानदानी बाप, भाई से नेतागिरी करने वाले लोग हैं। इसलिए लोगों को भरोसा है। लेकिन आप वन मंत्री बन गए तो बस्तर के लोग बहुत परेशान हैं। (हंसी) उनको पूरी जगह टेंडर दे दिए। आपने बस्तर संभाग में क्यों खरीदी नहीं की? दो दिन तेंदूपत्ता खरीदी क्यों किए? पिछले साल का आंकड़ा, उसके पहले साल का आंकड़ा देखिए।

उप मुख्यमंत्री (गृह) श्री विजय शर्मा :- भाई, चौथी बार मंत्री हैं। अभी बन गए ऐसे नहीं है, परेशान होते तो नहीं बनते।

श्री कवासी लखमा :- सबसे ज्यादा मंत्रिमंडल में रहने वाले हैं। इसलिए वे मंत्रिमंडल में मंत्री हैं। गृह मंत्री जी हमको मालूम है।

श्री केदार कश्यप :- दादी, आपकी सरकार थी तो कौंटा में धरना देने गए थे। हम और सभापति महोदय वहां पर बैठकर के धरना किए थे, तब वहां आंध्रा का जो मुस्लिम था, फिर वह पैसा लाकर दिए थे, आपको याद है ? वहां आपका आदमी था, उसके बार में एक बार बताईए।

श्री कवासी लखमा :- सभापति महोदय, राजनीति करना है तो धरना देने गए थे, उसका स्वागत है, उसको मना ही नहीं किए।

श्री केदार कश्यप :- हम लोग धरना देने नहीं गए थे, हम लोग ऐसे ही गए थे, दूसरे कार्यक्रम में गए थे लेकिन वहां धरना दे रहे थे।

सभापति महोदय :- लखमा जी को अपनी पूरी बात करने दीजिए।

समय

4.00 बजे

श्री कवासी लखमा :- इस साल पूरा तेंदूपत्ता उड़ीसा गया है। वहां 2023 में कांग्रेस की सरकार थी। माननीय मंत्री जी की जानकारी में है कि पूरे छत्तीसगढ़ में बलरामपुर फर्स्ट आया था और सेकण्ड सुकमा जिला आया था। उस समय 100 करोड़ रुपये बांटे गये थे, लेकिन इस समय 10 करोड़ रुपये भी नहीं बंटे हैं। आप तो जानते हैं कि वहां के लोग खेती नहीं करते हैं। वहां के लोग तेंदूपत्ता, टोर्ना, महुआ, इमली में जीने वाले हैं तो इसलिए यह बोलना अच्छा नहीं है। यदि आपने छत्तीसगढ़ में टेंडर किया है तो वहां भी करना था। हमारे छत्तीसगढ़ के बस्तर में नहीं किया गया, इसलिए आपसे बहुत लोग नाराज हैं। वे खुश नहीं हैं, लेकिन अगले साल आप ऐसा मत कीजिये। अगर इधर कर रहे हैं तो उधर भी कीजिये। एक छत्तीसगढ़ है। इधर भी टेंडर कीजिये, उधर भी टेंडर कीजिये। एक तरफ टेंडर किया। कांग्रेस सरकार

ने कुछ नहीं किया। धान खरीदी केंद्र। आजादी के बाद जब मध्यप्रदेश में स्वर्गीय अर्जुन सिंह जी ने सोसायटी खोली थी, उसके बाद कभी सोसायटी नहीं खोली गई। भूपेश बघेल की सरकार ने गांव-गांव में जहां-जहां सोसायटी की मांग हुई, वहां-वहां सोसायटी खोली है। आपके गांव मर्दापाल, परसागुड़ा में तहसील खोल दिये। आपके विधान सभा में हमने 4 तहसील खोले। मर्दापाल में हमने कॉलेज खोला।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री (श्री श्याम बिहारी जायसवाल) :- दादी, आप अभी बोल रहे थे कि उधर खेती नहीं करते हैं, फिर बोलते हैं कि धान खरीदी केंद्र व समिति नहीं खोल रहे हैं तो यह कैसे होगा?

श्री कवासी लखमा :- माननीय सभापति महोदया, इतनी ज्यादा खेती नहीं करते हैं, जितनी इधर होती है। उधर खेती तो करते हैं, लेकिन कम करते हैं। बस्तर में किसान वनोपज पर ज्यादा निर्भर हैं, खेती कम करते हैं। मैंने यह बोला है। वह खेती नहीं करेंगे। आदिवासी खेती नहीं करेंगे तो कौन करेगा? यदि गुरुजी स्कूल नहीं आते हैं तो कोई ताला लगा रहा है, पहली बार बच्चे ताला लगा रहे हैं। ये ताला लग रहे हैं, हड़ताल हो रहे हैं, मांग हो रही है तो यह डबल इंजन की सरकार क्या कर रही है? इसलिए मैं ज्यादा नहीं बोलकर यह जो जनता, किसान, कर्मचारी, पढ़ने वाले बच्चों के नाम से अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है, इसका समर्थन करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए धन्यवाद।

सभापति महोदया :- श्री विजय शर्मा जी। (मेजों की थपथपाहट)

उप मुख्यमंत्री (गृह) (श्री विजय शर्मा) :- माननीय सभापति महोदया, मैं आज इस अविश्वास प्रस्ताव के संदर्भ में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। विषय यह है कि अविश्वास प्रस्ताव क्यों आया है? अजय चंद्राकर जी ने आज बहुत अच्छे से उसका विश्लेषण करके बताया कि कुल कितने मसले हो सकते हैं और कितने मसलों के स्वरूप में उनको रखा गया है। एक विषय और मैं ध्यान में लाना चाहता हूं और वह यह है कि आज 17 जुलाई है। यह ठीक वह दिन है, अजय चंद्राकर जी जो 16 जुलाई, 2022 का पत्र दिखा रहे थे, वह 16 जुलाई, 2022 का है। विगत सरकार के साढ़े तीन वर्ष पूरे हुए थे और उसी समय तत्कालीन सरकार के प्रति अविश्वास करके उसी सरकार के केबिनेट मंत्री टी.एस. सिंहदेव जी ने इस्तीफा दिया था। उन्होंने केवल विभाग छोड़ दिया था, मंत्री पद से इस्तीफा नहीं दिया था। विभाग छोड़ने के उन्होंने कारण बताये थे कि क्या-क्या कारण हैं, जिसका वाचन हुआ है। यह आज का वही दिन है कि 16 जुलाई को उन्होंने इस्तीफा दिया था, यह 17 जुलाई है। वैसे ही 21 जुलाई का वह समय था, जब बृहस्पत सिंह जी ने आरोप लगाया था कि मेरे ऊपर हमला किया गया तथा मुझे जान से मारने की कोशिश की जा रही है। ये भी उसी सरकार के दो लोग हैं। एक मंत्री हैं और एक विधायक हैं। इन्हीं के संदर्भ में बात हुई। आज का घटनाक्रम भी देख रहे हैं तो नेता प्रतिपक्ष जी को अपने सदस्यों से हाथ उठाकर समर्थन लेना पड़ रहा है। अब ऐसी स्थिति में सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव लाना।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय मंत्री जी, कम से कम इतना सफेद, अब यहां वह शब्द तो नहीं बोला जा सकता, सफेद असत्य क्यों बोल रहे हैं, भाई? क्योंकि माननीय अजय जी ने कहा कि आपको अपने सदस्यों पर विश्वास नहीं है। उन्होंने यह कहा, तब सारे सदस्यों ने हाथ उठाया। उन्होंने नहीं उठवाया, हम लोगों उठाया। है ना? तो आप सफेद असत्य न बोलें।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदया, असत्य का मसला नहीं है। अभी-अभी इनके हाथ उठाने के तुरंत बाद अमर अग्रवाल जी ने इस बात को पॉइंट आउट किया था कि वह स्वयं नहीं उठा रहे थे। जब पूर्व मुख्यमंत्री जी ने कहा, तब हाथ उठाया गया। उनको स्वयं को कितना समर्थन है, जो ये अविश्वास प्रस्ताव लेकर आए हैं, ये स्पष्ट होता है। इसीलिए बार-बार आग्रह था कि अविश्वास प्रस्ताव वापस लिया जाए।

श्री उमेश पटेल :- विजय जी, उनको विधायक दल का पूरा समर्थन है ।

श्री विजय शर्मा :- वह तो समय बताएगा।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदया, एक 1 मिनट। मुझको ये समझ में नहीं आ रहा है कि आखिर आपको बार-बार ये क्यों बोलना पड़ रहा है कि पूरा समर्थन है?

श्री उमेश पटेल :- क्योंकि बार-बार उधर से आवाज आ रही है।

श्री धरमलाल कौशिक :- इसका मतलब ही ये है कि आपको समर्थन नहीं है और इसलिए दिखाने के लिए आपको ये बोलना पड़ रहा है कि हमारा समर्थन है ।

श्री उमेश पटेल :- कौशिक जी, आपको याद है कि जब सदन चल रहा था, तब बीच में से आपको नेता प्रतिपक्ष के पद से हटा दिया गया था ? हमारे यहां वह परंपरा नहीं है।

श्री धरमलाल कौशिक :- नहीं नहीं, ये बार-बार क्यों बोलना पड़ रहा है कि हमारा समर्थन है?

श्री उमेश पटेल :- क्योंकि बार-बार उधर से आरोप लग रहा है।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- सभापति महोदया, बार-बार उधर से बातें आ रही हैं।

श्री कवासी लखमा :- नकटी वाले मामला को पूरा छत्तीसगढ़ जान रहा है। बृजमोहन अग्रवाल जी के पास गांव वाले गए थे, तो सुबह-सुबह गांव में जाकर और मकान तोड़ दिए गये। बृजमोहन जी को इतना किनारे कर दिया गया है कि पूरे छत्तीसगढ़ के लोग अब बोल रहे हैं, व्हाट्सएप में चल रहा है। यहां आप लोग के अंदर कितनी गुटबाजी है? सांसद, वरिष्ठ नेता के पास जाने से रातों-रात मकान तोड़ा गया है। कोई दूसरे मंत्री आदेश कर दिये कि बृजमोहन अग्रवाल सपोर्ट कर रहे हैं इसलिए तोड़ो।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री केदार कश्यप) :- दादी, नक्सलाइट खत्म हुए, आप उसके बारे में कुछ एकाध शब्द बोले?

श्री कवासी लखमा :- सभापति महोदया, मैंने तीन बार बोला है। मैंने समर्थन भी दिया है। आप उस समय कहाँ थे?

श्री केदार कश्यप :- जिसके कहने से वहां पर घूम रहे थे?

श्री कवासी लखमा :- तीन बार बोला हूं, बधाई दिया हूं।

श्री रामकुमार यादव :- लेकिन सभी का सम्मान होना चाहिए।

श्री उमेश पटेल :- संसदीय कार्यमंत्री जी, आप बाहर थे ना, इसलिए पूरा नहीं सुन पाये। वह तो बोले हैं।

श्री रामकुमार यादव :- ऐसा लग रहा है मंत्री लोग बंदूक लेकर पार्टी करने गए थे। (व्यवधान)
आप नहीं सुने हैं, लखमा जी, चार बार बोले हैं।

श्री केदार कश्यप :- ठीक है, आपकी बात को मान लेता हूं।

श्री अमर अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, उमेश जी अभी परंपरा की बात कर रहे थे। इनके दल का हाल ये है कि 2003 में महेंद्र कर्मा जी नेता प्रतिपक्ष थे, 2008 में रवींद्र चौबे जी नेता प्रतिपक्ष थे और उसके बाद टी. एस. सिंह देव जी थे और अब चरण दास महंत जी हैं। तीन के ऊपर यही लोग आरोप लगाते थे कि वह भारतीय जनता पार्टी के 14वें मंत्री हैं। यही आरोप लगाते थे।

श्री उमेश पटेल :- अभी आरोप लगा नहीं है। गलत आरोप लगाते हैं

श्री अमर अग्रवाल :- आप ही लोग आरोप लगाते थे।

श्री भूपेश बघेल :- अमर जी, अफवाह फैलाने की फैक्ट्री आपके पास है।

श्री अमर अग्रवाल :- आप ही लोग आरोप लगाते थे और आज महंत जी को 15वां मंत्री घोषित करने में ये लोग लगे हुए हैं।

श्री भूपेश बघेल :- सुनिये भाई, ये अफवाह फैलाने की फैक्ट्री आपके पास है और आप ही लोग फैलाने का काम करते हैं। लेकिन आप इसमें सफल नहीं हो पा रहे हैं।

सभापति महोदय :- विजय शर्मा जी, आप बोलिए।

श्री विजय शर्मा :- सभापति महोदय, मैं जिन विषयों को सदन के समक्ष और आपके समक्ष रखना चाहता हूं, वह ये है कि शायद हर बार विपक्ष के लिए जुलाई का महीना बड़ा महत्वपूर्ण हो जाता है। वर्तमान विपक्ष, जो तत्कालीन सरकार थी, जुलाई महीने में ही वह सब कुछ हुआ था और आज फिर से वही 17 जुलाई का दिन है, जब आज हम फिर से इन सारे विषयों पर चर्चा कर रहे हैं। माननीय सभापति महोदय, पिछली सरकार में साढ़े तीन वर्ष हुए थे और पिछली सरकार में मंत्री रहते हुए टी. एस. सिंहदेव जी ने इस्तीफा दिया था, पंचायत विभाग को छोड़ दिया था। उन्होंने अपने पत्र में ये लिखा था, जिसका वाचन अजय चंद्राकर जी ने किया। उन्होंने ये लिखा था कि मैंने बार-बार मुख्यमंत्री जी से कहा कि गरीबों के आवास के लिए राज्यांश उपलब्ध करा दिया जाए, परंतु राज्यांश उपलब्ध नहीं कराया गया इसलिए मैं अपने पद से इस्तीफा देता हूं, अपना ये दायित्व छोड़ता हूं। ऐसा उन्होंने कहा था। उस समय उस सरकार में तब साढ़े तीन साल हुए थे और अभी ढाई साल हुए हैं। इसी जून महीने में मैंने भी

माननीय मुख्यमंत्री जी को एक पत्र लिखा और उसमें उस बात का उल्लेख किया कि उस पिछली सरकार के साढ़े तीन साल के बाद उस सरकार के उस मंत्री को, जो संवेदनशीलता के साथ गरीबों के लिए आवास बनाना चाहते थे, परंतु मुखिया का सहयोग नहीं मिल पाया और इसलिए उनको अपना विभाग छोड़ना पड़ा। उसी संदर्भ में मैंने पत्र लिखा और पत्र लिखकर के बताया कि विगत सरकार में।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय मंत्री जी, जल्दी-जल्दी और दो-चार चिट्ठी लिखिए। मुझे जानकारी मिल रही है कि आप दिल्ली जा रहे हैं तो चिट्ठी जल्दी-जल्दी लिख लीजिए।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदया, मैं आपको और सदन को ये बताना चाहता हूँ, वैसे वह पत्र पब्लिक है, सबने देखा भी होगा कि विगत सरकार में मंत्री ही सरकार से परेशान थे कि हमको गरीबों के आवास बनाने के लिए ये राशि नहीं मिल पा रही है और इस सरकार में, माननीय विष्णु देव साय जी की सरकार में आप सारे बजटों के प्रावधान को देखेंगे तो 26 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, 26 हजार करोड़ का प्रावधान किया गया है। (मेजों की थपथपाहट) और आज जब मैं आपसे बात कर रहा हूँ, जब मैं आपके सामने ये विषय रख रहा हूँ तो नई सरकार बनने के बाद जो नये आवास स्वीकृत हुए, उसमें जो पूर्ण आवास हुए हैं। माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी बार-बार ये पूछा करते थे, ये कहा करते थे कि ये कैसे हुआ, 18 लाख आवास कहां से हो गया बताया जाये? तो पहले केबिनेट के पहले प्रस्ताव के रूप में इसको पारित करने का वादा आवासहीनों से करकर सरकार बनी थी और पहले केबिनेट का पहला प्रस्ताव हुआ था और उसमें स्पष्ट किया था कि सभी अपूर्ण आवास, वह 2,46,215 आवास वर्ष 2011 की स्थायी प्रतीक्षा सूची के सभी आवास 6,99,438 आवास प्लस की संपूर्ण सूची 8,19,999 और ग्रामीण आवास न्याय योजना का 47,090 आवास और इस तरीके से 18,12,742 आवास सब कुछ बनाने का संकल्प एक साथ उस पहले केबिनेट के पहले प्रस्ताव के रूप में लिया गया था। एक साथ दिया गया था और उसको बनाने के बाद हम चुप नहीं बैठे। उस बार तो ये बात चर्चा में आई, माननीय धरमलाल कौशिक जी बात रहे थे कि किस तरीके से पिछली सरकार में अनेक बार केन्द्रीय मंत्रियों के कहने पर भी, केन्द्रीय मंत्रियों ने जब पत्र लिखे कि गरीबों के आवास बना दिये जायें, परंतु सरकार ने सिर्फ ये कहकर के चूँकि इसमें प्रधानमंत्री शब्द लिखा है तो जब प्रधानमंत्री लिखा है तो प्रधानमंत्री 100 प्रतिशत दें। केन्द्र की सरकार 100 प्रतिशत, 90 प्रतिशत दे।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय मंत्री जी, आप माननीय धरमलाल कौशिक जी के केन्द्रीय मंत्री के 3 पत्र की बार-बार बात आ रही है। हमारी सरकार में हमारे पूर्व मुख्यमंत्री जी ये बात के लिये भी पत्र लिखे हैं कि हमारी जी.एस.टी. की राशि इतनी है, उस राशि को उसमें समावेश करते हुए प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत किया जाये। जब दिल्ली की सरकार उसको नहीं मानी तो हमारी सरकार में पूर्व मुख्यमंत्री जी ने 10 लाख का मुख्यमंत्री आवास स्वीकृत किये जिसमें दिल्ली सरकार का 1 रुपया नहीं था। ये भी तो उल्लेख होना चाहिए।

श्री विजय शर्मा :- हां, जरूर। मैं उसका भी आपके सामने उल्लेख कर देता हूँ। आप मेरी जरा इस बात को सुनिये।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय उपमुख्यमंत्री जी, आप तो उपमुख्यमंत्री हैं, बहुत सारे विभाग हैं। आप तो अपनी उपलब्धि गिनाईये। पुरानी बात को बोलने वाले बहुत लोग हैं। आप अपनी उपलब्धि बताईये, अच्छा लगेगा।

श्री विजय शर्मा :- माननीय, इस बात में दोनों चीजें हैं। इस बात में पुरानी सरकार न कर पाई, वह भी है और हमारी सरकार की उपलब्धि दोनों है। दोनों एक साथ है। मतलब मैं पैरल नहीं करूंगा। मैं एक बार इसको कर लूँ, फिर ऐसा नहीं करने वाला हूँ। आपके ध्यान में ये भी लाना चाहता हूँ कि इसमें दोनों बातें हैं और दोनों बातें ऐसी हैं कि आपने उस समय किया क्या था, आपने एक सर्वे कराया था। सर्वे कराने के माध्यम से प्रदेश में कुल कितने लोग निकाले, 24 हजार लोग निकाले। 24 हजार लोगों को प्रधानमंत्री आवास देने का वह भी मुख्यमंत्री आवास के नाम से देने का वादा किया। और उस पर भी क्या किये ? केन्द्र से आई राशि का आपने अपने इस काम के लिये उपयोग करना शुरू किया। इस बात के दस्तावेजी प्रमाण हैं। केन्द्र के प्रधानमंत्री आवास योजना की राशि का समायोजन आपने इस मद के लिये कर लिया, क्योंकि अगर आपके पास बजट में इसकी उपलब्धता नहीं थी तो इस तरह के काम नहीं किये जाने थे। लेकिन फिर भी विष्णु देव साय जी की सरकार ने बहुत स्पष्टता के साथ उन 47 हजार लोगों को भी जिनकी आपने आवास स्वीकृति कब की, चुनाव के ठीक 2 महीने पहले की। क्यों की ? क्योंकि वह मुद्दा जनता के बीच का इतना गरमा चुका था, मोर आवास, मोर अधिकार इस बात को लेकर जनता आगे बढ़ चुकी थी। रायपुर में रिंग रोड में इतना बड़ा आंदोलन हुआ था जो आज तक राजनीतिक इतिहास का सबसे बड़ा आंदोलन हुआ था। इसलिये सरकार थर्रा गई थी और उस सरकार ने ये समझा था कि अगर ये प्रधानमंत्री आवास न दिया जायेगा तो जाने क्या होगा। लेकिन जिस स्थिति में आपने प्रधानमंत्री आवास दिया। आपने एक संकल्प लिया था कि हम पूरे 8 लाख आवास दे देंगे और 8 लाख आवास के लिये बजट में प्रावधान नहीं था। इसलिए आपके समय में सिर्फ 1 लाख लोगों को पहली किश्त की राशि मिल पाई थी, जब आखिरी में आपने उसको दिया था, जो अभी माननीय सदस्य कह रहे थे। मैं श्री द्वारिकाधीश यादव को बताना चाहता हूँ।

श्री विक्रम मंडावी :- माननीय मंत्री जी, एक मिनट।

सभापति महोदय :- मेरा सदस्यों से कहना है कि आप अपने समय में बात रख दीजियेगा।

श्री विक्रम मंडावी :- माननीय मंत्री जी, आप बार-बार आवास की बात कह रहे हैं, मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आपने कितना आवास दिया ? आपने ढाई साल में कितना आवास दिया।

श्री विजय शर्मा :- मैं 18 लाख प्रधानमंत्री आवास की बात करूंगा और ढाई वर्षों में कितना किया, मैं आपको बताता हूँ।

सभापति महोदय :- मंडावी जी, आपस में ये बातचीत न करें।

श्री विजय शर्मा :- विक्रम मंडावी जी, कृपया आप ध्यान से सुनिये। मैं आपके पास पूरी बात करता हूँ। आप कृपया इस बात को ध्यान सुनिये। माननीय सभापति महोदय, हमने ढाई वर्षों में कितने आवास किये, जब मैं आपसे बात कर रहा हूँ तो 11 लाख आवास पूर्ण हो गये हैं। आज मैं ये भी बताना चाहता हूँ। अरे, भैया एक मिनट पहले आप पूरी बात तो सुन लीजिए।

श्री विक्रम मंडावी :- आप पहले की सरकार का जोड़कर बात कर रहे हैं।

सभापति महोदय :- मण्डावी जी, जब आपकी बारी आयेगी तब आप अपनी बात को बोल लीजियेगा।

श्री विजय शर्मा :- आप पहले मेरी पूरी बात सुन लीजिये। माननीय सभापति महोदय, 11 लाख आवास, मैं कह रहा हूँ कि यह छत्तीसगढ़ सरकार का या छत्तीसगढ़ के किसी विभाग की रिपोर्ट नहीं है। यह प्रधानमंत्री आवास योजना, पी.एम.ए.वाय.जी. इस साइट पर जब अंतिम अपलोड हो जाता है यह तब का विषय है तो माननीय सदस्य आप जो कह रहे थे, जिस बात की चिंता कर रहे थे तो इन ढाई वर्षों में 11 लाख आवास बन गये, 11 लाख आवास पूर्ण हुए। आपको एक और बात बता दे रहा हूँ कि आने वाले समय में और आवास बनने वाले हैं। मैं आपसे यह बात इसलिए कह रहा हूँ।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, माननीय ओ.पी. चौधरी साहब बैठे हैं। प्रधानमंत्री आवास के बात अइस ता मैं इही सदन में जो पी.एम. आवास में मिलने वाला...

सभापति महोदय :- रामकुमार जी, आप भी बोलने वाले हैं। उस समय बोलियेगा। आप बार-बार मत खड़े होईए।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, प्रधानमंत्री आवास के लिये जो बात आ रही है। फ्री में रेत देबो कहे रिह, मैं आपसे पूछना चाहत हंओं कि छत्तीसगढ़ के पी.एम. आवास वाला मन ला आप फ्री में रेत दिहा का, जो सदन में घोषणा होए रिहिस हे तेला आप जरूर अपन भाषण में बतावा।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, आपने पहले आवास स्वीकृत किये होते तो उस समय चिंता करते। आवास लोगों के बन रहे हैं, मैं जब आपसे यह कह रहा हूँ कि 11 लाख आवास बन गये तो क्या रेत मिलाना होगा कि बिन रेत के आवास बन गये हैं? (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, हम फ्री में रेत की बात कह रहे हैं। आपने उसको खरीदकर दिये हैं। आपने फ्री में रेत देने के लिये बोला था।

श्री विजय शर्मा :- आप इस बात को समझिए कि ऐसा ही हो रहा है। पंचायतों में जो व्यवस्था सरकार ने, जो व्यवस्था आदरणीय पर्यावरण मंत्री जी ने बनायी है उस व्यवस्था के तहत भी काम हो रहा है। शायद आपको नहीं मालूम होगा। शायद आप किसी आवास पर जाकर खड़े नहीं हुए होंगे,

शायद आप इसलिये जाकर खड़े नहीं हुए होंगे कि वहाँ प्रधानमंत्री आवास लिखा रहता है । शायद आप अपनी सरकार, पुरानी सरकार से ऐसे ही प्रेरित होंगे कि प्रधानमंत्री का नाम लिखा है तो मुझे नहीं जाना है क्योंकि गरीबों का आवास इसीलिए रोक दिया गया था कि उसमें प्रधानमंत्री लिखा रहता था, उसमें नरेंद्र मोदी नहीं लिखा रहता था, उसमें प्रधान मंत्री लिखा रहता था फिर भी उस आवास को स्वीकृत नहीं किया गया । अब मुझे कोई इस बात को बताए कि वह सरकार जो आज विपक्ष में है, वह उन्हीं लोगों के श्राप से विपक्ष में है जिन लोगों के आवास को आपने नहीं दिया । आज वह सामने आकर के जब 11 लाख गरीबों के आवास बन गए हैं तो कोई अविश्वास प्रस्ताव ला सकता है ?

श्री केदार कश्यप :- अब इन लोग फिर प्रधानमंत्री सड़क में भी नहीं चल पायेंगे । आप लोग प्रधानमंत्री सड़क में भी नहीं चलेंगे, आप लोग बहिष्कार करिये ।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, ए देश ला हमन आजाद कराये हन । ओखर बाद तुमन आए हा, समझा न । ए देश ला आजाद कराय वाला हमन हन । (व्यवधान)

श्री विजय शर्मा :- ए देश के विभाजन के प्रस्ताव कांग्रेस के कार्यसमिति में होए हे जी । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सुभाषचंद बोस, ए देश ला हमन आजाद कराय हन तेखर बाद आप मन बने हा । (व्यवधान)

श्री विजय शर्मा :- अगर देश के आजादी के बात करहू ता फेर हमन इही बात ला करबो कि देश के विभाजन के प्रस्ताव कांग्रेस के कार्यसमिति में होए हे, ओसनहा झन बोलओ ।

श्री उमेश पटेल :- हां, लेकिन शायद-शायद बोलकर आप सब-कुछ बोल दीजिये। शायद प्रधानमंत्री आवास में वह नहीं जायेंगे, शायद प्रधानमंत्री सड़क योजना में नहीं जायेंगे ।

श्री विजय शर्मा :- कौन कह रहा है ? (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- आप ही तो बोल रहे हैं कि शायद उसमें नहीं जायेंगे । (व्यवधान)

श्री विजय शर्मा :- मैंने यह कहा कि आप नहीं गये हैं इसलिये आपको नहीं मालूम है । लोग बता देते कि रेत कहां से आया है, आप एक-बार जाईये । वहां प्रधानमंत्री लिखा होगा, कोई बात नहीं । (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- आपने बोला कि नहीं जायेंगे करके । वह गये हैं, उन लोगों के साथ आंदोलनरत थे । (व्यवधान)

श्री विजय शर्मा :- आप एक-बार उस आवास पर जाईये । भैया, आप जाकर देखो ।

श्री रामकुमार यादव :- फ्री का रेत नहीं मिला है । (व्यवधान) रॉयल्टी में लिये हैं ।

श्री विजय शर्मा :- भैया, आप जाकर देखो ।

श्री रामकुमार यादव :- मंत्री जी, मैं खुद गांव का रहने वाला हूँ । किसी को फ्री में रेत नहीं मिला है ।

श्री विजय शर्मा :- अरे, सबे गांव के रहईया हैं गा, तैं अकेल्ला गांव के रहईया नो हस । मोर बात ला सुन । आज जब हम तैं बात करत हन न ता रोज के रोज 1500 आवास बनत हे । (मेजों की थपथपाहट) कंपलीट होवत हे, रोज के रोज 1500 आवास कंपलीट होवत हे । गरीबन के प्रति जेन लक्ष्य के साथ ए सरकार हा काम करत हे तेन दस्तावेज में प्रमाण हे भई । मोर बोले के बात थोड़े हे । मैं बोलहूँ तभे तैं मानबे अइसे थोड़े हे । ए दस्तावेज में है न, वह तो गरीबन ला आवास मिलत हे अउ गरीबन ला आवास मिलत हे ता आप ओला नकार ले हओ का । ओला नइ नकार सकओ जी । वह होए हे ।

श्री उमेश पटेल :- नकारत कोई नहीं है, शायद-शायद करके आप बोल रहे हैं ।

श्री विजय शर्मा :- शायद, क्या शायद ?

श्री उमेश पटेल :- शायद वह वहां नहीं जायेंगे, शायद वह वहां नहीं गये होंगे । शायद वह प्रधानमंत्री आवास में नहीं जायेंगे । आप क्यों बोल रहे हैं, वह गये हैं न ।

श्री विजय शर्मा :- हां, मैंने कहा न कि मैंने कहा । मैं कह रहा हूँ कि जिस प्रकार का प्रश्न पूछा जा रहा है । भैया, जिस प्रकार का प्रश्न पूछा जा रहा है इसीलिये मैंने कहा कि आप लोग रेत की बात कह रहे हैं । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- उमेश जी, बैठिए ।

श्री विजय शर्मा :- शायद आपको नहीं मालूम होगा, आप अगर वहां पर नहीं गये होंगे तो रेत का कैसे उनको मिलान हो रहा है, यह आपको जानकारी में नहीं होगा इसीलिये तो मैंने बताया है । मैंने उनसे वही कहा कि उनको मिल रहा है भई । (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- वह गये हैं न । सदन में घोषणा थी इसलिये वह पूछ रहे हैं । (व्यवधान) वह आंदोलन में बैठे थे, उनको नहीं मिल रहा है । (व्यवधान)

श्री विजय शर्मा :- मैंने उनसे यही कहा कि उनको मिल रहा होगा, आपको यह बात नहीं मालूम है क्योंकि आप गये नहीं होंगे ऐसे उचित स्थानों पर जहां पर व्यवस्था, यदि वह ट्रैक्टर चला रहे हैं तो उनको मिल जा रही है । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आपस में एक-दूसरे की तरफ देखकर बात मत कीजिये । आप अपनी बात कहिए ।

श्री जनक ध्रुव :- माननीय सभापति महोदय, मेरे जिले में जितना भी रेत दिया जा रहा है वह रॉयल्टी से दिया जा रहा है । मैं सबूत के साथ कह रहा हूँ ।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मैं प्रधानमंत्री आवास के संदर्भ में बहुत स्पष्टता से इस बात को कहना चाहता हूँ ।

सभापति महोदय :- आपस में एक-दूसरे पर टिप्पणी न करें ।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मैं प्रधानमंत्री आवास के संदर्भ में यह बात बहुत स्पष्टता से आपके सामने रखना चाहता हूँ कि विगत सरकार ने गरीबों के आवास को रोकने का काम किया था और प्रधानमंत्री आवास के रूप में गरीबों को पक्का आवास जो मिलने वाला था वह नहीं दिया था । (शेम-शेम की आवाज) नयी सरकार ने प्रधानमंत्री आवास के नाते गरीबों का आवास स्वीकृत किया और विशेष बात यह है कि विभिन्न बजट के प्रस्तावों के माध्यम से इसमें 26,000 करोड़ का प्रावधान किया गया है । (मेंजों की थपथपाहट) इसमें यह चिंता हो रही थी कि वहां कोई भ्रष्टाचार हो रहा है, छोटा कुछ दिखाया, बलरामपुर में बता रहे थे, मैं उतना ही नहीं और सारी बातें बता दे रहा हूँ। एक कबीरधाम का विषय है, वहां एफ.आई.आर. हुआ है, बलरामपुर का का विषय है, वहां एफ.आई.आर. हुआ है, सक्ती का विषय है वहां अनुशासनात्मक कार्यवाही हुई, बिलासपुर का विषय है, वहां एफ.आई.आर. हुआ है, सरगुजा का विषय है, वहां एफ.आई.आर. हुआ है, यह छोटी-छोटी बातें थीं जहां पर जिसने गड़बड़ी की, वहां पर एफ.आई.आर. करके दण्डित करने का काम भी किया गया है। यह गरीबों का आवास है। इस विषय पर माननीय मुख्यमंत्री जी की मंशा बहुत स्पष्ट है किसी भी तरह से इस आवास का रोड़ा कोई भी नहीं बन सकता है। यह गरीबों के लिए दिया जाने वाला आवास है और इतना ही नहीं, इसके बाद फिर से नये आवास के स्वरूप में आवास प्लस 2024 का नया सर्वे हो चुका है। उस नये सर्वे में भी लगभग 24-25 लाख लोगों के नाम सम्मिलित हुए हैं। इन लोगों का भी आवास कालान्तर में आने वाला है। प्रधानमंत्री आवास के रूप में पिछली सरकार ने किस तरीके से आवास को रोकने का काम किया था, दलेश्वर भईया तोर मन भारी हे तो फिर एको दिन ए बात ला क्लियर कर दूँ।

श्री दलेश्वर साहू :- मैं यह पूछना चाहता हूँ कि माननीय मंत्री जी, प्रधानमंत्री आवास योजना में हजारों संख्या में पूरे प्रदेश का जॉब कार्ड डिलिट हो जाने, वर्क कोड जनरेट नहीं होने से, शायद आपको इस संबंध में जानकारी है या नहीं, आपको विभाग वालों ने बताया है या नहीं बताया है, मैं इसमें यह जानना चाहता हूँ कि..।

श्री विजय शर्मा :- यह प्रश्नकाल नइ ए गा। मोला बोलन दे, ए तोर बोले के विषय नइ हे। दलेश्वर भईया बाद में बात कर लेबो।

सभापति महोदय :- आप आपस में बात न करें। आसंदी की तरफ देखकर अपनी बात करें। माननीय दलेश्वर जी, जब आपकी बारी आएगी तो आप उस समय अपनी बात रख लीजिएगा।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैंने अविश्वास प्रस्ताव को पढ़ना प्रारंभ किया तो मुझे यह पहली लाईन समझ में आयी। इसमें लिखा है कि सरकार की गलत

नीतियों के संदर्भ में अविश्वास प्रस्ताव आ रहा है गलत नीति मतलब क्या? जो पिछली सरकार थी मैं एक बार उसकी नीतियों के संदर्भ में चर्चा करता हूँ। यह एफ.एल.10 लेकर आये थे। यह एफ.एल.10 क्या था ? जिसके माध्यम से शराब का बड़ा घोटाला किया गया। यहां समानान्तर व्यवस्था बनायी गयी, हजारों करोड़ रुपये का घोटाला किया गया, इसे कौन नहीं जानता है। उसके बाद, मैं पुरानी सरकार और इस सरकार के संदर्भ में दोनों ही बातें एक साथ कह रहा हूँ। इस सरकार में जब माननीय विष्णु देव साय जी ने इस दूषित व्यवस्था को छुआ भी नहीं, चिमटे से पकड़कर दूर फेंकने का काम किया है। हमारी सरकार ने इस नीति को दुरुस्त करने का काम किया है। यह कहते हैं कि हमारी सरकार की नीतियों में गलती है, वह अपनी नीतियां देख लें और इस सरकार की नीतियां देख लें। अब तक इनकी नीतियां ऐसी थीं और इस सरकार ने उसको ठीक किया है। तो किस तरीके से यह कहा जा सकता है, यह आरोप कैसे लग सकता है और अगर यह आरोप निराधार है तो यह अविश्वास प्रस्ताव भी निराधार है।

माननीय सभापति महोदय, मैं दूसरा और एक विषय कहना चाहता हूँ। माननीय अजय चन्द्राकर जी कोयले के ऑनलाईन और ऑफ लाईन के संदर्भ में कह रहे थे। किसी को भी कोयला खरीदना होता था तो वह एक ऑनलाईन रिक्विजिशन भेजा करते थे। उस ऑनलाईन रिक्विजिशन के बेस पर उनको कोयला उपलब्ध हो जाता था। बाद में एक ऑर्डर हो गया और उसको ऑफ लाईन बना दिया गया। अब ऑफलाईन के बाद हर टन कोयला के पीछे राशि फिक्स हो गयी। यह कौन नहीं जानता है, यह भी हमारे छत्तीसगढ़ का बड़ा मामला है। विगत सरकार के इस करतब को गजब के अभियान को कौन नहीं जानता है ? यह भी किया गया इस पर भी माननीय विष्णु देव साय जी ने इसको छुआ भी नहीं और चिमटे से पकड़कर इस व्यवस्था को दुरुस्त करने का काम किया है। उसे दूर से ही ठीक करने का काम किया है। यह प्रक्रिया फिर से ऑनलाईन है। इन दोनों सरकार की नीतियों के संदर्भ में इस बात की बहुत स्पष्टता है। डी.एम.एफ. के संदर्भ में वह भी एक बड़ा घोटाला है, उसे सब जानते हैं कि यह किस तरीके से था। पी.एस.सी. के संदर्भ में बड़ा घोटाला है, उसे सब जानते हैं, अभी दो पी.एस.सी. की परीक्षाएं सफलतापूर्वक हो चुकी हैं उसमें कहीं परेशानी नहीं है। प्रधानमंत्री आवास के संदर्भ में किस तरीके से रोका गया था, इस सरकार में किस तरीके से आवास दिया गया। मैं आपसे नीतियों के बारे में कह रहा हूँ, वह भी हमको ध्यान है। नक्सल नीति के संदर्भ में भी आगे चर्चा कर लेंगे। आपकी नक्सल नीतियां कैसी रहीं और वर्तमान सरकार की नक्सल नीतियां कैसी हैं, आपने पहले भी मुझसे घुसपैठियों पर बात की थी। मुझे हर बार माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी बहुत प्रेरणा देते हैं। एक बार इन्होंने मुझसे कुछ पूछा था कि आप बताएं कि यहां कितने घुसपैठिये पकड़े गये, उन्होंने ऐसा कहा था तो जब मैंने उनका बयान देखा तो मैंने कहा कि भाई, यह बहुत उचित बात है। इस पर और कठोर कार्यवाही होनी चाहिए। उसके बाद हमने एस.टी.एफ. का गठन किया और सारे जिलों में नोडल बनाये, अगर किसी व्यक्ति को सड़क पर

पकड़ा जाता है तो आप कैसे उससे पूछकर, यह समझेंगे कि यह बंगलादेश का है या पश्चिम बंगाल का रहने वाला है, उसके लिए एस.ओ.पी. तय किया गया और उसके बाद टोल-फ्री नंबर जारी किया गया। यदि इन्हें पकड़ा जाएगा और इनके खिलाफ कोई अपराध पंजीकृत किया जाएगा, तो क्या ये न्यायालय से छूटते हैं या नहीं छूटते हैं? तब तक डिपोर्टेशन नहीं हो पाएगा, यह निर्धारित किया गया। इसके लिए होल्डिंग सेंटर्स बनाए गए। यह सारी प्रेरणा हमें माननीय मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जी से मिली है। पूर्व मुख्यमंत्री जी ने हमें उलाहना दी है, उसके माध्यम से ही यह सब किया गया है। माननीय सभापति महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि होल्डिंग सेंटर्स बनाए गए हैं, उन होल्डिंग सेंटर्स में लोगों की पहचान करके उन्हें रखा गया है। इसके बाद बल्क में 'क्विट इंडिया ऑर्डर' जारी हुआ है और लोगों का डिपोर्टेशन किया गया है। उन्हें भारत की सीमा से बाहर करके बांग्लादेश पहुँचाने का काम किया गया है। यह विष्णुदेव साय जी की सरकार में किया गया है। यह नीतियों में फर्क है। घुसपैठियों की नीति जिस तरीके से पुरानी सरकार में थी और घुसपैठियों की नीति, जो वर्तमान में विष्णुदेव साय जी की सरकार में है, मैं उन दोनों के अंतर की बात कह रहा हूँ। इसी तरीके से धर्मांतरण रोकने के संदर्भ में भी एक बड़ा मसला है।

श्री भूपेश बघेल :- डिपोर्ट कितनों को किया ? आपने बहुत बढ़िया बताया कि डिटेंशन सेंटर रखा, सब कुछ रखा। कितने लोग डिपोर्ट हुए और किस-किस जिले से पकड़े गए ?

श्री विजय शर्मा :- यह प्रश्नोत्तर मत करिए, बाद में आपको और विस्तार से बता देंगे। वह जानकारी तो आप विभागों से भी ले सकते हैं, कहीं से भी ले सकते हैं, कोई विषय नहीं है। खैर, एकाध बार प्रश्नों के उत्तर मैं इस बात को भी स्पष्ट कर दूँगे। जब प्रश्न आया था तो मैं एक दिन और इस विषय पर बताना चाहता था, परंतु मुझे ऐसे अवसर नहीं मिले जब पूर्व मुख्यमंत्री जी श्रोता के नाते उपलब्ध हों, चाहे वह प्रधानमंत्री आवास का पिछला विषय हो तो आप नहीं थे, चाहे हमारे धर्म स्वातंत्र्य अधिनियम का विषय हो तो आप नहीं थे, चाहे नक्सलवाद का विषय हो तो आप नहीं रहे। मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूँ।

सभापति महोदय, इसमें यह विषय आया है कि सरकार सदन में चर्चा से भागती रही, ऐसा लिखा है। इसमें लिखा है। ऐसा इनके आरोप-पत्र में लिखा है—सरकार सदन में चर्चा से भागती रही। यह पहली बार है, मैं तो नया सदस्य हूँ, मुझे नहीं मालूम है। मैं सुनकर जानता और समझता हूँ, मैं अभी यह जान समझ पाया हूँ कि यह पहला विपक्ष है जो चर्चा से स्वयं भागा करता है। इससे पहले कोई दूसरा विपक्ष ऐसा करता हो, समझ में नहीं आता। हमने धर्म स्वातंत्र्य अधिनियम के संदर्भ में चर्चा रखी, सब गायब रहे। उस दिन मैंने माननीय अध्यक्ष महोदय से आग्रह किया था कि यह बहिर्गमन लोकतंत्र की एक अच्छी परंपरा है, यह तो विपक्ष की ताकत को दर्शाता है। लेकिन यह जो कर रहे हैं, यह बहिर्गमन नहीं है, यह पलायन है, पलायन। इसको पलायन लिखा जाना चाहिए, ऐसा मैंने अध्यक्ष जी से कहा था।

श्री केदार कश्यप :- सभापति जी, इनका बहिर्गमन इस बात को दर्शाता है कि जब यह सरकार में थे, तब सुकमा में एक एसपी हुआ करते थे। उन्होंने लिखा था कि धर्मांतरण बढ़ा। तब इन्होंने वहाँ उसको रोकने की बजाय वहाँ के एसपी का ही तबादला कर दिया, हटा दिया। यह इनकी सरकार रही है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय मंत्री जी, राम मंदिर में चोरी होए ए, ओकरों चिंता कर डरव।

श्री विजय शर्मा :- रामकुमार जी, ओमा जेन अपराधी होहय, वह जेल जाहए, तै टेंशन इन ले। जैसे गर्ग के बात ला विक्रम जी पूछत रिहीस हे, आज ओमा पूर्व मुख्यमंत्री जी ह बढ़िया ट्वीट भी करे हे। हम व्हू ट्वीट के स्वागत करेन और एकर सेती स्वागत करे हन कि चाहे कोनो होवय, अगर गड़बड़ी करे हे तो ओकर ऊपर ठोक के कार्रवाई होही। यह माननीय नरेंद्र मोदी जी की सरकार हे, माननीय विष्णुदेव साय जी की सरकार हे। आज पूर्व मुख्यमंत्री जी ह ट्वीट करे हे। माननीय सभापति महोदय, तो ओ ट्वीट ला देखव, ओकर से प्रेरणा प्राप्त करव कि कोई भी होवए, भाजपा के जेन सरकार हे, नरेंद्र मोदी जी हवय, तेन सबला बरोबर दृष्टि से देखकर कार्रवाई करथे।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय सभापति महोदय, आदरणीय मंत्री केदार कश्यप जी, आप सुकमा के एसपी का उल्लेख कर रहे हैं।

श्री विजय शर्मा :- ओतके नो हय, अभी अउ हे।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- मंत्री जी, एक मिनट ही समय लूंगा। धर्मांतरण के मुद्दे पर कहूंगा। आप 15 साल मंत्री रहे और उन 15 सालों में सर्वाधिक चर्च वहीं बने हैं। आप यहाँ से एक समिति गठित करवा दीजिए कि कब-कब, कहाँ-कहाँ चर्च बने और बस्तर में कितने बने हैं, स्थिति स्पष्ट हो जाएगी।

श्री विजय शर्मा :- पिछले 5 वर्षों में जब आप सरकार चला रहे थे, तब सर्वाधिक हुआ था। (व्यवधान)

श्री विक्रम मण्डावी :- हम अवैध धर्मांतरण की बात कर रहे हैं।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आप जांच कमेटी बना लीजिए। (व्यवधान)

श्री सुशान्त शुक्ला :- उस दिन मैं चर्चा में उपस्थित रहना था न। (व्यवधान)

श्री विजय शर्मा :- जरूर बना लेते हैं द्वारिका भैया, जरूर बना लेते हैं। (व्यवधान)

श्री केदार कश्यप :- आप अपने लोगों को संतुष्ट कर रहे थे कि आप उनके साथ नहीं हैं। (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- 5 साल में कितना धर्मांतरण हुआ और 15 साल में कितना हुआ, इसकी जांच कमेटी बना लीजिए। (व्यवधान)

श्री विक्रम मण्डावी :- मंत्री जी, जो भी अवैध हैं, उसके ऊपर कार्रवाई करिए। (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आप जांच कमेटी बनवा लीजिए, दोनों दल के विधायक उसमें शामिल रहेंगे।

श्री केदार कश्यप :- आपके पास रोम से फोन आया था, इटली से फोन आया था । (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- इटली से फोन आया था ।

सभापति महोदय :- आप लोग आपस में बात न करें, आसंदी की ओर देखकर बोलिए । (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आप एक कमेटी बना दीजिए । (व्यवधान)

श्री विजय शर्मा :- द्वारिकाधीश भैया, अगर आप उस दिन इस सदन में चर्चा के लिए उपलब्ध होते, तब जरूर बना लेते, अगर आप उस दिन सदन में चर्चा के लिए उपलब्ध होते।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आज भी समय है, बनाईये।

श्री विजय शर्मा :- आपके मन से सदन थोड़ी ही चलेगा, भाई।

सभापति महोदय :- आपस में एक दूसरे को देखकर ना बोलें।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आप जो बालेंगे वह सही नहीं है न। आप भी जो बोल देंगे, वह सही नहीं है।

श्री विजय शर्मा :- सभापति महोदय, इसी सरकार ने उस सदन में यह प्रस्ताव लाया था। आप एक मिनट, बात सुन लो भाई, इसी सरकार ने प्रस्ताव लाया था कि इस विषय पर पूरी चर्चा हो जायेगी। अगर यह चर्चा होती और आप उसमें उपलब्ध होते तो जरूर इस बात पर चर्चा हो जाती है। आज यह संभव थोड़ी ही है, भाई। आज रास्ता चलते कुछ भी करना चाहे, ऐसा नहीं होता है।

सभापति महोदय :- विजय जी, आपस में देखकर बात न करें। जो भी बात करनी है, आसंदी की ओर देखकर कहिये।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मैं निःसंदेह ही कहना चाहता हूं कि सुकमा के तात्कालीन एस.पी. का एक उल्लेख माननीय केदार जी ने किया है, जिसने पत्र लिखकर सरकार को ताकीद किया था कि वहां पर धर्मान्तरण का भयंकर खेल चल रहा है जिससे आने वाले समय में वर्ग संघर्ष खड़ा हो जायेगा। न सिर्फ उसने ताकीद किया था, तात्कालीन एक कमिश्नर थे, उस कमिश्नर ने भी पिछली सरकार को पत्र लिखा था, यह कहकर पत्र लिखा कि यहां धर्मान्तरण का ऐसा खेल चल रहा है कि आने वाले समय में यहां वर्ग संघर्ष खड़ा हो जायेगा। माननीय सभापति महोदय, मैं बड़े दुःख के साथ कहना चाहता हूं कि जो वर्ग संघर्ष है, जो माओवाद है, वह वर्ग संघर्ष ही खड़ा करना चाहता था।

श्री विक्रम मण्डावी :- माननीय मंत्री जी, जी.पी.एम. का कितने दिन में चेंज हुआ है।

श्री विजय शर्मा :- सभापति महोदय, वह माओवाद ही छत्तीसगढ़ की सहिष्णुता पर वर्ग संघर्ष खड़ा नहीं कर सका।, परन्तु यह हुआ है कि हमारे छत्तीसगढ़ में धर्मान्तरण ने वर्ग संघर्ष खड़ा कर दिया है। माननीय सभापति महोदय, हम गांव-गांव में जो स्थिति देखते हैं कि कैसे 2 भागों में गांव विभक्त हो गया, कैसे गांव आपस में लड़ाई कर रहे हैं, यह हम सब देख रहे हैं। आज जिसकी चिंता माननीय नेता

प्रतिपक्ष जी कर रहे थे, जिसके लिए हमको दिल्ली तक जाना पड़ता है। आपकी 5 साल की सरकार के बाद इस बात को करना पड़ता है। क्या अच्छी बात हुई है ? उस समय क्या किया था, जब आपके एस.पी. बोल रहे थे, जब आपके कमिश्नर बोल रहे थे तब आप कोई प्रावधान लेकर क्यों नहीं आये थे ? नई सरकार बनने के बाद विष्णुदेव जी की सरकार ने नया प्रावधान लाया और उस प्रावधान पर चर्चा के लिए आमंत्रित किया तब आप पलायन कर गये। आपको कोई चर्चा नहीं करनी थी और आज उस विषय पर फिर से चिंता जागी है। आज उस विषय पर फिर से कह रहे हैं कि ऐसा नहीं, ऐसा होना चाहिए तो भाई ऐसा नहीं होता है।

माननीय सभापति महोदय, इन्होंने नीतियों के सन्दर्भ में कहा था। मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि यह नीतियां इनकी सरकार के समय ऐसी थी, जिस पर चिंता करने का विषय है। अगर वर्तमान सरकार की नीतियों के सन्दर्भ में कहना चाहते हैं, कोई आरोप लगाना चाहते हैं, अगर आपके पास कोई आधार है, आपके पास कोई तथ्य है तो बताइये। मैं तो गिना-गिनाकर सब कुछ कहा कि एफ.एल-10 क्या हुआ ? आफ लाईन कोयला वाला क्या हुआ ? डी.एम.एफ. का क्या हुआ ? पी.एस.सी. घोटाला क्या हुआ ? प्रधानमंत्री आवास योजना का क्या हुआ ? नक्सल नीति पर क्या हुआ ? घुसपैठियों के सन्दर्भ में क्या हुआ ? धर्मान्तरण रोकने की नीतियों पर क्या हुआ ? आपने सी.बी.आई. को बैन कर दिया।

माननीय सभापति महोदय, अभी सी.बी.आई. जांच की मांग करते हैं। इस विषय पर सी.बी.आई.जांच हो, उस विषय पर सी.बी.आई. जांच हो। जब खुद की सरकार थी तो आपकी नीतियां ऐसी थीं कि आपने सी.बी.आई. को बैन कर रखा था कि छत्तीसगढ़ में सी.बी.आई. नहीं आना चाहिए। इस मसले के साथ तो आपकी सरकार चली है। उस चलने सरकार की नीतियों में खराबियां थीं, वर्तमान सरकार ने ठीक कर ली हैं तो आज यह अविश्वास प्रस्ताव आ रहा है। माननीय सभापति महोदय, अविश्वास प्रस्ताव का कारण क्या है ? मैं समझना चाहता हूँ। मैं समझना चाहता हूँ कि आप किस तरीके से अविश्वास प्रस्ताव की बात कर सकते हैं।

माननीय सभापति महोदय, मैंने एक और लाईन इसमें पढ़ी और लिखा है कि नौकरशाही रवैया है। मैं सारे सदन के बीच यह विषय लाना चाहता हूँ कि किस प्रदेश की सरकार होगी, कौन सी सरकार होगी जिसमें 8-8 आई.ए.एस. जेल गये हों ? किस सरकार में गये होंगे ? जिस सरकार में 8-8 आई.ए.एस. जेल गये हों, जाने कितने राज्य स्तरीय कर्मचारी और अधिकारी जेल गये हों, जाने अन्य कितने नेतागण जेल गये हों, यह कौन सी सरकार होती है ? आज मुझे बताइये कि माननीय विष्णुदेव साय जी की ढाई वर्षों की सरकार हो गई है, इस ढाई वर्ष की सरकार में जनता के लिए भी काम हो रहा है। हमारा जो प्रशासनिक ढांचा है, क्या हुआ करता था, पुरानी सरकार में सोचा करते थे कि यह जो प्रशासनिक ढांचा ही घोड़ा है और हम सवार हैं, ऐसा सोचा करते थे। माननीय सभापति महोदय, यह

लोकतन्त्र है। उसके 4 पायो में एक पाया यह भी है। इसके लिए उनको साथ लेकर चलना होता है। माननीय विष्णुदेव साय जी की सरकार ने बहुत स्पष्टता की है। आज मुझे कोई कहे कि एक आई.ए.एस. जेल गया ? तब क्या हुआ था, जब 8-8 आई.ए.एस. जेल गये थे। क्या हुआ था भाई, इसकी चिंता सदन कैसे नहीं करेगा ? माननीय सभापति महोदय, मैं यह जरूर कहना चाहता हूं कि विगत सरकार में जो कुछ हुआ था, ऐसे ही स्वयं का नहीं हो जाता है। बार-बार सरकार का दबाव होता है तब कोई काम किया करता है। इसलिए उस समय जो हुआ। अगर आज वह कहे कि इस सरकार का तानाशाही रवैया है ? भाई, तानाशाही शब्द माननीय विष्णुदेव साय जी के साथ कोई लगा सकता है क्या ? माननीय सभापति महोदय, मैं पूछना चाहता हूं कि इस शब्द को विष्णुदेव साय जी के साथ लगा सकता है ? क्या इस बात पर कोई विश्वास करेगा कि विष्णुदेव साय जी तानाशाह हों ? वह तो सबको स्नेह करते हैं। उनका स्नेह तो विपक्ष के लिए भी होता है या नहीं भाई, ठीक है, हमारे अपने लोग हैं, काम करें। माननीय सभापति महोदय, मैं आपको उसके लिए भी बता दूंगा। माननीय मुख्यमंत्री जी के ही मेरे को आदेश से यह सारा काम हुआ। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी चिंता कर रहे थे कि हमारे लोगों को काम नहीं मिल रहा है। मैंने कहा कि अगर थोड़ी कुछ जानकारी होगी तो अभी एकत्रित कर ले आओ। तो लोगों ने भेजा है तो माननीय नेता प्रतिपक्ष जी के ही क्षेत्र में 14 करोड़ 90 लाख रुपये के काम गए हैं। माननीय सभापति महोदय, मेरे पास सूची है, मैं आपको दे दूंगा। दूसरा, मैं आपको इसमें और बता देता हूं। दिलीप लहरिया जी हैं, उनके क्षेत्र में 26 करोड़ 44 लाख रुपये का काम गया है। मेरे पास सूची है। हां, हां, मेरे पास सूची है, आप मुझसे ले लेना। लखेश्वर जी हैं, 55 करोड़ रुपये का काम गया है। मेरे पास सूची है। पी.एम.जी.एस.वाई. की 24 सड़कें गई हैं। गई हैं या नहीं गई हैं, भाई बताइए? लखेश्वर भैया, एक बार दीजिए। दिल की बात तो बोल दीजिए भैया, क्या है? लालजीत राठिया जी के यहां 37 करोड़ रुपये के काम गए हैं। माने यह सारी जानकारी मेरे पास हैं। तो विष्णु देव साय जी ने बहुत स्पष्टता की है कि चाहे जो भी हो भाई, हैं जनप्रतिनिधि, उनका पूरा सम्मान होना चाहिए और इसलिए माननीय सभापति महोदय, यह सारे काम आपके क्षेत्रों में पहुंचाए गए हैं,। आपने चिंता की थी, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने चिंता की थी।

श्री राम विचार नेताम :- अटल जी यहां 100 करोड़ रुपये का गया है।

श्री विजय शर्मा :- मेरे पास वह भी है। अब वह सारे विषय बताऊंगा अगर तो समय लग जाएगा। लेकिन, वह अभी मेरे पास है, कहें तो उसको बता दूं।

सभापति महोदय :- बाद में अतिरिक्त जानकारी दे दीजिएगा।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, नहीं, मैं यह कहना चाहता हूं, चूंकि यह विषय उठाया गया था, इसलिए मैं आपको बता रहा हूं। मैं आपसे फाइनली यह कहना चाहता हूं कि एक विषय इसमें कहा गया कि जन कल्याणकारी योजनाओं को बंद कर दिया गया। माननीय सभापति महोदय,

कौन-कौन सी जन कल्याण योजनाएं बंद हुई? अभी फिर से हमको चालू करना पड़ा, चरण पादुका योजना चलती थी, किसी के पैर में कांटा न गड़े, वनवासी के पैर में कांटा न गड़े, इस योजना को भी कहीं रोकने की जरूरत थी? उस पर कुछ भी कहा गया। इतने नाप का होता है, उतने नाप दे दिया जाता है, कुछ भी भाषणबाजी, बयानबाजी की गई। कहा गया कि पांच नंबर वाले को आठ नंबर दिया जा रहा है। जिसका जो नंबर होता है, उसको वही नंबर मिलता है। अगर किसी को नहीं जानकारी है, तो हम बता देते हैं। ऐसे बोल करके ऐसी योजना को भी समाप्त करने का काम किया गया। माननीय सभापति महोदय, बड़े दिनों तक तो आयुष्मान कार्ड को भी रोक कर रखा गया। जनता के दबाव में फिर उसको शुरू किया गया था। माननीय सभापति महोदय, प्रधानमंत्री आवास की तो हमारे बीच में चर्चा हुई, किस तरीके से रोका गया था, क्या हुआ था। इन सारी ही बातों के साथ मैं आपसे निःसंदेह यह कहना चाहता हूं कि पिछली सरकार में जो माननीय मुख्यमंत्री जी थे, उनके तानाशाही रवैये के कारण उनके ही लोग परेशान हुआ करते थे। उनके ही तानाशाही रवैये के कारण 8-8 आई.ए.एस. के अधिकारी जेल गए। उनके ही तानाशाही रवैये के कारण, उस सरकार की तानाशाही रवैये के कारण कितने हमारे राज्य स्तर के कर्मचारी-अधिकारी जेल गए, कितने अन्य लोग जेल गए। यह सारा एक भाव जो चलता था बस उसी के कारण हुआ है। पत्रकार जेल गए, नहीं गए जेल उनको जबरदस्ती भेजा गया। आई.पी.एस. अधिकारी जेल गए, नहीं फंस रहे थे, उसको फंसा दिया गया। माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे एक बात कहूं कि प्रशासन जो भी हो, उसका कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन, जैसे ही कोई सरकार में आए और वह प्रशासन में बड़ा फेरबदल करने की सोचे, तो उसका कोई बड़ा औचित्य होता नहीं है। जिस तरीके से सरकारें चली हैं, एक ही लाइन है, दुष्यंत कुमार की लाइन है कि :-

कसी चिराग लेकर चले तीरगी में आप,

जो रोशनी थी वह भी मयस्सर नहीं रही। (मेजों की थपथपाहट)

अनेक विषय और हैं, जिन-जिन विषयों को माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने कहा है, मैंने बहुत शिद्दत के साथ एक-एक विषय में उनका ध्यान किया, लिखा। क्योंकि उनका बताया बहुत मार्गदर्शन होता है। परंतु, उनके साथ आज मुझे एक बात का बड़ा दुख है। संत पवन दीवान जी ने कितने निर्मल मन से, कितने अच्छे ढंग से हमारे अपने लोगों को प्रेरित करने के लिए, समझाने के लिए उस कविता को लिखा होगा। आज आपने उस लाइन का राजनीतिकरण कर दिया। इसकी क्या आवश्यकता थी? कहीं और का कुछ ले लिया होता। छत्तीसगढ़ियों को परबुधिया कहने का अर्थ यह है कि उनका भोलापन है। उनका भोलापन बताया गया है। इसको आप लड़ाई की तरफ ले जा रहे हैं? लोगों के मन में क्रोध भरना चाहते हैं? युवाओं के मन में क्रोध भरना चाहते हैं? क्यों करना चाहते हैं? क्या बात है? मुझे एक बात बताएं, मैं उनकी बात सुन रहा था, उन्होंने बलौदाबाजार की घटना की बात की। बलौदाबाजार में इसलिए ऐसा हो गया, इसलिए ऐसा हो गया। मैं तो बलौदाबाजार के संदर्भ में कुछ जानकारी लेकर आया

हूँ। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके सामने रख भी देता हूँ, मैं निश्चित रूप से आपको यह बताना चाहता हूँ कि 10 तारीख को यह सब कुछ हुआ था और 10 तारीख को ही इस बात की घोषणा हो गई थी कि वहां होने वाले, मेरा मतलब गिरौदपुरी में भी नहीं था, वह एक पास का गांव था, जहां वह घटना हुई थी। उस घटना के संदर्भ में यह स्पष्ट था कि वहां जो कुछ हुआ है, उससे लोगों को परेशानी इसलिए हुई क्योंकि कुछ लोगों ने आकर वहां जैतखाम को क्षतिग्रस्त करने का काम किया था, ऐसे लोग जिन्हें परलोक में भी जगह नहीं मिलेगी। उनके कारण ही यह सब हुआ, यह सब जानते थे। लेकिन क्या कारण था कि कभी उन्हें बुलाया भी नहीं गया? कांग्रेस के विधायक देवेंद्र यादव भिलाई में एक दिन पहले कुछ लड़कों के साथ बैठक करते हैं और उन सारे लड़कों को साथ लेकर जाते हैं। फिर वे लड़के उन सभी गतिविधियों में संलिप्त दिखते हैं। माननीय सभापति महोदय, यह चालान में दर्ज है। यह मैं अपनी तरफ से कुछ नहीं कह रहा हूँ। मैं आपसे जो कह रहा हूँ, वह पब्लिक डॉक्यूमेंट है, जो कोर्ट में पुट-अप हुआ है। उसके बाद वे 6 महीने तक जेल में रहते हैं। भैया, खुद का कुर्ता फाड़कर आंदोलन करने से कुछ नहीं होता। (शेम-शेम की आवाज) जनता सबको पहचानती है, सबको जानती है और इस बात को समझती भी है। आज आप एक सीधे-साधे और सरल आदिवासी मुख्यमंत्री जी के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लेकर आए हैं, जनता आपको देख और समझ रही है। अपने ही हाथों से कुर्ता फाड़ कर आंदोलन करने वालों को जनता समझ रही है कि किस तरह से लोगों के बीच वैमनस्य फैलाया गया, किस तरह से न हो सकने वाली घटना को अंजाम दिया गया। माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे एक बात और कहना चाहता हूँ। आज जब मैं इनका आरोप-पत्र पढ़ रहा था, उसकी 4 लाइनें आपको पढ़कर बताना चाहता हूँ, क्योंकि यह बहुत आवश्यक है। बलौदाबाजार के विषय में लिखा है कि इस शासन की सबसे बड़ी गलती यह रही कि सतनामी समाज के द्वारा कलेक्टर को दिए गए सोमवार 10 जून के अल्टीमेटम के बाद भी बलौदाबाजार में हजारों की भीड़ जुटने की खबर प्रशासन को थी, इसके बावजूद पर्याप्त पुलिस बल तैनात नहीं किया गया। 10 जून के पहले न्याय पाने में खुद को ठगा महसूस कर रहे समाज के आक्रोश को प्रशासन भांप नहीं पाया। राज्य शासन यदि समय रहते स्थानीय लोगों को पूरी तरह से भरोसे में लेती और कदम उठाए गए होते तो ऐसी नौबत नहीं आती और समाज की नाराजगी को इस हद तक जाने से रोका जा सकता था। माननीय सभापति महोदय, मतलब अपने इस आरोप-पत्र के माध्यम से वह क्या कहना चाहते हैं? क्या आप यह कहना चाहते हैं कि सतनामी समाज ने यह सब किया है? यह मैं नहीं कह रहा हूँ, बल्कि यह आपके ही आरोप-पत्र में लिखा है। आप छत्तीसगढ़ के इतने भोले-भाले समाज पर ऐसा आरोप कैसे लगा सकते हैं? वह समाज जो घासीदास बाबा की पूजा करता है, जो श्वेतांबर धारी है, जो सबको साथ लेकर चलने वाला और शांतिपूर्ण समाज है, उस पर आरोप-पत्र के जरिए आरोप लगाया गया है। यह हम इसे कभी नहीं मानते हैं। हमारा शुरुआत से यह स्पष्ट मानना है कि असामाजिक तत्वों

ने वह कार्य किया था। लेकिन आज आप लोगों ने यह बात आरोप-पत्र क्यों लिखा है, इसको आपको समझना चाहिए।

श्रीमती शेषराज हरवंश :- माननीय सभापति महोदया, सतनामी समाज के इतने सारे युवा जेल कैसे गए?

श्री विजय शर्मा :- वह जिस समाज के भी हो, वे जेल में जायेंगे, दीदी।

श्रीमती शेषराज हरवंश :- क्या वे असामाजिक तत्व हैं?

कौशल विकास मंत्री (श्री गुरु खुशवंत साहेब) :- उसमें कौन शामिल थे, यह भी आपको दिखा? उसमें आपके नेता थे, जिन्होंने वहां जाकर असामाजिक तत्व को शामिल करके उस घटना को अंजाम देने का काम किया था। सतनामी समाज इस बात को कभी भूलेगा नहीं।

श्री विक्रम मण्डावी :- आप यह बताइए कि टेंट किसने लगवाया था?

श्रीमती शेषराज हरवंश :- जो जेल गये हैं, क्या वे असामाजिक तत्व हैं? (व्यवधान) वे सजा काट कर आ गये हैं, लेकिन आज भी उनको नोटिस दिया जा रहा है। आज भी उनको धमकी जा रही है, जिसके कारण आज भी वे सहमे हुए हैं।

श्री दिलीप लहरिया :- आप लोग इतना चिंता करते तो समाज के लोग इतने दिन तक जेल में नहीं रहते। किसने टेंट लगवाया, किसने खाने की व्यवस्था की, यह सबको पता है।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदया, इस बात को मैं ही नहीं बोल रहा हूं। इस सदन के हमारे ही विधायक श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े जी का बयान आज भी वीडियो में है। आप वीडियो निकालकर देख सकते हैं, जिसमें वे प्रेरणा दे रही हैं, वे सारे लोगों से कह रही हैं कि जिस तरीके से बलौदाबाजार में घटना हुआ था, वैसे ही हम सबको एक साथ आगे जाना है। हमको कलेक्टर ऑफिस में जाकर तोड़-फोड़ करना है। यह वह कह रही है, वह वीडियो में साफ दिख रहा है। (व्यवधान)

श्रीमती शेषराज हरवंश :- आपने कहा कि जो जेल गये, वह असामाजिक तत्व थे। क्या सतनामी समाज के युवा कॉलेज पढ़ रहे थे, प्रतियोगी परीक्षा में भाग लेने वाले थे, आज वे जेल जाकर अपना भविष्य चौपट कर डाले हैं। वे युवा आगे कुछ नहीं कर सकते हैं, क्योंकि आपने उनको जेल में डाल दिया है। आपने उनको जेल में डाल दिया कि वे असामाजिक तत्व थे, उनके भविष्य को रोक दिया है।

श्री दिलीप लहरिया :- माननीय सभापति महोदया, 193 लोगों में कितने सतनामी समाज के लोग जेल गए थे, यह हमारे गुरु जी बताएं।

श्री विजय शर्मा :- आप अपराधियों को समाज के साथ मत जोड़िए। (व्यवधान)

श्री गुरु खुशवंत साहेब :- सभापति महोदया, अपराधी की कोई जाति नहीं होती, जो गलत करेगा वह जेल जाएगा।

श्रीमती शेषराज हरवंश :- आपने उन समाज के सभी लोगों को पकड़-पकड़ कर जेल में डाला है। (व्यवधान)

श्री गुरु खुशवंत साहेब :- उस घटना को जिन लोगों ने अंजाम दिया, उनको जेल में डाला गया है।

श्रीमती शेषराज हरवंश :- वे प्रतियोगी परीक्षा दिलाने वाले बच्चे थे, उनको आपने पकड़-पकड़ कर जेल में डाला, ताकि उनका भविष्य चौपट हो जाये, वह आगे न बढ़ सके।

एक माननीय सदस्य :- सतनामी समाज अपराधी है क्या । (व्यवधान)

श्री दिलीप सिंह लहरिया :- जानबूझकर टेंट लगाया गया, भोजन की व्यवस्था की गई, समाज के लोगों को धकेला गया । (व्यवधान)

श्री गुरु खुशवंत साहेब :- आप लोगों ने समाज के लोगों को जानबूझकर अपमान किया । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- मेरा माननीय सदस्यों से आग्रह है कि आप लोग बैठ जाइये । जब आपका समय आयेगा तो बोलियेगा । (व्यवधान)

श्रीमती शेषराज हरवंश :- इसलिये उनको आज भी प्रताड़ित किया जा रहा है। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- मेरा माननीय सदस्यों से आग्रह है कि कृपया आप बैठ जाइये । आपका समय आयेगा तो आप बोलियेगा । (व्यवधान)

श्री गुरु खुशवंत साहेब :- समाज कभी इस अपमान को नहीं भूलेगा और इसका जरूर बदला लेगा । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- अब जो भी बोलेगा, उसे रिकार्ड में नहीं लिया जायेगा । आप लोग जो भी बोल रहे हैं, वह रिकार्ड में नहीं लिया जायेगा । मेरा आपसे आग्रह है कि आप बैठ जाइये । सुशांत जी, आप बैठ जाइये । अब जो बोलेंगे, वह रिकार्ड में नहीं आयेगा । जब आपकी बारी आयेगी, उस समय आप अपनी बात रख लीजिए ।

श्री दिलीप लहरिया :- सभापति महोदय, इसको रिकार्ड में लिया जाये ।

श्री विजय शर्मा :- बहुत-बहुत आभार सभापति महोदय । इसमें कौन सी रिकार्ड में हटाने वाली बात है ? यह आपके आरोप पत्र में है, आप उसे पहले हटा दो। माननीय सभापति महोदय, बहुत आभार है ।

सभापति महोदय :- देखिये, कुछ संसदीय नियम होते हैं और आप लोग जानते हैं, मुझे बताने की आवश्यकता नहीं है । इस तरह से नहीं होगा, जब आपकी बारी आयेगी तो अपनी बात रखियेगा । आप प्लीज बैठ जाइये ।

श्री दिलीप लहरिया :- यह तो डायरेक्ट हुआ है, यह डिक्लियर है ।

श्री विजय शर्मा :- हुआ है नहीं दिलीप भईया, यह किया गया है ।

श्री दिलीप लहरिया :- यह आपके द्वारा किया गया है, यही तो हम कह रहे हैं।

श्री विजय शर्मा :- आप मेरी बात एक मिनट सुन लो । माननीय सभापति महोदया, यह वही भाव है, जिसमें यह कहा जाता है कि आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता है । माननीय सभापति महोदय, यह वही भाव है, जिसमें यह कहा जाता है कि जो नक्सली है, वह पीड़ित लोग हैं । यह वही भाव है ।

श्री दिलीप लहरिया :- सभापति महोदया, क्या सतनामी समाज आतंकवादी है, 193 लोगों को जेल में ठूँसा गया है । (व्यवधान)

श्री विजय शर्मा :- सभापति महोदया, मैं समूचे सदन से कहना चाहता हूँ कि वह अपराधी किसी समाज से हैं, ऐसा मत कहिये । आपको समझना चाहिये कि वह उस समाज का अपमान होगा । जो अपराधी है, वह चाहे किसी समाज का हो, उस पर कठोर कार्यवाही होनी चाहिये । (व्यवधान)

श्रीमती शेषराज हरिवंश :- आपने असामाजिक तत्व कहा है, इसलिये यह बात आई है (व्यवधान) समाज के लोग आंदोलन में अपनी मांग रखने गये थे । (व्यवधान)

सभापति महोदया :- किसी समाज को नहीं कहा गया है ।

श्री विजय शर्मा :- मीडिया पर वह विडियो उपलब्ध है । आप देख लीलिए । मैं जो आपको कहना चाहता हूँ वह स्पष्ट रूप से उसमें कहते हुये मिल जायेंगे कि हमको कलेक्ट्रेट के अंदर घुस जाना है । वहां तोड़फोड़ मचाना है । वहां पर हमको बलौदाबाजार जैसे करना है । यह कहते हुये विडियो मिल जायेगा और क्या प्रमाण चाहिये ? (शेम-शेम की आवाज) माननीय सभापति महोदया, एक बात याद रखें...।

श्री दिलीप लहरिया :- भोजन की व्यवस्था आपके द्वारा की गई थी । (व्यवधान)

श्री शेषराज हरिवंश :- अगर धर्म की रक्षा के लिये...। (व्यवधान)

श्री विजय शर्मा :- यह विष्णुदेव साय जी की सरकार है, इस सरकार में सुशासन है तो विष्णुदेव साय जी का सुदर्शन भी होगा । यह बिल्कुल ध्यान रख लें । कोई यह न समझे कि कुछ भी करके आगे बढ़ जायेंगे । इस पर कानूनी रूप में कार्यवाही किया जायेगा । माननीय सभापति महोदया, मैं आपके सामने इसलिये सारी बातों को रख रहा हूँ कि इनके आरोप पत्र में लिखा हुआ है, इन्होंने आरोप पत्र में ऐसे लिखा है जैसे हमारा सतनामी समाज ही दोषी साबित हो गया है । यह नहीं होना चाहिये, इनको तो हटाना ही चाहिये । माननीय सभापति महोदया, मैं दूसरा आपसे कहना चाहता हूँ कि...।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय मंत्री जी, आयोजन तो सतनामी समाज का था, यह बात सही है कि कुछ असामाजिक तत्व घुसे थे । सतनामी समाज के द्वारा आमंत्रित किया गया था, लेकिन आपकी

नाकामी थी। आप पुलिस बल नहीं रखे थे। आप यदि जैतखंब तोड़ने वाले को पकड़ लेते और समाज के सी.बी.आई. की मांग को मान लेते तो इतनी बड़ी घटना नहीं होती। कलेक्ट्रेट पूरा जल गया।

श्री विजय शर्मा :- आप बड़े नेता हैं, मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि कम से कम अब तो आप समाज को छोड़ दें ? अब तो आप कह दें कि वहाँ पर जो कुछ हुआ वह किसी गैर जिम्मेदाराना या असामाजिक व्यक्ति ने किया है, फिर आप कहेंगे कि समाज का है। (व्यवधान)

श्रीमती शेषराज हरवंश :- हर घर से खोजकर सतनामी समाज के लोगों को जेल में डाला गया, जो नहीं थे, वे भी जेल में रहे हैं। हर घर में घुसकर जेल में डाला गया। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- वह असामाजिक तत्व कौन थे? कांग्रेस के विधायक तक थे। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप पकड़ लेते तो वह घटना नहीं होती। (व्यवधान)

श्री गुरु खुशवंत साहेब :- वहाँ सतनामी समाज के कार्यक्रम में कांग्रेस पार्टी के विधायक क्या करने गए थे ? (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- वह असामाजिक तत्व कौन थे ? (व्यवधान)

श्रीमती शेषराज हरवंश :- दूसरे के घर में भी घुस-घुस कर जेल में डाला गया। (व्यवधान)

श्री गुरु खुशवंत साहेब :- क्या सतनामी समाज को भड़काने गए थे या वहाँ कलेक्ट्रेट को जलाने गए थे ? (व्यवधान)

श्रीमती शेषराज हरवंश :- आप बैठ जाईए, आपने समाज की आवाज को दबाया है। (व्यवधान)

श्री गुरु खुशवंत साहेब :- अगर कोई असामाजिक तत्व है तो वह कांग्रेस पार्टी ही है। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- वह असामाजिक तत्व कौन था। (व्यवधान)

श्रीमती शेषराज हरवंश :- आप बैठ जाईए, आप क्या बात करेंगे। (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- साहू जी का भतीजा पीटा गया था या नहीं पीटा गया था। भतीजा था कि बेटा था ? आपके भतीजे को पिटाई पड़ी थी या लड़के को पिटाई पड़ी थी ? (व्यवधान)

श्रीमती शेषराज हरवंश :- समाज के लोग तो शांतिपूर्वक अपनी मांग रख रहे थे, क्यों नहीं सुना ? (व्यवधान)

श्री गुरु खुशवंत साहेब :- समाज हमेशा शांतिपूर्वक मांग करता है, आपके नेता वहाँ क्या करने गए थे ? मैं एक बात और बताना चाहता हूँ। आप लोग जरा सुन लीजिए। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आप सबसे आग्रह है, आप सभी बैठ जाईए। सदन को चलने दीजिए।

श्री दिलीप लहरिया :- [XX]⁸ (व्यवधान)

श्री गुरु खुशवंत साहेब :- आप भी सतनामी समाज के विधायक हैं। आप नहीं गए लेकिन आपके कोई दूसरे नेता जाते हैं। (व्यवधान)

⁸ [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

श्री दिलीप लहरिया :- माननीय मंत्री जी, आप लोग सतनामी समाज को बदनाम कर रहे हो। माननीय मंत्री जी कहीं पहल नहीं किए हैं, जब समाज के लोग चिल्ला-चिल्लाकर बोल रहे थे, इसमें हम संलिप्त नहीं हैं तो [XX]⁹ कहीं भी पहल नहीं किए हैं, बार-बार आवेदन दिया गया है। (व्यवधान)

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- सभापति महोदया, जब सी.बी.आई जांच की मांग किए तो उसमें हमारे गुरु जी शामिल नहीं हुए, बहुमत नहीं दिए। (व्यवधान)

श्री गुरु खुशवंत साहेब :- ये हमसे क्या सवाल पूछेंगे ? जब सतनामी समाज किसी प्रकार की मांग लेकर जाता था तो [XX] कहकर अपमान करने का काम करते थे, ये कांग्रेस पार्टी सतनामी समाज के कभी हितैषी नहीं हो सकते। (शेम शेम की आवाज) ये सतनामी समाज को हमेशा बदनाम करने में लगे रहते हैं। (व्यवधान)

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- आदरणीय तभी आप टिकट मांगने के लिए घूमते रहते थे। पांच साल टिकट मांगने के लिए कहाँ घूम रहे थे ? टिकट मांगने के लिए कहाँ घूम रहे थे, ये तो बताईए। टिकट किससे मांगने के लिए घूम रहे थे। (व्यवधान)

श्री गुरु खुशवंत साहेब :- सतनामी समाज ये अपमान कभी भूलेगा नहीं। आप इसको याद रखिएगा। (व्यवधान)

श्री दिलीप लहरिया :- सत्ता के लालच में समाज को ढकेल रहे हैं। (व्यवधान)

श्रीमती शेषराज हरवंश :- बैठिए आप बैठ जाईए। आप समाज के रक्षक नहीं हो। (व्यवधान)

श्री गुरु खुशवंत साहेब :- मैं हमेशा सतनामी समाज के पक्ष में रहा हूँ। जब भी अन्याय हुआ है, हमेशा समाज का शोषण करने का काम, समाज का अपमान करने का काम कांग्रेस पार्टी ने किया है। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप समाज को बीच में मत लाईए। आपकी कानून व्यवस्था सही नहीं है, अगर कानून व्यवस्था सही रहती तो समाज बीच में नहीं आता। (व्यवधान)

सभापति महोदया :- मेरा सदस्यों से आग्रह है बैठ जाईए।

श्री रामकुमार यादव :- आप मन के राज में तड़ीपार जिलाबदर होत है। (व्यवधान)

श्री दिलीप लहरिया :- गुरु जी द्वारा पहल नहीं किया गया है, ये आप स्वीकार करिए। (व्यवधान)

श्रीमती शेषराज हरवंश :- जो व्यक्ति बाहर के थे, आपने उनको जेल क्यों नहीं भेजा ?

सभापति महोदया :- मेरा सभी सदस्यों से आग्रह है, बैठ जाईए, अपनी-अपनी बारी आएगी तो विषय रख लीजिएगा। आप सभी आगे वक्ता के रूप में कहने वाले हैं।

⁹ [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

श्री अटल श्रीवास्तव :- देखिए, रोम जल रहा था और नीरो जिन्होंने आग लगाई वे यहां पर सो रहे हैं। नीरो बंसी बजा रहे हैं। (हंसी)

श्री रामकुमार यादव :- ओ सोवत नई हे, ओ छत्तीसगढ़, भारत के चिंता करते हे, ओ महाजानी ए।

सभापति महोदया :- माननीय विजय जी, अब आप आगे बढ़ें।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदया, मैं तो तुरंत ही आगे बढ़ना चाहता हूं। परंतु जिस तरीके से डिस्टर्ब किया जा रहा है तो जैसे अजय चंद्राकर जी ने आपसे मांग की थी, वैसे मैं भी करता हूं कि वह समय मेरे साथ ना जोड़ा जाए, वह समय अलग कर दिया जाए। मैं अनेक विषयों पर विषय रखना चाहता हूं। एक महत्वपूर्ण विषय आया है। पेसा के कानून के संदर्भ में माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने कहा था, एक ही नहीं, ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो पिछली सरकार ने इनिशिएटिव लिया और भूल गए। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, उसको आगे नहीं बढ़ाया या लास्ट मोमेंट में किया जब उसका औचित्य समाप्त होने वाला है, जब सरकार ही तिरोहित हो चली है, इस तरीके की स्थिति में थी, उस समय उसको किया। पेसा वाला एक्ट था और उस पर नियम बनाए गए। नियम बनाने के बाद क्या किया, भाई? कुछ नहीं किया। अभी जाकर के हमने उसमें स्टेट कोऑर्डिनेटर बनाए, अभी जाकर के हमने उसमें डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर्स बनाए, अभी जाकर के पेसा मोबिलाइजर्स बनाए, अभी जाकर के उसकी समितियों के अध्यक्ष बने, अभी जाकर के उनकी बैठकें हो रही हैं, अभी जाकर के उनका ट्रेनिंग प्रोग्राम हो रहा है। पेसा कानून को लागू कराने के लिए पूरे ही पांचवीं अनुसूची के क्षेत्र में माननीय विष्णु देव साय जी की सरकार ने बड़ी मेहनत के साथ काम किया है। (मेजों की थपथपाहट) इसमें इनको कोई कुछ नहीं कह सकता। जिन्होंने कुछ नहीं किया, वह कैसे इस सरकार के लिए कह सकते हैं? इन्होंने अपने विषय में इसको लाया है, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने आज इस विषय को उठाया है, इसलिए मैं आपके सामने रख रहा हूं। ये कैसे कह सकते हैं? जब स्वयं ही नहीं किया, वर्तमान सरकार कर रही है तो अविश्वास कैसे हो सकता है? अबूझमाड़ का जंगल। मेरा निवेदन है, माननीय मुख्यमंत्री जी की इसी सदन में यहीं से घोषणा है, बयान है कि बस्तर की उन्नति, बस्तर के लघु वनोपजों के आधार पर, बस्तर के लोगों के भाव के अनुरूप की जाएगी। ऐसा माननीय मुख्यमंत्री जी ने बताया है। आप कहां की वीडियो देखते हैं, भाई? यह कहां का विषय होता है? आप ये कैसी बात करते हैं? कौन सा सरकारी आदेश है, कैसे हो गया है? इन सब बातों को आप कहां से बोलते हैं? मतलब यह वहीं का विषय नहीं है, बल्कि अनेक जगहों पर मैं इस विषय को देख रहा हूं। मैं यह भी देख रहा हूं कि आपने कुछ ऐसी बातें कही हैं जैसे कि आपने नक्सलवाद के विषय में कहा कि 25,000 जेल में हैं। अब यह आरोप पत्र का विषय है कि 25,000 जेल में हैं? बताओ भाई, मैं आपके साथ चलता हूं। चलिये बताइये कि कहां जाएंगे? माननीय सभापति महोदया, कुछ भी कह देना है। भाई, जब सरकार इतने शुद्ध मन से इस विषय पर काम कर

रही है, जब माननीय विष्णु देव साय जी, माननीय केंद्रीय गृह मंत्री जी, माननीय प्रधानमंत्री जी, सबकी चिंता इस पर है, हम लोग भी चिंता कर रहे हैं। हमने कभी नहीं कहा कि आप चिंता नहीं कर रहे हैं, आप भी चिंतनशील हैं, आप भी चिंता कर रहे हैं तो इस विषय को ऐसे ही आगे बढ़ाना चाहिए। अब अचानक नौजवानों के मन में क्रोध भरने वाला काम है। ये सब कुछ जो उपक्रम चल रहे हैं, वे यही हैं कि नौजवानों के मन में क्रोध भरा जाये। कम से कम ऐसे मसलों पर जो छत्तीसगढ़ के ऊपर दशकों-दशक का दंश है, आज जब वह समाप्त होने वाला है तो नौजवानों के मन में कम से कम ऐसा विषय तो नहीं भरना चाहिए। हम जनता की सेवा करके, जनता के विषयों पर काम करके जनादेश प्राप्त करें, ऐसी राजनीति होनी चाहिए। यह राजनीति नकारात्मक है, जिसमें आप यह कह दें कि वहां कोई जंगल की कटाई चल रही है। ऐसा नहीं कहना चाहिए। अच्छा, महतारी वंदन योजना के संदर्भ में इन्होंने कहा। मैं वर्ष 2018 के समय के आपके घोषणा पत्र को याद करता हूं। उस घोषणा पत्र में आपने लिखा था कि हर एक माता-बहन को 500 रुपये प्रतिमाह दिया जाएगा। 5 साल बीत गए, लेकिन इन्होंने किसी को 5 रुपये तक नहीं दिया। 5 रुपये नहीं दिया। आज माननीय विष्णु देव साय जी की सरकार में 70 लाख माताओं-बहनों के खातों में प्रतिमाह 1,000 रुपये पहुंचाया जा रहा है। यह हमको ध्यान रखने का विषय है। (मेजों की थपथपाहट)

समय :

4.57 बजे

(सभापति महोदय (श्री प्रबोध मिंज) पीठासीन हुए)

श्रीमती यशोदा निलाम्बर वर्मा :- आप घोषणा पत्र में बता दीजिए कि क्या सभी विवाहित महिलाओं को मिलेगा? क्या अभी सभी महिलाओं को मिल रहा है? आप यह बता दीजिए।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, कल ही इसका प्रश्नोत्तर था। आज ही था, उस समय पूछना था। उस समय पूछना था, अभी थोड़ी न पूछने का समय है। शायद आप लोग सीनियर हैं, कम से कम आप लोग तो समझें कि सदन की क्या मर्यादा है, क्या प्रक्रिया है। उसी हिसाब से उसको करना चाहिए। मैं कुछ मामले आपके सामने जरूर लाना चाहता हूं। मुख्य श्रोता तो चले गए। हर बार यह हो जा रहा है, यह गुगली बड़ी गड़बड़ है। (हंसी) जरा उनको बुलाइए। मैं ध्यान दिलाना चाहता हूं। बड़े स्थानों पर जाते हैं कि यह हो गया, वह हो गया, ऐसे अनेक स्थानों पर जाते हैं। मैं पूर्व मुख्यमंत्री जी को ध्यान दिलाना चाहता हूं और उनसे पूछना चाहता हूं कि खुड़मुड़ा-अमलेश्वर के सोनकर परिवार की घटना आपको याद है या नहीं है? जिसमें चार लोगों की एकसाथ हत्या हुई थी, वह परिवार आपको याद है या नहीं है? आप ही की सरकार में हत्या हुई थी, वह परिवार आपको याद होना चाहिए। मैं याद कराना चाहता हूं, पूछना चाहता हूं कि बठेना में गायकवाड़ परिवार आपको याद है या नहीं है? 5 लोगों की एकसाथ हत्या हुई थी। आपको वह परिवार याद है या नहीं है? मतलब, यह पूछने वाली बात है। हर

जगह घूमकर आप किसी भी मौत पर राजनीति करें। कहीं पर भी कोई घटना हुई हो, जो परिवार का आपस का दंश हो, एक छोटे से समूह का आपस का हो, दो नौजवानों के बीच का द्वंद हो, वहां पर जाकर राजनीति, लाशों पर राजनीति तो आज इस बात पर प्रश्न पूछा जाये। आप किस तरीके से ऐसा कर सकते हैं? यह आपके कार्यकाल का विषय है जो मैं आपसे कह रहा हूँ। ये बठेना वाले आपको याद होंगे, ऐसा मैं पूछना चाहता था, अभी नहीं हैं। ऐसे ही कपसदा, कुम्हारी, सितंबर, 2022 का वह विषय, वह यादव परिवार आपको याद है या नहीं है? मैं आपसे पूछना चाहता हूँ। इसलिए पूछना चाहता हूँ कि ये सारी बातें ध्यान में होनी चाहिए। अजय चंद्राकर जी ने कहा कि आईना बेचने से पहले देखना भी चाहिए। उसको बांटने से पहले एक बार देखना भी चाहिए, स्वयं की तरफ भी देखना चाहिए। मैं नहीं कहता कि एक भी ऐसी घटना हो जाए और चूंकि आपके समय हुई इसलिए हमारे समय हो जाए और उसको चला लिया जाए, मैं बिल्कुल नहीं कहता। लेकिन इस विषय को किस तरीके से डील किया जाना चाहिए, क्या इसके पीछे राजनीति करनी चाहिए? क्या मौतों पर राजनीति करनी चाहिए? क्या इस तरीके से सदन में इस विषय को रखा जाना चाहिए? क्या आपके आरोप पत्र का यह विषय हो सकता है? मैं पूछना चाहता हूँ। मैं यह पूछना चाहता हूँ कि भिलाई में भारत माता की जय बोलने पर मलकीत सिंह को क्यों मार दिया गया था? मैं पूछना चाहता हूँ। दो लड़के गदर फिल्म देख रहे थे। यह भी सितम्बर, 2023 की बात है। वे गदर फिल्म देख रहे थे और फिल्म देखते-देखते उनको जोश आ गया होगा। उन्होंने भारत माता की जय कहा और जय कहा तो उनको वहीं मार दिया गया। यह तो उन्हीं का क्षेत्र है। इसीलिए तो मैं पूछ रहा हूँ।

समय:

5.00 बजे

श्री धर्मजीत सिंह :- साहब, यह कौन से सन् में हुआ था?

श्री विजय शर्मा :- सन् 2023 का है।

श्री धर्मजीत सिंह :- अरे बाप रे। भारत माता की जय कहने में मार दिया जाएगा, वन्दे मातरम् कहने में भी गला मरोड़ दिया जाएगा, कुछ भी हो सकता था।

श्री विजय शर्मा :- इनके राज में।

श्री धर्मजीत सिंह :- हां, इन्हीं के राज की बात है।

श्री विजय शर्मा :- नहीं, आपको और बता दें। आपने जिस तरीके से इसमें लिखा है, सरकार अपनी आलोचना नहीं सह पा रही है। अपनी आलोचना करने वालों पर कुछ कार्यवाहियां कर रही है, इसमें ऐसा कह रहे हैं। माननीय सभापति महोदय, मैं पूछना चाहता हूँ कि आप इस बात में एक बार प्रमाण लाकर दिखाएं कि क्या हो रहा है। इस सरकार की जितनी सहनशीलता है, सुनने की क्षमता है, मैं सोचता हूँ कि छत्तीसगढ़ के इतिहास में माननीय विष्णुदेव जी की सरकार ऐसी सरकार है जो सबको साथ लेकर

चलती है, सबकी बात सुनती है और सबसे सीखने की कोशिश करती है, यह ऐसी सरकार है। आप स्वयं इस बात को सोच कर देख लें कि क्या हुआ था? यह मलकीत सिंह वाले विषय पर क्या हुआ था? क्या हो गया, कौन सी ताकत इतनी बढ़ गई थी कि पूरे ही समाज को प्रभावित करने वाली हो गई हों? मैं अपनी बात कहता हूं। मैं कवर्धा का रहने वाला हूं। कवर्धा में जो कुछ हुआ था, आज उसको दूषित, बदनाम करने की कोशिश करते हैं। कवर्धा में क्या हुआ था? कवर्धा में सुबह भगवा ध्वज लगाने वाले एक नौजवान को पकड़कर सरेआम पीट दिया गया था। हम तो दूसरी जगह कहीं दौरे पर थे। जब उसको पीटा गया तो दिन भर बीत गया और रात को 10:00 बजे तक उस पर एफ.आई.आर. नहीं हुई थी। अगर पहले एफ.आई.आर. होकर कार्रवाई हो जाती तो वहां पर कुछ नहीं होता। लेकिन नहीं, किसी की उन पक्षों पर बोलने की हिम्मत नहीं होती थी क्योंकि छत्तीसगढ़ में सरकार ही ऐसी थी और कोई नहीं बोल सकता था। यह मलकीत सिंह भी कुछ नहीं कर सके। जब वहां पर हम लोगों ने इस विषय को कहा तो हमारे ऊपर एफ.आई.आर., सांसद के ऊपर एफ.आई.आर., पूर्व सांसद के ऊपर एफ.आई.आर., पूर्व विधायक के ऊपर एफ.आई.आर., सैकड़ों कार्यकर्ताओं के ऊपर एफ.आई.आर. और एफ.आई.आर. भी ऐसी, कि मुझ पर आर्म्स एक्ट लगा था। किस बात के लिए आर्म्स एक्ट, भाई? मैं कोई बंदूक रखकर घूम रहा था? लेकिन कार्रवाइयों के कोई सिर पैर नहीं हुआ करते थे। वह विषय था जब आप यह कहते कि सरकार कुछ सुन नहीं रही है, सरकार तानाशाह हो गई है, ये वह विषय थे। आज बता दें कि ऐसी कौन सी कार्रवाई किसके ऊपर हो गयी? जहां पर भी आपकी बात होती है, वहां माननीय विष्णुदेव साय जी का बहुत स्पष्ट निर्देश होता है कि बिल्कुल चिंता करके इस विषय पर काम करना चाहिए। अभी त्रिपाठी वाला जो रेत का विषय था, वहां जो कुछ हुआ, वह बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण था। लेकिन हमने उस पर सी.बी.आई. जांच के लिए पत्र लिखा और सी.बी.आई. की टीम आकर उस विषय पर जांच कर रही है। (मेजों की थपथपाहट) उसका कारण यह नहीं है कि हमारी स्वयं की पुलिस जांच नहीं कर सकती, बिल्कुल कर सकती है। हम तो परिणाम तक पहुंच गए थे और आठ लोग गिरफ्तार हो गए थे लेकिन उसमें मसला यह है कि उनकी मांग थी कि इसमें स्वतंत्र एजेंसी से, सेंट्रल एजेंसी से जांच कराई जाए, तो उस मामले को सी.बी.आई. जांच के लिए दिया गया। बिल्कुल हम आगे बढ़कर कार्य कर रहे हैं। माननीय सभापति महोदय, इस बात की बहुत स्पष्टता है कि जिस भी विषय में आप देख लें, ध्यान करके देख लें कि उससे पहले माननीय डॉ. रमन सिंह जी की सरकार थी और 2018 तक छत्तीसगढ़ में क्या हुआ था, उसके बाद छत्तीसगढ़ निर्माण के बाद मुझे जहां तक ध्यान आता है कि पहली बार कवर्धा में कफर्यू लगा था, उससे पहले छत्तीसगढ़ निर्माण के बाद कवर्धा और कहीं पर छत्तीसगढ़ में कफर्यू नहीं लगा था। पहली बार कवर्धा में लगा था। क्या यह हमारी गलती है? क्या यह समाज की गलती है? यह उसी सरकार की गलती है, जिस सरकार के कारण ऐसा हुआ। मैं निवेदनपूर्वक कहना चाहता हूं कि जब वे विपक्ष में आ गए, तब वे आकर यह कहेंगे कि अविश्वास प्रस्ताव लाएंगे जबकि यह सरकार इन सारी बातों के लिए

संजीदगी से काम कर रही है, यह संभव नहीं है। यह संभव नहीं है। माननीय सभापति महोदय, मैं निःसंदेह एक बात और कहना चाहता हूँ। वह कफरू सिर्फ कवर्धा में नहीं लगा, वह कुछ दिनों के बाद साजा के समीप बीरनपुर में भी लगा। ऐसी कौन-सी ताकतें थीं जो इतनी प्रभावी हो गईं, जिनके सामने सरकार भी घुटनों के बल रहा करती थी, वह ऐसी कौन-सी ताकतें थीं? सरकार अगर घुटनों के बल है तो रहे, समाज कभी घुटनों के बल नहीं हो सकता। मैं स्पष्ट रूप से इस बात को कहना चाहता हूँ। (मेजों की थपथपाहट) जब-जब ऐसा होगा, तब-तब उसका कड़ा विरोध किया जाएगा, यह बात बहुत स्पष्टता के साथ कहना चाहता हूँ। माननीय सभापति महोदय, यह कानून व्यवस्था के संदर्भ में कह रहे थे। अगर मैं इस पर पूरे आंकड़े पढ़ना शुरू करूंगा तो बहुत समय लग जाना है। मैं नहीं कहना चाहता, लेकिन सिर्फ आपको इतना बताना चाहता हूँ कि जिस दिन समय होगा आप मुझसे वह डिटेल ले लीजिए, किसी दिन सदन में चर्चा कर लेंगे। हिरासत में, जेल में मौतें, इस बार के ढाई साल से आपके कार्यकाल के किसी भी ढाई साल में ज्यादा हुईं। जेल में जो मौतें हुईं, उसमें आप आपके कार्यकाल के दोनों ढाई-ढाई साल देख लीजिए और इस ढाई साल को देख लो, आपके समय ज्यादा हुई थीं। दूसरी बात आपसे कहना चाहता हूँ कानून व्यवस्था की बात है, डकैती 18 प्रतिशत कम हुई है, लूट 7.95 प्रतिशत कम हुई है, सेंधमारी 7.68 प्रतिशत कम हुई है, चोरी 12.92 प्रतिशत कम हुई है, इसमें सारे आंकड़े हैं। ये कम हुए हैं। लेकिन आंकड़ों की बाजीगरी नहीं है। हमने बिल्कुल स्पष्ट तौर पर नीचे तक कह रखा है, इसमें माननीय विष्णु देव साय जी के बहुत स्पष्ट निर्देश हैं कि एफ.आई.आर. तुरंत किया जाना चाहिए। जो भी विषय आते हैं, एफ.आई.आर. की जानी चाहिए। सभापति महोदय, हमारे ध्यान में तो ऐसे भी एफ.आई.आर. हैं, बिलासपुर का वो मामला था, वो भू-माफिया का काम किया करते थे और शायद युवा कांग्रेस के पदाधिकारी थे। अपराध उन्होंने उस समय किया था, उनके लोग थानों में आते रहे, कोई एफ.आई.आर. नहीं हुई थी। विष्णु देव साय जी की नई सरकार बनी, उसके बाद उस पर एफ.आई.आर. करके कार्रवाई कराई। ये आलम था। मैं आपसे निःसंदेह यह कहना चाहता हूँ कि इन सारी ही बातों के साथ माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने कवर्धा के संदर्भ में, अन्य विषयों के संदर्भ में जो कहा है, मैं उन सारी चीजों पर जाऊंगा तो बहुत समय लग जायेगा। लेकिन एक महत्वपूर्ण विषय है जिसको मैं जरूर सबसे पहले लेना चाहता हूँ और वह यह है कि आपने नक्सलवाद के संदर्भ में चिंता की है, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने भी चिंता की है और माननीय कवासी लखमा जी ने भी इस पर चिंता की है।

सभापति महोदय :- माननीय गृह मंत्री जी, एक घंटे से ज्यादा हो गये हैं, और कितना समय लेंगे?

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मुझे पता नहीं चला। माननीय कवासी लखमा जी ने जो बात कही, मैं उनका हृदय से आभार करना चाहता हूँ। मैं उनके सहृदयता का भी बहुत सम्मान करता हूँ। उन्होंने स्पष्ट तौर पर आज सदन में कहा कि मैं धन्यवाद देता हूँ, आभार व्यक्त करता हूँ। मैं

ये पूछना चाहता हूँ कि जब ऐसे सदस्य हैं जिन्होंने नक्सलवाद को देखा है, अपने जीवन में सहा है और वह जब धन्यवाद कहना चाहते हैं, स्वयं उल्हादित होना चाहते हैं तो भी विपक्ष उस दिन पलायन कर जाता है। माननीय सभापति महोदय, मैं फिर से कहूँगा कि नक्सलवाद हमारे देश में समाप्त हुआ है, नक्सलवाद का वह पूरा कैडर समाप्त हुआ है, इस पर चर्चा है। कैसे पलायन किया, जैसे बहिर्गमन किया जा सकता है, कैसे त्यागा जा सकता है। आप नहीं आये हैं, आपने वाकआउट कर दिया है, आप सोचें कि आप किस विषय पर वाकआउट कर रहे हैं। क्या आप नैतिक रूप से इस बात को कह पायेंगे ? क्या झीरम जैसे दंश को झेलने वाला हमारा छत्तीसगढ़, मैं कांग्रेस के नेता कभी नहीं कहता, हमेशा यही कहते हैं कि कांग्रेस ही नहीं, वह हमारे छत्तीसगढ़ का नेतृत्व था, जिसके साथ झीरम में ऐसा हुआ। मैं आपको उस दिन बताना चाहता था की झीरम के कांड करने वालों को हमारे सशस्त्र बल के जवानों ने कैसे मौत के घाट उतार दिया। मैं आपको नाम के साथ बताना चाहता था। मैंने उस दिन इस बात का उल्लेख भी किया है कि किस तरीके से झीरम में हमारे नेतृत्व को समाप्त करने वालों को हमारे सशस्त्र बल के जवानों ने समाप्त कर दिया है। अगर ये भी नहीं सुनना चाहेंगे, इस पर भी चर्चा नहीं करना चाहेंगे, ये कैसे संभव हो सकता है? इसीलिये आग्रह करता हूँ वह बहिर्गमन नहीं था, वह पलायन था। उसका नोट किया जाना चाहिए कि पलायन कर गये थे। आपसे निवेदनपूर्वक कहना चाहता हूँ कि आज के आरोप पत्र में ये है कि 25 हजार लोग जेल में बंद हैं। ये कहां का आंकड़ा है? चन्द्राकर जी बात रहे थे कि उनके पी.ए. ने कुछ लिखकर दे दिया। मैं आपसे पूछता हूँ कि आपको किसने ये लिखकर के दे दिया? ये 25 हजार कहां का आंकड़ा है, कोई मुझे बताये? और आपकी सरकार थी तो आपने कितने नक्सल विषयों पर जेल में बंद लोगों को छोड़ दिया? जिसने फारेस्ट का कुछ किया हो, उसको छोड़ दिया। जो सामान्य मारपीट में आदिवासी समुदाय से बस्तर के लोग जेल में हैं, उनको छोड़ दिया। माननीय सभापति महोदय, वह मामला नहीं है। मामला तो नक्सल विषयों पर जो जेल में हैं, उनको छोड़ने का है। कल मेरी बात हुई। परसों माननीय सदस्य विक्रम जी, कवासी लखमा जी आये थे। हमने बैठकर चर्चा की, स्थानीय निवासी भी थे, माननीय केदार कश्यप जी भी थे और सारे बस्तर के नेतागण थे। हम लोगों ने चर्चा की कि किस तरीके से इसको ठीक किया जाये। हमने इस बात के लिये एक साल्यूशन भी निकाला कि हर जिले स्तर पर हम कैसे इसकी समीक्षा करें, कैसे ऐसे केसेस बाहर निकालें जिससे हम लोगों को जल्दी छुड़वा सकते हैं और बाकी चीजें कैसे कर सकते हैं। सभापति महोदय, हमको ध्यान है कि जेल के बड़े दरवाजे के अंदर न्यायालय ही भेजता है और न्यायालय ही बाहर निकलता है। तो जेल के उस बड़े दरवाजे के अंदर जाना और बाहर आना, इन दोनों ही विषयों को न्यायालय के माध्यम से ही किया जा सकता है, प्रावधान हमारे ऐसे हैं। और इसलिए हम इस पर क्या कर सकते हैं, इस पर हम लोगों ने चिंता की है। मैं पूछता हूँ कि पिछली सरकार ने तो इस पर कुछ नहीं किया था, अभी की सरकार पर ये अविश्वास प्रस्ताव का आरोप कैसे हो सकता है? हो ही नहीं सकता। मैं आपको

जानकारी भी देता हूँ कि लगभग 1300 लोग हैं, कम नहीं हैं। एक भी हैं तो पर्याप्त हैं, लेकिन 1300 हैं। ये 25 हजार की संख्या के साथ इस सरकार पर आरोप लगाना, मुझे कोई बताये।

श्री कवासी लखमा :- माननीय, कल तो मेरे प्रश्न में आप बोले थे कि 3 हजार लोग हैं, अभी 1300 बता रहे हैं।

श्री विजय शर्मा :- अरे, भाई 3 हजार कुल हैं। नक्सल विषयों पर 1300 बंद हैं। मेरी बात सुनना। जो विस्फोटक अधिनियम के अंतर्गत हैं, वह दूसरे लोग हैं उनको हमने इसमें नहीं लिया है।

श्री कवासी लखमा :- मैंने नक्सलाईट का ही मांगा था।

श्री विजय शर्मा :- आपको ध्यान नहीं है, मेरे ही कक्ष में हम लोगों ने बैठकर इस विषय पर चर्चा की थी कि उनको नक्सल पीड़ित में जो विस्फोटक अधिनियम वाले हैं उनको हम अलग कर लेंगे और उनके लिए अलग ट्रिट करेंगे, उनको जल्दी निकाल लेंगे। जो नक्सल विषयों के साथ जेल में हैं, उनके लिए अलग सोचा जाएगा। परेशानी यह आती है कि एक व्यक्ति 10-15 प्रकरणों में है और हर प्रकरण में अनेक लोग और हैं। एक व्यक्ति को निकालना सम्भव नहीं हो पाता है, सारे प्रकरणों से निकालने का है तब वह बाहर निकलेगा और इसलिए यह बात शायद इसी में आप भी फंसे थे लेकिन हम सॉल्यूशन निकाल लेंगे, यह सरकार ऐसी नहीं है। माननीय विष्णुदेव जी की सरकार ऐसी है जो सिर्फ समस्याओं पर नहीं, समाधानों पर काम करती है, समाधान निकालकर दिखाती है। मैं इसलिए आपसे यह कह रहा हूँ कि नक्सलवाद को समाप्त करने के लिए क्या क्या फर्क पड़ा था। माननीय सभापति महोदय, मैं आपको कुछ तथ्य बता देता हूँ कि सन् 2018 में छत्तीसगढ़ फोर्स के सी.ए.एफ. की 4 नयी बटालियन बनीं थीं यानी कि सन् 2019 में आपके पास 4 नये बटालियन फ्रेश थे। ऐसे ही सन् 2018 के आखिरी में अक्टूबर, नवंबर, दिसम्बर में सी.ए.पी.एफ. के सेंट्रल फोर्स के 7 बटालियन आये थे तो 7 बटालियन वह हो गए और 4 बटालियन यह हो गये तो 11 और उसके बाद सन् 2021 में 5 बटालियन और इनके पास आये तो 11 और 5 यानी 16 नयी बटालियनों के साथ यह तैयार थे। माननीय सभापति महोदय, मैं और बताऊँ कि केंद्र की जो एस.आई.एस. स्कीम है उसमें उसमें 90 करोड़ रुपये कांग्रेस की सरकार के समय मिला है और भाजपा की सरकार में उसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं मिला है। एस.आर.ई. स्कीम है, 9 करोड़ कांग्रेस की सरकार के मिला है और ढाई करोड़ भाजपा की सरकार में मिला है तो आपको राशि भी ज्यादा मिली है। आपको टेक्नोलॉजी का असिस्टेंस भी उतना ही था। आपके पास काम करने के लिए 16 नई बटालियन थी लेकिन फिर भी नक्सलवाद समापन के लिए आपने अभियान नहीं किया, प्रयास नहीं किया, केंद्र का सहयोग नहीं किया और इसलिए नक्सलवाद समाप्त नहीं हो पाया अन्यथा नक्सलवाद उसी समय ही समाप्त हो गया होता, अभी क्या बदल गया था, बस्तर के आई.जी. नहीं बदले गए, बस्तर के कोई एस.पी. नहीं बदले गए, एंटी नक्सल ऑपरेशन के हेड नहीं बदले गए। सारा तंत्र

वही खड़ा था, अगर कुछ बदल गया था तो सरकार छत्तीसगढ़ में बदल गयी थी और सरकार का संकल्प बदल गया था । मैं इस बात को निवेदनपूर्वक कहना चाहता हूँ ।

श्री विक्रम मण्डावी :- माननीय मंत्री जी, आप जो बार-बार नक्सलवाद और कांग्रेस सरकार की बात कर रहे हैं । पिछले 5 सालों में कांग्रेस की सरकार थी । आपको यह भी मालूम होना चाहिए कि बस्तर में कम से कम 120 से ज्यादा पुलिस कैंप लगे हैं । दूसरी बात, माननीय अमित शाह जी केंद्रीय गृह मंत्री थे, इन 2 सालों में 9 बार आये हैं, 5 सालों में मात्र 2 बार आये हैं उस समय भी वह गृहमंत्री जी थे, तब क्यों नहीं आये ? उस समय क्यों नहीं आये ? (व्यवधान) आप यह आरोप लगा रहे हैं । (व्यवधान)

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, आज यह पूछ रहे हैं कि इतनी बार क्यों आते हैं ? आज यह पूछते हैं कि इतनी बार क्यों आते हैं ?

सभापति महोदय :- विक्रम जी, आप अपने समय में अपनी बात बोलिएगा । इसमें आपका नाम है ।

श्री विजय शर्मा :- आपने ही पूछा है, विपक्ष ने ही पूछा है कि अमित शाह जी इतनी बार क्यों आ रहे हैं ? आपको शायद अभी ध्यान आ गया होगा कि नक्सलवाद के समूल उन्मूलन के लिये अमित शाह जी छत्तीसगढ़ आये हैं और आप यह ध्यान करें कि यदि आपने पिछली बार ही आग्रह कर लिया होता तो शायद पिछली बार ही आपके साथ यह हो गया होगा लेकिन मैं बिल्कुल ध्यानपूर्वक, मैंने आपको इसीलिये पहले आंकड़े बताए और भाजपा की सरकार बनने के बाद कुछ विशेष हमको सहयोग नहीं हो गया । मैंने आपको बताया की किस तरीके से एस.आई.एस. स्कीम का कितना पैसा कहाँ आया, एस.आर.ई. स्कीम का कितना पैसा कहाँ आया ? कितने बटालियन उस समय थे ? और भाजपा की सरकार आने के बाद मात्र 3 बटालियन आये, इन सारी चीजों के साथ...।

श्री केदार कश्यप :- पिछली बार राज्य के गृहमंत्री कौन थे ? वह बस्तर में एक भी बार नहीं गये । नक्सल के लिये एक-बार भी बैठक नहीं ली । आप पूछ लीजियेगा । क्या उन्होंने बस्तर में कभी बैठक ली, आप पूछकर देखियेगा । जिले की बात तो छोड़िए, संभाग की बैठक नहीं लिये ।

श्री विक्रम मण्डावी :- आप 15 साल मंत्री थे, आप बताइये कि आप कितना बायरोड चले । आप नारायणपुर अपने क्षेत्र में कभी बायरोड गये थे ? आप कभी बायरोड नहीं गये, वह मंत्री बनकर बायरोड गये हैं । (व्यवधान)

श्री केदार कश्यप :- आप मेरा प्रोटोकॉल निकालकर देख लीजिये । (व्यवधान) आपका फरसेगढ़, आपका भोपालपट्टनम...। (व्यवधान)

श्री विक्रम मण्डावी :- आप देख लीजिये कि आप 15 साल में एक बार भी बायरोड नहीं चले हैं । (व्यवधान) आप देख लीजिये, आप बस्तर में केवल हेलीकॉप्टर में गये हैं ।

सभापति महोदय :- आप दोनों आपस में बहस कर रहे हैं यह उचित नहीं है ।

श्री विजय शर्मा :- आप कृपया उन तथ्यों पर ध्यान दीजिये जो मैं कह रहा हूँ, इसमें कहीं कोई डेविएशन नहीं है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आपके गृहमंत्री जी हेलीकॉप्टर में केवल जगदलपुर तक गये थे और जगदलपुर जाना मतलब बस्तर जाना नहीं होता है । बस्तर जाना जगदलपुर से शुरू होता है।

श्री ओ.पी. चौधरी :- विक्रम मण्डावी जी यह मान रहे हैं कि अमित शाह जी बहुत बार आये और उनके कारण नक्सलवाद समाप्त हुआ है और अप्रत्यक्ष रूप से सही अमित शाह जी की मेहनत के कारण नक्सलवाद समाप्त हुआ है । यह स्वीकार किया इसके लिए धन्यवाद ।

श्री विजय शर्मा :- यह कोई माने या न माने हमारे कवासी जी सारी बातों को जरूर मानते हैं।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय मंत्री जी, ओ ह अडानी के कंपनी ला दे बर आए रिहिस हे। ओकर बर खजाना खोजे बर आए रिहिस हे। ओ आथे न तो एक काम दू कारज वाला हे। ओ दूरबिन में देखके देखे।

श्री विजय शर्मा :- आप लोग ज्यादा मत सोचिए। सुनिये मैं एक और कथा कह सकता हूँ समय की मर्यादा है। माननीय सभापति महोदय बार-बार मेरी तरफ थोड़ा गौर से देख रहे हैं। इसलिए मुझे समय कम करना पड़ रहा है। मैं आपको और कह सकता हूँ कि किस तरीके से जो बस्तर के कैम्प लगे हैं उसको ट्रांसफार्म करने की कोशिश की जा रही है। आप उस दिन नक्सलवाद वाले विषय पर चर्चा में नहीं थे, नहीं तो उस समय मैंने यह सारी बातें स्पष्ट की थीं कि यह सरकार किस योजना के साथ काम कर रही है। वहां पर 70 कैम्पों का चयन किया जा चुका है, 5 पर डिजाईनिंग की जा चुकी है, नेशनल इंस्टीट्यूट ने ऑफ डिजाईन ने उसे डिजाईन किया है। आप यह मत सोचिएगा कि वह कांक्रिट का बनने वाला है, बस्तर में जो मटेरियल उपलब्ध है, वहां पर उसी मटेरियल के आधार पर कहीं स्कूल, अस्पताल, आंगनबाड़ी, स्कील डेवलपमेंट बनेगा, कहीं खेल के मैदान बनेंगे। यह सारे कैम्प इस बारे में ट्रांसफार्म हो जाएंगे, कहीं थाने भी बनेंगे।

श्री कवासी लखमा :- माननीय मंत्री जी..।

सभापति महोदय :- माननीय लखमा जी, आप अपना उद्बोधन दे चुके हैं।

श्री कवासी लखमा :- माननीय सभापति महोदय, लेकिन अमित शाह जी के गृहमंत्री बनने से वहां कैम्प नहीं खुले हैं। जब मनमोहन सिंह जी की सरकार थी तब वहां नांगा, मिंजो, उधर से फोर्स यहां लाया था।

श्री विजय शर्मा :- माननीय लखमा जी, आपको यह ध्यान है या नहीं है कि यहां नांगा, मिंजो नहीं है।

श्री कवासी लखमा :- माननीय सभापति महोदय, यह आये थे।

श्री विजय शर्मा :- वह आये थे लेकिन 10 साल पहले वापस जा चुके हैं।

श्री कवासी लखमा :- माननीय सभापति महोदय, उन्हें यहां भेजा गया था।

श्री विजय शर्मा :- वह आये थे लेकिन 10 साल पहले वापस जा चुके हैं।

श्री कवासी लखमा :- माननीय सभापति महोदय, सरकार ने उस समय भी व्यवस्था की थी।

श्री विजय शर्मा :- आप बैठिये। मेरी बात सुनिये। माननीय सभापति महोदय, मसला क्या है, यह नक्सलवाद कैसे समाप्त हुआ तो यह नक्सलवाद सरकार के दृढ़ संकल्प से समाप्त हुआ है। माननीय अमित शाह जी ने एक संकल्प लिया कि 31 मार्च, 2026 तक नक्सलवाद समाप्त कर देंगे। कोई संकल्प लेना बड़ी बात होती है। जब कोई आदमी संकल्प लेता है तो पूरी दुनिया उनकी तरफ देखती है। उस समय उस संकल्प को धरातल पर उतारना, यह बड़े ही सामर्थ्य की बात होती है। ऐसे ही संकल्पवान, सामर्थ्यवान माननीय केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह जी ने संकल्प लेकर, समय बांध कर इस काम को खत्म करने का काम किया है। नक्सल कैडर को समाप्त करने का काम किया है। वह सिर्फ उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति से हुआ है। मन में कोई दुल-मुल नहीं है। आपसे एक बात दुल-मुल कहूं कि उस दिन भी बात हो रही थी, हमारे दंतेवाड़ा के विधायक जी भी कह रहे थे और आप लोग भी कह रहे थे कि जब सलवा जुड़म हुआ था, सलवा जुड़म के समय में क्या हुआ था, बड़ी मेहनत करके स्थानीय बस्तर के आदिवासियों ने, जिसकी आज आप चिंता व्यक्त कर रहे थे। लेकिन मूल भाव में क्या है, वह आपको समझने की जरूरत है। बस्तर के लोगों ने उन नक्सलियों को भगाने का काम किया और केस सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया और वहां बी.सुदर्शन रेड्डी ने एक आदेश दिया और उसके माध्यम से वह पूरा अभियान, जो बस्तर के आदिवासी समाज का अभियान था, जिसमें महेन्द्र कर्मा जी मुख्य रूप से आगे बढ़े थे, वह पूरा अभियान समाप्त हो गया और उसी बी.सुदर्शन रेड्डी को अभी कांग्रेस ने अपने उप राष्ट्रपति जी का प्रत्याशी बनाया था। अगर ऐसे कंप्यूजन वाले काम करेंगे तो कभी सफलता नहीं मिल सकती है। इनकी सरकार में क्यों नहीं हुआ, यह मैं आपको बताना चाहता हूँ अभी मुझको बताइये कि राहुल गांधी जी ने अपनी ट्विटर हैंडल पर यह हिडमा के विषय को, जब वहां पर लोगों ने आन्दोलन किये थे, कुछ अभियान किया था और यह नारे लगाये थे कि कितने हिडमा मारोगे, हर घर से हिडमा निकलेगा, इस नारे के उस वीडियो को अपने ट्विटर हैंडल से पोस्ट किया था।

श्री विक्रम मण्डावी :- यह असत्य है, यह कैसे हो सकता है।

श्री देवेन्द्र यादव :- भईया, आप एक काम कीजिए, इसको प्रस्तुत कीजिए। आप ऐसा आरोप नहीं लगा सकते हैं। आपने अमित शाह जी के साथ मिलकर आदिवासियों को नक्सली बोलकर, आपने आदिवासियों को मारा है।

श्री विजय शर्मा :- मैं अभी स्क्रीन शॉट मंगवा देता हूँ। आप यह कैसी बात करते हैं। उसे राहुल गांधी ने पोस्ट किया है। उस बात को सब जानते हैं।

श्री देवेन्द्र यादव :- आपने निर्देश आदिवासियों को मारा है। आप अमित शाह के साथ मिलकर, अडानी के लिए (व्यवधान) काम कर रहे हैं (व्यवधान) छत्तीसगढ़ के लोगों को मार रहे हैं। (व्यवधान) अडानी के लिए मार रहे हैं (व्यवधान) बिल्कुल नहीं सुनी जाएगी। आप लोग [xx] कर रहे हो। (व्यवधान)

श्री विजय शर्मा :- ऐसे ही भावनाओं के कारण (व्यवधान) यह राहुल गांधी ने लिखा है।

सभापति महोदय :- आप लोग बैठिए।

श्री विजय शर्मा :- मैं अभी मंगवा रहा हूँ।

श्री देवेन्द्र यादव :- आप ऐसे बिना तथ्यों के ऐसे आरोप नहीं लगा सकते हैं।

श्री विजय शर्मा :- मैं अभी दिखाऊंगा।

श्री देवेन्द्र यादव :- हां, आप उसे दिखाईये।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मेरे भाषण के पहले दिखाऊंगा।

श्री देवेन्द्र यादव :- हम भी दिखायेंगे। कि आप कैसे हमारे पूंजीपतियों के लिए छत्तीसगढ़ के लोगों को मार रहे हो, हमारे जंगल काट रहे हो, हमारे पहाड़ काट रहे हो आप पूंजीपतियों के लिए छत्तीसगढ़ के लोगों को मार रहे हो, हमारे सामने डॉट रहे हो, हमारा अपमान कर रहे हो (व्यवधान)

श्री विजय शर्मा :- उन्होंने ट्विटर पर पोस्ट किया था (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- ढाई साल में का-का अत्याचार होंगे (व्यवधान)

सभापति महोदय :- धर्मजीत जी, रामकुमार जी, मैं सभी सदस्यों से आग्रह करता हूँ। सभी सदस्य अपनी-अपनी बातों को अच्छे से रख रहे हैं। कृपया एक-दूसरे को आप लोग आमने-सामने प्रत्यारोप न करें। सदन की गरिमा है, गरिमा के अनुरूप आप लोग सदन के आसंदी की ओर देखकर या मुझे संबोधित करके बात करें।

श्री राजेश मूणत :- माननीय सभापति महोदय, माननीय मंत्री जी ने जिस बात का उल्लेख किया, सामान्य रूप से ट्विटर हेड से जिसने जारी किया, उसके बारे में बताया। लेकिन सामने वाला सदस्य जो है, जिस भाषा में और जिस बॉडी लैंग्वेज में बात कर रहा है, यह असंसदीय परम्पराओं में आता है। (व्यवधान)

श्री विक्रम मण्डावी :- आप जिस प्रकार बात कर रहे हैं, वह भी असंसदीय परम्पराओं में आता है। क्या बात करोगे। (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- बिना तथ्यों के इस तरीके से सदन में बोलेंगे तो उचित नहीं है। (व्यवधान)

श्री अटल श्रीवास्तव :- यहां तानाशाही नहीं चलेगी। (व्यवधान)

श्री राजेश मूणत :- ऐसी परम्परा नहीं है (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- इन लोगों की बातों को हम कभी स्वीकार नहीं करेंगे। (व्यवधान)

श्री राजेश मूणत :- संसदीय परम्पराओं में रहकर बात करिए । (व्यवधान)

श्री विक्रम मण्डावी :- बिना सबूत के बात मत करिए । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- कृपया बैठिए । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- तानाशाही नहीं चलेगी (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आप लोक कृपया शांत रहें । (व्यवधान)

(भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों द्वारा नारे लगाए गए)

सभापति महोदय :- मैं सदन की कार्यवाही 5 मिनट के लिए स्थगित करता हूँ।

(5.22 से 5.29 बजे तक कार्यवाही स्थगित रही)

समय

5.29 बजे

(सभापति महोदय (श्री प्रबोध मिंज) पीठासीन हुए)

सदन को सूचना

सभापति महोदय :- अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा पूर्ण होने तक सभा के समय में वृद्धि की जाये। मैं समझता हूँ कि सभा सहमत है।

(सभा द्वारा सहमति प्रदान की गई)

मंत्रि परिषद् के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा (क्रमशः)

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- माननीय सभापति जी, अविश्वास प्रस्ताव की बात हो रही थी। हम लोग दिल्ली, मुम्बई, अमेरिका, एपस्टीन हम कहां-कहां तक जा रहे हैं ? जबरन हमारे नेता जी का कोई असत्य सा फर्जी ले आये हैं। इस बात पर इतना तनातनी हो रही है। मैं कहता हूँ कि इस पर चर्चा नहीं होनी चाहिए। आप मेरी चर्चा में सुने होंगे कि मैं एक बार भी नरेन्द्र मोदी जी का नाम नहीं लिया हूँ, आपके अडानी का एक बार भी नाम नहीं लिया। जबकि मेरे पास आपके मुख्यमंत्री जी ने वहां किस तरह बेचा है, यह है। मैं दिखा सकता हूँ। आवाज सुना सकता हूँ। ये बातें मैं भी कह सकता हूँ। मैं भी आरोप लगा सकता हूँ। आज यहां की बात करो न, राहुल गांधी पर क्यों जा रहे हो ? आप फर्जी आरोप लगा रहे हो। आप यहां की बात करिये। माननीय सभापति महोदय, मैं चाहता हूँ कि इनके द्वारा जो भी बात कही गई है, उसे विलोपित किया जाए।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, आपके हिसाब से हमारे उप मुख्यमंत्री जी ने गलत बात अगर कही भी है, तो उसका विरोध करने का तरीका यह नहीं है, जो अभी हो रहा था। इस पर भी आप लोग रोक लगाइए। यहां कोई शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता नहीं हो रही है, विधान सभा है।

डॉ. चरणदास महंत :- मैंने कह रहा हूं, उन्होंने जो कुछ कहा उसे विलोपित करिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- यहां बुद्धि का काम है, यहां पहलवानी का काम नहीं होता है।

डॉ. चरणदास महंत :- तो आप तो पहलवानी के दम पर यहां लड़े हुए हो। आप लोग पूरा पहलवानी के दम पर आ रहे हो, आप पूरे पावर के दम पर आ रहे हो, आप पुलिस विभाग के दम पर आ रहे हो, किस बात से डराना चाहते हो?

श्री धर्मजीत सिंह :- कहां साहब, हम लोगों से ज्यादा विनम्र तो कोई होगा ही नहीं। पिछली सरकार में तो यहीं से बाहर-अंदर पकड़ के ले जाते।

सभापति महोदय :- धर्मजीत जी, माननीय नेता जी, आपने जो कहा, उसको मैं दिखवा लूंगा, यदि कोई बात होगी तो विलोपित किया जायेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, अविश्वास प्रस्ताव में सब कुछ, जहां तक बोला जाता है, बोलते हैं, लेकिन किसी चीज की मर्यादा होती है। अमर्यादित चीजें जो राजेश जी ने कहीं कि बॉडी लेंग्वेज बड़ा महत्वपूर्ण होता है कि आप क्या कर रहे हैं। नेता जी की आपत्ति अपनी जगह है, आप उसमें निर्णय करें, उसमें मुझे कुछ नहीं कहना है, पर विरोध या समर्थन आप अपनी भाषा में कीजिए न।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय, 5 साल हम लोग सत्ता में थे, हमारे आदरणीय भैया इधर ही सेकंड रो के इधर बैठते थे। तो उनकी जो बॉडी लेंग्वेज हमने विपक्ष में देखी, वही सीखा। उस समय नए-नए विधायक बने थे, हमें सिखाने वाले आदमी आप ही हैं, हम लोग आप ही से सीखते हैं। आदर्श आप ही हो, जो सत्ता में रह कर भी सत्ता का विरोध करने की शक्ति रखते हैं, वैसी शक्ति आप ही के पास है प्रभु।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं तो आपके कार्यकाल का ऐसा-ऐसा उदाहरण बता सकता हूं कि आप सुन नहीं पाओगे, बाहर चल दोगे। समझ रहे हो? मंत्री मारने के लिए दौड़ा रहे थे, गर्भगृह में मंत्री आये थे, आजा करके, समझ रहे हैं? वैसा आचरण हमने नहीं किया और कौन मंत्री था, नाम भी ले देता हूं।

श्री उमेश पटेल :- नहीं-नहीं, मैं वहां पर था।

श्री अजय चन्द्राकर :- गर्भगृह में आपके मंत्री आए थे।

श्री उमेश पटेल :- मैं उसमें था।

श्री अजय चन्द्राकर :- गर्भगृह में आपके मंत्री आए थे।

श्री उमेश पटेल :- नहीं, नहीं, नहीं। मैं वहां उपस्थित था।

श्री अजय चन्द्राकर :- बिल्कुल आए थे। आप अनुमति देंगे, नाम लूं?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, हम वहां पर थे।

श्री उमेश पटेल :- आदरणीय सभापति महोदय जी, मैं वहां पर उपस्थित था, आप दोनों के बीच मैं नहीं आया था। वह दोनों तरफ से हुआ था, आप भी दौड़ के आए थे, वे भी दौड़ के आए थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- दौड़कर वही आए, दौड़कर वही आए।

डॉ. चरणदास महंत :- अजय जी, आप बुजुर्ग आदमी हो । (हंसी) आप बुजुर्ग हैं, समझदार हैं..।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब तो आप बुजुर्ग शब्द वापस लें, आप बुजुर्ग नहीं हो तो मैं कहां से हो जाऊंगा। (हंसी)

श्री देवेन्द्र यादव :- आपके लिए विलोपित करते हैं। (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं बुजुर्ग कहां से हो जाऊंगा।

डॉ. चरणदास महंत :- आप ज्ञानवान हैं, यह कह सकता हूं। ऐसी बातें नहीं होनी चाहिए, इस तरह की तनातनी छोटी सी बातों पर आप लोग करो। यह एक कागज दिखाकर आप कुछ कहना चाहते हैं, अच्छी बात नहीं है। ठीक है, हो गई होगी गलती, उसको विलोपित कर दिया जाए।

सभापति महोदय :- मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करना चाहता हूं कि अपनी बात यदि हम सब लोग रखते हैं, तो अपनी मर्यादा का और अपनी भाव-भंगिमा का सभी लोग ध्यान रखेंगे और साथ ही मैं सदस्यों को यह भी अवगत कराना चाहता हूं कि जब अध्यक्ष या सभापति खड़े हों, तो सदस्यों को अपने स्थान पर बैठ जाना चाहिए। किंतु सदस्यों द्वारा इसका पालन नहीं किया जा रहा है, जो संसदीय गरिमा के विपरीत है। सभी सदस्यों से अपेक्षा करता हूं कि सभी सदस्य इसका पालन आवश्यक रूप से करना सुनिश्चित करेंगे। आगे चलिए ।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, बहुत-बहुत आभार ।

सभापति महोदय :- और थोड़ा समाप्त करेंगे? गृह मंत्री जी बहुत लंबा हुआ है।

श्री विजय शर्मा :- मैं इसे जल्द ही समाप्त कर दूंगा। मैं सिर्फ यह कह रहा था कि नक्सलवाद के विषय पर यह आरोप पत्र आया है, वहां पर गिरफ्तार लोगों के संदर्भ में चिंता हुई है, बस्तर के आदिवासी समाज के संदर्भ में चिंता हुई है, इसलिए यह विषय आया । माननीय सभापति महोदय, इसलिए मैंने कहा कि मनोभाव अगर स्पष्ट होगा और भाव अगर स्पष्टता के साथ हम आगे बढ़ेंगे कि हमको करना क्या है, तो समझ में आएगा। इसी में लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष का विषय आया कि उन्होंने पहले पोस्ट कर दिया, जिसका स्क्रीनशॉट लोगों के पास है, बाद में उसको डिलीट किए, विरोध हुआ तब। यह विषय आया, मैं वही कह रहा था। और वह मैं ला करके दिखाता नहीं, क्योंकि उस दिन यह हुआ था जब ला करके दिखाए थे, क्योंकि सबसे पहले ही माननीय अध्यक्ष जी ने इस बात का निर्णय कर दिया था कि बैनर-पोस्टर नहीं दिखाना है, तो हमने तय कर लिया था। लेकिन परसों-नरसों

जब यह विषय हुआ था, तो मैंने सोचा भाई अभी जब बात हो गई तो मंगाया, नहीं तो मैं नहीं मंगाता। माननीय सभापति महोदय, मुझे इस विषय का खेद है।

सभापति महोदय :- चलिए, कोई बात नहीं, आप आगे बढ़िए।

श्री विजय शर्मा :- मैं आगे बढ़ता हूँ..।

सभापति महोदय :- नहीं, वह आगे ले जा रहे हैं, समझ गए।

श्री उमेश पटेल :- माननीय सभापति महोदय, फिर से वही चीज आ गयी।

सभापति महोदय :- नहीं, वे आगे बढ़ रहे हैं।

श्री विजय शर्मा :- नहीं, खेद इसलिए कि मैंने दिखाया, उस तथ्य पर कोई खेद नहीं है, वह तथ्य ठीक है।

श्री उमेश पटेल :- तथ्य ही गलत है, तथ्य भी गलत है।

श्री विजय शर्मा :- नहीं भाई, नहीं, वह मत कहिए।

श्री उमेश पटेल :- नहीं-नहीं, तथ्य गलत है, आप इसको या तो प्रूव करें।

श्री विजय शर्मा :- यह उसका स्क्रीनशॉट है।

श्री उमेश पटेल :- आप प्रूव करें। नहीं, आप यह आरोप लगा रहे हैं और बार-बार उसी को रिकॉर्ड में ला रहे हैं। माननीय नेता जी ने विलोपित करने का आग्रह किया है, लेकिन फिर उसी चीज को आप रिकॉर्ड में ला रहे हैं।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय, हम आपकी बात स्वीकार कर रहे हैं, नेता प्रतिपक्ष जी की बात को हम स्वीकार करते हैं। हम चाहते हैं कि सदन चले, लेकिन सदन को सही तरीके से नहीं चलाया जा रहा है।

सभापति महोदय :- उमेश जी, बाकी बातें हो चुकी हैं, अब वह आगे चल रहे हैं।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- सभापति महोदय, वह विलोपित हुआ है या नहीं हुआ है?

सभापति महोदय :- नेता जी ने कहा, उस बात को मैंने कहा कि जो आपत्तिजनक शब्द है, उसे विलोपित कर देंगे, उसको दिखावा लूंगा।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, विलोपित करने का निर्देश नहीं आया है। आप विलोपित करवा दीजिये।

सभापति महोदय :- जो आपत्तिजनक है, उसको विलोपित कर देंगे।

श्री उमेश पटेल :- सभापति महोदय, आप विलोपित करने के लिए बोल दीजिये।

सभापति महोदय :- मैंने कह दिया है कि उसको देखकर विलोपित करवा देंगे।

श्री उमेश पटेल :- ठीक है।

श्री विजय शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, इसमें एक और विषय है। मैंने इसमें बस्तर में नक्सलवाद के समापन का विषय सामने लाया है। इस पर अनेक बातें हुई हैं। इस पर राजनीतिक बातें भी हुई हैं। जब हमने कोशिश शुरू की और कहा कि हम छोटे समूहों और व्यक्तिगत स्तर पर सबसे बात करेंगे, तब भी हंसी उड़ाई गई। आज फिर वह विषय विपक्ष के माध्यम से सामने आया है, इसीलिए मैं अब इस बात का उल्लेख कर रहा हूँ। इसमें कहा गया कि किससे फोन पर बात करेंगे? कितना फोन पर बात कर लिया? कोई बताए। पूर्व मुख्यमंत्री जी ने उस दिन ऐसा कहा था। मैंने आपसे बताया कि मुझे उनसे अनेक विषयों पर प्रेरणा मिल जाती है। इसलिए मैंने ए.सी.एम. से लेकर, एस.जेड.सी.एम. से लेकर सीसी मेम्बर तक छः ऐसे मेम्बरों से फोन पर बात की है और उनसे चर्चा के बाद उन्होंने पुनर्वास किया। विष्णुदेव जी की सरकार में पुनर्वास करने वालों की संख्या न्यूट्रलाइज होने वालों से पांच गुना ज्यादा है। इसलिए सफलतापूर्वक इस अभियान के माध्यम से समूचे नक्सल कैडर का छत्तीसगढ़ से समापन किया गया है। पूरे बस्तर में भारत के संविधान को कोने-कोने तक लागू करने के लिए यह पूरा अभियान चलाया गया। इस अभियान में इतनी बड़ी सफलता के बाद अगर विष्णुदेव जी की सरकार के लिए कोई आरोप-पत्र लगाता है और यह कहता है कि हम अविश्वास प्रस्ताव लेकर आयेंगे और पर बात होनी चाहिए, तो सारी बातें चर्चा में अवश्य आएंगी। ऐसे अनेक और विषय हैं। समय कम है, आपका भी आदेश है, इसलिए मैं इस विषय को समाप्त करूँगा। परंतु अंत में मैं इतना जरूर कहना चाहता हूँ कि नई सरकार ने NDPS के विषय पर बहुत काम किया है। NDPS के विषय पर नेता प्रतिपक्ष जी ने कहा है। इसमें इस सरकार में जितना काम हुआ है, उतना काम पहले नहीं हुआ था। मैंने पहले ही बताया कि एंड-टू-एंड इन्वेस्टिगेशन और उनकी संपत्ति अटैच करने का काम किया गया है। अब तक 25 करोड़ रुपये की संपत्ति SAFEMA कोर्ट के माध्यम से NDPS के प्रकरणों में अटैच की जा चुकी है। यह पहले कभी नहीं हुआ था। इसमें नये पदों की कभी भर्ती नहीं हुई थी। फायर डिपार्टमेंट के लिए 2018 में विभाग बनने के बाद 5 साल तक कुछ नहीं हुआ, लेकिन अभी उसमें 295 पदों की भर्ती हो रही है। गौवंश, घुसपैठियों और NDPS जैसे तमाम विषयों पर विष्णुदेव साय जी की सरकार ने अप्रतिम और अभूतपूर्व काम किया है। ये सारे ही विषय आरोप के साथ ही सामने आए हैं, इसलिए मैंने आपके समक्ष ये सारे विषय रखा है। मैं आपसे निवेदनपूर्वक कहता हूँ कि ऐसे आरोप-पत्र और अविश्वास प्रस्ताव का इस सरकार के सामने कोई औचित्य नहीं रह जाता है। आभार। (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- मैं पुनः सभी आगामी वक्ताओं से आग्रह करना चाहूँगा कि अभी लगभग 40 वक्ता और शेष हैं। केवल 4 वक्ताओं ने अपनी बातों को रखा है और 5 घंटे से ज्यादा का समय हो चुका है। मैं आग्रह करूँगा कि अपनी बात रखते समय समय का ध्यान जरूर रखेंगे। श्री दलेश्वर साहू जी।

श्री दलेश्वर साहू (डोंगरगांव) :- माननीय सभापति महोदय, मैं मंत्रि-परिषद् के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव के समर्थन में अपनी बात रखने के लिए खड़ा हुआ हूँ।

कभी अवसर बदल जाते हैं, कभी मौसम बदल जाते हैं,

परिस्थितियां बदल जाती हैं,

लेकिन एक अच्छा खिलाड़ी हर मौसम में,

हर मैदान में खेलने का हौसला रखता है।

यह आसमां छिन गया तो क्या,

फिर से हासिल कर लेंगे।

हम वह परिंदे नहीं जो उड़ान भरना छोड़ देंगे।

मत पूछो हौसले हमारे, आज कितना निशब्द हैं।

एक नई शुरुआत, नया आरंभ तय है।

ये परावार छूट गया तो क्या, नया सागर नया सागर ढूँढ लेंगे।

हम वह कश्तियां नहीं जो तैरना छोड़ देंगे। (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय, मैं इस बार सदन के सबसे विद्वान सदस्य के बातों का उत्तर देते हुये अपनी बात रखूँगा, मैं नाम नहीं लेना चाता हूँ, उन्होंने कहा कि अविश्वास प्रस्ताव बहुत हल्का एवं लचर है। सभापति महोदय, मुझे नहीं पता है कि अविश्वास प्रस्ताव सीमेंट के कांक्रीटीकरण से बनाकर प्रस्तुत करना था। आपने कहा कि धान के संबंध में बार-बार उसी बात को लिखा गया है, आपने नियम कानून को दरकिनार करते हुये मनमानी ढंग से काम किया और किसान परेशान हो रहे हैं, नियमों का पालन नहीं हो रहा है, हम लोग इसलिये अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। सभापति महोदय, किसानों के लिये धान खरीदी हेतु नई योजना बनाई गई तो एकीकृत किसान पोर्टल उनके पंजीकरण के लिये अपडेट हुआ, जिसके तहत गिरदावली में डिजिटल सर्वे किया और यह कहा जा रहा है कि एक ही पाईट को बार-बार लिखा जा रहा है। धान खरीदी में रकबा संशोधन के तहत खाद्य आपूर्ति निगम में एक नोडल अधिकारी था और यह पूरे रकबा संशोधन, फसल संशोधन, केरी फारवर्ड, डिजिटल सर्वे, यह सारी चीजें खाद्य नागरिक आपूर्ति के नोडल के तहत सहकारिता विभाग, कृषि विभाग और राजस्व विभाग के सामंजस्य के बिना, जो भी किसानों की समस्याएँ हैं, वह अकेले के बस की बात नहीं थी। यह तीन-चार विभागों के सामंजस्य से ही यह कानून बना और उस कानून के तहत धान खरीदी सुचारू रूप से करना तय था। सभापति महोदय, जब किसानों का कृषि रकबा संशोधन के लिये डिजिटल सर्वे में छूट गया था, वह तहसीलदार को पत्र लिखता था कि मैं इतना एकड़ में धान बोया हूँ, आपके डिजिटल सर्वे वाले ने इसको छोड़ दिया है तो तहसीलदार को पत्र लिखता था, तहसीलदार उसको कलेक्टर को भेजते थे, कलेक्टर साहब को कम से कम उस छोटी सी समस्या का निदान करना था। कलेक्टर भी असमंजस की स्थिति में थे, क्योंकि खाद्य आपूर्ति निगम के नोडल अधिकारी होने के कारण उनके बिना वह भी अधूरा था। राजस्व अधिकारी का भी अधूरा था और एक दूसरे पर प्रत्यारोप होते रहे थे और किसान भटक रहे थे।

सभापति महोदय, जो धान पैदा हुआ था, उसे रकबा समर्पण कराकर हजारों क्विंटल धान प्रदेश में नहीं बेच पाये हैं। किसानों को तीन-चार विभाग मिलने के कारण परेशानी हुई है। मेरा यह सलाह नहीं है लेकिन इस समस्या को सुलझाने के लिये कहीं न कहीं किसी एक विभाग को दायित्व सौंपना चाहिये, तब कहीं जाकर हम किसानों को सुचारू रूप से व्यवस्था दे पायेंगे। सभापति महोदय, अगर किसान परेशान है तो एक फसल संशोधन करने के लिये तहसीलदार से लेकर कलेक्टर तक भटके और नियम प्रक्रिया का पालन न हो पाने के कारण हम लोग अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं।

सभापति महोदय, धान खरीदी में विपणन संघ, सहकारिता समिति, जिला सहकारी बैंक का त्रिपक्षीय अनुबंध होना था। यह जिम्मेदारी है। अगर धान खरीदी में किसानों को किसी प्रकार से परेशानी हो या वह किसी कारण से बेच नहीं पा रहा हो या उसका उठाव नहीं हो पा रहा हो, यहां त्रिपक्षीय अनुबंध होना चाहिये और हर एक अपनी जिम्मेदारी को समझे। धान उपार्जन केन्द्र में किसका आदमी बैठा हुआ है, सहकारी सेवा का समिति प्रबंधक बैठा हुआ है। धान उठाने वाला कौन है, विपणन संघ है। मिलान करने वाला कौन है, कृषि विभाग है। तीनों के असमंजस की स्थिति में और यहां के कलेक्टर इस निर्देशन के पालन में 33 जिलों में से 12 जिलों के कलेक्टर ने पालन नहीं किया। सभापति महोदय, मैंने उस निर्देश में एक संभाग आयुक्त को पत्र लिखा था और कलेक्टर को भी निर्देश किया था कि आपको इस इस नियम का पालन करना पड़ेगा, तब वह अपनी-अपनी जिम्मेदारी को समझे। कौंडागांव, बस्तर, नारायणपुर, बालोद, बेमेतरा, दुर्ग, कवर्धा के कलेक्टर ने उस नियम का पालन नहीं किया, राजनांदगांव, खैरागढ़-छुईखदान गंडई, मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी, रायपुर और बलरामपुर के कलेक्टर के त्रिपक्षीय अनुबंध नहीं करने से क्या परिणाम हुआ? मैं आपको परिणाम भी बताता हूं। महत्वपूर्ण दो बिन्दु बता रहा हूं। पिछले वर्ष 2023-24 में सुखत को मान्य किया गया था जिसमें 0.1% या ऐसा कुछ था। इस समय 2025-26 में कंडिका क्रमांक 15.8 खरीदी केंद्र में भंडारित समस्त धान की मार्कफेड द्वारा दिनांक 31 मार्च, 2026 तक अनिवार्य रूप से उठाव कराया जाए, यह नियम में था, यह मार्कफेड का काम था। दूसरा, कंडिका 15.9 के अनुसार धान उपार्जन केंद्र में संग्रहित धान के लिए कोई सुखत की मात्रा नहीं होगी, पिछले समय सुखत मान्य नहीं था, तब उसको शासन ने गाइडलाइन में विलोपित करके उस पैसे की भरपाई कमीशन से करवायी थी। अब इस समय उस नियम को फॉलो किया गया है कि सुखत मान्य नहीं होगी और इतने तारीख को मार्कफेड को धान उठा लेना चाहिए था। अगर यह त्रिपक्षीय अनुबंध स्टॉप पेपर में लिखित में हो जाता तो शायद अपनी जिम्मेदारी विपणन संघ भी समझते, वहां सहकारिता के कर्मचारी लोग समझते, वहां केंद्रीय सहकारी बैंक के लोगों को भी समझ में आता कि हमारी एक जिम्मेदारी है। उनका परिणाम क्या हुआ? आज वहां के समिति प्रबंधक के ऊपर गाज गिरी हुई है। आपने इतना सुखत कर लिया। उनको पता ही नहीं कि सुखत इस साल मान्य नहीं है। यह पूरे कलेक्टर की गलती से, संभाग आयुक्त की गलती से, मंत्रिमंडल में बैठे मंत्री के नहीं कर पाने से

कितने करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है, मैं उसको भी बता दूंगा। हर साल का सुखत एक साल बाद ही आता है। पिछले साल का सुखत कितना आया था? वह तो पटा लिए। इस समय के सुखत के लिए अगले साल जब हम फिर क्वेश्चन लगाएंगे तब जाकर पता चलेगा कि कितने करोड़ रुपए का नुकसान हुआ है। अब इस समय भरपाई कौन करेगा ? कलेक्टर आदेश निकाल रहे हैं कि आप जिम्मेदार हो, आप जिम्मेदार हो, छोटे-छोटे कर्मचारी के ऊपर गाज गिर रही है। इसलिए हम लोग अविश्वास प्रस्ताव लाए हैं। अब क्या-क्या गलती हुई? मैं इसके बारे में थोड़ा सा बता रहा हूँ। एक गलती के कारण राज्य से अंतरराज्यीय अवैध धान की आवक भी हुई। उनको पता ही नहीं था कि हम लोगों को कोई जिम्मेदारी है, सब अपने अपने अपने में मस्त रहे। 6 करोड़ 33 लाख का कमीशन राठी जी को अपेक्स से 2024-25 में पटाना पड़ा। वर्ष 2025-26 में करोड़ों रुपए के नुकसान की संभावना है, मैं आपको बता देता हूँ। यही त्रिपक्षीय अनुबंध नहीं होने के कारण महासमुंद, कवर्धा, दंतेवाड़ा, सूरजपुर जिलों के उपार्जन केंद्र में भौतिक सत्यापन कराया गया जिसमें महासमुंद में 5,336 क्विंटल, कबीरधाम में 2,900 क्विंटल, सूरजपुर में 2899 क्विंटल, दुर्ग में 110 क्विंटल, राजनांदगांव में 1,275 क्विंटल, कबीरधाम में 2900 क्विंटल लगभग नुकसान हुआ। राज्य से भी अलग से धान आया, अंतर राज्य से भी धान आया और कुल मिलाकर वहां जो मिलान किया, उसमें इतने जिले प्रभावित हुए। यह त्रिपक्षीय अनुमोदन नहीं होने के कारण हुआ, एक कलेक्टर की गलती की वजह से, एक संभाग आयुक्त की गलती से, एक मंत्रिमंडल की निष्क्रियता की वजह से हुआ है, यह हमारे छत्तीसगढ़ शासन का पैसा अब कहां से भरपाई करेंगे ? इसलिए हम लोग अविश्वास प्रस्ताव लाए हैं। बलौदा, बेमेतरा, राजनांदगांव, दुर्ग, कवर्धा में भी अनुबंध नहीं होने से प्रभावित हुए हैं। यह तो धान की खरीदी हो गयी। मंत्री महोदय जी बैठे हुए हैं। यह बहुत अनुभवी मंत्री हैं। कल हम लोगों का खाद पर एक प्रश्न लगा था तो मैंने मंत्री जी से कह दिया कि आपका विभाग में कंट्रोल नहीं है। मेरी मिसेज वहां से सुन रही थीं, मतलब वह प्रश्न का उत्तर सुनती हैं। जैसे ही मैं यहां से घर गया तो वह बोली कि आपने सदन में मंत्री जी को कैसे ऐसे बोल दिया? मैंने कहा कि कंट्रोल नहीं है तो कंट्रोल नहीं है। हालांकि वह बहुत विद्वान मंत्री हैं, नो डाउट। बहुत सारे जिम्मेदारियां होने के कारण मंत्रियों को समीक्षा करना बड़ा मुश्किल होता है। मैंने बार-बार बोला कि मैं पटल पर कागज रखूंगा। मंत्री जी मेरी बातों को थोड़ा सा भी गंभीरतापूर्वक लेते, उन्होंने बोला कि कहां-कहां से तोड़-मरोड़कर आपके ज्ञान को अपडेट करना पड़ेगा। मैं बार-बार बोल रहा हूँ कि आप ही के लेटर से, अब मैं बता देता हूँ। आप बोल रहे थे कि कहां से लाए हो? मैं अब आपको बताना चाह रहा हूँ। मैं वर्ष 2025 का बताता हूँ। इस समय से ज्यादा मारा-मारी वर्ष 2025 में थी। 16 जुलाई, 2026 मतलब उसी दिन, आपके ही प्रश्न के दिन यह प्रश्न का जवाब है। डॉ. चरणदास महंत जैसे जिम्मेदार व्यक्ति के परिशिष्ट में आया हुआ है। दिनांक 30.09.2025 की स्थिति में रबी, खरीफ फसल 2025-26 के उर्वरकों के लक्ष्य भंडारण एवं वितरण की जानकारी। वर्ष 2025 का महायोग। मैं डीएपी, यूरिया, एनपीके के पूरे

महायोग के बारे में बताऊंगा, फिर एक-एक को विस्तार से भी बताऊंगा। यह पूरे वर्ष 2025 का महायोग है। सरकारी क्षेत्र में आपका लक्ष्य 9,49,910 था, आपने 95,174 की पूर्ति की। मतलब, आपने सरकारी क्षेत्र में 1 लाख एक्स्ट्रा पूर्ति की। नो डाउट। सरकारी क्षेत्र में आपने 1 लाख एक्स्ट्रा खाद का भंडारण किया। अब इसी में मैं अगर निजी क्षेत्र की बात करता हूं तो आपका जवाब आया है, मैं मनगढ़ंत नहीं बोल रहा हूं। निजी क्षेत्र का आपका लक्ष्य 5,12,090 है। आपने खाद कितना दिया? 7,98,054, मतलब सीधा-सीधा आपने निजी क्षेत्र को 2 लाख एक्स्ट्रा खाद दे दिया। इसी बात को तो मैं कह रहा था कि आप थोड़ा समझने का प्रयास करते तो आपने मुझे अपडेट करने के लिए बोल दिया। इसलिए हम लोग अविश्वास प्रस्ताव लेकर आए हैं।

कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री (श्री रामविचार नेताम) :- देखिए, वैसे तो मैंने इसका जवाब प्रश्नकाल में दे दिया है, फिर भी आप उसी में अभी तक लटके हुए हैं। मेरी बात सुन लीजिए। सभापति जी, हमारे प्रदेश का जो सहकारिता का लक्ष्य है, उसको हमने 15 लाख मीट्रिक टन दिया है तो स्वाभाविक है कि 15 लाख मीट्रिक टन से ऊपर है। हमें 15 लाख तक का लक्ष्य एक दिन में ही नहीं चाहिए। हमने अंतिम महीने तक के लिए लक्ष्य दिया है, उतने तक पूर्ति करने का लक्ष्य दिया है। जैसे-जैसे महीनेवार उनके पास आया, स्वाभाविक है कि हमारा जो लक्ष्य है उसमें हमें 15 लाख मीट्रिक टन तक पहुंचना है और उनका लक्ष्य कम है, इसलिए वहां पहुंच गया तो उनका परसेंटेज अधिक दिखाई देगा। सीधी सी बात है। तो इसलिए इस बात को आप समझने की कोशिश करिए। उनका उतना ही लक्ष्य है, अगर उतने की पूर्ति हो जा रही है तो कोई दिक्कत नहीं है। बाकी हमारा लक्ष्य 15 लाख मीट्रिक टन का है तो 15 लाख मीट्रिक टन के लक्ष्य की प्राप्ति तो हमें सितंबर तक होगी न।

श्री दलेश्वर साहू :- मंत्री जी, मैं कुछ बोलूं?

श्री दलेश्वर साहू :- मंत्री जी, मैं कुछ बोलूं ? माननीय सभापति महोदय, आपने जो जवाब भेजा है, हम उसी को पढ़ रहे हैं। हम कोई मनगढ़ंत तो नहीं पढ़ रहे हैं। आपको सहकारी क्षेत्र में बचत रखनी चाहिए थी, आपने दिया लेकिन आपने निजी क्षेत्र को एक्स्ट्रा दे दिया, उसी को अगर आप बचा दिये रहते तो शायद आपको यह परेशानी नहीं रहती, यह लड़ाई का उदाहरण नहीं देना पड़ता।

श्री रामविचार नेताम :- देखिये, मैंने उस दिन प्रश्नकाल में ही अपने उत्तर में जानकारी दे दी थी। आज कोई प्रश्नकाल तो नहीं है ? आज अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा है और आपको यदि अविश्वास प्रस्ताव के भाषण में यही बोलना है तो आप बोलते रहिये, हम लोगों को क्या है। और अच्छी बात है।

श्री दलेश्वर साहू :- मैं पूछ नहीं रहा हूं। इसीलिए तो हम अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। हम किसान आदमी हैं और किसान आदमी यदि किसान की बात नहीं करेगा तो कौन करेगा ? इसलिए हम अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। अभी चलिये वर्ष 2025 का आपने फिगर बता दिया और निजी क्षेत्र को आपने 2 लाख एक्स्ट्रा दे दिये। अब इस साल की बात कर रहा हूं। सभापति महोदय, मैं इस पर भी बात करूंगा क्योंकि

आपने कहा कि आप कहा से फिगर ले आये। आपने कहा कि आप अपडेट कर रहे हैं, कहीं से भी उठाकर ले आये हैं। मैं कहीं से उठाकर नहीं लाया हूँ, मैं आपके ही डिपार्टमेंट से लाया हूँ। अब आपको मालूम है कि आपका डी.ए.पी. कितना कंट्रोल में चल रहा है। यह भी आपको पता है। कैसे तैसे तो आपने यूरिया को पटरी पर ले आया है। अब जहां डी.ए.पी. की मांग नहीं है। जहां 4 हजार का लक्ष्य है, वहां आप 5-7 हजार दे रहे हैं। वह आपके सहकारी क्षेत्र में नहीं आ रहा है, वह आपके निजी क्षेत्र में चला गया है। आपके महासमुंद में 4 हजार मांग रहे हैं, आप उसको 5-6 हजार दे रहे हैं। यह आपका सरकारी में है। यह आपका खाद सहकारी क्षेत्र में आना चाहिए। ऐसे ही जांजगीर-चांपा में स्थिति आपके कंट्रोल में नहीं है। वहां 2 हजार मांग रहे हैं तो आप 3 हजार दे रहे हैं। मैं किसी आदिवासी क्षेत्र के विरोध में नहीं हूँ। मैंने कल उदाहरण दिया कि सूरजपुर, कोरिया, कोण्डागांव, बलरामपुर, सुकमा जैसे गांव में खाद की मांग नहीं है। मैं एक उदाहरण देना चाहता हूँ। बीजापुर में निजी क्षेत्र बोल रहा है कि 50 चाहिए आप उसको 117 दे रहे हैं, 1 मीट्रिक टन। कोई 50 मांग रहा है, उसको 43 दे रहे हैं। जहां धान की खेती नहीं होती, जहां उनको आवश्यकता नहीं है, वहां आप धान का डंप करेंगे और भ्रष्टाचार करने के लिए उधर से घुमाकर इधर लाकर दुर्ग, रायपुर के व्यापारियों के हाथ में करेंगे और इस पर कंट्रोल नहीं करेंगे, इसलिए हम लोग अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। यह आपकी स्थिति है। इसके कारण पूरे किसान परेशान हैं। सभापति महोदय, एक रैक आता है।

सभापति महोदय :- दलेश्वर जी, हो गया ?

श्री दलेश्वर साहू :- सभापति महोदय, अभी ऐसे कैसे हो जायेगा। अब जैसे तैसे आपने भंडारण कर लिया। अब किसान को वितरण करने की बारी आयी। कृषि विभाग से डी.डी.ओ. को एक आदेश जारी होता है कि आप 5 एकड़ के लिए एक बार में ही कर दीजिये। 5-10 एकड़ के लिए टोकन सिस्टम से करिये। उसके बाद उससे और ज्यादा है तो दूसरा टोकन देकर करिये। यह नियम इसलिए बनाना पड़ा क्योंकि यदि शायद आपके कंट्रोल में होता, अगर निजी क्षेत्र में खातु जा रहा होता तो आपको टोकन सिस्टम लागू नहीं करना पड़ता। इसलिए हम लोग अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। उसके बाद आप विलोपित करते हैं कि नहीं अब छोटे किसान। अब आप सिर्फ यूरिया के लिए जारी करते हैं। आपकी दूसरी लिस्ट निकलती है। दिनांक 27.06.2026 को आदेश निकलता है।

श्री राजेश मूणत :- दलेश्वर भाई, अपनी सुई कृषि से आगे बढ़ाईये ना।

श्री दलेश्वर साहू :- क्यों बढ़ायेंगे? हम किसान आदमी है, हम किसान की बात कर रहे हैं।

श्री राजेश मूणत :- ठीक है, किसान की बात कर लीजिये।

श्री दलेश्वर साहू :- हमारा पूरा क्षेत्र किसान की बात कर रहा है।

श्री राजेश मूणत :- उसके बाद खत्म ना ?

श्री दलेश्वर साहू :- नहीं, अभी और कुछ बोलेंगे।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति महोदय, यह कश्तियों से शुरू किये थे।

बेखुशक मैदान में कश्ती बेवजह तो नहीं,

कभी न कभी इनके अंदर भी सैलाब आया होगा।

तो कश्तियों को समेट लीजिए।

सभापति महोदय :- दलेश्वर जी, बोलिये।

समय

6.00 बजे

श्री दलेश्वर साहू :- सभापति महोदय, कृषक को खरीफ 2025 में वितरित यूरिया, उर्वरक की बराबर मात्रा में यूरिया का विक्रय खरीफ 2026 में किया जायेगा। उक्त प्रदाय एकमुश्त अथवा तत्तमय संबंधी सहकारी समिति में उर्वरक की उपलब्धता के आधार पर किया जायेगा। यह उर्वरक की उपलब्धता को काट देते तो हम लोगों को संतुष्टि मिल जाती। अब उपलब्धता है तो है, उपलब्धता नहीं रहेगी, अगर आपका माल दूसरे निजी क्षेत्र में जाकर जहां जरूरत नहीं है, वहां देंगे, सहकारी क्षेत्र में डंप रखना चाहिए, इस पर कंट्रोल रखना चाहिए और वहां कंट्रोल नहीं रखेंगे तो यह आपकी उपलब्धता कभी उपलब्धता हो ही नहीं सकती। आपका कंट्रोल नहीं है इसीलिए मैंने आवेश में एक किसान होने के नाते, एक किसान का दर्द महसूस करने के नाते कहा कि आपका विभाग में कंट्रोल नहीं है। सभापति महोदय, इसलिये हम लोग अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। मैं एक बात और कहना चाहूंगा। कल मैं पत्र को पटल में रखने की जो बात कर रहा था, वह पत्र मेरे पास है। अब कंपनी की रेक लगती है, अकलतरा में, आर.डी.एस. में जहां-जहां हर कंपनी का एक रेक प्वाइंट होता है। रेक प्वाइंट लगने के बाद मार्कफेड को जितना काम करना रहता है, वह अपना काम कर लेता है। ये बोलते हैं कि वो, वो जाने। मैं कल इसी बात को फिर इंगित किया था कि कंट्रोल किसके में है? भारत सरकार से जब खाद आती है, उसका कंट्रोल मार्कफेड के हाथ में है या सहकारी क्षेत्र के हाथ में है, कृषि विभाग के हाथ में है? अब वहीं से अकलतरा से आदेश निकलता है, 1332 मेट्रिक टन खाद ट्रेन से आती है और सीधा-सीधा आपका आदेश है। माननीय मंत्री जी थोड़ा सा देख लीजिए। मैं दुःखी मन से किसान के हित में बात कर रहा हूं, आप भी किसान हितैषी हैं। मैं आपकी क्षमता में जरा भी सवाल नहीं कर रहा हूं। मैं आपको बहुत सम्मान करता हूं।

कृषि मंत्री (श्री रामविचार नेताम) :- माननीय सभापति जी, मैं आपकी अनुमति से कहना चाहता हूं कि आदरणीय दलेश्वर जी बड़े जी विद्वान सदस्य हैं और बहुत अच्छे कृषक हैं। लेकिन जितना अच्छा बोलते हैं, वह बोलते-बोलते थोड़ा फिसल जाते हैं। फिसलने का इनके ऊपर घर तक निगरानी हो रही है, इसलिए सावधान रहा करिये। इधर-उधर की बात करना ठीक नहीं है।

श्री दलेश्वर साहू :- माननीय सभापति महोदय, छोड़ दूँ? माननीय मंत्री जी, छोड़ दूँ? आप बताईये तो मैं नहीं बताता हूँ। मैं आपके नालेज में ला रहा हूँ। आपका विभाग एक सीधे-साधे, एक सज्जन मंत्री को कैसे गुमराह करता है, इसलिए मैं कह रहा हूँ। आप थोड़ा सा करेंगे। अकलतरा में 1 लाख 3 हजार 32 मेट्रिक टन की ट्रेन आती है। आपके कृषि विभाग से सीधा आदेश जारी होता है, ये आपको थोड़ी पता रहेगा। आपक पास नोटशीट में थोड़ी भेजेंगे। अब सीधा-सीधा मार्कफेड को 650 मेट्रिक टन देता है, मैं डी.ए.पी. की बात कर रहा हूँ और उसी ट्रेन के माल को निजी थोक विक्रेता को 673 मेट्रिक टन दे देता है। यह आपकी नोटशीट में नहीं आयेगा। आपसे एप्रूवल नहीं लेंगे। इसलिए मैं कह रहा हूँ। इसको नहीं बताऊंगा तो आप कंट्रोल नहीं करेंगे। समीक्षा के दौरान मैं इसको आपको ये कापी दे दूंगा कि ये कैसे हुआ। सभापति महोदय, मैं किसान हूँ। अब मैं थोड़ा सा डीपली क्यों जाता हूँ, चूंकि किसान ही मेरे जीवनयापन का साधन है। मैं एक निवेदन भी करना चाहूंगा, माननीय मंत्री जी को तो मैंने पिछले समय कहा था कि एक बार आप आईये। किसान उत्पादकता समूह, हर प्रदेश में कम से कम आपकी ही केन्द्र सरकार के मोदी जी ने एक योजना बनाई है कि आप किसान उत्पादकता समूह का गठन करिये, गठन करने का अधिकार केन्द्र सरकार के निर्देश पर छत्तीसगढ़ में कंपनी एक्ट के तहत जिम्मेदारी दी गई कि आप गठन करो, आपको होलसेलर का डीलर मिलेगा, आपको सारी चीज की सुविधा मिलेगी, पर कंपनी ओ फार्म देने के लिये तैयार नहीं है। माननीय मंत्री जी, दुःख, दर्द है, उसको बयान कर रहा हूँ तो कम से कम उसको सुन लीजिए। आपके छत्तीसगढ़ में किसान उत्पादकता समूह 132 हैं। आप उस किसान समूह को वह कंपनी से ओ फार्म दिलवा दीजिए तो यह जो सारी मारामारी हो रही है न, यह खत्म हो जायेगा। कंपनी ने सीधा-सीधा होलसेलर व्यापारी को जो कमीशन देते हैं, जो लादन देते हैं, जो पहले से पैसा एडवांस देते हैं, वह ऐसे लोगों को महत्व देते हैं। तो आप इतना तो कर सकते हैं। किसान उत्पादक समूह आपका ही बनाया गया समूह है।

श्री धरमलाल कौशिक :- दलेश्वर जी, मैं आपसे एक बार आग्रह किया था, हम पहुंच नहीं पाये थे। मैं बोला था कि एक बार सबको अपना फार्म हाउस दिखाने के लिये आमंत्रित कर लीजिए। मैं मंत्री जी को बोल रहा था कि यहां जवाब मत देना, वहीं आपके फार्म हाउस में जाकर जवाब देंगे।

श्री दलेश्वर साहू :- मैंने मंत्री जी को तो रिक्वेस्ट किया था। उनके लिये कार्यक्रम आयोजन किया था। मैं आज भी आपको यह बोल रहा हूँ कि आप चलिये। मैं सभी लोगों को बोल रहा हूँ।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप बाकी लोगों को भी एक-बार आमंत्रित कर लेना क्योंकि आपके यहां जाना चाहिए।

श्री दलेश्वर साहू :- मैं सारे लोगों को बोल रहा हूँ। बम्लेश्वरी 12 किलोमीटर है, वहां से नजदीक है, वहां दर्शन करिये। मैं फार्महाउस में पूरे भोजन की व्यवस्था कराऊंगा। मैं तो हमेशा निवेदन करता हूँ कि एक-बार प्रैक्टिकल रूप से, कम से कम किसानों से रूबरू तो होइए। वहाँ के किसान उत्पादकता

समूह के साथ जुड़िए । आपको पता चलेगा की कैसे उन लोगों के जीवन-यापन का स्तर सुधरा है । मंत्री जी, जिस दिन आप समझ जाओगे कि तो आप निश्चित रूप से, मेरा यह कहना है कि आप वह फॉर्म तो दिलवा दो । आप खातु नहीं दिलवा सकते तो वह फॉर्म और डायरेक्ट हर समूह के पास, उत्पादकता समूह के पास, सारी चीज उनकी कंपनी के जो नार्म्स हैं, कंपनी के जो मापदंड हैं वह सारी चीज फॉलो करने के लिए तैयार हैं लेकिन वह फॉर्म देने के लिए तैयार नहीं हैं । आपने पत्र भी लिखा है, आपने कंपनी को लिखा है लेकिन आपकी ट्रिपल इंजन की सरकार है, आपके ऊपर की सरकार है, आप कृषि मंत्री जी से बात करेंगे तो निश्चित रूप से, क्या कंपनी आपकी एक बात नहीं मानेंगे ? होलसेलर को वह फॉर्म चाहिए इसलिए आपकी यह जो अव्यवस्था हुई है । मैं एक चीज और क्लियर कहना चाहूंगा कि इसलिए हम लोग किसान के दर्द के कारण यह अविश्वास प्रस्ताव लाए हैं, हमारे साथी लोग तो अलग-अलग एंगल पर बोलेंगे, अभी तो कोई वन संपदा से बोलेंगे, कोई माइनिंग से बोलेंगे, कोई मुख्यमंत्री जी के उसमें बोलेंगे, कोई औद्योगिक क्षेत्र से बोलेंगे, बहुत सारी चीजों में विसंगति है, आप लोग कभी चर्चा न कराते । मैंने देखा है कि जब से आपकी सरकार आई है, हमारी सरकार में हम लोग स्थगन में चर्चा कराते थे तो स्थगन में सारी बातें आ जाती थीं कि कौन कहाँ पर हो रहा है, केवल अग्रहय करना है तो आपको यह मसला कहां से मिलेगा और मैं आपको बता दूँ कि यह अधिकारी किसी का नहीं है । तेरा है, न मेरा है, न किसी का है, वह जिसका शासन है उन्हीं का हो जाता है । राजेश मूणत जी, कल मुझे बता रहे थे तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि ऐसे-ऐसे कुछ मामले हैं ।

माननीय सभापति महोदय, मैं यह कहना चाहूँगा । आपसे निवेदन है कि आप किसानों के हित में जो किसान परेशान हैं, उनको समय में खाद नहीं मिल रहा है और दूसरा व्यापारी लोग हावी हैं और मैं आपको यह भी कहना चाहूँगा कि इसमें 3-4 व्यापारी ऐसे हैं जो पूरा हर जिले में उन्हीं की दुकान खुली हुई है । आप सरगुजा में और आप रहने वाले रायपुर के हैं, आपके जो लाइसेंस देने की जो प्रक्रिया है उस पर भी थोड़ा कड़ाई करें, आप जाँच भी करते हैं, आप पकड़ते भी हैं और कई को छापामारी को खाली नोटिस जारी करते हैं और उसको पता नहीं कैसे सेटिंग वगैरह करके फिर से उन्हीं को बेचने के लिए अवसर दे देते हैं । मैं आपके छापामारी की भी संख्या बताऊँगा कि आपने कितनी छापामारी की है, आप किसी खातु को न गोडाउन में लाये, न उसकी नीलामी किए और न किसानों के हित में काम किए । खाली उन्हीं को फिर बेचने का थोड़ा बहुत आपका नियम वगैरह लगा दिये तो थोड़ा सा सिस्टम को सुधारिए । आप अपडेट करिए, आपके सिस्टम में वायरस लगा हुआ है । उसमें वायरस है उस वायरस को हटाना पड़ेगा इसलिए हम लोग अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं।

माननीय सभापति महोदय, मुझे आपने बोलने का अवसर दिया । मैं तो और बोलना चाहता था, आप किसी और विषय पर देते तो मैं निश्चित रूप से और बोलता लेकिन मंत्री जी बहुत सज्जन आदमी हैं । मैं फिर से इसको कह रहा हूँ लेकिन आप अपने सिस्टम को सुधारिए । नहीं होगा तो निश्चित रूप

से हमारे साथी लोग तो और बोलेंगे । माननीय सभापति महोदय, मैं इन्हीं भावनाओं के साथ । माननीय सभापति महोदय, मैं बंद कर दूँ ?

सभापति महोदय :- आधे घंटे हो गये, समाप्त करें । श्री धरमलाल कौशिक जी ।

श्री दलेश्वर साहू :- माननीय सभापति महोदय, एक मिनट । माननीय मंत्री जी से मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि आप एक-बार कम से कम, मेरे किसान समूह से एक-बार आपने इसी सदन में बोला था कि मैं पक्का आउंगा करके तो आप निश्चित रूप से कल समय बना लीजियेगा, नहीं तो एकाध हफ्ते में बना लीजियेगा । निश्चित रूप से मिलेंगे तो आपको एक नया स्टेप मिलेगा । माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने हेतु समय प्रदान किया इसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री धरमलाल कौशिक (बिल्हा) :- माननीय सभापति महोदय, हमारे प्रतिपक्ष के साथियों के द्वारा सरकार के विरुद्ध में अविश्वास का प्रस्ताव लाया गया है और इस अविश्वास प्रस्ताव लाने के बाद में, मैं अभी भी बोल रहा हूँ जो विपक्ष में गंभीरता दिखनी चाहिए, इतने बड़ा मोशन लाने के बाद मैं वी गंभीरता दिखाई नहीं दे रही है। औपचारिकता निभाने के लिए अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है। अजय चंद्राकर जी के द्वारा यह कहा गया कि आईना दिखाने की बात नहीं है, आपको आईना देखने की भी जरूरत है। आप सरकार को क्या आईना दिखायेंगे। इस प्रदेश में छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद, दो बार कांग्रेस की सरकार बनी। एक बार मनोनीत सरकार बनी, दूसरी बार निर्वाचित सरकार बनी, लेकिन उन दोनों सरकार के जो काम करने की शैली लगभग एक ही रही है और इसके कारण कांग्रेस की एक सरकार तीन सालों तक रही। उसने प्रदेश में इतना अच्छा कार्य किया कि यहां दोबारा लौटकर नहीं आयी। उसके बाद मैं एक बार फिर यहां पर कांग्रेस पार्टी की सरकार बनी और साहब, 70-71 का बहुमत किसको बोलते हैं। छत्तीसगढ़ बनने के बाद कभी किसी पार्टी को यह बहुमत नहीं मिला है। इस उम्मीद के साथ जनता ने कांग्रेस की सरकार बनायी। जब यहां कांग्रेस पार्टी की सरकार बनी तो जो तीन साल पहले कांग्रेस की सरकार के द्वारा जो अति की गयी थी। उसको भी लांघने का प्रयास, उन 5 सालों में कांग्रेस की सरकार के द्वारा की गयी। इसके बाद मैं जनता ने यह देख लिया कि इस सरकार को काम करने का अवसर दिया, मतलब छत्तीसगढ़ को विकास की दिशा में ले जाने के बजाए, पीछे ढकेलने का काम होगा।

माननीय सभापति महोदय, मैं तो यह कह सकता हूँ कि आज हम छत्तीसगढ़ में जो विकास की बात करते हैं, हम अधोसंरचना की बात करते हैं, हम यहां की मूलभूत समस्याओं के निराकरण की बात करते हैं तो यदि किसी ने धरातल पर उसका निराकरण किया है तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार, 15 सालों तक डॉ. रमन सिंह जी के नेतृत्व में जो सरकार चली है और उसके बाद माननीय विष्णु देव साय जी की जो सरकार चल रही है, उसके द्वारा छत्तीसगढ़ की अधोसंरचना से लेकर सारे विकास के कार्यों की अपेक्षा, जनता की है तो वह भारतीय जनता पार्टी की सरकार से है। पिछले 5 सालों में जो

सरकार की गतिविधियां रहीं, जनता ने विशाल बहुमत देने के बाद, जनता की यह अपेक्षाएं थीं कि सरकार जनता, किसानों, छात्रों, गरीबों, विद्यार्थियों, मजदूरों के हित में काम करेगी, लेकिन इन सारी चीजों को छोड़कर, यदि उन्होंने अपना कार्य प्रारंभ किया तो वह सरकार माफियों के लिए बनी, यहां पर पूरे 5 सालों तक माफिया राज था, इस प्रदेश को जिस प्रकार से लूटने का काम किया गया, हम चाहें भू माफियाओं की बात करें, खनिज माफियाओं की बात करें, शराब माफियाओं की बात करें या अन्य माफियाओं की बात करें, उन पूरे 5 सालों में माफियाओं का ही राज रहा। जिस प्रकार से उनको संरक्षण, सहयोग देने का काम भूपेश बघेल की सरकार के द्वारा किया गया और उनकी पतन का सबसे बड़ा कारण है तो उस सरकार की खुद की गतिविधियां थीं। उसे जनता ने करीब से देखा। भी घटनाओं की बात आ रही थी, यहां पर कवर्धा की घटना की बात आयी, बिरनपुर की घटना की बात आयी, प्रदेश में अन्य जगहों पर घटित घटनाओं की बात आयी। जिस समय कवर्धा में घटना घटी, उसके बाद हमारा विधायक दल गया था, वहां हमारे 4-5 विधायक गये, उसमें मैं भी गया था। हम सर्किट हाऊस में गये। जब हमने सर्किट हाऊस में अधिकारियों से बातचीत की। वर्तमान गृहमंत्री विजय शर्मा जी उस समय जेल में थे, हम लोगों ने कहा कि हमें उनसे मिलने के लिए जाना है हमको जेल तक जाने नहीं दिया गया। विजय शर्मा जी से मिलने के लिए रोकने का काम, उस समय की सरकार के अधिकारियों के द्वारा सरकार के ईशारों पर किया गया। हमको सर्किट हाऊस में धरना देना पड़ा। यह लोग सरकार चलाने की बात करते हैं। आज वह हमारे प्रदेश के गृहमंत्री हैं। हमने जब बस्ती में जाकर लोगों से मिलने की बात की तब वहां पर हमें रोकने का काम किया गया। हम लोग बिरनपुर गये थे। उस घटना के बाद, हम लोगों ने जाकर देखा कि वहां किस प्रकार से कर्फ्यू का वातावरण था और पूरे प्रदेश में ऐसा चल रहा था कि जैसे यहां आतंक की सरकार चल रही है, लोगों को लगता था कि कब हम सरकार के खिलाफ बोलें और कब हमें रात को 12 बजे उठाकर, ले जाकर जेल में बंद कर दें। चाहे वह पत्रकार हों, हमारे कर्मचारी हों, अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन करें, हमारे छात्र आन्दोलन करें और किसी भी बात की समस्या को लेकर आन्दोलन करें तो सीधा उनके ऊपर में एफ.आई.आर. कराते थे और हजारों कार्यकर्ताओं के ऊपर में एफ.आई.आर. कराया गया और उनको जेल में बंद करने का काम इनकी सरकार के द्वारा किया गया। इनकी सरकार ने छत्तीसगढ़ को विकास की बजाय विनाश की ओर ले जाने का काम किया। डॉ. रमन सिंह जी के द्वारा 15 साल में विकास की बुनियाद रखने का काम किया गया, इस छत्तीसगढ़ को आगे बढ़ाने की बजाय, छत्तीसगढ़ को विकास की ओर ले जाने की बजाय विनाश की ओर ले जाने का काम किया। हम लोगों के द्वारा प्रदेश को विकास की ओर ले जाने की कार्यवाही चल रही थी, उन सबको रोकने का काम इन लोगों के द्वारा किया गया। इतना ही नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ को पीछे ढकेलने का काम किया गया।

माननीय सभापति महोदय, यदि मैं छत्तीसगढ़ के निर्माण से लेकर विकास की बात करूं तो वास्तव में उसके पीछे भारतीय जनता पार्टी है। छत्तीसगढ़ में हम एम्स की बात करें, त्रिपल आई.टी. की बात करें, 2 से 10 मेडिकल कॉलेज की बात करें, हम यूनिवर्सिटी की बात करें, चाहे वह सरगुजा, बस्तर या बिलासपुर के यूनिवर्सिटी की बात करें, शिक्षा के क्षेत्र में बड़े पायदान को छूएं, यदि हम इन सब चीजों की बात करें तो भारतीय जनता पार्टी के द्वारा इन सारी चीजों की नींव रखने का काम किया गया। यदि इनकी सरकार इतनी अच्छी चल रही थी तो आखिर लोगों ने इन्हें पसंद क्यों नहीं किया, आखिर कांग्रेस की सरकार रिपीट क्यों नहीं हुई? विपक्ष के सदस्य भले ही लाखों बात करें, माननीय विष्णु देव जी की सरकार के खिलाफ ये लोग अविश्वास प्रस्ताव दे सकते हैं, आलोचना कर सकते हैं, लेकिन इनकी आलोचना का समर्थन करने वाले इस देश में कोई जनता इनके साथ में नहीं है। जनता की बात छोड़ दीजिए, इनके कार्यकर्ता भी इनके साथ नहीं है। मैंने तो उस समय देखा है कि इनकी पार्टी के विधायकों के प्रति इनका क्या रवैया रहा है, उस रवैये को भी हमने देखा है। इनकी ही पार्टी के विधायक इस बात को खुले आम प्रेस में बोलते थे कि थानों का रेट लिखा हुआ है, रेट लिस्ट की सूची बनी हुई है। यदि थाने में काम कराना है तो उसका रेट चशपा लगाकर तय किया गया है। इनकी ही पार्टी के विधायक ने इस बात को प्रमाणित किया है कि इनकी सरकार कैसे चल रही है। इनकी पार्टी की एक महिला विधायक के पति के ऊपर में जिस प्रकार से क्रीमिनल केस लगाए गए, अपराध पंजीबद्ध किए गए और जब उस महिला विधायक ने प्रतिरोध किया, तब उसको इनके द्वारा धमकी दी गई। अंततः उस महिला विधायक की टिकट काटने का काम इस सरकार के द्वारा किया गया। जो पार्टी अपनी कार्यकर्ताओं की नहीं हुई, जो पार्टी अपने जनप्रतिनिधियों का सम्मान नहीं की, इस बात को प्रदेश की जनता भी भली-भाँति देख रही थी और देखते हुए जब निर्णय का समय आया तो जनता ने निर्णय किया। अभी दलेश्वर साहू जी किसानों की चिंता करते हुए उनके पक्ष में बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे, लेकिन मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि जिस एजेंडे को लेकर जनता के पास में गए और उनके द्वारा यह कहा गया कि हमारे कांग्रेस की सरकार बनेगी तो हम किसानों का दो साल का बोनस देंगे, जो उन्हें नहीं मिला है। इनकी सरकार बनने के बाद में हम इनको 5 साल याद दिलाते रहे कि आपने जनता से वादा किया है कि दो साल का बोनस देंगे। जनता से जो वादा करके आये हैं तो आपको अपना वादा निभाना चाहिए और किसानों का दो साल का रुका हुआ बोनस आपको किसानों को देना चाहिए, लेकिन इनके कार्यकाल का पाँच साल निकल गया और 5 साल निकलने के बाद में किसानों के दो साल के बोनस का भुगतान इनके द्वारा नहीं किया गया। एक सरकार भूपेश बघेल की सरकार थी। माननीय सभापति महोदय, एक सरकार माननीय विष्णुदेव साय जी के नेतृत्व में हमारी सरकार चल रही है। उसके बाद हम लोगों ने भी कहा कि भूपेश बघेल ने ..।

श्री उमेश पटेल :- भईया, वह जो चौथा किशत बाकी है, जो चौथा किशत किसानों को मिलना था, वह आज तक नहीं मिला है।

श्री धरम लाल कौशिक :- वह हमारा नहीं है, आपका है। हमारा नहीं है। आप सरकार में थे और आपने नहीं दिया।

श्री उमेश पटेल :- सरकार कोई भी रहे..।

सभापति महोदय :- उमेश जी, उधर देखकर क्यों बोल रहे हैं, इधर देखकर बोलिये।

श्री उमेश पटेल :- सरकार कोई भी रहे, किसान तो वही है इसलिए देना तो पड़ेगा।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, जनता तो आपकी है न। जनता आपको सरकार में चुनकर लाई है तो वह वाली राशि तो उनको दे दीजिये, जो चौथी किशत है।

श्री धरम लाल कौशिक :- सभापति महोदय, मैंने कहा कि एक सरकार वह थी, जो वादाखिलाफी किये। एक सरकार यहां पर है, विष्णुदेव साय जी हमारे मुख्यमंत्री हैं। 13 दिसम्बर को सरकार बनी, 13 दिसम्बर को मुख्यमंत्री पद का शपथ लिए, उसके ठीक 12-13 दिन बाद इस छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता तात्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्म जयंती 25 दिसम्बर के दिन माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा 2 साल के बोनस की राशि किसानों के खातों में डालने का काम किया गया था। यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। हमने जो वादा किया था, हमने वह वादा निभाने का काम किया है। केवल इतना ही नहीं, 3100/- रुपये प्रति क्विंटल की दर से 21 क्विंटल प्रति एकड़ धान की खरीदी का वादा किया था, हमने पहले साल से ही किसानों के खातों में राशि अन्तरित करने का काम किया है।

माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण के पूर्व और छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के पश्चात यदि आज सबसे ज्यादा खुशहाली किसी में है तो छत्तीसगढ़ के किसानों में है। उसका कारण है कि अभी जितनी राशि माननीय विष्णुदेव साय जी सरकार के द्वारा उनके खातों में अन्तरित करने का काम किया गया है, किसानों को इतनी राशि कभी नहीं मिली थी। माननीय सभापति महोदय, मैं हिसाब लगा रहा था, 1 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा छत्तीसगढ़ के किसानों के खातों में डालने का काम, अन्तरित करने का काम भारतीय जनता पार्टी के सरकार के द्वारा किया गया है।

माननीय सभापति महोदय, यदि ये कानून व्यवस्था की बात करते हैं तो अपने कार्यकाल को थोड़ा सा देखना चाहिए कि कांग्रेस के राज में कानून व्यवस्था की क्या स्थिति थी ? मैं इसको आपके सामने थोड़ा सा रखना चाहूंगा। 1 जनवरी, 2019 से 15 फरवरी, 2022 तक प्रदेश में 24,500 व्यक्तियों ने आत्महत्या की थी। पूरे हिन्दुस्तान में आत्महत्या करने वाले प्रदेशों में छत्तीसगढ़ दूसरे स्थान पर था। माननीय सभापति महोदय, यदि छत्तीसगढ़ में इतनी अच्छी खुशहाली थी, यदि इतनी अच्छी सरकार चल रही थी तो इतने लोगों को आत्महत्या करने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? स्वाभाविक रूप से जिस प्रकार

से लोग अवसाद में आये थे, अवसाद में आने के उस समय किसानों ने आत्महत्याएं की थीं। अभी जिन किसानों की बात कर रहे हैं, सन् 2019 से 2023 के मध्य छत्तीसगढ़ के 2,680 किसानों ने आत्महत्या की है। यदि किसानों के लिए इतना अच्छा काम किये थे तो आखिर किसानों को आत्महत्या करने की आवश्यकता क्यों पड़ी ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, जो किसान लोग आत्महत्या किये थे, पूर्ववर्ती सरकार के पहले सबसे ज्यादा आपके कार्यकाल में किये हैं।

सभापति महोदय :- संगीता जी, आप भी वक्ता हैं, अपने समय में बोलियेगा न।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, मेरे विधान सभा क्षेत्र से 4 लोगों ने आत्महत्याएं की थीं।

सभापति महोदय :- आप अपने समय में बताईयेगा। आप अपने संबोधन में बोलियेगा।

श्री धरम लाल कौशिक :- मैं आरोप नहीं लगा रहा हूं। एन.सी.आर.बी. के जो आंकड़े हैं और उन आंकड़ों को निकालकर मैं बता रहा हूं। मैं कोई कांग्रेस की सरकार के ऊपर आरोप नहीं लगा रहा हूं और आप भी उसको चेक कर लीजिए। माननीय सभापति महोदय, किशोरों के अपराध में यह प्रदेश हमारे पूरे हिंदुस्तान में सबसे प्रथम नंबर पर रहा। ये इनकी रैंकिंग रही है। इसी प्रकार से जो अनाचार की घटनाएं और जो अन्य मामले हैं, छत्तीसगढ़ में जिस प्रकार से अपमान हुआ, 5000 से अधिक हत्याएं, 8000 से अधिक अनाचार की घटनाएं और माननीय सभापति महोदय, रायपुर तो ऐसा लग रहा था जैसे चाकू का गढ़ बन गया है। यह हम सब लोगों ने देखा है कि जिस प्रकार से प्रदेश में कांग्रेस की सरकार आने के बाद लगातार अपराध...।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय जी, हम अविश्वास प्रस्ताव पर बात कर रहे हैं और जो ढाई साल है, उसके लिए लाए हैं। आप पूर्ववर्ती सरकार की बात कर रहे हैं। माननीय सभापति महोदय जी, अगर पूर्ववर्ती सरकार की चर्चा करनी है, तो हम 5 साल के बाद के पूर्ववर्ती की बात कर लेंगे।

सभापति महोदय :- आप बैठिए न।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हमको आप अवसर दीजिएगा कि हम जब रमन सरकार थी, उसकी बात करेंगे।

श्री दिलीप लहरिया :- सभापति महोदय, ऐसा लग रहा है कि आप लोग हमारे लिए अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं, यह आपके भाषण में लग रहा है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप ढाई साल में क्या काम किए, उसके बारे में चर्चा कीजिए न।

सभापति महोदय :- आप बैठिए न। आपका विषय आएगा, आपका समय है।

श्री दिलीप लहरिया :- चाकूबाजी, लूट, हत्या, अपराध यहां सरकार में हो रही है। ढाई साल में क्या किये हैं, यह बताया जाये न।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, हम इसमें आपसे यह निवेदन कर रहे हैं कि पूर्ववर्ती सरकार की बात न करके हमारे जो ढाई साल में आपने क्या किया है किसान भाइयों के लिए, बेरोज़गार लोगों के लिए, उसकी बात करना चाह रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- कौशिक जी...

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हम पूर्ववर्ती सरकार की बात नहीं कर रहे हैं। पूर्ववर्ती का करना है तो हम 15 साल की बात करेंगे।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति महोदय, ए मन ढाई साल में आलू छीले हे का? कुछ करे हैं कि नहीं करे हे?

सभापति महोदय :- आप लोग अपने समय में अपनी बातों को रखिएगा।

श्री रामकुमार यादव :- ओला कुछ बताही, वो 5 साल ऐसा किया, 5 साल ऐसा किया, दिल्ली में ऐसा किया, एमन का करे हे?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- लगातार चन्द्राकर जी भी यही बात किये हैं।

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- रामकुमार, 5 साल में उतना अच्छा काम करे हव, तो काबर सुने बर डर लागत है? सुनो न भाई।

श्री रामकुमार यादव :- तुमन ढाई साल में का करे है, बताओ न।

श्री उमेश पटेल :- माननीय मंत्री जी, सुनिए तो। माननीय सभापति महोदय, आप अजय चंद्राकर जी का सुन लीजिए चाहे कौशिक जी का सुन लीजिए, विजय जी तो पिछले कार्यकाल में नहीं थे। ये लोग पिछली बार अविश्वास प्रस्ताव लाए थे, उसी कॉपी को लेकर घूम रहे हैं। पूरा रिकॉर्ड उठाकर देख लीजिए, अजय चंद्राकर जी का भाषण और कौशिक जी का भाषण वही मिलेगा आपको सेम टू सेम, रिपीट हो रहा है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय जी, सुन लिए हमको ढाई साल का रिकॉर्ड चाहिए कि आपने ढाई साल में क्या किया।

सभापति महोदय :- आप तय नहीं कर सकते न कि आप ढाई साल का बोलेंगे या 10 साल का बोलेंगे। आपने अविश्वास प्रस्ताव लाया है, जो सदस्य जैसा बोलना चाहे अपनी बात को रखेंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, जो अविश्वास प्रस्ताव लेकर आए हैं, उनको खुद को भी विचार करना चाहिए कि कभी यहां बैठते थे और इसके बाद में इतनी बहुमत के सब बाद में वहां बैठने की क्यों आवश्यकता पड़ी? जनता ने उनको क्यों बैठा दिया? मैं यही तो उनको बता रहा हूं

कि आप लोगों को 71 के बहुमत के बाद मैं कितनी अच्छी आपने सरकार चलाई और कितनी अच्छा सरकार बनाने..।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, हम तो 35 हैं, आप लोग तो 15 थे।

श्री रामकुमार यादव :- 14।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- 14 रहिस।

श्री दिलीप लहरिया :- हम लोगों को सिर्फ मशीन ने इधर बैठाया है। आप लोग मशीन वाले हैं, मशीन वाले बाबा हैं। पहले चाउर वाले थे, अब मशीन वाले बाबा हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार की बोले तो हमारी सरकार का तो मैंने आपको तो बताया। आपने 5 साल में जनता के साथ मैं जो वादाखिलाफी किया और हमारे विष्णु देव साय जी की सरकार 13 दिसंबर को शपथ लिए हैं और 13 दिसंबर को शपथ लेने के बाद में, मैंने आपको बताया है कि शपथ लेने के बाद में हमारी सरकार ने 25 दिसंबर को 2 साल का बोनस 3,716 करोड़ रुपये 25 तारीख को किसानों के खाता में अंतरित करने का काम किया। माननीय सभापति महोदय, ये वादा निभाने वाली सरकार है और ये भारतीय जनता पार्टी की सरकार है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय, आपने ये भी कहा था कि 1 लाख लोगों को नौकरी देंगे।

सभापति महोदय :- संगीता जी, संगीता जी। संगीता जी, जवाब देने की जरूरत नहीं है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, जो गलत बातें बोलते हैं, वह बर्दाश्त नहीं होता है।

सभापति महोदय :- नहीं, आप अपने समय में अपनी बात को बोलिएगा न। आप नोट कर लीजिए जो जिन बातों का आपको जवाब देना है। आप अपने समय में बात रखिएगा।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, मैंने कहा कि प्रदेश के इतने किसानों ने आत्महत्या कर ली, लेकिन उनके लिए मुख्यमंत्री के जेब से पैसा नहीं निकला, उनके लिए सरकार से पैसा नहीं निकला, किसी को एक नए पैसे की सहायता नहीं मिली। लेकिन इनका करतूत ऐसा रहा कि अपने राष्ट्रीय नेताओं के कहने पर उत्तर प्रदेश जाकर वहां घटना में शिकार हुए पांच लोगों को इन्होंने 50-50 लाख रुपये देने का काम किया। इसको जनता देख रही थी कि छत्तीसगढ़ के लोगों के प्रति आपका क्या रवैया है और उत्तर प्रदेश से आपका क्या नाता है? उत्तर प्रदेश के किसानों को आपने 50-50 लाख रुपये करके कुल ढाई करोड़ रुपये दे दिए, लेकिन यहाँ के किसानों को आपने एक पैसा नहीं दिया। यह जनता भी तो देख रही थी।

श्री उमेश पटेल :- भैया, यहाँ पत्थलगांव की माननीय विधायक जी हैं, उनसे पूछिएगा कि वहां कितना मुआवजा मिला था।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार की उपलब्धियां हमारे मंत्री जी अभी बतायेंगे। अभी विजय शर्मा जी ने जो बातें बताईं, तो पूरे सदन में कोलाहल मच गया। उन्होंने सच्चाई को सामने लाने का काम किया, तो उसे सुनने की ताकत नहीं है। हमारे मंत्री जी सब बताएंगे कि हमारी सरकार ने क्या किया है। मैं तो उस दौर की बात कर रहा हूँ, जिसे हम लोगों ने देखा है। यह सुनने की बात नहीं है, हम लोगों ने उसे देखा है, इस प्रदेश की जनता ने भी उसे देखा है और उसे देखने के बाद ही जनता ने यह निर्णय दिया है। माननीय सभापति महोदय, अभी कोयले के विषय पर 25 रुपये प्रति टन की बात आई थी। छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण के बाद यह पहली सरकार थी, जिनके अधिकारी भ्रष्टाचार के मामले में जेल गए। कोई जेल में है, तो कोई बेल पर है। माननीय सभापति महोदय, बहुमत का कैसा दुरुपयोग किया गया और बहुमत को विकास के बजाय भ्रष्टाचार में कैसे तब्दील किया गया, उस बात को भी लोगों ने करीब से देखा है और करीब से देखने के बाद जनता का यह निर्णय आया है। इसके साथ ही साथ आज हमारी सरकार पारदर्शिता के साथ चल रही है। मुख्यमंत्री पोर्टल, मॉनिटरिंग और इन सारी व्यवस्थाओं को हमारी सरकार द्वारा बनाई गई है। जिस दिन जिस व्यक्ति को इनके द्वारा PSC में बैठाया गया था, हमने विधान सभा में उसका विरोध किया था क्योंकि उनके ऊपर चार्जस थे।

श्री उमेश पटेल :- भैया, मैं एक चीज पूछ रहा हूँ।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं नाम बता दूँ।

श्री उमेश पटेल :- नाम नहीं, मैं आपसे आपसे यह पूछ रहा हूँ कि पिछले विधान सभा सत्र में आप लोगों ने इतना लड़ाई किया, लेकिन उनमें से एक को भी मंत्री क्यों नहीं बनाया गया? क्या बात है?

श्री धरमलाल कौशिक :- हमने मंत्री बनने के लिए लड़ाई थोड़ी की थी।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति महोदय, वैसे ही जैसे उमेश भैया को प्रदेश अध्यक्ष नहीं बनाया गया था।

श्री धरमलाल कौशिक :- हमने मंत्री बनने के लिए अविश्वास प्रस्ताव नहीं लाया था। हम यह दिखाने के लिए अविश्वास प्रस्ताव लाया था कि जो सरकार जनता के हित में नहीं है, उस सरकार को बने रहने का कोई अधिकार नहीं है और इसीलिए आपको बाहर निकाला गया।

श्री उमेश पटेल :- आप यह बताइए कि ढाई साल में नेता प्रतिपक्ष को क्यों बदल दिया गया?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, PSC की जो बात आई है, उस समय भी हम लोगों ने आपति जताई थी कि जिसके ऊपर गंभीर आरोप हैं, यदि ऐसे व्यक्ति को बैठाएंगे तो छत्तीसगढ़ के युवाओं का अहित होगा, उनके हित में कोई बात नहीं होगी। थोड़े ही दिनों में उनकी पोल खुल गई। PSC भर्ती में जिस प्रकार से घोटाला हुआ, उसमें उन्हीं का चयन हुआ, जो या तो नेताओं के बच्चे थे या अधिकारियों के बच्चे थे। गरीब के लड़के जो पढ़कर आए थे, जिन्होंने ईमानदारी से मेहनत

की थी और परीक्षा दी थी, परिणाम उनके पक्ष में नहीं आया। इसलिए हमारी सरकार आने से पहले हम लोगों ने संकल्प पत्र में कहा था कि हमारे युवाओं को छलने वालों को हम छोड़ेंगे नहीं। आप हमारी सरकार बनाओ, हम उसकी जांच करवाएंगे। हमने PSC की जांच करवाई और जो तत्कालीन दोषी पाए गए, आज वे जेल में बंद हैं। युवाओं के साथ घोटाला करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। यह विष्णुदेव साय की सरकार है, भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। माननीय सभापति महोदय, अब लगातार भर्तियां हो रही हैं।

श्री उमेश पटेल :- अब पुलिस भर्ती में क्या हो गया था?

श्री धरमलाल कौशिक :- सभापति महोदय, अब लगातार भर्ती हो रही है...। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- पुलिस भर्ती में क्या हो रहा था ? उन लोग क्यों कोर्ट में जा रहे हैं ? (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- पुराने समय का है । उसमें जाना चाहिये । (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- राजनांदगांव में पुलिस भर्ती में गड़बड़ी हुआ था । पुलिस भर्ती में घोटाला हुआ है । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- जेल हो गे हे । ऊऊ जेन ला जाना चाही तेखर नाम गायब हे । (व्यवधान) पुलिस भर्ती वाला हो..। (व्यवधान) अब वोला थाना चलाही कहिहव ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- डी.एड. और बी.एड. करके लोग हड़ताल कर रहे हैं।

श्री उमेश पटेल :- आप लोगों की गवर्नमेंट चल रही थी ना तो पी.एस.सी. के अध्यक्ष थे, उनके बेटों का भी हुआ था ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- उनके बच्चे का भी हुआ था, क्यों जांच नहीं हुई ?

श्री उमेश पटेल :- उस समय ई.डी. और सी.बी.आई. का इस्तेमाल नहीं हुआ था ।

श्री रामकुमार यादव :- सब इंजिनियर के कइसे भर्ती होये रहिसे, नइ देखेव का ? पेपर कइसे होवत रहिसे ।

श्री उमेश पटेल :- । मेरे को दो दिन मिल गया तो एक भी नहीं बचेगा ।

श्री धरमलाल कौशिक :- सभापति महोदय, यह युवाओं की बात करते हैं, नौकरी देने की बात करते हैं...।(व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- शिक्षा मंत्री, जिसे आपने बाहर दिल्ली भेज दिये हैं, उन्होंने सदन में कहा था कि 33 हजार शिक्षकों की भर्ती होगी । आज एमएलए के पी.ए.लोग जो टीचर हैं, आप उनको बुलाने का काम कर रहे हैं, इतने कम हो गये हैं। युक्तियुक्तकरण में सब कम कर दिये और एम.एल.ए. के पी.ए.जितने टीचर हैं, आज उनको वापस मंगवा लिये हो ।

डॉ.चरणदास महंत :- आदरणीय कौशिक जी, अभी आपको उत्कृष्ट विधायक का तोहफा मिला है । हम लोग चाहते हैं कि जब आप उत्कृष्ट बनें हैं तो यहां पर दिखनी चाहिये । मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि अपना भाषण कम करें तो हम लोग जल्दी-जल्दी घर जायें और कोई बात नहीं है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- सभापति महोदय, नेता प्रतिपक्ष जी, उस समय अध्यक्ष थे । कांग्रेस की सरकार आने के बाद में 14,500 शिक्षकों की भर्ती का विज्ञापन जारी हुआ था । 5 साल निकल गये हैं, लेकिन 35 साल निकलने के बाद में 14 हजार 500 शिक्षकों की भर्ती नहीं कर पाये और जो बचे हुये थे, हमारी सरकार आने के बाद में उन शिक्षकों की भर्ती हम लोगों ने किया । 5 साल में सत्यापन नहीं करा पाये, जिस मंथर गति से सरकार चली है, ऐसे अनेक उदाहरण है जिस बात को रखने की आवश्यकता है । सभापति महोदय, आज हम खनिज न्यास की बात करते हैं, डीएमएफ की बात करते हैं, कोरबा में इनके ही मंत्री थे, कोरबा में इनके मंत्री के द्वारा जो आरोप लगाया गया कि भ्रष्ट अधिकारी को कैसे संरक्षण दे रहे हैं, यहां से लेकर क्षेत्र तक कांग्रेस के कैबिनेट मंत्री के द्वारा जो आरोप लगाया गया कि डीएमएफ में कैसे घोटाला हो रहा है ? चाहे मैं रायगढ़ की बात करूँ, कोरबा की बात करूँ, हम लोगों ने इस बात का आरोप लगाया था और आरोप लगाने के बाद में ...।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय, बालोद जिले में हो रहा है, डोंडी लोहारा क्षेत्र में हो रहा है । कोई हिसाब-किताब नहीं है । आपके सांसद मीटिंग तक नहीं ले रहे हैं ।

श्रीमती सावित्री मंडावी :- कांकेर जिले में भी खूब हो रहा है...।

श्री सुशांत शुक्ला :- अपने को 5 साल को याद कर लीजिए । हमारे कार्यकाल को तो पूरा होने दीजिए । अभी तो ढाई साल में ही छाती पीट-पीट के रो रहे हो ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- 3.5 लाख के रिक्शा 7.00 लाख में ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप लोगों ने 3.5 लाख के रिक्शा का 7.50 लाख बिल बनाये हो ।

सभापति महोदय :- संगीता जी, माननीय सदस्य को बोलने दीजिए ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, पेमेंट सीट में ट्रांसफर, आपको चुनकर जिला लेना है तो पेमेंट सीट में ट्रांसफर । पेमेंट सीट में ट्रांसफर हो गया तो कोई बात नहीं है, लेकिन आपका यदि रिनिवल नहीं हुआ तो कब तक रहेगा, यह भी तय नहीं है । यह इनके सरकार में देखने को मिला है । सभापति महोदय, मैं किस-किस बात की बात करूँ, बाकी को तो छोड़ दीजिए, कोविड काल में इस देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा जो गरीबों को चावल भेजे गये और 5 किलो के हिसाब से चावल भेजा गया तो उस चावल में भी घोटाला हुआ है, जहां 5 किलो दिया जाना चाहिये, वहां 3 किलो दिया गया । उसको भी इन्होंने बखशा नहीं, उसको भी छोड़ने का काम नहीं किया। (शेम शेम की आवाज) माननीय सभापति महोदय, बच्चों का जो मध्यान्ह भोजन है।

श्री उमेश पटेल :- सभापति महोदय, ये गलत बोल रहे हैं, आप गलत बयानी कर रहे हैं।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- आप थोड़ा सही सही बताइए, आप अभी उत्कृष्ट विधायक बने हैं।

श्री उमेश पटेल :- आप टेबल पर रखिए। चर्चा ले लीजिए, उस पर चर्चा कर लेंगे। कोविड के समय में क्या क्या हुआ ?

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं आपका जो आदेश जारी हुआ है उसको आपके सामने रखूंगा।

श्री उमेश पटेल :- मैं भी कागज लाऊंगा, मैं भी पटल पर रख दूंगा।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं आपके सामने रख दूंगा।

श्री उमेश पटेल :- मैं मंत्रिमंडल का सदस्य रहा हूं और बड़ी जिम्मेदारी से बोल रहा हूं। आप इसमें गलत बयानी कर रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं पटल पर रख दूंगा। मैं पूरी जिम्मेदारी से बोल रहा हूं। वह आदेश मेरे पास है। मैं आपको उसको दिखा दूंगा।

श्री उमेश पटेल :- चलिए आप उसको पटल पर रख दीजिए, फिर एक दिन अलग से चर्चा मांग लीजिए, आप और मैं इस विषय पर चर्चा करते हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं आपको दिखा दूंगा। 3 किलो 3 किलो।

श्री उमेश पटेल :- आप गलत बोल रहे हैं, गलत बोल रहे हैं।

सभापति महोदय :- उमेश जी, आपस में सीधा बात न करें।

श्री रामकुमार यादव :- नाम तो धरम है लेकिन कइसे करत हे देखव ए मन ला।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, इस विषय में कल चर्चा हुई थी, माननीय मूणत जी ने कहा कि आप पूर्ववर्ती सरकार की बात छोड़िए, वर्तमान की बात कीजिए। वर्तमान में आज उस अधिकारी को सस्पेंड कीजिए। क्यों सस्पेंड नहीं किए ? करना चाहिए ना, आपकी ढाई साल की सरकार है।

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर नाम कस काम करे करा।

सभापति महोदय :- रामकुमार जी बैठिए । धरमलाल जी 30 मिनट से ज्यादा हो गए हैं, समाप्त करिए।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय सभापति महोदय एक मिनट।

सभापति महोदय :- आपका नाम है, आप अपने समय में बोलिएगा न।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- बहुत वरिष्ठ सदस्य बोल रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- ये जो इंटरप्ट कर रहे हैं, उस समय को आप निकाल के मेरा समय काउंट करिए।

सभापति महोदय :- वरिष्ठ सदस्य बोल रहे हैं, इसलिए आप अपने समय में बोलिएगा न।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- इसीलिए तो निवेदन करना चाह रहा हूं, आप इस सदन में जितने प्रश्न लगाए हैं और सरकार कितना अच्छा उत्तर दी है, उससे आप सवाल किए हैं, उसमें भी थोड़ा बोल दीजिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप जिस विषय में बोलेंगे, मैं उसी विषय में बोल दूंगा। आप बोलिए किस विषय में बोलना है। मैं उसी विषय में बोल दूंगा।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- मैं विषय में नहीं बोल रहा हूं। आपके तारांकित प्रश्न में मंत्री जी ने उत्तर दिया है, उसमें आप कितना संतुष्ट हैं और सरकार कैसे चल रही है, कैसे जवाब दे रही है, उसको एकाध तो बताइए।

सभापति महोदय :- द्वारिकाधीश जी बैठिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं उस विषय में थोड़ी देर बाद में बोलूंगा। वर्तमान सरकार के बारे में थोड़ी देर बाद में बोलूंगा।

सभापति महोदय :- धरमलाल जी बोलिए। इनको जवाब देने की आवश्यकता नहीं है, आप अपनी बातों को रखिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, मैं तो आपकी तरफ देख के बोल रहा हूं। मैं अपनी बात आपकी तरफ देख के रख रहा हूं।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति महोदय, एक मिनट, ये भाषण के सी.बी.आई. जांच हो सकथे का, त एमन ला पता चलतिस। ओ विधान सभा में अलग गोठियाथे, अभी आने गोठियाथे।

सभापति महोदय :- रामकुमार जी आप बैठिए, 1 मिनट 1 मिनट करके आप हर बार 1 मिनट बोलते हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, मैं ये सब छोड़ देता हूं, मैं बोल रहा हूं तो इनको खराब लग रहा है। क्योंकि हमने उसको इनके उपर चिपकाया है। इनके ऊपर करप्शन को, भ्रष्टाचार को चस्पा किया है। उसी कारण ये सरकार चली गई। मैं आज उनको याद दिला रहा हूं तो उनको तकलीफ हो रही है, पीड़ा हो रही है। चलिए, मैं उस बात को छोड़ देता हूं। ये किसानों की हितैषी सरकार रही। माननीय सभापति महोदय, जब डॉक्टर रमन सिंह जी मुख्यमंत्री थे, उस समय सिंचाई के रकबा में वृद्धि हुई, पंपों के कनेक्शन में वृद्धि हुई और उसके बाद जब इनकी सरकार आई तो सिंचाई के रकबा में पूरे 5 साल में 2% वृद्धि नहीं कर पाए, पंप के कनेक्शन नहीं दे पाए। पंप के कनेक्शन के लिए लोग लक्ष्य निर्धारित करने लगे। उस समय 15 साल में किसी को लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। आप डिमांड नोट पटाइए, आइए आपकी कनेक्शन तत्काल खेत पर लगोगी। लेकिन सरकार आने के बाद ना ये किसानों को खुश कर पाए, ना सिंचाई के क्षेत्र में रकबा बढ़ा पाए।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हमने तो कर्जा माफ भी किया था, आप लोगों ने किया क्या?

सभापति महोदय :- संगीता जी, आप बार-बार बीच में टोकती हैं। आप अपनी बात अपने समय में रखिएगा।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, बर्दाश्त नहीं होता है, मेरे को समय नहीं मिलेगा। क्योंकि वे इतना लंबा लंबा बोल रहे हैं।

श्रीमती भावना बोहरा :- आदरणीय सदस्या जी, किसानों को बोनस देने की बात हुई थी। बोनस क्यों नहीं दे पाए थे? पहले ही लाइन पर लिखी थी। पहले लाइन के सेकंड प्वाइंट पर बोनस की बात कही थी।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हमने बोनस दिया था, आपने उसे रोक दिया।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- आज क्या हो रहा है, ये भी तो देखिए, खाद नहीं मिल रही है, बीज नहीं मिल रही है। वह भी तो नहीं दे पा रहे हैं।

श्री आशाराम नेताम :- संगीता जी, कौन से बैंक की कर्ज माफ किए थे ?

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, इस तरह से अविश्वास प्रस्ताव में भाषण मैं पहली बार सुन रहा हूं। ऐसा होता नहीं है। अगर हर बात-बात में आप टोकेंगी, आपकी हर बात में हम टोकेंगे तो भाषण होगा नहीं और जो मूल उद्देश्य है, उससे हम भटक रहे हैं। उनको बोलने दीजिए, बहुत ही वरिष्ठ सदस्य हैं। आप जब बोलेंगी तो आपकी बात सुन लेंगे। अगर वह कोई आपत्तिजनक बात कह रहे हैं तो आप जवाब दे दीजिएगा। हम लोग भी बैठकरा सुन रहे हैं तो समय का भी थोड़ा खयाल रखिए। अभी 50 लोग 40 लोग बोलने वाले हैं। थोड़ी सी, आप लोगों से भी निवेदन है कि कृपा करके हर बात-बात में टोका-टाकी ना करें और इधर के लोग भी नहीं करेंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, जल जीवन मिशन। पूरे देश के लोगों को स्वच्छ पेयजल मिले इसके लिए इस देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी के द्वारा जल जीवन मिशन बनाई गई और योजना बनाने के बाद जब छत्तीसगढ़ में लांच करने की बारी आई तो मैं आपको बताना चाहता हूं कि यहां पर पहले ही जल जीवन मिशन का जब दिल्ली से पैसा आया और पैसा आने के बाद उसी में मारा-मारी शुरू हो गई। हम लोगों ने विधान सभा में उसका प्रश्न लगाया कि टेंडर का क्या हुआ? तो 10,000 करोड़ रुपए के टेंडर को केबिनेट की बैठक में इनको निरस्त करना पड़ा। 10,000 करोड़ रुपए का टेंडर और उसमें इन्होंने निर्णय लिया कि भ्रष्टाचार का विकेंद्रीकरण कर जिले को अधिकार दिया और जिले को अधिकार देने के बाद यह इंतजार करते रहते थे कि दिल्ली से पैसा कब आए, ठेकेदार के जेब में पैसा गया नहीं और उसके पहले कैसे आ जाए। उसका यह इंतजार करते थे। जिस उद्देश्य से इस मिशन को बनाया गया और जिस उद्देश्य से इसको लाया गया, उसमें इतना भ्रष्टाचार हुआ। आप लोगों ने देखा है कि हमारे कई अधिकारी अभी उसमें सस्पेंड हुए। जो ठेकेदार दूसरे प्रदेश में ब्लैक लिस्टेड हैं उन ब्लैक लिस्टेड ठेकेदारों को यहां पर टेंडर दिया गया और टेंडर देने के बाद उनसे पैसा लिया गया और फिर वह ठेकेदार यहां से चले गए। आज भी वे योजनाएं अधूरी हैं।

श्री दिलीप लहरिया :- माननीय सभापति महोदय, जल जीवन मिशन में कौन ठेकेदार है? आप बता दें।

सभापति महोदय :- आप बैठिए न।

श्री दिलीप लहरिया :- सभापति महोदय, यह गलत है।

श्री धरमलाल कौशिक :- यह गलत नहीं है, आज भी आप प्रश्न लगाते हैं न। आज भी प्रश्न लगाते हैं और हमारे उप मुख्यमंत्री उत्तर देते हैं।

श्री अटल श्रीवास्तव :- ढाई साल से आपकी सरकार है, आप कर क्या रहे हैं? आप 2200 करोड़ रुपये का पेमेण्ट नहीं कर पा रहे हैं।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री (श्री श्याम बिहारी जायसवाल) :- भैया, एकाक ठन गाना गाना हे का?

श्री धरमलाल कौशिक :- वह क्या उत्तर देते हैं कि अभी भी यहां पर अपूर्ण है, उसको हम पूर्ण करेंगे। तो ये सब आपका किया-धरा हुआ है। जिस प्रकार से इतने बड़े जल जीवन मिशन को लोगों के लिए पानी पहुंचाने के लिए लाया गया, उसको भी आप लोगों ने भ्रष्टाचार का अड्डा बना दिया।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- धरम भैया, जिस रफ्तार से जल जीवन मिशन में काम चल रहा है, मैं आज बोल रहा हूं कि उसको आपकी सरकार पूरी नहीं कर पाएगी, हम ही लोग पूरा करेंगे।

सभापति महोदय :- द्वारिकाधीश जी, आप अपने समय में बोलियेगा। इस तरह बीच-बीच में आप लोग टोका-टाकी करेंगे तो बाकी सदस्यों के बोलने का समय खराब होगा।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, कस्टम मिलिंग घोटाले को हम लोग उस समय उठाते थे। आर.जी. टैक्स। इनको तकलीफ होती थी। इसको सीधे 40 रुपये से 120 रुपये बढ़ाया गया और इसको 120 रुपये क्यों बढ़ाया गया तो पता यही लगा कि उसमें भी बीच में गोलमाल हो गया। मूणत जी, आप पूछ रहे हैं कि यह आर.जी. टैक्स क्या है? यह आर.जी. टैक्स वही टैक्स है, जिसके कारण 3 साल तक उनको यहां से बाहर रहना पड़ा है। आर.जी. टैक्स। मैं अभी-अभी की बात बोल रहा हूं। यह अभी का नहीं है, यह उसी समय का आर.जी. टैक्स का है। जो आप लोगों का है, उसका भुगतान वह भुगत रहे हैं। उन्होंने कितना लिया-दिया, यह नहीं मालूम। लेकिन आज जो कार्रवाई हो रही है, ये सब आपका पाप है, आपकी सरकार का पाप है।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- धरम भैया, वह मे-फेयर वाला भी बता देंगे। अभी जो मेफेयर में हुआ था न, वह वाला भी बता देंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, पिछले साल इनकी सरकार में हम लोग जब सड़कों की बात करते थे। महंत जी भी यहां पर बैठे हुए हैं, हमारे नेता जी बैठे हुए हैं, ये लोग भी बैठे हुए हैं। हम लोग जब सड़कों की बात करते थे तो जो भी बजट प्रस्तुत हुआ, उस बजट में यदि कहीं कोई

काम हुआ तो केवल एक जिला में हुआ। जहां के मुख्यमंत्री, जहां के पीडब्ल्यूडी मंत्री, जहां के कृषि मंत्री थे।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- धरम भैया, अभी भी वैसे ही हो रहा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप केवल आ गई हैं। अभी भी वैसे नहीं हो रहा है। अभी आपको हमारे उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा जी ने बताया कि आपको कितनी प्रधानमंत्री सड़कें मिली हैं? आपको मुख्यमंत्री सड़कें कितनी मिली हैं? उन्होंने आपको बता दिया। हम वैसे नहीं कर रहे हैं, जो आप लोगों ने किया।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- धरम भैया, 3 साल तक बालोद जिला में एक भी मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना की सड़क नहीं बनी है। आपके प्रश्न का उत्तर है।

श्री धरमलाल कौशिक :- इसलिए यदि सड़कों का काम हुआ तो केवल एक जिला में हुआ।

सभापति महोदय :- निषाद जी, जवाब देने की आवश्यकता नहीं है। आप अपने समय में बात रखियेगा।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, पीडब्ल्यूडी की सड़कों की हालत खराब रही। मैं आपको बताना चाहता हूं कि जब डॉ. रमन सिंह जी मुख्यमंत्री थे, तब 15 सालों में 35 हजार कि.मी. सड़कों का निर्माण भारतीय जनता पार्टी की सरकार के कार्यकाल में हुआ। गांव-गांव में जो सड़कें दिखाई दे रही है, यह उसी सरकार की देन है। आज हमारे मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी, उप मुख्यमंत्री (लोक निर्माण विभाग) अरुण साव जी द्वारा जिस प्रकार से बजट में पारित हुआ है और उसके बाद से आज सड़कों का जाल पूरे क्षेत्रों में दिख रहा है और मैं कह सकता हूं कि इस कार्यकाल में जो सड़कें गड्ढे में तब्दील हो चुकी थी, वही पुरानी सड़कें आपको फिर नई सड़कों के रूप में दिखाई देने लगेंगी क्योंकि भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, काम करने वाली सरकार है, विश्वसनीय सरकार है और यह इस सरकार के कार्यकाल में आपको दिखाई देगा (मेजों की थपथपाहट)।

सभापति महोदय :- कौशिक जी, आपको बोलते 40 मिनट से ज्यादा हो गये हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- सभापति महोदय, मैं सरकार की कुछ बातों को रखना चाहूंगा। माननीय विष्णुदेव साय जी की सरकार के समय हमारे जो कार्य हुए हैं, उसमें मैंने दो-तीन कार्यों को कहा। जो हमारे संकल्प पत्र में था, हमने जो संकल्प पत्र जारी किया, आपने अपने घोषणा पत्र को आत्मसात किया। जब नौकरी की बात आयी तो बड़े-बड़े होर्डिंग्स लगते थे। उसमें बताया जाता था कि हमने 4 लाख नौकरियां दीं, 5 लाख नौकरियां दीं और एक दिन मैंने विधान सभा में प्रश्न में पूछ लिया कि साहब, आप बिलासपुर में गये तो 5 लाख नौकरियों की बात किये, रायपुर में प्रेस में आपने 4 लाख 80 हजार नौकरियों की बात की। मैंने बोला कि अब तो थोड़ा बता दीजिये कि वास्तव में आपने कितनी नौकरियां दीं ? तो बड़ी मुश्किल से तत्कालीन मुख्यमंत्री जी इस बात को रखे कि हमने पूरे 5 साल में 20 हजार

लोगों को नौकरी दी। मैंने कहा कि उसमें 4 हजार को छोड़ दीजिये, वह हमारी सरकार के कार्यकाल की है। आपने 5 साल में केवल 16 हजार लोगों को नौकरी दी। मैंने कहा कि इस होर्डिंग्स को उतार दीजिये, अन्यथा चूंकि आप गोबर खरीदी कर रहे हैं, इस होर्डिंग्स का यहां के युवा क्या हश्र करेंगे, यह मुझे नहीं मालूम। माननीय सभापति महोदय, दूसरे दिन वह होर्डिंग निकल गयी। इतनी विश्वसनीय सरकार चल रही थी। लेकिन आज मैं कह सकता हूं कि जिस प्रकार से हमारी भारतीय जनता पार्टी की सरकार चल रही है। यह लोग जो प्रधानमंत्री आवास 5 साल में नहीं दिये, सरकार बनने के बाद सबसे पहला काम, पहला बजट, हमारी पहली केबिनेट की बैठक में सरकार ने 18 लाख प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति प्रदान की, यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार है और हमारे विष्णु देव साय जी की सरकार है। माननीय सभापति महोदय, हमने महतारी वंदन योजना के लिए फॉर्म भरवाये थे कि हम 1 हजार रुपये देंगे और आज इस बात को कहते हुए मुझे खुशी हो रही है कि हम महतारी वंदन की 29वीं किस्त दे चुके हैं। महतारियों के खाते में 18 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा की राशि स्थानांतरित करने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार के द्वारा किया गया है। उतना ही नहीं बल्कि अब महतारी सदन बनाने का काम भी चल रहा है। 450 से ज्यादा महतारी सदन बनाये जा चुके हैं। इसके साथ जब युवाओं की बात आती है तो मुझे इस बात को बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि जब डॉ. रमन सिंह जी की सरकार के समय हमारे युवाओं को खेल के क्षेत्र में स्कूल, कॉलेज, प्रयास स्कूल और उसके साथ राज्य खेल अलंकरण समारोह का कार्यक्रम होता है, लेकिन कांग्रेस की सरकार आने के बाद इनको बर्दाश्त नहीं हुआ कि जो हमारे राष्ट्रीय खिलाड़ी हैं, जो खिलाड़ी जीतकर आये हैं, ऐसे खिलाड़ियों को जो पुरस्कार दिया जाता था, जो सम्मान दिया जाता था, इस सरकार के द्वारा उसको बंद कर दिया गया और उसके बाद 5 साल तक इनका कोई अलंकरण समारोह नहीं हुआ। लेकिन छत्तीसगढ़ में जैसे ही भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी और हमारे विष्णु देव साय जी मुख्यमंत्री बनें तो हमारे मुख्यमंत्री जी के द्वारा और हमारे खेल मंत्री जी के द्वारा इनके पूरे 5 साल के कार्यकाल का एक साथ राज्य खेल अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया और उन खिलाड़ियों को सम्मानित करने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार के द्वारा किया गया। माननीय सभापति महोदय, इस सरकार में हमारे बहुत सारे काम हुए हैं। मैं सारी बातों का उल्लेख नहीं करना चाहता। धान खरीदी का भी बता दिया कि हाइयेस्ट धान खरीदी भारतीय जनता पार्टी की सरकार में हुई है। उसके रख रखाव हुए हैं, हमने महिला सशक्तिकरण की दिशा में काम किया है। हमने युवा रोजगार और शिक्षा की दिशा में काम किया है। डिजिटल गवर्नेंस और ब्लॉक चैन नवाचार, मुख्यमंत्री उत्कृष्ट पुरस्कार 2025-26 में जो घोषित किये गये, जिससे हमारी सरकार की कार्यप्रणाली और पारदर्शिता यह सब सामने दिखाई दे रही है। इसके साथ में हमारे उद्योग और विनिवेश के संबंध में कहना चाहता हूं कि हमारी सरकार ने छत्तीसगढ़ को केवल खदान आधारित अर्थव्यवस्था से आगे बढ़ाकर के हाईटेक और वेल्यूएडेड मैम्यूफेक्चरिंग हब बनाया है। हमारी नई

औद्योगिक नीति 2024-30 के तहत निवेश और एम.एस.एम.ई. प्रोत्साहन देने के लिये औद्योगिक विकास नीति लागू की गई है। हमारे यहां इनवेस्टर आ रहे हैं। यहां पर इनवेस्ट करने के लिये तैयार हैं। हमारे यहां 8 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। कांग्रेस शासन के मुकाबले में हमारी सरकार के कार्यकाल में 8 गुना अधिक हुए हैं। सभापति महोदय, भा.ज.पा. सरकार में कारखानों की संख्या बढ़ी है। 600 से बढ़कर आज 7900 संख्या हो गई है, 22 प्रतिशत की संख्या वृद्धि हुई है। देश का पहला ए.आई. डेटा सेंटर नवा रायपुर में, देश का पहला ए.आई. डेटा सेंटर पार्क और 10 हजार करोड़ का सेमी कंडक्टर प्लांट स्थापित किया जा रहा है। यह छत्तीसगढ़ की तस्वीर बदलने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार के द्वारा किया जा रहा है। मैं सभापति महोदय, मैं केवल कुछ उपलब्धियों को बोल रहा हूं। अब उधर मैं देखकर के नहीं बोल रहा हूं। उसमें उनको दिक्कत भी नहीं होगी।

सभापति महोदय :- धरमलाल जी, कृपया संक्षेप में करेंगे, लगभग 1 घंटे हो गये हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, औद्योगिक विविधीकरण के तहत नवा रायपुर में टेक्सटाइल पार्क, गवर्नमेंट मेन्युफैक्चरिंग यूनिट, कपड़ा, फूड प्रोसेसिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स क्लस्टर का जाल बिछाया जा रहा है। हम देखें तो श्रम में भी आज बहुत सारे काम हुए हैं। हम आबकारी नीति की बात करते हैं कि सरकार की नीयत कैसी होनी चाहिए। यही आबकारी नीति है कि पूर्ववर्ती सरकार के जिसमें आज लोग जेल में हैं और बेल में हैं। लेकिन आज जो आबकारी नीति है और उसमें जो परिवर्तन आया है और परिवर्तन आने के बाद में डिस्टलरी से लेकर रिटेल आउटलेट तक बार कोडिंग और डिजिटल ट्रेकिंग लागू की गई है। यहां हम लोग बहुत बार उठाये हैं कि हमारे इतने सारे लोग और इतनी सारी दुकान होने के बाद जो मदिरा का विक्रय हो रहा है, आखिर राशि क्यों नहीं आ रही है? क्योंकि उस समय दो पेटियां रखी जाती थीं, एक, एक नंबर की पेटि और दो नंबर की पेटि। कुछ राशि एक नंबर की पेटि में जाती थी और बाकी राशि वह सब दो नंबर की पेटि में जा रही थी। सभापति महोदय, जैसे ही ई.डी. का छापा पड़ा और ई.डी. का छापा पड़ने के बाद में 5 हजार से सीधा 10 हजार करोड़ में आ गये। अभी 12 हजार करोड़ में हैं। मैं उनके समय की बात बोल रहा हूं। ई.डी. का छापा पड़ा और उसके बाद में छलांग लगा दिये। यदि सरकार की नीयत ठीक न हो तो संसाधन तो आपके पास हो सकते हैं लेकिन उस संसाधन का आप उपयोग कैसे कर रहे हैं, दुरुपयोग कैसे कर रहे हैं। लेकिन आज मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि जिस प्रकार से हमारे प्रदेश में विष्णु देव साय जी की सुशासन चल रहा है, अभी 41 दिन तक सड़कों में घूमे हैं। सुशासन त्यौहार मनाये। वहां जाकर के हम लोगों ने उद्घाटन किया, शिलान्यास किया। सुशासन की समीक्षा हो रही है। माननीय सभापति महोदय, आज प्रदेश फिर लगातार नई ऊंचाईयों को छूने के लिये आगे बढ़ रहा है और मुख्यमंत्री जी को मैं इसके लिये बधाई देना चाहता हूं। हमारे मंत्री बहुत अच्छे काम कर रहे हैं। उनके विभाग में बहुत अच्छे कार्य हो रहे हैं। और आज छत्तीसगढ़ में जो खुशहाली का वातावरण दिखाई दे रहा है, यह भारतीय जनता पार्टी के कारण है और

उसके साथ मैं विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में जो सरकार चल रही है। आज किसान भी यहां प्रसन्न हैं। महिलाओं की अपेक्षाएं पूरी हो रही हैं। आज हमारे किसान खुशहाली की दिशा में जा रहे हैं। आज हमारे श्रमिक जिनको काम मिल रहा है, ऐसे खासकरके जो हमारे कालेज में पढ़ने वाले जो छात्र हैं, पी.ए.सी. देने वाले जो छात्र हैं, उनको अपार खुशी मिल रही है। अभी तब कुछ नियुक्तियां हुईं, जिनका सलेक्शन हुआ है, माननीय मुख्यमंत्री जी से मिलने के लिये गये थे और उन्होंने जाकर के धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि साहब हमने एक नये पैसा खर्च नहीं किया, हमने किसी को एप्रोच भी नहीं लगाया और आपके कारण हमारी जो ताकत है, उसका परिणाम हमको मिला है इसके लिये हम आपको धन्यवाद देने आये हैं, यह अपार खुशी है। माननीय सभापति महोदय, यह जो शिकायत निवारण 1076, यह जो आजकल पोर्टल सीधा आप उस ऐप में किसी की समस्या है तो आप अपनी समस्या रखें और उसका समाधान होगा। माननीय सभापति महोदय, बोलने के लिये बहुत सारे विषय हैं लेकिन जिस प्रकार से ऐसी लचर, औपचारिकता वाली और जिस प्रकार से यह अविश्वास प्रस्ताव लेकर के आये हैं, अजय चन्द्राकर जी ने ठीक ही सलाह दी है, उस अविश्वास प्रस्ताव को आप वापस ले लीजिये क्योंकि उस अविश्वास प्रस्ताव में हम लोगों को कम बल्कि आपको चिंता करने की ज्यादा आवश्यकता है और इसलिए मुझे जो बोलने का समय दिया, मैं इस अविश्वास प्रस्ताव में माननीय मुख्यमंत्री जी और सरकार के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ था और मैंने अपनी बात रखी। माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने हेतु समय प्रदान किया इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

डॉ. चरणदास महंत :- माननीय सभापति महोदय, मेरे अविश्वास प्रस्ताव में कुछ भी नहीं है, थोथा है तो उसमें चंद्राकर जी यह डेढ़ घंटे क्या बोल रहे थे ? (हंसी) होम मिनिस्टर डेढ़ घंटे क्या बोल रहे थे ? कौशिक जी, डेढ़ घंटे क्या बोल रहे हैं ? मेरा तो फेंकने लायक है, [xx] बनाने लायक है तो यह लोग जो बात कर रहे हैं उसको क्या बनायेंगे ? (हंसी) मैं निवेदन कर रहा हूं, ज्यादा समय हो गया, ठीक है, खत्म करिए। आप लोग वही पुराने रट पर लगे हुए हैं। 5 साल, 5 साल, यह 5 साल की बात करते-करते ढाई साल बीत गया, यह ढाई साल ऐसे ही बीत जायेगा फिर मत कहना कि आपने चेताया नहीं।

सभापति महोदय :- श्री राघवेंद्र कुमार सिंह जी।

श्री राघवेंद्र कुमार सिंह (अकलतरा) :- माननीय सभापति महोदय, धन्यवाद। मैं अपनी बात की शुरुआत इन शब्दों से करूंगा कि वादों की ईमारत तो बड़ी ऊंची बनाई गई, जमीनी हकीकत मगर धूल में मिलाई गई। जनता पूछ रही है हिसाब हर फैसले का आखिर किसके लिए यह सत्ता सजाई गयी ? (मेजों की थपथपाहट)

माननीय सभापति महोदय, आज जितने वरिष्ठजन हैं। हमेशा उनको सुनने का मौका मिलता है तो कुछ न कुछ सीखने का मौका मिलता है। आज हम लोग एक अंग्रेजी का शब्द मैंने एक मैगजीन में

पड़ा था । मुझे लगा था की कभी उसे शायद उपयोग करने का मौका न मिले लेकिन आज उसको उपयोग करने का मौका मिल गया है । क्रोनोपोटेशन मतलब काल यात्रा । मुझे लगा कि हम पिछली सरकार में पहुंच गए हैं और हम जो अविश्वास प्रस्ताव लेकर आये हैं, उसकी जगह पिछले 5 वर्ष की चर्चा ज्यादा हो रही है । जहाँ कुछ लोग ऐसे भी हैं जो यहाँ जवाब देने के लिये उपलब्ध नहीं हैं । यह सिर्फ भटकाने का विषय है । बार-बार कुछ बात आई। हमारे बहुत से ऐसा नेतागण हैं जिनको अगर एक कहावत में जब हम कहते हैं कि उनको हिचकी आ रही होगी तो पुराने हमारे बहुत मंत्रियों को आदरणीय बघेल जी तो यही हैं, आदरणीय टी. एस. बाबा इन सबको आज बड़ी हिचकी आई होगी क्योंकि सारा केंद्र यह ढाई साल को छोड़कर पिछले 5 वर्ष में हमारी सरकार में क्या हुआ था, उसके बारे में बातें ज्यादा हो रही थी । बहुत लोग बार-बार एक स्लोगन कह रहे थे कि आधे जेल में हैं और आधे बेल पर हैं । मैं इस बात पर सिर्फ यह कहना चाहूँगा कि कितने लोग उसमें कनविक्ट हुए हैं, हमें इस बारे में भी बात करनी होगी। कितने लोगों को कोर्ट ने सजा दी । हमें इसके बारे में बात करनी होगी क्योंकि मैंने भी वकालत पढ़ी हुई है । प्रजेशन ऑफ इनोसेंस जब तक कोई कनविक्ट नहीं हो जाता, हिंदुस्तान का लॉ उसे निर्दोष मानता है और वहां जेल यदि हम भेज रहे हैं तो उसका मतलब यह नहीं है कि उसको कनविक्ट कर दिया गया है । कितने लोग जेल गए हैं, दोनों पार्टियों के लोग हैं, सेंटर में हैं, बाकी कार्यकर्ता हैं, उसको हम यह नहीं कह सकते जब तक कोर्ट ने और हमें न्यायालय पर पूरा विश्वास है, जब तक न्यायालय उन्हें कनविक्ट नहीं करता है तब तक हमें उनके बारे में इस तरह बात, किसी के बारे में भी आपस में बात नहीं करनी चाहिए । बहुत सारी बातें शिक्षक भर्ती, जल जीवन मिशन पर, अभी आदरणीय बहुत ही सीनियर हैं वह बोल रहे थे । मैं तो उनको यह बताना चाहूँगा की जब मैं इस अविश्वास की तैयारी कर रहा था तो मैं उन्हीं के प्रश्न को पढ़ रहा था और उन्हीं की बहस को सुन रहा था । सबसे ज्यादा तथ्यात्मक बातें उन्होंने जो ढाई साल में होनी चाहिए, जो नहीं हुई वह स्वयं सदस्य जी ने कही तो मैं उनका धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने इतनी अच्छी बातें कही कि हम लोगों को सीखने का मौका मिलता है । माननीय सभापति महोदय, ढाई साल पूर्व जब सरकार आई तो हम सबको हर पार्टी को अपेक्षा होती है कि हमारी सरकार बनेगी लेकिन कुछ ऐसी परिस्थितियां बनी कि कांग्रेस पार्टी की हमारी सरकार नहीं बनी। हमें यह बात तुरंत समझ में आ गयी कि जनता ने हमें विपक्ष में रहने का निर्देश, आदेश दिया है। उस समय हम लोगों ने भी यह सोचा कि जब यहां पर हम विपक्ष में नये विधायक आये तब हमें यह लगा कि हम लोगों तक वह सारी बातें पहुंचाएंगे जो सरकार की योजनाएं हैं, अंतिम व्यक्ति तक उसका लाभ पहुंचाने का काम, हम हर विधायक चाहें पक्ष हो या विपक्ष हो, यह हम लोग करेंगे। आज यहां पर जितने हम लोग बैठे हैं, केवल वह निराश नहीं हैं, जो हम अविश्वास प्रस्ताव लेकर आए हैं। मैं युवा हूँ इसलिए युवाओं की बात करता हूँ। आज यहां का युवा निराश है, उसको जो बड़े-बड़े सपने दिखाये गये, आज वह बेरोजगारी, नशे की मार झेल रहा है। महिलाएं जिनको बहुत सारे वायदे

किये गये थे, आज वह दुःखी हैं। मैं स्वयं एक किसान हूँ, मैं यह जानता हूँ। हम लोगों को चोर घोषित कर दिया गया। हमें अपना धान बेचने में ऐसा लगा रहा था कि पता नहीं, कहीं से चोरी करके तो नहीं लाये हैं। हमें जाकर प्रूफ करना पड़ रहा था कि नहीं साहब, हमारे अपने खेत का धान है। अपनी कोठी का धान है। वह हम टोकन कटाकर, बेचने जा रहे हैं। अगर हम आदिवासियों की बात करें, हसदेव और बस्तर का हाल सबके सामने है और यही पवित्र सदन था जिसने उस दिन यह पास किया था कि आगे हम जंगल की कटाई नहीं करेंगे, अगर हम पिछले सत्र की बात करते हैं।

आदरणीय महोदय, चूंकि मैं युवाओं की बात कर रहा हूँ, कैलेण्डर बनाकर, नौकरी देने की बात हुई थी। महिलाओं को सिलेण्डर देने की बात हुई, अब न कैलेण्डर है, न सिलेण्डर है, यहां तो सरकार का सरेण्डर है। यह अविश्वास सिर्फ कांग्रेस पार्टी का नहीं, यह उस जनता का है जिन्होंने इस सरकार को वोट दिया और हम विपक्ष वालों को भी वोट दिया कि हम इनके वॉच डॉग बनकर, इनसे सवाल पूछ सकें और इनके सामने अपनी बातें कर सकें। मैंने पहले जैसे कहा कि मैं सबसे पहले अपनी बात युवाओं से ही कर रहा हूँ। हम लोग जब बात कर रहे थे कि यहां लाखों नौकरियां दी जायेंगी तो यहां पर पी.डब्ल्यू.डी. पेपर लीक हो गया, आर.आई. परीक्षा में जो धांधलियां हुईं, पुलिस में जो धांधलियां हुईं, राजनांदगांव के बारे में हम सब जानते हैं और रही सही कसर, नीट ने पूरी कर दी। आज युवा परेशान हैं। हमें एक बात समझनी होगी जब हम अपने प्रदेश की बात करते हैं तो हमारी बुनियाद हमारे प्रायमरी स्कूल्स हैं, हम जब तक बच्चों की बात नहीं करेंगे, हम फ्यूचर की बात नहीं कर सकते हैं, क्योंकि यही बच्चे कल के युवा हैं, हमारे भविष्य हैं। आदरणीय महोदय, यह हमारा फाण्डेशन स्टोन है जो फ्यूचर ऑफ छत्तीसगढ़ है। जब यह सरकार आयी तो एक आंकड़े आपके ही द्वारा दिये गये कि यहां हमारे स्कूलों में लगभग 90 हजार वैकेंसी है, हमें उतने टीचरों की आवश्यकता है। तात्कालीन जो हमारे शिक्षा मंत्री थे, उन्होंने 33 हजार की घोषणा यहीं की और यह कहा कि यहां पर इतने शिक्षकों की भर्ती होगी। उसके बाद मेरा स्वयं के क्षेत्र का प्रश्न लगा, जिसमें यह कहा गया कि यहां पर 56 हजार रिक्त पद हैं, जब युक्तियुक्तकरण हो गया तो उसके तीन महीने बाद जब मैंने यह प्रश्न लगाया तो उसमें लगभग 25 हजार का आंकड़ा आया। मैं, एक आंकड़ा आप सबको बताना चाहूंगा। उस दिन मेरा वह प्रश्न आया था, बाद में माननीय मंत्री जी से मिलकर, उनको उसके बारे में संज्ञान दिया कि यह विषय किसी पार्टी विशेष का नहीं है, यह छत्तीसगढ़ के भविष्य का विषय है। मैंने केवल इतना पूछा था कि हमारे यहां कितने प्रायमरी स्कूल संचालित हैं, मैंने सिर्फ प्राथमिक स्कूलों का ही पूछा था, उसमें स्वीकृत पद कितने हैं, उसमें कार्यरत कितने हैं एक, दो, तीन, चार शिक्षकों के ऊपर की व्यवस्था कितने की है। तो हमारे यहां पर 22 हजार 447 के आसपास स्कूल स्वीकृत हैं, उसमें आज सरकार ने लगभग 30 हजार 535 पद रिक्त बताये हैं। यह प्रायमरी स्कूल की हालत है। 2265, 14052, यह एक और दो शिक्षक पूरे स्कूल को संचालित कर रहे हैं। तो यदि हम 5 को देखें, अगर हम संख्या बल को भूल भी जाते हैं। अगर मान

लीजिए यहां पर हमारे 10-10 भी स्टूडेंट्स हैं तो आखिर एक टीचर 5 कक्षाओं को कैसे पढ़ा रहा है, दो टीचर 5 कक्षाओं को कैसे पढ़ा रहा है, हमें इसके बारे में सोचना होगा, यह सिर्फ शिक्षकों की कमी नहीं है। अगर हम इसको बेरोजगारी से देखें, तो हमारे डी.एड., बी.एड. हमारे कितने सारे लड़कें, लड़कियां हैं, जो वहां पर काम करना चाह रहे हैं लेकिन हम चूंकि भर्ती नहीं कर रहे हैं। एक तरफ हमें शिक्षक की कमी है और दूसरी तरफ हम बेरोजगारी की भी समस्या झेल रहे हैं। तो यह दोनों आपस में जुड़े हुए हैं तो हमें इसके बारे में पॉलिसी क्यों नहीं बना रहे हैं, हम इसके बारे में क्यों बात नहीं कर रहे हैं।

आदरणीय महोदय, सेंट्रल से शिक्षा नीति आयी, जब यहां पर शिक्षा नीति आयी तो यहां जो रेश्यो होना चाहिए, वह 25 पर एक का होना चाहिए था। अगर विद्यार्थी-शिक्षक के रेश्यों की बात करें और जो पिछड़ा वर्ग और वनांचल क्षेत्र है, उसमें सुविधानुसार 20 से 23 के बीच में होना चाहिए था, हमारी शिक्षा नीति यह कहती है। लेकिन पूरे छत्तीसगढ़ के लिए एक कॉमन ऑर्डर निकाला गया और एक टीचर पर 30 स्टूडेंट्स का रेशियो कर दिया गया। युक्तियुक्तकरण करना है, आपने किया, बहुत अच्छा है। लेकिन उसके बाद जो इसका दंश है, वह कहीं न कहीं हमारे प्राइमरी के, हमारे मिडिल के, हमारे हाई स्कूल के बच्चे इस दंश को झेल रहे हैं।

सभापति महोदय, संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार) और 21-ए (जिसमें शिक्षा का अधिकार भी दिया गया है), कहीं न कहीं हमारे बच्चे उनसे वंचित हो रहे हैं, छत्तीसगढ़ का भविष्य उससे वंचित हो रहा है। मैंने पिछली बार भी कहा था, मैं बार-बार इस बात को उठाता हूँ। हम लोग U-DISE कोड की बात करते हैं। स्कूल अभी भी सेंट्रल गवर्नमेंट के कागज पर चल रहे हैं, हमारे यहाँ स्कूलों को युक्तियुक्तकरण कर बंद कर दिया गया। आखिर यह जो Difference आ रहा है, इसका जिम्मेदार कौन है? यह किसकी पॉलिसी फेलियर है? क्या यह हमारी सरकार की पॉलिसी फेलियर नहीं है?

सभापति महोदय, स्पेशल एजुकेटर के पदों पर सीधी भर्ती करने के लिए अक्टूबर, 2025 में आवेदन पत्र आमंत्रित किए गए थे। छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा सेवा (भर्ती तथा पदोन्नति) नियम 2019 की कंडिका 6 (1) (क) को स्कूल शिक्षा विभाग के पत्र दिनांक 03/10/25 द्वारा शिथिल कर दिया गया, जबकि इसको शिथिल करने का ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। एक विज्ञापन भी जारी किया गया, जिस विज्ञापन में कंडिका 7 में इसको एक नवीन प्रक्रिया बताया गया। सेवा नियम बनाने जिसमें संशोधन आदि करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 309 के अंतर्गत केवल राज्य सरकार सक्षम है, ऐसा कोई नियम बनाया ही नहीं गया। उसके बाद लगातार अपने चहेतों को, सिर्फ दो दिन की Vacancies यहाँ पर निकाली गई और अपने चहेतों को, जिसमें दो दिन की छुट्टी भी थी, एक बहुत शॉर्ट टाइम दिया गया, अपने चहेतों को इसमें भर्तियाँ दी गई। हम सिर्फ आगे अपने बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ करने का काम कर रहे हैं।

आदरणीय सभापति जी, अगर मैं प्रदेश के स्कूल के ड्रॉप-आउट की बात करूँ, तो नीति आयोग की रिपोर्ट कहती है कि इसमें लगातार बढ़ोतरी हो रही है। इसे बंद करने के लिए आखिर क्या करना है ? मैं बार-बार कह रहा हूँ कि यह शिक्षा का एक ऐसा विषय है, जिस पर हमें पक्ष-विपक्ष से ऊपर उठकर सोचना होगा । और अगर कोई भी सरकार है, वह इसकी Policy नहीं बना पा रही है, It is the failure for The government. यह बात हम सबको समझनी होगी। यह पहली बार ऐसा हुआ, बहुत समय से 15 साल भाजपा की सरकार रही, फिर 5 साल हमारी सरकार रही । पहली बार ऐसा हुआ कि बच्चों को सही समय पर किताबें नहीं मिल पाईं । अपने सीनियर क्लासेस के छात्रों से माँग रहे थे कि हमें किताबें दे दीजिए, जब किताबें आएँगी तब हम आकर पढ़ाई करेंगे। जब किताबों की छपाई हुई तो उसमें निविदा की प्रक्रिया का पालन ही नहीं किया गया ।

स्कूल शिक्षा मंत्री (श्री गजेन्द्र यादव) :- सभापति महोदय, बीच में बोलना नहीं था, लेकिन माननीय सदस्य जो लगातार बोल रहे हैं । आप आरोप लगाना चाहते हैं तो लगा सकते हैं, स्वतंत्र हैं। लेकिन ऐसा कोई निराधार आरोप न लगाएँ, जैसे कि आपने कहा कि बच्चों की संख्या है, उसके हिसाब से शिक्षकों की दर्ज संख्या गलत है। जब भारत सरकार द्वारा आरटीई (RTE) कानून लाया गया, तो उस आरटीई कानून के तहत आपकी ही सरकार ने प्रावधानित किया कि 30 बच्चों पर एक शिक्षक होना चाहिए । और अभी मैं बताना चाह रहा हूँ कि अभी छत्तीसगढ़ में 19 बच्चों पर एक शिक्षक है, पूरे देश में हम तीसरे नंबर पर अनुपातिक हैं।

सभापति महोदय, दूसरी बात, जो आप सदन को गुमराह कर रहे हैं । क्योंकि मैं खुद शिक्षा मंत्री हूँ और सारे सदस्य अपने-अपने जिले और विधानसभा क्षेत्र से आए हैं । पिछले 10 साल में पहली बार ऐसा हुआ है कि 16 जून को स्कूल खुला है और स्कूल खुलते ही यूनिफॉर्म (ड्रेस) और शासकीय स्कूलों की बुक्स और साइकिल, इस बार हम लोग शाला प्रवेशोत्सव के साथ ही दे रहे हैं। तो मेरा यह आग्रह है कि कोई विषय है तो आप बोलिए। और आपने जो कहा कि पद रिक्त हैं, पद सेटअप की बात है तो उस दिन भी दुर्भाग्य से पूरी बात हो नहीं पाई, बात अधूरी रह गई और उस दिन प्रश्नकाल खत्म हो गया । मैं यह कहना चाह रहा हूँ कि पदस्थापना और पद सेटअप अलग होता है। अभी स्टूडेंट की संख्या कितनी है, उसके आधार पर आरटीई के तहत भारत सरकार के दिशा-निर्देशों पर काम हो रहा है। आप आरोप न लगाएँ, कोई विषय है तो विधानसभा में प्रश्न लगाएँ, उसका जवाब देने के लिए मैं तैयार हूँ।

श्री उमेश पटेल :- सभापति जी, माननीय मंत्री जी, चूँकि आपने इस बात को कहा है । आपने औसत बताया कि 19 बच्चों पर एक शिक्षक है। लेकिन Concentration कहाँ है, वह देखिए न । जहाँ हमें आवश्यकता है, वहाँ कितना Concentration है ? आप यह देखिए, यह शहरी क्षेत्रों में ज्यादा Concentrated है। और जो हमारा आदिवासी ब्लॉक है, जो हमारा पिछड़ा क्षेत्र है, वहाँ तो अनुपात कहीं ज्यादा है ।

श्री गजेन्द्र यादव :- सभापति जी, उस अनुपात का आधार है, दर्ज संख्या का अनुपात है। ग्रामीण क्षेत्रों में 10 बच्चों का भी है। उसमें किलोमीटर की दूरी भी तय है। दूसरी बात आपने यूडाइज्ड की बात कही, हमने यूडाइज्ड कोड बंद कर दिया। भारत सरकार की शिक्षा का कानून अधिकार आया है, जो नया कानून चल रहा है, वह सन् 2029 तक का है। मैं यह कहना चाह रहा हूं कि हम अपनी ओर से यूडाइज्ड बंद कर दिया क्योंकि किसी स्कूल में बच्चे ही नहीं हैं। तो स्वाभाविक है कि उसका यूडाइज्ड प्रभावशील है या प्रभावशील नहीं है, इसका कोई अर्थ ही नहीं है।

श्री उमेश पटेल :- सभापति महोदय, मैं यह नहीं बोल रहा हूं।

सभापति महोदय :- उमेश जी, यह प्रश्नकाल नहीं है कि हम एक दूसरे से सवाल-जवाब करें। यह अविश्वास प्रस्ताव है। अविश्वास प्रस्ताव सरकार के खिलाफ आया है। आप आरोप लगाओगे तो सरकार अंत में अपने-अपने पक्ष में उसका जवाब देंगे। इसलिए एक दूसरे के साथ आरोप-प्रत्यारोप का अनावश्यक सवाल-जवाब न हो।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- धन्यवाद मंत्री जी, आपने जो बताया। मैं इस बात की चर्चा में नहीं जाना चाहूंगा। मैं गुमराह नहीं कर रहा हूं। मैं जो बोल रहा हूं, आपके द्वारा, आपकी सरकार के द्वारा, आपके अधिकारियों के द्वारा जो पत्र प्रकाशित किया गया है, मैं उसके आधार पर बोल रहा हूं। यह बात विधान सभा के पटल पर प्रमाणित है। यदि आपकी ऐसी कोई चिट्ठी है, जो शिक्षा नीति कहती है। यदि आपकी कोई अधिकारिक चिट्ठी है कि 30 नहीं 25 बच्चे होने चाहिए, जो शिक्षा नीति कहती है। पिछड़े और वनांचल क्षेत्रों में कम करने का कोई निर्देश है तो मैं अपनी बात को वापस लेने के लिए आज भी तैयार हूं। तब मेरा जो आरोप है, वह आप पर लगा हुआ है। आपके द्वारा ऐसी कोई भी चिट्ठी जारी नहीं की गई है, यह मेरा साफ तौर पर दावा है।

सभापति महोदय, एक विलियम जार्डिन नाम का आदमी होता था। वह मेसेसन एण्डप को-आपरेशन का वह को-फाउण्डर था। यह एक कम्पनी थी। जब चाइना से ब्रिटिश गये वहां पर वे लोग सिर्फ चाय और सिल्क लेते थे। तो उन्होंने कहा कि आप हमारी चाय और सिल्क ले लेते हैं, लेकिन वहां हमें वापसी में अफीम दे देते हैं। तो उन्होंने कहा कि सिर्फ और सिर्फ चांदी से एक्सचेंज करेंगे। तो इस व्यक्ति ने क्या किया। ये वहां पर 2 नंबर में अफीम बेचता था और उसकी पेमेन्ट चांदी में लेता था और उसी चांदी से सिल्क और चाय खरीदने का काम चाइना से करता था। उसने बहुत इंटरेस्टिंग चीज कहा, किसी ने उससे कहा कि आप युवाओं का भविष्य खराब कर रहे हैं तो उसने कहा कि if we do not supply then somebody else will. आज छत्तीसगढ़ में युवा नशे की गर्त में जा रहा है और इसको हम सबको बचाने की आवश्यकता है। अफीम की खेती यहां पर कई जगह मिली है। अनौपचारिक तौर पर हम लोग बाहर बैठते हैं तो यह बात बहुत साफ तौर पर आती है कि उड़ता पंजाब के बाद उड़ता

छत्तीसगढ़ बनने में ज्यादा समय लगेगा। हमें इसके लिए स्ट्रांग पॉलिसी की आवश्यकता है, स्ट्रांग डायरेक्सन्स की आवश्यकता है।

सभापति महोदय, संविधान के अनुच्छेद 47 में राज्य को यह निर्देशित है कि वह दवाईयों के अलावा अन्य नशीले पेय जैसे शराब और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नशीले पदार्थों के सेवन पर रोक लगाने का प्रयास करें। यह अनुच्छेद 21, स्वास्थ्य के अधिकार को भी मौलिक अधिकार माना गया है। हम इसके बाद उनके लिए अहाता खोल देते हैं। कोई एक सदस्य पूछ रही थीं, जब रामकुमार यादव जी ने कहा कि तै उहां गय हस का ? गये नहीं हैं, लेकिन सबको पता है वहां अहाता में शराब पी जायेगी, वहां और तो कोई दूसरा काम होगा ही नहीं। कूलर और ए.सी. लगाकर वहां पर शराब ही पीयेंगे। 67 जो नई दुकानें खुल रही थीं, उसका पूरा प्रदर्शन किया गया था।

श्री रामकुमार यादव :- हुजूर, वहां कोई कीर्तन-भजन तो होय नहीं।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- दारू ही पीही।

श्री रामकुमार यादव :- दारू ही पीही।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- माननीय सभापति महोदय, नई दुकानें खोली गईं। हमें आय का स्रोत चाहिए, लेकिन क्या हम उसको अपने लोगों के जान से खिलवाड़ करके करेंगे। आज हमारा राजस्व 6500 करोड़ से बढ़कर 11 से 12 हजार करोड़ के आसपास पहुंच गया है। इसका सीधा प्रभाव लॉ एण्ड आर्डर सिचुएशन पर पड़ता है और यह बात प्रमाणित है। 70 से 75 प्रतिशत अपराध हो रहे हैं, वे कहीं न कहीं नशे की गिरफ्त में हो रहे हैं। सिर्फ नशे की गिरफ्त शराब की नहीं है, इसमें सूखा नशा और बाकी चीजें भी शामिल हैं। रायपुर में दिल दहलाने वाली एक घटना हुई थी। दो लड़के एक ढाबे में नशा करके बिना बात के लोगों से लड़ाई करते हैं, वहां पर लोगों को मारते हैं। जब पुलिस उनको गिरफ्तार करके लेकर जाती है तब सुबह तक उनको होश ही नहीं था कि उन्होंने क्या किया है। क्योंकि वह सूखे नशे में थे। कोरबा का डिस्ट्रिबिंग वीडियो आया था। वह सबके लिए डिस्ट्रिबिंग वीडियो होगा। मुझे बोलते हुए अच्छा नहीं लग रहा है। आदरणीय, एक व्यक्ति ने अपनी वाइफ का सिर काट दिया था। क्योंकि उसको होश ही नहीं था। वह सेंसेस में नहीं था।

श्री रामकुमार यादव :- हुजूर।

सभापति महोदय :- रामकुमार जी, राघवेन्द्र जी बोल रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- नशा के बारे में बतायौं।

सभापति महोदय :- आप अपने समय में बोलिएगा। रामकुमार यादव जी, आप अपनी बात रखिएगा आपका नाम है।

श्री रामकुमार यादव :- नशा करके, जो पीयाथे तेखरे बारे में घलू बकथे, त ए मन समझथ होही न कि सरकार ला घलू पीके बकथे नशा करैया मन।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- आदरणीय महोदय, एक average अगर हम देखें, तो liver diseases से करीब 40 मौतें हो रही हैं। लगातार जो कि serious liver cirrhosis से हो रही है। छत्तीसगढ़ की जीवन प्रत्याशा की हम बात करें, तो 65 वर्ष के आसपास हम लोग आ गए हैं। हमें इसके बारे में strict policy का सोचना होगा, क्योंकि law and order control करने के लिए हम यह नहीं कह सकते कि पुलिस या व्यवस्था तुरंत बढ़ जाएगी। हमें समाज को educate करना पड़ेगा, उनको नशे की गिरफ्त से हमको बाहर लाना पड़ेगा। आदरणीय, यह अविश्वास जो लोगों को लगातार सरकार के खिलाफ हो रहा है, जो गहन अपराध हो रहे हैं, नशा हो रहा है, स्कूलों की समस्या आ रही है, बच्चे पढ़ नहीं पा रहे हैं, यह सारे विषय इस अविश्वास प्रस्ताव में इसलिए लाए गए हैं। आदरणीय, बार-बार बात होती है, पिछले पांच, पिछले पांच, 81,000 करोड़ रुपये का कर्ज 15 साल की सरकार छोड़ कर गई थी। जब कोविड आया, तो वह 81,000 करोड़ रुपये का हुआ। उसमें जगह-जगह से loan लिए गए, क्योंकि G.S.T. inputs भी वापस नहीं आ रहे थे। Central Government ने कहा कि आप जहां से ले सकते हैं, लें। उसके बाद आज अगर सारे institutes का कर्ज हम लोग देखें, तो आज लगभग आदरणीय 1,35,000 करोड़ रुपये के आसपास 2.5 साल में हम cross कर चुके हैं। अगर प्रत्येक छत्तीसगढ़िया पर आप एक average देखेंगे, तो 40 से 45 हजार का कर्ज हम हर छत्तीसगढ़िया के सिर पर आज आता है। हमें इस विषय पर भी सोचना पड़ेगा। हम कोई ऐसी policy बनाना नहीं चाह रहे हैं। F.R.B.M. Act के हम 2 से 3% पर बिल्कुल fix हो जाते हैं कि भाई इससे ज्यादा नहीं लेना है, लेकिन borrowing बाहर से हम ले लेते हैं। 21,530 करोड़ रुपये का तो हमें अभी केंद्र सरकार को देना है। आदरणीय, salary, pension, interest, कृषक उन्नति, पी.एम. आवास और power subsidy को अगर हम लोग देख लें, तो 61% हमारे committed expenses हैं। हम अगर वित्तीय व्यवस्था सही नहीं करते हैं, तो और कब अविश्वास पैदा होगा कि हमारी वित्तीय व्यवस्था सही होनी चाहिए? आदरणीय, यहां पर्यटन की अपार संभावनाओं के साथ policy कहां है? व्यापकता कहां है? Wildlife की अपार संभावनाएं हैं, religious tourism की अपार संभावनाएं हैं और हम सिर्फ हर क्षेत्र का mining करके दोहन किए जा रहे हैं और mining के बाद जब हम बात करते हैं कि इसको green G.D.P. से जोड़ा जाए कि कितना दोहन हुआ है, उसका हमें आकलन करना चाहिए। आदरणीय, वह आकलन हो नहीं पा रहा है, क्योंकि green G.D.P. हम लाना ही नहीं चाहते हैं। अगर जब तक green G.D.P. नहीं आएगा, हम आकलन कैसे करेंगे कि हमने वर्षों के, हजारों साल के पेड़ों का जो दोहन किया है, वह आखिर कब तक होगा? यह बातें सरकार को ध्यान में देनी होंगी। आदरणीय सभापति महोदय, मैं जांजगीर जिले से आता हूं, जहां पर कहने को हम लोग 98 करीब-करीब, 90% के ऊपर हम irrigated हैं। लेकिन जो वहां की असल स्थिति है, वह वैसी नहीं है। इसीलिए वहां पर lift irrigations के projects बनते हैं। बार-बार फाइलें आती हैं, हम लोग लगातार जाते हैं कि lift irrigation के project को मान्यता मिले। आज हालत यह है

कि वहां से जो हसदेव से हमें पानी मिल रहा, जो पहले हम तीन अनुबंध किया करते थे, अब वह दो पर आ गए हैं। दो पर आने के बाद अब वहां silting बढ़ गई है, हमें पानी कम मिल रहा है और मैं तो जब भी इसके बारे में मुझे पढ़ना होता है, जानकारी लेनी होती है, मैं आदरणीय धर्मजीत सिंह जी का वह भाषण पढ़ता हूं, landmark, जिसमें उन्होंने हसदेव के flora, fauna, हर चीज के बारे में एक बड़ी detailed भाषण किया था। उसके बाद जो no-go zone था, उसके बारे में जो उन्होंने कहा था, वह सब हम लोगों के लिए पढ़ना चाहिए। आदरणीय महोदय, पूरे देश में केवल 15% हमारे कोयला भंडार ऐसे हैं, जो no-go zone में हैं, जो घनघोर जंगल की श्रेणी में आते हैं और उनको अगर हम नहीं करते हैं, उसके अलावा हमारे पास 100 साल के लगभग का कोयला उपलब्ध है। तो इन no-go zone में हम लोग जाकर आखिर हसदेव के जंगल क्यों काट रहे हैं? क्यों हम लोग सिर्फ वहीं का कोयला चाह रहे हैं? दूसरी जगह क्यों नहीं जा सकते हैं? जैसा कि नेता प्रतिपक्ष चूंकि इस बात को बहुत detail में कर चुके हैं, मैं चाहता हूं कि उसको मैं न करूं। लेकिन सरकार बनने के और जब तक शपथ भी नहीं हुई थी, उसके पहले से ही यह कटाई वहां पर चालू हो गई। आदरणीय, human-elephant conflict छत्तीसगढ़ में जितना ज्यादा उसके बाद से बढ़ चुका है, यह सबके लिए सोच और विचार करने का विषय है। Silting की बात है, हसदेव बांगो की बात है, और 150 के ऊपर flora और fauna विलुप्त होने की उस क्षेत्र में बात है, हमको इस बारे में सोचना पड़ेगा। आदरणीय, चूंकि अभी लगातार प्रश्न लगते हैं इस और specially इस 2.5 साल में, लगातार प्रश्नों के माध्यम से राखड़ के management पर हम लोग सवाल उठाते हैं। जगह-जगह में अपने क्षेत्र की अगर आपको बात बताऊं आदरणीय, हमारे यहां आजकल लोग mines से ज्यादा गड्ढे खोज रहे हैं कि वहां जाकर वह राखड़ पाट सकें और राखड़ खुले में, खेत में, हर जगह, कहीं बांध फट जा रहे हैं, तो कई सौ एकड़ वहां पर राखड़ फैलने से खराब हो जा रही है। इस तरह की समस्याओं को हम लोग लगातार झेल रहे हैं। प्रभावित क्षेत्र के नागरिकों में हृदयघात, अस्थमा और सिलिकोसिस जैसी गंभीर बीमारियां लगातार हो रही हैं। इसके अलावा यदि हम कोई Concrete Policy लाना चाहते हैं तो यह बिल्कुल स्पष्ट है कि सरकार का इस पर कोई विश्वास नहीं है कि उन्हें वहां ऐसी कोई Policy लानी चाहिए। चाहे पर्यावरण हो या वहां की Local authority हो, हमें वहां पर सरकार की नीति और नीयत में भिन्नता साफ तौर से नजर आती है। वन, जैव विविधता और जल के संरक्षण व संवर्धन के लिए हरित बजट पेश किया गया था, लेकिन दूसरी तरफ हम विश्व की जैव विविधता से परिपूर्ण हसदेव अरण्य जंगल की कटाई कर देते हैं, तमनार में जंगल की कटाई कर देते हैं। आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जिन दो नदियों का उल्लेख कर रहे थे, उनके पानी को हम NMDC के माध्यम से प्रदूषण के लिए उपयोग में ला रहे हैं। इन सभी मामलों पर हमें गंभीरता से सोचना पड़ेगा। यदि आने वाले समय में हम इसे संरक्षित नहीं कर पा रहे हैं तो सरकार में बने रहने का हमारा कोई नैतिक दायित्व नहीं रह जाता है।

समय :

7.26 बजे

(सभापति महोदय (श्री धर्मजीत सिंह) पीठासीन हुए)

आदरणीय सभापति महोदय, अंत में मैं दो बातें और कहना चाहता हूँ। हमारे पुराने जितने भी स्वीकृत कार्य थे, उन्हें रोक दिया गया है। कई ऐसी पुरानी योजनाएं थीं, जिसमें हमारा आरोप भी है। जैसे बिजली बिल हाफ योजना, RIPA योजना और गोधन न्याय योजना। मुझे याद है कि जब इन पर बहस हो रही थी, तब आदरणीय भूपेश बघेल जी ने एक अच्छी बात कही थी कि आपके पास इनका Alternative क्या है? यदि आपके पास बेहतर Alternative है तो ठीक है, आप पुरानी योजनाएं बंद करें और बेहतर Alternative दीजिये। आपने गौठान बंद कर दिए, लेकिन कितने गौधाम खोले? RIPA की मशीनरी पड़ी-पड़ी आधी से ज्यादा सड़ गई है, उसके लिए हमारे पास क्या Alternative है? मंगलसूत्र और साड़ियों के वितरण में भी भ्रष्टाचार हुआ। सुशासन तिहार के सबसे ज्यादा आवेदन महतारी वंदन योजना में आते थे, जिस पर आज प्रश्न लगा हुआ है और सबको निराकृत दिखा दिया गया है। अगर आवेदन निराकृत हो गए हैं तो क्या उन्हें राशि मिलना शुरू हो गई है या उन्हें मना कर दिया गया है? बिजली बिल में लगातार वृद्धि हो रही है। हमारे पास 65 लाख घरेलू उपभोक्ता हैं, जिनमें से 3 लाख के यहाँ प्रतिवर्ष हमें सोलर पैनल लगाने हैं और हम मुफ्त बिजली की बात कर रहे हैं। ऐसी बहुत सी बातें थीं जो मुझे कहनी थीं, लेकिन अंत में मैं कुछ बातें कहकर अपनी बात समाप्त करूँगा। सभापति महोदय, जब हम विधान सभा में आए, तब हमें लगा कि यह सबसे बड़ी पंचायत लगी कि यहाँ अगर किसी बात का आश्वासन मिलता है तो कार्रवाई होगी। यह मेरे लिए सबसे बड़ा अविश्वास का जड़ है। लेकिन मैं बहुत दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि उस पर भी कार्रवाई नहीं हुई। आदरणीय केदार भैया बैठे हुए थे, आपने मुझे आश्वासन दिया था कि अकलतरा में Death rate बढ़ रही है, उसके लिए प्रशासन विधान सभा सत्र के बाद त्वरित बैठक करेगा। सत्र खत्म हो गया, नया सत्र आ गया, वह भी खत्म होने वाला है, लेकिन आज तक प्रशासन ने बैठक नहीं की है। आदरणीय सभापति महोदय, यह मुझे बहुत दुख के साथ बताना पड़ रहा है कि पिछले हफ्ते मेरे विधान सभा क्षेत्र में तीन ऐसी मौतें हुईं, जिनमें एक व्यक्ति का सिर तक नहीं मिला। उसके संबंध में कोई मीटिंग नहीं हुई और अकलतरा विधान सभा क्षेत्र में एक्सीडेंट लगातार बढ़ते जा रहे हैं। हम लोग बार-बार चीजों की मांग करते हैं, हमें सिर्फ आश्वासन मिलता है। यह सिर्फ मांग करने का विषय नहीं है, चूंकि दिए गए आश्वासन पूरे नहीं किए गए, इसलिए यह अविश्वास हमारे बीच में पैदा होता है। चाहे वह DMF की बात हो, छात्र या युवाओं की बात हो। ट्रेजरी बेंच से यह कहा गया कि हम कलेक्टर को भी निर्देशित भी नहीं कर सकते, उस दिन समझ में आया कि शायद जो निरंकुशता की बात आदरणीय अजय चंद्राकर जी बार-बार कहते हैं, उसमें कितनी सत्यता है। चूंकि समय कम है, इसलिए मैं इन दो पंक्तियों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ -

"न तख्त रहेगा, न ताज रहेगा, बस किरदार का हिसाब रहेगा।

जो आवाम के दर्द से दूर रहा, वह हर दौर में बेनकाब रहेगा।

सियासत अगर खिदमत नहीं, तो महज एक सराब रहेगी।

हर जुल्म, हर खामोशी पर वक्त अपनी किताब रहेगी।

अगर एतराज हमारा नहीं है, तो यह जनता की सदाओं का पैगाम है।

फैसला सदन लिखे या न लिखे, आखिरी फैसला आवाम के नाम है।" (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

सभापति महोदय :- श्री रामविचार नेताम।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति महोदय, हमारे साथियों ने शेर-शायरी से समापन किया।

सभापति महोदय :- सीधा बोलिये ना।

श्री सुशांत शुक्ला :- लबों पर झूठा तब्बसुम सजाये बैठे हैं
अंधेरे उजालों से खोफ खाये बैठे हैं
जमाना चांद सितारों पर सैर करने गया है
अरे मियां, जमीन में चादर बिछाये बैठे हैं

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- महाराज तोला त हुंकारू भरे बर हे।

श्रीमती शेषराज हरवंश सिंह :- आज ही देख ले, आज के बरसात में पूरा बिलासपुर डूब गे हे अऊ बेलतरा भी डूब गे हे। प्रदेश म दू ठन स्मार्ट सिटी रायपुर हे। रायपुर अऊ बिलासपुर, वोखर हाल ला देख लव।

श्री देवेन्द्र यादव :- कोई यूँ ही बेवफा नहीं होता, कुछ तो मजबूरियां रही होगी
जिंदगी के दो ही तराने हैं, एक जफा और एक वफा

एक तुम्हें याद नहीं और एक हमें याद नहीं
श्री अनुज शर्मा :- अपनी चालाकियों पर डालके पर्दा,
चेहरे पर नकाब लिये फिरते हैं,
जिनके खुद के बही खाते बिगड़े हैं,
वह हमारा हिसाब लिये फिरते हैं (मेजों की थपथपाहट)

श्री अटल श्रीवास्तव :- हुजूर वापस करना पड़ेगा।

जमी बेच देंगे, गगन बेच देंगे

यह सरकार मुर्दों के कफन बेच देंगे

लोकतंत्र के सिपाही सो गये तो

प्रदेश के चौकीदार प्रदेश बेच देंगे (मेजों की थपथपाहट)

श्री सुशान्त शुक्ला :- पहले जमीं तो आप ही बेचे थे ।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति जी । एक मिनट ।

सभापति महोदय :- यहां मुशायरा नहीं हो रहा है, अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा है। अब इसके बाद कोई शेर-शायरी नहीं होगी । (हंसी)

सभापति महोदय:- फिर आप भी बोल लीजिए ।

श्री अनुत्त शर्मा :- रामकुमार भईया, दोहा पार दे जल्दी ।

श्री रामविचार नेताम :- बाजा बजाबे तभी तो । डुग-डुग ।

सभापति महोदय :- मैं आसंदी से बोल रहा हूँ । आप मेरे को देख नहीं रहे हो। डायरेक्ट उधर बात कर रहे हैं । आपको अवसर दिया हूँ, जल्दी से पढ़ लो ।

श्री रामकुमार यादव :- ये पढ़े-लिखे बोलिसे, तेखर पाय के मैं कहंथव ।

ज्ञान मारे ज्ञानी ला, ज्ञान गोला ठहराये

मुरूक मारे टेंपा त मुंड कान फूट जाये

(ए हा ज्ञान से मारथे, अऊ वोहा बल दिखावथे ।) (हंसी)

सभापति महोदय :- एक्सप्लेन नहीं करना है । नेताम साहब बोलिये ।

श्री रामविचार नेताम :- रामकुमार जी को बोल रहा हूँ कि जो बोले हो, बहुत अचछा बोले हो । बोलने के बाद आपका दोहा है ना, उसमें नाचा जाता है, बाजा बजाके नाचा जाता है । बाजा बजाओगे तभी तो पता चलेगा । ऐसे कैसे होगा । खुमरी वगैरह बांध लो । (हंसी)

कृषि मंत्री (श्री रामविचार नेताम) :- सभापति महोदय, मैं समझता हूँ कि हमारे विपक्ष के बहुत ही कद्दावर नेता और नेता प्रतिपक्ष जिनकी राजनीतिक लंबी फेहरिस्त है । आप मध्यप्रदेश से लेकर भारत सरकार में भी इतने महत्वपूर्ण पदों को संभाल चुके हैं, मंत्रिमंडल में भी रहे हैं, आपकी सज्जनता का आपके इर्द-गिर्द के साथियों ने बेवजह आपका दोहन किया, शोषण करते हुये इस प्रकार से सरकार के विरुद्ध अविश्वास रखने का विपक्ष का जो लोकतंत्र में सबसे बड़ा अधिकार है, वह ब्रम्हास्त्र है, इसे आप ऐसे समय में लाये हैं, जिसका औचित्य ही नहीं है । यह कहीं से कोई उचित ही नहीं था। मैं समझता हूँ कि छत्तीसगढ़ के इतिहास में अभी तक जितने भी अविश्वास प्रस्ताव आये हैं, उन सभी अविश्वास प्रस्ताव में सबसे लचर, अव्यवस्थित, बिना कारण के, कोई मुद्दा नहीं(मुद्दाविहीन) और दिशाहीन अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है, मैं उसका पुरजोर विरोध करता हूँ । सभापति महोदय, हमारे आदरणीय मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जी के नेतृत्व में सभी मंत्रिमंडल के सहयोगियों के विरुद्ध जो आरोप लगाये गये हैं, मैं उसका विरोध करता हूँ, खंडन करता हूँ ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय सभापति महोदय, 1 मिनट। माननीय मंत्री जी एक ही मिनट लूंगा।

सभापति महोदय :- यादव जी, एक मिनट मेरी बात सुनिए लीजिए फिर आप खड़े हो जाना, पहले मेरी बात सुनिए।

श्री रामविचार नेताम :- सभापति महोदय, मैं समय दूंगा तब तो वे बात करेंगे।

सभापति महोदय :- वे वरिष्ठ सदस्य हैं और अभी शुरू किए नहीं हैं, अब आप बीच-बीच में टोकेंगे, फिर कोई टोकेगा, ये थोड़ा अच्छा नहीं लगता न। दो मिनट सुन लीजिए।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- मंत्री जी एक मिनट निवेदन कर रहा हूं।

श्री रामविचार नेताम :- सभापति महोदय, मैं समझता हूं कि मेरा क्रम बिगड़ जाएगा।

सभापति महोदय :- हां तो आप बैठ जाईए। प्लीज बैठ जाईए।

समय :

7.35 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय मंत्री जी, ये अविश्वास कितना प्रभावी होगा जिस दिन मतगणना होगी, उस दिन याद कीजिएगा। मतगणना के दिन इस अविश्वास का ही परिणाम आएगा।

श्री रामविचार नेताम :- अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं कि मेरी भाषण शुरू हो रही है और आप आ गए। मैं समझता हूं कि आदरणीय तमाम सारे साथियों ने जो अविश्वास लाया है, उसका तो हम विरोध कर ही रहे हैं और अंततः इनके अविश्वास के बारे में मैं एक-दो शब्दों में कहना चाहता हूं।

हमने औरों की भी फिक्र की, तुम अपनों को भी ना निभा सके।

अच्छाई हमारी तुमसे कही ना गई, बुराई भी हमारी बता ना सके।

श्री भूपेश बघेल :- नेताम जी, इसीलिए आप वहां से यहां पहुंच गए। इस अविश्वास प्रस्ताव में आप हमारा साथ दीजिए। हम तो आपको यहां चाहते हैं। अब पानी पी लीजिए। (हंसी)

श्री रामविचार नेताम :- अध्यक्ष महोदय, हमारे विपक्ष के माननीय साथियों का, खास करके नेता प्रतिपक्ष का जिस प्रकार से आज इतना बोरियत भाषण, नीरस और आधारहीन, कपोल कल्पित, कपोल कल्पना, तथ्यविहीन, आधार विहीन आरोप जो लगाए हैं, मैं उसका विरोध करता हूं। अध्यक्ष महोदय, विपक्ष का यह अविश्वास प्रस्ताव मुझे ऐसा लगता है कि इनके दिल्ली दरबार से जो डांट पड़ी है, इनको जो कोड़े पड़ रहे हैं, आपस में एक तरह से इनकी जो कुर्सी दौड़ हो रही है, कोई किसी को अध्यक्ष बना दे रहा है, कोई अध्यक्ष बनने के लिए तड़प रहा है, बस्तर में जाते हैं तो उनकी भाषा कुछ और हो जाती है। अभी आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी बस्तर के दौरे में थे, मैं भी बस्तर के दौरे में था। इनके खास चेले लोग बड़ी अच्छी व्यवस्था किए थे और कई जगह इनका माला मैंने ही पहन ली। (हंसी) मैंने इनको फोन किया। मैंने बोला, भाई, मैंने आपके लिए आराम से विश्राम गृह छोड़ दिया है। आप जगदलपुर के सर्किट

हाउस में अच्छे से रहिए। आप वहां हैं तो मैं अभी नहीं आऊंगा क्योंकि आपको तकलीफ हो जाएगी, आपके पीछे लोग पड़े हुए हैं, अगल-बगल से सावधान रहिएगा, इसलिए मैं आपकी बहुत ही शुभचिंतक हूं, आपकी चिंता करता हूं। लेकिन ये जो अगल-बगल वाले लोग हैं, ये आपसे कुछ भी कहलवा दे रहे हैं, ये आपके लिए ठीक नहीं है। मैं समझता हूं कि विपक्ष जो है, हड़बड़ी में आकर के यह अविश्वास का प्रस्ताव लाए। वरना कोई मानसून सत्र में अविश्वास प्रस्ताव लाता है? आपने स्थगन प्रस्ताव लाया। स्थगन और अविश्वास में बहुत ज्यादा अंतर नहीं था। आप लोगों ने स्थगन में तमाम सारे बिंदुओं पर चर्चा की। आपने सदन का दिन भर समय बेवजह गंवाया और स्थगन के माध्यम से तमाम सारे एजेंसियों को आपने यहां बैठाया। हमारी सरकार के तमाम सारे अमले बैठने से हमारा काम प्रभावित हो गया, वरना कितने काम निपटे होते? सदन का समय बेवजह यहां पर आप गवा रहे हैं। नेता प्रतिपक्ष जी, आप दो-ढाई घण्टे तक बोले।

श्री भूपेश बघेल :- मंत्री जी, आप एक बोरा डीएपी तो उपलब्ध नहीं करा पा रहे हो। (हंसी)

श्री रामविचार नेताम :- दो-ढाई घण्टे तक बोलने के बाद आप कह रहे हैं कि आप कम बोलिये। हम कैसे कम बोले? 2 घंटा तो अभी बोलेंगे और बाकी लोग भी बोलेंगे। आज आप सभी को सुनना ही पड़ेगा, क्योंकि शुरूआत आपने की है, मंजिल तक तो हम पहुंचाएंगे। (मेजों की थपथपाहट) मंजिल हम देंगे। यह अविश्वास प्रस्ताव सिर्फ सस्ती लोकप्रियता के लिए, प्रेस मीडिया में छपाई के लिए है।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय :- नेता जी आपको कुछ बोल रहे हैं। नेता जी खड़े हो गये हैं।

डॉ. चरणदास महंत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, रामविचार जी बोल रहे हैं कि मुझे जरा भी दुःख नहीं है। वह खुद ही स्वीकार कर रहे हैं कि बस्तर गए थे तो मेरा जो माला था, उसको वही पहनते थे, मुझसे आगे-आगे चलते थे। मैं कह रहा हूं कि मेरे अविश्वास प्रस्ताव में कुछ भी नहीं है, धोखा है, गलत है, फलाने हैं, ढिकाने हैं, कूड़ेदान में फेंकने लायक है और अजय चंद्राकर जी कह रहे हैं कि उनके में वह क्या बोलते हैं कि पोंगी बनाने लायक है तो फिर इतना डेढ़-डेढ़ घंटे, दो-दो घंटे तक आप लोग चर्चा क्यों कर रहे हैं? मुझे यह चिंता है। जब कुछ भी नहीं है तो छोड़ो। आप बोल दीजिये कि इसमें कुछ नहीं है, हम बैठ जाते हैं। आप डेढ़ घंटे, आपके चंद्राकर जी ने 2 घंटे, आपके होम मिनिस्टर ने डेढ़ घंटे, आपके कौशिक जी ने डेढ़-दो घंटे और अब आप बोल रहे हैं कि मैं दो घंटे बोलूंगा तो किसपर बोलेंगे?

श्री रामविचार नेताम :- दोस्ती तुम्हारे बस की नहीं। (हंसी)

डॉ. चरणदास महंत :- देखिये, दोस्ती करने की उम्र आपकी भी नहीं है, मेरी भी नहीं है। (हंसी) (मेजों की थपथपाहट) सुनिए, आपकी-हमारी दोस्ती करने की उम्र नहीं है और मेरे और आपके बाजू वाले के संबंध पहले से हैं। आप काहे को परेशान हो रहे हैं? (हंसी)

श्री रामविचार नेताम :- अध्यक्ष जी, मैं बोल रहा था कि :-

दोस्ती तुम्हारे बस की नहीं, कम से कम दुश्मनी तो निभा लेते,

सौ झूठ बोला तुमने मगर, एक सच तो भी बता देते। (हंसी) (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूँ कि विपक्ष आज दिशाहीन है, तथ्य के परे है और जमीनी हकीकत से कोसों दूर है। न तो इनको सरगुजा संभाग के लोगों से मतलब है, न तो बस्तर क्षेत्र के लोगों से इनको कोई लेना-देना है और न मैदानी क्षेत्र के लोगों से इनको कोई लेना-देना है। इनको सिर्फ छपास चाहिए। पेपरों में इनकी खूब लाइन-हेडलाइन बन जाये। चाहे कपड़े फाड़कर बने, (हंसी) (मेजों की थपथपाहट) चाहे हिड़मा को हीरो बनाकर बन जाए। (शेम-शेम की आवाज) लेकिन इनकी हेडलाइन बननी चाहिए। आपने शुरुआत की है और आपने जब शुरुआत की है तो मंजिल तक हम पहुंचाएंगे। (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, आपने इतने सारे आरोप कैसे लगा दिये? मैं पूछ रहा हूँ कि कैसे लगाये?

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी मंजिल तो आपको पता होगी न कि आपको सरकार से गिराना हमारी मंजिल है। मतलब, उसमें आप हमें सहयोग करेंगे। धन्यवाद।

श्री रामविचार नेताम :- अध्यक्ष जी, मैं समझता हूँ कि माननीय को अभी मालूम नहीं है कि यदि कोई वक्ता बोल रहा है तो उसे बीच में टोका नहीं जाता है, खड़ा नहीं हुआ जाता है और इसलिए आपकी अनुमति से मैं बोल रहा हूँ। आपकी अनुमति मिलेगी तो कोई भी बोल सकता है। आप भी बोलते हैं तो अनुमति लेकर बोलते हैं। तो मैं सीधे आपसे नजर से नजर मिलाकर बात कर रहा हूँ। (हंसी) (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, मेरा यह कहना है कि छत्तीसगढ़ के इतिहास में पहली बार किसी सुदूर अंचल के एक आदिवासी घर का जन्मा हुआ बेटा, आदिवासी समाज का नेतृत्वकर्ता आज मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठा है तो आपको तकलीफ हो रही है। (मेजों की थपथपाहट) केदार कश्यप जी, बस्तर संभाग के कद्दावर आदिवासी नेता आज उस कुर्सी पर बैठे हैं तो आपको तकलीफ हो रही है, इसके लिए अविश्वास प्रस्ताव लेकर आये हैं। (मेजों की थपथपाहट) राम विचार नेताम सरगुजा संभाग से आता है, वहां के आदिवासी परिवार से जन्म लेकर यहां पर बैठा है, राजनीतिक लड़ाई लड़ते, लड़ते आज यहां तक पहुंचा है, इस सरकार में शामिल होकर यदि आज काम कर रहा है तो उसके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया जाता है। (शेम-शेम की आवाज) अनु.जाति वर्ग से हमारे दो मंत्री बने हैं, आदरणीय दयाल दास बघेल जी, आदरणीय गुरु खुशवंत जी, इनको भी आप सहन नहीं कर पा रहे हैं। (शेम-शेम की आवाज) इनके लिए अविश्वास प्रस्ताव।

श्री दिलीप लहरिया :- अध्यक्ष महोदय, यह आपत्तिजनक है। मंत्री तो बनना ही है, वह तो कोटा है। आपको मंत्री बनने से कौन रोका है ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय, हम सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं, हमने व्यक्तिगत किसी के लिए नहीं लाया है।

श्री रामविचार नेताम :- हमारे आदरणीय अरूण साव जी, उप मुख्यमंत्री और भी हमारे शर्मा जी, हमारे देवांगन जी, हमारे श्याम बिहारी जायसवाल जी (व्यवधान)

श्री दिलीप लहरिया :- सामाजिक जात-पात की लड़ाई करवाने..। (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- मुख्यमंत्री जी से वास्तविक, सर्वाधिक शक्ति मंत्री जी को है। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हम सरकार के प्रति अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। (व्यवधान)

श्री दिलीप लहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां जात-पात की बात हो रही है। इसको विलोपित किया जाये। (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- (व्यवधान) सर्वाधिक तकलीफ आपको हैं, माननीय मंत्री जी। (व्यवधान) क्योंकि आप स्वयं इधर आना चाहते हैं।

श्री दिलीप लहरिया :- प्रदेश में केवल जात-पात की बात हो रही है। देश में प्रदेश में लगातार जात-पात की बात हो रही है।

श्रीमती शेषराज हरवंश :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसी के मंत्री बनने से हमें कोई परेशानी नहीं है। परेशानी आपके कार्यों से हैं, जो कार्य आप जनता के हित में नहीं कर पा रहे हैं।

श्री रामविचार नेताम :- आप जैसे लोग सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव ला रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, एक मिनट। उमेश जी कुछ बोलना चाहते हैं, बोलिये।

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, अविश्वास प्रस्ताव पूरे मंत्रिमंडल के खिलाफ आया है, सरकार के कामकाज के खिलाफ आया है। हम लोगों ने यह किसी individual मंत्री के खिलाफ तो नहीं लाया है कि यह इस जाति का है, इस धर्म का है। आप इससे थोड़ा बाहर निकलिये और यह सब बातें न करें।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, इनको इतनी पीड़ा क्यों हो रही है, यह मैं बता देता हूं। पूरे अविश्वास प्रस्ताव में सबसे ज्यादा वन विभाग के खिलाफ ही अलग-अलग पेज पर आरोप लगा है, जैसा कि आपने बताया, उसके बाद इनका नंबर लगता है, धान खरीदी के नाम पर दयाल दास बघेल जी का, पूरे अविश्वास प्रस्ताव का 80 प्रतिशत कंटेंट इन्हीं तीनों के खिलाफ है तो उनको पढ़ने के बाद तो समझ में आता है। मैं भी समझता हूं।

श्री दिलीप लहरिया :- अध्यक्ष महोदय, जात-पात गलत है। (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- सर्वाधिक गलती, किसानों के साथ यदि अन्याय होगा तो कृषक मंत्री के ऊपर आरोप लगेगा ही। वन विभाग में अव्यवस्था होगी तो वन विभाग पर आरोप लगेगा ही। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अविश्वास प्रस्ताव विभाग के प्रति आया है। वह किसी व्यक्ति के ऊपर नहीं आया है।

श्री रामकुमार यादव :- अध्यक्ष महोदय, हम पद का विरोध कर रहे हैं। हम किसी जात-पात विरोध नहीं कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- मंत्री का विरोध कर रहे हैं। मंत्री के पद का विरोध कर रहे हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय, हम मंत्री के पद का विरोध कर रहे हैं। हम सरकार का विरोध कर रहे हैं। हम व्यक्तिगत किसी मंत्री का विरोध नहीं कर रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- जो भी मुख्यमंत्री रहेगा, जो भी मंत्री रहेगा, यदि वह अच्छा काम नहीं करेगा तो उसका विरोध होगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- लेकिन आपका अविश्वास प्रस्ताव जिसने भी बनाया होगा। उसकी नजर, जैसे टारगेटेड किलिंग होती है ना, यह टारगेटेड किलिंग है इन तीनों के खिलाफ। (व्यवधान)

श्री दिलीप लहरिया :- नहीं, यह टारगेटेड नहीं है। (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- गलत नीति का विरोध है। विभाग में जनता के हित में काम नहीं होगा तो अविश्वास तो होगा ही। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, यह घोर आपत्तिजनक है। यह कह रहे हैं कि टारगेट कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- (व्यवधान) हम किसी व्यक्तिगत मंत्री के प्रति बात नहीं कर रहे हैं।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह अविश्वास प्रस्ताव इस मंत्रिमंडल के मुख्यमंत्री के खिलाफ आया है, उनके काम के खिलाफ आया है, उनकी नीतियों के खिलाफ आया है। किसी individual मंत्री के खिलाफ नहीं आया है। आप उसको individual क्यों लेकर जा रहे हैं ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अध्यक्ष महोदय, किसी वर्ग या जात या समाज के प्रति नहीं है।

श्री रामकुमार यादव :- उस पद के खिलाफ आया है।

श्री उमेश पटेल :- वह लोग जो काम कर रहे हैं, उसके खिलाफ आया है। अध्यक्ष महोदय, इस तरह की बातें आ रही है।

श्री दिलीप लहरिया :- सुशांत शुक्ला को कृषि मंत्री बना दीजिये।

श्री सुशांत शुक्ला :- तोला तबला बजवाहू।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आप इसको दूसरे विषय में ले जा रहे हैं। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय, हमको संरक्षण चाहिए। यह गलत बात कर रहे हैं।

श्री दिलीप लहरिया :- महाराज को कृषि मंत्री बना दीजिये।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय, हमको संरक्षण चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये बोलिये।

श्री रामविचार नेताम :- अध्यक्ष महोदय, आदरणीय मुख्यमंत्री जी कामाननीय विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में ही विश्वास है। लोकतंत्र में विश्वास की कसौटी जनता के मत से होती है। (मेजों की थपथपाहट) जनता के मत ने दिखा दिया। हम जब लोक सभा चुनाव के वक्त जनता के बीच गये, पूरे प्रदेश की जनता ने सर आंखों में बिठाया और लोक सभा में भारी मतों से जीताकर भेजा (मेजों की थपथपाहट) और जहां-जहां आपने अविश्वास व्यक्त किया, वहां-वहां भारतीय जनता पार्टी स्वीप कर गयी। हम यदि आगे बढ़कर बात करें, विधान सभा के बाद लोक सभा और उसके बाद हमारे नगरीय निकाय के चुनाव हुए। उसमें क्या हुआ ? नगरीय निकाय क्षेत्र की तमाम सारी माताएं, बहनों का आशीर्वाद मिला और नगर निगम, नगर पालिका से लेकर नगर पंचायत तक, पार्षद तक हमारे भारतीय जनता पार्टी के सदैव जीतकर के आये हैं। हमने पंचायती राज की बात की है, ग्रामीण क्षेत्रों में हमारे जनाधार के बारे में आपके द्वारा भ्रम फैलाया गया कि ये तो गये, ये नहीं आ सकते। पंचायतों में हम इस बार बाजी मारकर दिखायेंगे। क्या हुआ? जितनी बार आप लड़े, उतने में पटखनी खाये और फिर भी खड़े होकर बोलते हैं कि इस बार पटक ही देंगे। आप कुछ नहीं कर सकते।

हम बात ही नहीं करते, जज्बात भी रखते हैं।

गैरो के मुसीबत से इत्तफाक भी रखते हैं,

जो फूल समझते हैं, कह दो जरा उनसे,

कांटो से निभने की अवकात भी रखते हैं। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- क्या बात है।

श्री रामविचार नेताम :- अध्यक्ष महोदय, क्या बस्तर, क्या सरगुजा, क्या जशपुर।

अध्यक्ष महोदय :- आप दिल्ली कितने दिन रुके थे? (हंसी)

श्री रामविचार नेताम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे मैदानी क्षेत्र में गांव, गरीब, किसान, मजदूर, नौजवान, बच्चे, बुजुर्ग उनके लिये आदरणीय विष्णु देव साय जी की नेतृत्व में हम सब काम कर रहे हैं। इनकी सरकार में 3100 रुपये में धान खरीदी कर रहे हैं, 70 लाख माताओं, बहनों को महतारी वंदन योजना का लाभ मिल रहा है। आज एक से एक योजना हम दे रहे हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी, मैं समझता हूं कि छत्तीसगढ़ में आज तक के देश के इतिहास में अगर सर्वाधिक बार इतने कम समय में आने वाले कोई प्रधानमंत्री हैं तो हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी हैं। प्रधानमंत्री जी आकर के सिर्फ यहां आये ही नहीं बल्कि न जाने देश के करोड़ों-करोड़ों गरीबों के लिये एक से एक योजनाओं का शुभारंभ किया। आदरणीय प्रधानमंत्री जी जब बीजापुर के जांगला में आये, जांगला में हमारा आयुष्मान भारत के तहत देश के 50 करोड़ जनता की सेहत के लिये उन्होंने योजना का शुभारंभ किया। और प्रधानमंत्री जी ने पूरे देश के जो हमारे सबसे पिछड़े हुए जिले हैं, उसमें देश में जो 100 जिलों का चयन करना था, उसमें सर्वाधिक हमारे छत्तीसगढ़ का ही जुड़ा। और वही नहीं जुड़ा, बल्कि वहां

के लिये तमाम सारे एकटीविटिज हम कैसे बढ़ा सकते हैं, उस क्षेत्रों का विकास कैसे कर सकते हैं, चाहे हेल्थ सेक्टर में, एजुकेशन के सेक्टर में हो, चाहे वहां पर रोड, बिजली, पानी हो, लोगों की सेहत हो, बाकी चीजें हैं, इन सभी का तमाम सारे जो पैरामीटर भारत सरकार ने तय किया, उस पैरामीटर के आधार पर हमारी सरकार ने काम करना शुरू किया। अब ये जब सब काम हम शुरू कर रहे हैं। आज जिस प्रकार से नक्सल क्षेत्र के लिये हमारी सरकार ने, हमारे देश के और दुनिया के सबसे लोकप्रिय हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का संकल्प था कि कैसे भी हो, देश से, हमारे छत्तीसगढ़ से नक्सलवाद समाप्त होना चाहिए। उसको साकार करने का अगर कोई काम किया है तो देश के यशस्वी हमारे लौहपुरुष आदरणीय हमारे गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह जी ने कमिटमेंट के साथ जो काम किया, मैं देश के इतिहास में आज तक ऐसा नहीं देखा हूँ।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय मंत्री जी, खाद नई मिलत है, तेकर मा बात करा।

श्री रामविचार नेताम :- देश का इतिहास बन गया और जिन्होंने कमिटमेंट के साथ काम किया। आदरणीय अध्यक्ष जी, आपने 15 साल इस प्रदेश की सेवा की। जिस प्रकार से आप गांव, गरीब, किसान, मजदूर, नौजवान, बच्चे, बुजुर्ग, उन माताओं, बहनों की जो सेवा किया, सबसे अधिक अगर इमोशनल अटैचमेंट रहा तो मैंने आपकी नजरों में झांककर के देखा है, दिल को देखा है कि आपमें बस्तर के लिये कितनी तड़प थी, कितनी पीड़ा थी। वहां के पेड़-पौधे, वहां के महुआ के फूल के बारे में आप जिक्र करते थे। वहां के साल-सागौन के पेड़ के बारे में जिक्र करते थे। वहां के लोगों की सादगी के बारे में जिक्र करते हुए आपने जो सेवा की है, वहां के गरीब को आगे लाने का जो प्रयास किया। आप उस पीड़ा को समझते हैं। इसको देखते हुए हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी ने इस संकल्प के साथ इस योजना की शुरुआत इसीलिए की। प्रधानमंत्री जी आपके रहते हुए दंतेवाड़ा में आये, एजुकेशन हब को देखे, बच्चों से बात किए, ट्राईबल में उनको देखकर, उनको भी कितनी ललक होती है। जीवन का सपना होता है कि कोई नेता, कोई मंत्री, कोई विधायक, कोई सांसद, हमारे बीच में आकर के बात करे। मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री जी की तो बात ही अलग है। उसके लिए तो उनके सामने भगवान सक्षात पहुँचते हैं ऐसा महसूस होता है और मैं समझता हूँ कि आज के समय में भगवान तो हम लोगों ने नहीं देखा है लेकिन जो काम करके दिखाते हैं, करते हैं उसी को असली भगवान मानते हैं। आज हमारे भगवान के स्वरूप ही आप सबने जो काम किया है, देश के प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आदरणीय अमित शाह जी ने जो काम किया है, हमारा यह समाज, हमारा पूरा प्रभावित क्षेत्र यह कभी भूला नहीं सकता, उसको सदियों तक याद रखेगा, दिल में संजोकर रखेगा कि कोई ऐसा फरिश्ता आया जो हम लोगों को इस नारकीय जिंदगी जीने से अन्याय-अत्याचार सहते-सहते अपनी बहन-बेटियों को अपने सामने उनकी इज्जत लूटते हुए देखते हुए, उनका कत्लेआम देखते हुए, उनको आग में जलते हुए देखते हुए, वह उस चीज को एक तरफ देखता है और दूसरी तरफ उसकी खुशियां दिखाई देती है कि आज उन बस्तर के सुदूर अंचल में उससे

मुक्ति मिले । आज नक्सलियों से जो उनको आजादी मिली है, मैं समझता हूँ कि इससे बड़ी खुशी उसको जिंदगी में कुछ नहीं हो सकता, कुछ भी नहीं हो सकता । (मेजों की थपथपाहट) और यह खुशियां देने का, यह मुस्कान देने का, यह आजादी की सांस लेने का अगर यह अवसर मिला है तो भारतीय जनता पार्टी की, हमारे डबल इंजन की सरकार की देन है, यह डबल इंजन सरकार की देन है । (मेजों की थपथपाहट) इस सरकार ने आज इतना सपना संजोकर आज क्या बस्तर, क्या सुदूर अंचल सरगुजा है, बाकी जगह है, कई जगह हम लोगों ने ईमानदारी से काम किया है ।

श्री रामकुमार यादव :- साहब, ओ खातु-बीज ला कौन इंजन हा दिही ।

श्री रामविचार नेताम :- माननीय सभापति महोदय, आज इतने कम समय में हेल्थ सेक्टर में इतने सारे काम हुए हैं, इतने सारे काम हो रहे हैं । आज 5-5 नए मेडिकल कॉलेज, 5-5 मेडिकल कॉलेज की स्वीकृति जशपुर में, मनेंद्रगढ़ में, कवर्धा में। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, डॉ. साहब, आपके यहां भी एक मेडिकल कॉलेज की स्वीकृति हुई । दंतेवाड़ा, हमारे दंतेवाड़ा के हीरो । जब हम बस्तर का नाम लेते हैं तो स्वर्गीय हमारे बस्तर टाड़गर, हमारे महेंद्र कर्मा जी का नाम हम कैसे छोड़ सकते हैं ? राजनीति में ऐसे बिरले होते हैं, ऐसे बिरले कद्दावर नेता होते हैं । हम स्वर्गीय बलिराम जी को कैसे भूल सकते हैं ? जिनका त्याग, तपस्या बस्तर क्षेत्र के लिए, उनके विकास के लिए, उनकी बेहतरी के लिए जो काम किया, नक्सलियों के खिलाफ जो लड़ते-लड़ते और उनके सपने को साकार करने के लिए निश्चित ही आज जहाँ भी होंगे, आज उनकी आत्मा जो है, ठंडक होती होगी । वह देखते होंगे कि छत्तीसगढ़ में आज वास्तव में नया सवेरा आया है, शुरुआत हुई, नया इतिहास लिखने का, गढ़ने का समय है और मैं समझता हूँ, मैं इसीलिये निवेदन कर रहा हूँ कि साथियों, यह छत्तीसगढ़ हमारा और आपका है । हम सबको इसको मिल जुलकर बहुत आगे ले जाना है, हमें बहुत कुछ कायम करना है। ऐसा हो सकता है कि हममें कुछ कमियां होंगी, हम सरकार हैं, हमारी सरकार काम कर रही है कोई काम करने में किससे गलती नहीं होती है, हममें कुछ कमियां हो सकती हैं, लेकिन हमारी कोई दुर्भावना नहीं है। आपके जैसे, आपकी सरकार में दुर्भावना थी। हमारी सरकार वैसी दुर्भावना वाली नहीं है। हमारे आदरणीय मुख्यमंत्री जी तो देव तुल्य हैं। एक तरह से जैसे कहते हैं उन्हें कुछ भी कहिये, कुछ भी करिये, आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी आपका भी मैं बहुत सम्मान करता हूँ, आपका सदन भी सम्मान करता है। तो ऐसे आप दोनों की जोड़ी का कहना ही नहीं है। आप तीनों की जोड़ी है और शायद ही ऐसा संयोग मिलता है कि यहां पर तीन देव बैठे हुए हैं ब्रम्हा, विष्णु और महेश। (मेजों की थपथपाहट) अब तीनों देव के रहते हुए यहां पर अविश्वास का प्रस्ताव आना, हम अपने आप में बड़े पश्चाताप में पड़े हैं मैं यह सोच रहा हूँ कि यह कहां से आ गया ? उसमें कोई न कोई एक दुर्योधन तो है। (हंसी) वह दुर्योधन बीच-बीच में आकर मति को भ्रष्ट करता है। खेल के सेक्टर में बहुत आमूलचूल परिवर्तन हुए और काम हुए हैं। यहां पर 14 नर्सिंग कॉलेज हैं...

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां दुर्योधन नहीं हैं यहां सब विदुर लोग बैठे हैं।

श्री रामविचार नेताम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां पर एक होम्योपैथी कॉलेज भी खुला है और यहां पर 7 फिजियोथैरेपी कॉलेज हैं। यहां पर 14 नर्सिंग कॉलेज हैं। यहां फिजियोथैरेपी कॉलेज के साथ सुपर स्पेशियलिटी जो हॉस्पिटल हैं, वह बिलासपुर और जगदलपुर में चालू हो गया है। आदरणीय नेता जी, आपने यह प्रश्न किया था कि उस सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल का क्या हुआ? भाई, वह चालू हो गया है। जब हमारे देश के प्रधानमंत्री और गृहमंत्री आये थे, उस समय यह सब चालू हो गया है। आदरणीय दलेश्वर जी आप बहुत अच्छे इंसान हैं। लेकिन शैतानों के बीच में रहकर, कभी-कभी आदत, मुंह से कुछ निकल जाता है तो यह स्वाभाविक है कि संगति का असर तो पड़ना ही है। बांस, फांस और मिश्री।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने दुर्योधन का नाम लिया, लेकिन मैंने रहमान डकैत का नाम बताया था, आपने उसका नाम नहीं लिया।

श्री रामविचार नेताम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके सौजन्य से वहां भेलपुरी भी बन रही है। उसे झालमुड़ी भी कहते हैं, लेकिन हम लोग भेलपुरी भी बोलते हैं। आप लोग सुन लीजिए, मैं तो रास्ते से जा रहा था, मैं तो भेलपुरी खा रहा था, सरकार के काम गिना रहा था। तुमको मिर्ची लगी तो मैं क्या करूं। (हंसी) हम क्या करें, यहां हम तो अपना काम कर रहे हैं। यहां पर मैं अपनी सरकार की उपलब्धियों को बताऊं, तो आपके चक्कर में हम क्यों फंसे? आप यह बनाकर, आप फंस ही गये हैं। अब आप फंस गये हैं तो इससे कैसे निकलेंगे? इससे निकलने का एक ही तरीका है, आप क्षमा मांगिये और इसे वापस लीजिए। इसके अलावा इसमें कुछ नहीं है। प्रदेश की जनता आपको देख रही है। आपने जो अविश्वास का प्रस्ताव रखा है, हम आपकी पूरी पोल खोलेंगे। हम केवल पोल नहीं, आज जो ढोल है हमारे सभी पूर्व वक्ताओं ने उसकी पोल तो खोल ही दी है।

श्री रामकुमार यादव :- 300 रुपये के खातू ला 900 रुपये में लेवत हन।

श्री रामविचार नेताम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसलिए इसमें बहुत सारी बातें हैं।

अध्यक्ष महोदय :- अब आप समाप्त करिये।

श्री रामविचार नेताम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसलिए इसमें बहुत सारी बातें हैं। आदरणीय प्रधानमंत्री जी के कर कमलों के द्वारा इस नवीन विधान सभा, पवित्र सदन, छत्तीसगढ़ के लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर का उद्घाटन हुआ और आपके नेतृत्व में इतना अच्छा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रधानमंत्री जी ने जो सीख दी है, जो संदेश दिया है, हम जनता के प्रति पूरी तरह से ईमानदारी के साथ हम उस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी ने यहां के ऐतिहासिक स्मारक का, शहीद वीर नारायण सिंह जी के स्मारक का, म्यूजियम का जिस प्रकार से अवलोकन किया, उद्घाटन किया, यह हमारे छत्तीसगढ़ के लिए एक इतिहास बना। यह स्मारक ऐसा बना है, जहां पूरे देश के बाकी राज्य से भी

लोग आ रहे हैं, दिल्ली से भी अलग-अलग टीमों आ रही हैं। सारे सोशल मीडिया से लेकर प्रेस मीडिया के लोग आ रहे हैं। बहुत सारी इतिहासकार भी वहां आ रहे हैं। इस प्रकार की उपलब्धि हम लोगों ने यहां पर हासिल की है, बहुत सारी उपलब्धियां गिनाए हैं।

अध्यक्ष महोदय, आदरणीय दलेश्वर जी ने खाद और अन्य समस्याओं के बारे में बातें की हैं। मैं आपसे यही निवेदन करना चाहता हूं, कम समय में मैं बता दूं। जहां तक आपने उर्वरक के बारे में बहुत सारे प्रश्न किये हैं, मैं समझता हूं कि अभी तक के इतिहास में अमानक उर्वरक या अनियमित उर्वरक बेचने के मामले में जितनी अधिक कार्रवाई हुई है, उतनी कभी नहीं हुई। सही तरीके से किसानों की मदद नहीं कर रहे हैं, किसानों का शोषण कर रहे हैं, हमने उसके खिलाफ कार्रवाई की है। अभी तक 2025 में हमने 44 लोगों के ऊपर कार्रवाई की थी और 2026 में 451 लोगों के ऊपर हमने कार्रवाई की है। इसी प्रकार हमने 7 लोगों के ऊपर एफ.आई.आर. दर्ज करवाया है, न्यायालय में 4 मामले प्रस्तुत हैं, 56 प्रतिशत वृद्धि है। हमने अभी तक 10 लोगों का लायसेंस निरस्त किया है, 98 जब्त की हुई है। इस प्रकार 97 लोगों के लायसेंस निलंबित करने की कार्रवाई चल रही है। 143 लोगों पर विक्रय पर प्रतिबंध लगाए गए हैं। हमने पूरी ईमानदारी के साथ कार्रवाई की है और विभाग उसमें लगातार सक्रियता के साथ काम कर रहा है। हमारा संकल्प गुणवत्तापूर्ण उर्वरक, सुरक्षित खेती, इसी में है किसानों की समृद्धि। कठोर निगरानी, नियम का पालन शक्ति से हो, किसानों के हित की सुरक्षा के लिए सशक्त कृषि समृद्ध छत्तीसगढ़ के लिए हमारा विभाग, हमारी सरकार काम कर रही है।

अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने बहुत सारी उपलब्धियां हासिल की हैं। मैं समझता हूं कि समय-समय पर हम लोगों ने विधान सभा के फ्लोर में भी बहुत सारी बातों को रखा है। मैं आपसे यही निवेदन करना चाहता हूं कि आदरणीय मुख्यमंत्री जी की यही सोच है, उस सोच को रेखांकित करते हुए मैं अपनी बात को समाप्त करूंगा-

“राम राज्य का संकल्प लिए विश्व गुरु बन रहा हिन्दुस्तान है।

छत्तीसगढ़ का वैभव बढ़े, अटल जी का यह वरदान है।

जन-जन हो खुशहाल यहां, विष्णु का बस यही अरमान है,

विष्णु का यही अरमान है। (मेजों की थपथपाहट)

मैं समझता हूं कि बहुत सारी बातें हो गई हैं, बहुत सारे वक्ता हैं। मैं इतना ही कहते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, अगर इसके बाद खाद की समस्या का हल न हो तो इनको स्टेट आफ होर्मुज भेजने के लिए ईरान भेजने का इंतजाम करो। ये वहां जाकर यहां लायेंगे। आप ईरान जाओ और वहां से बम, गोला और बारूद के बीच से जहाज को लेकर आओ।

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री मंत्रिमण्डल के अविश्वास प्रस्ताव की चर्चा में 8 सदस्य ही बोल पाये हैं। मेरे पास जो नाम है, उनमें से 16 नाम बाकी हैं। एक घंटे का एवरेज चल रहा है इसके हिसाब से 16 घंटा और लगेगा। अभी रात के 8.00 बज गये हैं। कल सुबह 10.00 बजे तक चर्चा होगी, जैसा अभी चल रहा है। यदि सबने कृपा नहीं की तो कल सुबह 10.00 बजे तक लगातार बोलने के लिए तैयार रहिये। मैं तैयार हूँ, मैं अपनी बात बता देता हूँ। मैं कहीं जाऊंगा नहीं। मगर अभी प्रमुख रूप से 14 वक्ता बाकी हैं। तो मेरा यही एक आग्रह है कि बहुत सारी बातें आ गई हैं। मुख्य-मुख्य बिन्दु आ गए हैं। अब इशारे में संक्षिप्त में अपनी बात रखेंगे तो आपका भी समय बचेगा और दर्शक दीर्घा में जो बैठे हैं, उसमें थोड़ी देर बार कोई बचेंगे नहीं, हम ही हम रहेंगे। इसीलिए 2-3 घंटे में समेट लें तो हम सबके लिए बेहतर होगा।

सदन को सूचना

अध्यक्ष महोदय :- रात्रिकालीन भोजन की व्यवस्था माननीय सदस्यों के लिए लॉबी स्थित कक्षा में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर पत्रकार कक्ष के समीप भोजन कक्ष में व्यवस्था की गई है। कृपया सुविधा अनुसार भोजन करते रहें। श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी।

मंत्रि परिषद् के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा (क्रमशः)

श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी (भानुप्रतापपुर) :- अध्यक्ष महोदय जी, अभी-अभी हमारे मंत्री और बड़े भईया के विभागों से चालू करती हूँ। अभी उनसे बहुत सारी बातें सुनने को मिली है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं केवल विपक्ष के विधायक के रूप में नहीं, बल्कि उन लाखों आदिवासियों और विद्यार्थियों, किसानों महिलाओं और पशुपालकों की आवाज बनकर सदन में खड़ी हूँ, जिनके उम्मीदों के साथ सरकार ने अन्याय किया है। सरकार हर मंच से सुशासन का दावा करती है। लेकिन प्रदेश की वास्तविक तस्वीर इससे बिल्कुल अलग दिखाई देती है। यदि सरकार का दावा सही है तो फिर आदिवासियों के साथ अन्याय क्यों हो रहा है ? आश्रम, छात्रावासों की दुर्दशा क्यों है ? किसान खाद के लिए क्यों भटक रहे हैं ? हमारी बेटियां छात्रावासों में सुरक्षित क्यों नहीं हैं ? फसल बीमा का पैसा किसानों के पास समय पर क्यों नहीं पहुंच पा रहा है ? पेसा कानून इसलिए बनाया गया था ताकि अनुसूचित क्षेत्रों में ग्राम सभा सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था हो। ग्राम सभा की अनुमति के बिना भूमि अधिग्रहण चाहे खनन हो, उद्योग हो, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन और विस्थापन जैसे निर्णय न लिया जा सके। परन्तु यह दुर्भाग्य की बात है कि छत्तीसगढ़ में स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत दिखाई दे रही है। सरकार ग्राम सभाओं को सशक्त करने के बजाय उन्हें केवल औपचारिकता बनाकर रख रही है। कई

स्थानों पर ग्राम सभाओं की वास्तविक सहमति के बिना उद्योगों, खनन प्रयोजनों तथा अन्य जितने भी विकास कार्य हैं, इन सबको आगे बढ़ाया जा रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आदिवासी समाज विकास का विरोधी नहीं है। वह ऐसा विकास चाहता है, जिसमें उसका सम्मान, उसकी संस्कृति और उसकी भूमि और उसके अधिकार सुरक्षित रहें। लेकिन अभी जो वर्तमान सरकार है, विकास के नाम पर उद्योपतियों और बड़े पूंजीपतियों के हितों को प्राथमिकता देते हुए दिखाई दे रही है। जहां एक ओर बड़ी-बड़ी कम्पनियों को प्राकृतिक संसाधनों तक पहुंच आसन बनाई जा रही है, वहीं दूसरी ओर हमारे आदिवासी परिवार अपनी पुश्तैनी भूमि, जंगल और आजीविका की सुरक्षा के लिए लगातार हमारे भाई-बहन संघर्ष कर रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय जी, प्रदेश के अनेक आश्रम और छात्रावास आज अपनी निर्धारित क्षमता से कहीं अधिक उस छात्रावास में बच्चों को रखने के लिए मजबूर हैं। इसका सीधा असर बच्चों के स्वास्थ्य, पढ़ाई और सुरक्षा पर पड़ रहा है। जो अनेक भवन हैं, जर्जर हो चुके हैं। बरसात के मौसम में जो छतें हैं, वह टपकती हैं। पूरे दीवारों में दरारें आ गई हैं और कई स्थानों पर भवन दुर्घटना का खतरा बना हुआ है। लगातार क्षेत्र में शिकायतें मिल रही हैं कि बच्चों को गुणवत्ताहीन भोजन दिया जा रहा है। कई छात्रावासों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं है। शौचालय अनुपयोगी हैं और बिजली की समस्या है। स्वास्थ्य सुविधाएं भी पर्याप्त नहीं हैं। क्या सरकार यह स्वीकार करती है कि आदिवासी बच्चों को आज भी सम्मानजनक आवासीय सुविधा उपलब्ध नहीं हो पा रही है? यह अत्यंत पीड़ादायक विषय है। समय-समय पर आदिवासी कन्या छात्रावासों में यौन शोषण और उत्पीड़न की घटनाएं सामने आई हैं। यह केवल कानून व्यवस्था का विषय नहीं है, बल्कि सरकार की जवाबदेही का प्रश्न है। जब एक आदिवासी बेटी छात्रावास में भी सुरक्षित नहीं है, तो सरकार की सारी योजनाएं और दावे खोखले प्रतीत होते हैं। प्रदेश के अनेक आश्रम और छात्रावास आज भी नियमित अधीक्षकों के बिना संचालित हो रहे हैं। जहां नियमित अधीक्षक नहीं हैं, वहां अनुशासन, सुरक्षा और प्रशासन सभी प्रभावित होते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय जी, आज प्रदेश का किसान खाद के लिए भटक रहा है और सरकार ने किसानों के हितों की बड़ी-बड़ी बातें की थीं। लेकिन वास्तविकता यह है कि खेती के सबसे महत्वपूर्ण समय पर किसानों को पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। किसान घंटों लाइन में खड़े हैं और कई स्थानों पर उन्हें निर्धारित कम मात्रा में खाद दी जा रही है। कई किसानों को तो खाली हाथ लौटना पड़ रहा है। क्या यही अन्नदाता का सम्मान है? प्रदेश में नकली और अमानक खाद-बीज की बिक्री से भी हमारे किसानों को भारी नुकसान पहुंचा है। फसल खराब हो रहा है, उत्पादन घट रहा है और आज किसान कर्ज में डूब रहा है। माननीय अध्यक्ष महोदय जी, किसान समय पर प्रीमियम भरता है। लेकिन जब नुकसान होता है तो मुआवजा नहीं मिलता या बहुत कम मिलता है। निजी बीमा कंपनियां अपनी मनमानी कर रही हैं, क्योंकि सर्वे में पारदर्शिता नहीं है और कई किसानों के

दावे कई महीनों तक लंबित रहते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय जी, अभी-अभी की घटना है, मंत्री जी नहीं हैं क्या?

श्री केदार कश्यप :- हम सुन रहे हैं।

श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी :- यह कांकेर जिला का तालाकुरूर है। यह 1 करोड़ 14 लाख 47 हजार का धान घोटाला हुआ है। तालाकुरूर, कांकेर जिले का तालाकुरूर। उसमें क्या कार्रवाई हो रहा है, अभी-अभी दो दिन पहले की की घटना है। यह केवल धान का मामला नहीं है, बल्कि किसानों की पसीने की कमाई, जनता के विश्वास और शासन-प्रशासन की जवाबदेही का प्रश्न है। तो इस पर भी मंत्री जी थोड़ा सा जांच करवा लेते। माननीय अध्यक्ष महोदय जी, प्रदेश में बड़ी संख्या में गौवंश, अन्य मवेशी सड़कों पर घूम रहे हैं। इससे सड़क दुर्घटनाएं भी बढ़ रही हैं, किसानों की फसलें भी नष्ट हो रही हैं और गौशालाओं की स्थिति भी संतोषजनक नहीं है। कई स्थानों पर चारा-पानी और चिकित्सा सुविधाओं का अभाव है। माननीय अध्यक्ष महोदय जी, सरकार का मूल्यांकन उसके विज्ञापनों से नहीं, बल्कि उसके कार्यों से होता है। यदि आदिवासी समाज और आदिवासी छात्रावास असुरक्षित हैं, किसान खाद के लिए भटक रहा है, उन्हें फसल बीमा का लाभ नहीं मिल रहा है और गौवंश सड़कों पर बेसहारा घूम रहे हैं, इस विषय पर सरकार को आत्म-मंथन करना चाहिए। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आज इस सदन के माध्यम से महिला एवं बाल विकास विभाग और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की बदहाल स्थिति पर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि जो विभाग समाज के सबसे कमजोर वर्ग-माताओं, बहनों, बच्चों, दिव्यांगजनों, निराश्रित वृद्धों और विधवाओं के कल्याण के लिए बनाया गया है, वही विभाग आज अव्यवस्था, लापरवाही और भ्रष्टाचार का प्रतीक बनता जा रहा है। सरकार संवेदनशील शासन का दावा करती है, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के लाखों हितग्राही समय पर पेंशन पाने के लिए भटक रहे हैं। वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन, दिव्यांग पेंशन और अन्य सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के अंतर्गत कई महीनों से राशि का भुगतान नहीं हो पाता है। पेंशनरों को पिछले चार महीनों से भुगतान नहीं मिला है। उन्हें 1500 रुपये की जगह केवल 1000 रुपये दिए जा रहे हैं। इसी प्रकार सिलेंडर पर 500 रुपये की सब्सिडी देने का जो वादा था, उसे भी नहीं दिया जा रहा है। जिन लोगों के लिए पेंशन आजीविका का एकमात्र सहारा है, वे आज बैंक और पंचायत के चक्कर काटने को मजबूर हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार ने महतारी वंदन योजना को महिलाओं के सम्मान और आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम बताया था, लेकिन वास्तविकता यह है कि अनेक पात्र महिलाओं को इस योजना का लाभ नहीं मिल रहा है और बड़ी संख्या में आवेदन लंबित हैं। कई महिलाओं के नाम सूची से बाहर हैं। तकनीकी त्रुटियों और दस्तावेजों की कमी के नाम पर महिलाओं को लगातार परेशान किया जा रहा है। सरकार यह बताये कि कितनी पात्र महिलाएँ आज भी इस योजना

से वंचित हैं, कितने आवेदन लंबित हैं तथा पात्र महिलाओं को लाभ दिलाने के लिए क्या कोई विशेष अभियान चलाया गया?

श्री अजय चन्द्राकर :- भाभी जी, उसको आप टेबल करवा दीजिये, आपकी पूरी भावनाओं का सरकार सम्मान करेगी, यह मोदी की गारंटी है।

श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी :- बिल्कुल-बिल्कुल।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप उसे टेबल में रख दीजिये, उसका पूरा सम्मान होगा, यह मोदी की गारंटी में शामिल है। आप इसे नोट कर लीजिये।

श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, घोषणाएँ करना आसान है, लेकिन उनका लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना ही सुशासन की असली कसौटी है। महिला एवं बाल विकास विभाग में संचालित केंद्रीय योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर भी गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। विभिन्न योजनाओं की राशि के उपयोग में पारदर्शिता का अभाव दिखाई देता है। अनेक स्थानों पर हितग्राहियों तक योजनाओं का पूरा लाभ नहीं पहुँच रहा है, जबकि कागजों पर केवल खर्च दर्शाया जा रहा है। जनता का पैसा जनता के हित में ही खर्च होना चाहिए, न कि फाइलों और भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ना चाहिए। साड़ियों की खरीद के लिए भी सरकारी एजेंसी पर विश्वास नहीं था, बल्कि जशपुर की एक दुकान से खरीदी की गई, जिसमें भी भ्रष्टाचार हुआ है। माननीय अध्यक्ष महोदय, राज्य के हजारों आंगनबाड़ी केंद्रों की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। आज भी अनेक केन्द्रों का अपना भवन नहीं है और वे किराये के भवन में संचालन कर रहे हैं तो कहीं जर्जर भवन में छोटे-छोटे बच्चों और गर्भवती माताओं की जान जोखिम में डालकर वहां सेवाएँ दी जा रही हैं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करिये। 12 मिनट हो गये हैं।

श्री सावित्री मंडावी :- अध्यक्ष महोदय, स्वच्छ पेयजल नहीं है, बिजली नहीं है, कई स्थानों पर बैठने की समुचित व्यवस्था नहीं है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता वर्षों से कम मानदेय में काम कर रही हैं, वे पोषण अभियान, टीकाकरण, सर्वेक्षण, जनगणना, चुनाव और अनेक अतिरिक्त कार्यों का दायित्व निभाती हैं, लेकिन उनका जो सम्मानजनक पारिश्रमिक है, वह उनको उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। सरकार उनके मानदेय में वृद्धि करेगी, क्या उन्हें सामाजिक सुरक्षा और अन्य सुविधायें उपलब्ध करायेगी? माननीय अध्यक्ष महोदय, कूपोषण के खिलाफ सरकार बड़े-बड़े दावे करती है, लेकिन जो हमारा बस्तर है जो आदिवासी दूरस्थ क्षेत्र है, आज भी कूपोषण की समस्या गंभीर बनी हुई है। पूरक पोषण आहार की गुणवत्ता में लगातार प्रश्न उठते रहे हैं, यदि योजनाएँ सफल हैं तो कूपोषण के आंकड़े क्यों चिन्ता के विषय बने हुये हैं? माननीय अध्यक्ष महोदय जी, महिलाओं और बालिकाओं की सुरक्षा सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिये, लेकिन महिला सुरक्षा, बाल संरक्षण, बाल विवाह की रोकथाम, बाल श्रमिक उन्मूलन, किशोरियों के स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों में अपेक्षित परिणाम दिखाई नहीं देते हैं। केवल

योजनाओं की घोषणा पर्याप्त नहीं है, उनका प्रभावी क्रियान्वयन भी उतना ही आवश्यक है। माननीय अध्यक्ष महोदय जी, सरकार का मूल्यांकन उसके विज्ञापनों से नहीं, बल्कि उस अंतिम महिला वृद्धि, दिव्यांग बच्चे के चेहरे की मुस्कान से होता है, जिसे सरकारी योजनाओं का वास्तविक लाभ मिलता है। दुर्भाग्य की बात है, आज भी प्रदेश का गरीब, बुजुर्ग, विधवा, दिव्यांग, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और आम महिलायें स्वयं को उपेक्षित महसूस कर रही हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- सभी सदस्यों से मेरा आग्रह है कि अविश्वास प्रस्ताव के जो 151 पेज का आरोप पत्र हैं, उस पर सीमित रहे। आरोप पत्र पर चर्चा करें। आरोप जो लगाये हैं, उसका जवाब दें तो बेहतर होगा। अन्य विषयों पर ज्यादा चर्चा करने की जरूरत नहीं है। श्री राजेश मूणत जी। (मेजों की थपथपाहट)

श्री राजेश मूणत (रायपुर पश्चिम) :- अध्यक्ष महोदय, विपक्ष के द्वारा आदरणीय मुख्यमंत्री विष्णुदेव सरकार के खिलाफ मैं जो अविश्वास प्रस्ताव लाया है, यह लगभग 157 पेज का अविश्वास प्रस्ताव है, जिसमें न कोई तथ्य है और न ही कोई हकीकत है। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद यह अविश्वास प्रस्ताव लगभग 5 वीं बार आ रहा है। अध्यक्ष महोदय, इस अविश्वास प्रस्ताव में सरकार के किसी भी मंत्री के खिलाफ दस्तावेज के साथ कोई आरोप नहीं है, कोई तथ्यात्मक चीज नहीं है, पॉलिटिकल विजन खड़ा करने की दृष्टि से, वातावरण बनाने के लिये, थोथा आरोपपत्र प्रस्तुत किया गया है। अध्यक्ष महोदय, आरोप पत्र के ऊपर डिटेल्स बताई गई हैं, माननीय नेता प्रतिपक्ष ने पूरी बात रखी है, अजय चन्द्राकर जी ने बहुत सारी बातों का उत्तर भी दिया है, गृह मंत्री माननीय विजय शर्मा जी ने डिटेल्स में अपनी बातें रखी हैं, मैं उन सब बातों को छोड़कर बात करना चाहता हूँ। अध्यक्ष महोदय, अगर आप आरोप पत्र प्रस्तुत कर रहे हैं तो किसी मंत्री के खिलाफ मैं, किसी विभाग के खिलाफ मैं, कोई आरोप है? आपने कोई दस्तावेज प्रस्तुत किये हैं? आरोप लगाते समय मुंहजबानी बातचीत करके छत्तीसगढ़ विजन के ऊपर बात करने की बात आपने कही है। हम जितने आरोपों इधर से या उधर से बातचीत कर रहे हैं, आरोप में सब जगह वही बातें रिपीट हो रही हैं। मैं आपके माध्यम से पूछना चाहता हूँ, पूर्व सरकार जिनका 5 साल का कार्यकाल रहा है, जिसने छत्तीसगढ़ को [xx] का अड्डा बना करके रखा था, गिरोहबंद तरीके से छत्तीसगढ़ को कैसे [xx] जाए, गिरोह बना करके योजनाबद्ध तरीके से जिसने छत्तीसगढ़ को [xx] का काम किया, वह सरकार के कितने नुमाइंदे लोग हैं? सरकार का एक मंत्री कटघरे के अंदर खड़ा हो गया, जेल की यात्रा कर चुका है। डॉ. रमन सिंह के नेतृत्व में 15 साल सरकार रही, 15 साल मंत्रिमंडल के अंदर एक सदस्य के ऊपर आरोप-प्रत्यारोप लेकर के नहीं आ पाए। आपने 5 साल अपनी सरकार चलाई, आप आरोप-प्रत्यारोप लगा पाए, लेकिन एक सरकार के, एक मंत्री, एक विधायक के खिलाफ आप ऐसा कोई चालान प्रस्तुत नहीं कर पाए जिसमें भ्रष्टाचार की बू आती हो।

आखिर क्या है? जो चीजें हैं, आप डेवलपमेंट की बातचीत कर लें। आज मैंने नेता प्रतिपक्ष जी का भाषण पढ़ा, विधानसभा के बारे में कहा कहीं पानी चूह रही थी। स्वाभाविक रूप से विधानसभा बनी, विधानसभा में कहीं कमी-बेसी होगी। लेकिन आप अपने कार्यकाल में कहां तक पहुंचे हैं? यह नया रायपुर है, जो पूरे देश के अंदर चर्चा का विषय बना। मैगजीन के अंदर बढ़िया अपनी फोटो छपवाते हैं, दिल्ली में होर्डिंग लगाते हैं लेकिन नया रायपुर में 5 साल में कितना पैसा खर्च किया? निकालकर देख लें। मंत्री लोग मंत्रालय की बिल्डिंग के अंदर जाते थे तो मंत्रालय की बिल्डिंग में नहीं बैठते थे।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष जी, मूणत जी ज्यादा लोग नहीं हैं, धीरे बोलने पर सब सुनेंगे। इतना जोर से क्यों बोल रहे हैं ?

श्री राजेश मूणत :- दादी, आप हमारे प्रेमी हो।

वित्त मंत्री (श्री ओ.पी.चौधरी) :- आप तो धीरे वाले हो।

श्री राजेश मूणत :- नहीं, वे तो धीरे-धीरे वाले हैं। वह फाइल लाकर देते थे, हम पढ़ ही नहीं पाते थे, साइन कर देते थे, माल लेके कोई चला गया, अपन जबरदस्ती के भुगतें। ना उधव का लेना ना माधव का देना।

श्री सुनील कुमार सोनी :- कवासी जी सहमति दे रहे हैं।

श्री राजेश मूणत :- नया रायपुर में क्या किया? एक योजना बता दें। नया रायपुर का इतना शानदार इतिहास खड़ा हुआ, लेकिन सिर्फ फोटो छपाने की इच्छा थी। फोटो तो छपती थी लेकिन मंत्रालय की वाशरूम में जाकर के लोग कहते थे कितनी बदबू आ रही है, उस वाशरूम का रिपेयरिंग तक नहीं करा पाते थे।

श्री रामकुमार यादव :- तुमन स्कूल नई बना सकव तेन वाशरूम के बात करत हव।

श्री राजेश मूणत :- आपने आत्मानंद स्कूल बनाया है, आत्मानंद स्कूल के नाम पर क्या बनाया है, चलिए रायपुर का दिखाता हूं।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, व्ही. पी. पुजारी स्कूल की इतनी बार मरम्मत हुई और इतनी फंड से मरम्मत हुई कि व्ही. पी. पुजारी स्कूल बोल दिए- भैया मेरे को बंद कर दीजिए। इतने फंड से इतनी मरम्मत हुई, हम लोग देखने चेक करने गए थे।

श्री राजेश मूणत :- माननीय, अध्यक्ष महोदय, नया रायपुर डेवलपमेंट के नाम पर जीरो। आपने अपनी हठधर्मिता के कारण 5 साल बंद करके रख दिया। केंद्र सरकार व्यवस्था के अंदर काम कर रही थी, कोरोनाकाल आ गया, आपने घोषणा कर दी, नया रायपुर के सब काम रोक दिया जाएं। कभी किसी ने इस बात की चिंता की, आप काम रोक रहे हो उसकी लागत कितनी बढ़ेगी? उसका बर्डन किसके ऊपर आएगा? उसकी रिस्पॉसिबिलिटी कौन लेगा? आपने खाली सुर्खियां बटोरने के लिए paper में छपने के लिए एक लाइन का संदेश दे दिया कि नया रायपुर का विकास कार्य रोक दिया जाए। क्या दूरदृष्टि थी?

स्मार्ट सिटी के नाम पर पैसा आया, [xx] करके चले गए। आप इस नया रायपुर शहर के अंदर एक प्रोजेक्ट बता दीजिए कि 5 साल में पूर्ण किया। कल माननीय अजय चंद्राकर जी बातचीत कर रहे थे, महात्मा गांधी के नाम पर सेवाग्राम बना रहे हैं। ना कोई विजन, ना कोई सोच, ना कोई कल्पना है। कौन सा डिपार्टमेंट उसका संचालन करेगा, कौन क्या करेगा? उसका सेटअप कहां से आएगा? उसकी आउटसोर्सिंग से करेंगे? डिपार्टमेंट प्रस्ताव लेकर आया कौन सा डिपार्टमेंट लाया ? कल नोडल एजेंसी नया रायपुर विकास डेव्हलपमेंट कॉर्पोरेशन था, वह उसकी बिल्डिंग बनाएगा, लेकिन चलाएगा कौन? उनका संचालन कौन करेगा? आपके कार्यकाल के अंदर आपकी दूरदृष्टि नहीं थी। कोई टेक्निकल यूनिवर्सिटी नहीं आ पाई। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद दूंगा कि आने वाली पीढ़ी को आगे कुछ करने के लिए आप निफ्ट जैसे संस्थान लेकर आ रहे हैं और पुरानी विधान सभा के अंदर निफ्ट चालू होने वाला है। (मेजों की थपथपाहट) यह छत्तीसगढ़ की उपलब्धि का सबसे बड़ा उदाहरण है। आप कल्पना करें कि आपने क्या किया? यह छोटी-मोटी बात नहीं है कि आने वाली पीढ़ी के लिए हम हजार सीटों का नालंदा परिसर बना रहे हैं। पूरे छत्तीसगढ़ के अंदर यह किसने कल्पना की थी? आप आपके कार्यकाल का बताइये। आपके समय चौपाटी, शहर में अवैध कब्जे, भू-माफियाओं का राज, रेती खनन, कौन-कौन सी वसूली, महादेव ऐप था और माननीय पूर्व मुख्यमंत्री ने ट्वीट किया है कि महादेव ऐप के ऊपर जितनी चर्चा करना चाहे कर लें। महादेव ऐप के संरक्षण से पूर्व मुख्यमंत्री और उनकी टीम बच नहीं सकती। छत्तीसगढ़ के अंदर महादेव ऐप का सबसे बड़ा आतंक का अड्डा अगर किसी ने बनाया है तो पूर्व मुख्यमंत्री के संरक्षण के अंदर छत्तीसगढ़ में चला है।

श्री विक्रम मण्डावी :- राजेश भैया, महादेव ऐप का जो चीफ था, अभी कौन अरेस्ट हुआ? वह किस पार्टी से जुड़ा है?

श्री राजेश मूणत :- वह जिससे जुड़ा है, वह सौरभ कौन है? किसका है?

श्री विक्रम मण्डावी :- आप उसकी बात करें।

श्री राजेश मूणत :- आप यहां की बात कीजिये न। अपने घर में जो 5 साल बर्बाद किये, उसकी बात कीजिये न। वह तो अंदर आ गया।

श्री धर्मजीत सिंह :- कौन-कौन पार्टी से जुड़ा है नहीं, किसका माल किसके पास गया है, वह यह बोल रहे हैं। आप बात को समझ रहे हैं? वहां का माल कहां से निकला और कहां गया, उनका आशय यह है। पार्टी कोई भी हो सकती है।

श्री अजय चंद्राकर :- जांच में तो आया है कि कांग्रेस भवन में नाल आता था। बाकी क्या सच है, क्या गप है, वह तो जब फरार आदमी बोलेगा, तब समझ में आएगा।

श्री रामकुमार यादव :- हमन सुने रहेन कि वह तो तुहरो नाम घलो लेत रीहिस हे अउ जांच में सही पता चलही।

श्री राजेश मूणत :- यादव महाराज, प्रणाम। जय यादव, जय माधव। आप तो दूहने का काम करो, नोट गिनने चलो।

श्री रामकुमार यादव :- मैं तो सब ला दूह देहूँ।

श्री राजेश मूणत :- ज्यादा लगाने का ही नहीं।

श्री अजय चंद्राकर :- तोर जांच नहीं होथे, ध्यान रखे रहिबे न? तोर पास जतका कन 5-5 सौ के गड्डी के नोट देखे हस न, ओकर वीडियो हे, लेकिन ओहा ईडी से बाहर हे। (हंसी)

श्री रामकुमार यादव :- मैं सुने हो कि ओ चंपत राय के जतका माल हा तुहरे मेर आए हे।

श्री अजय चंद्राकर :- अच्छा, आप अविश्वास प्रस्ताव में एक बात आज सदन को बता दीजिए कि जो नोट की गड्डी आपके पास थी, वह टोटल कितने लाख या करोड़ की थी?

श्री रामकुमार यादव :- वइसने कतको कन हे। काबर बताहूँ? ओ सब ला मैं तोप के राखे हो। ए दरी ओला तुहरे खिलाफ निकालहूँ। चिंता मत करो।

श्री राजेश मूणत :- मोर भाई, अभी चिंता मत कर। माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर डेवलपमेंट विजन की बातचीत करें तो मुझे वह भी याद है कि जब छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ तो 3 साल तक किस प्रकार से पूर्व सरकार चली और 5 साल कैसे सरकार चली। बस्तर विजन की बात करें तो नक्सलिज्म से मुक्ति दिलाई। छोटा-मोटा अभियान नहीं था, छोटी सोच नहीं थी, छोटा विचार नहीं था। बस्तर के अंदर रहने वाले जिन लोगों ने उस चीज की बातचीत की और मैंने हाऊस में कई बार पूछा, आज फिर पूछता हूँ कि अगर नेता जी भाषण दें तो उसके पहले बताएं कि झीरम घाटी के जो दस्तावेज उनकी जेब में हैं, उसको आम जनता के बीच में लाकर दें। झीरम घाटी के हमले के वह दस्तावेज कहाँ गए? उन्होंने कहा था कि मेरे पास हैं। मेरी जेब में रखकर घूम रहे हैं। हमारे छत्तीसगढ़ के नेता शहीद हुए हैं, वह किसी राजनीतिक दल के नहीं थे। वह हमारे छत्तीसगढ़ महतारी के बेटे थे और मैंने कई बार हाऊस में भी कहा और जनता के बीच में भी कहा है। आप सिर्फ राजनीति करना आप जानते हैं। आप कभी संकल्प लेकर काम नहीं कर सकते। अगर आपकी संकल्प, दृढ़ इच्छा होती तो आज बस्तर अमन, चैन, शांति के साथ-साथ बढ़ता हुआ दिखता। आज भी हम किसकी बात करते हैं? अगर प्रयास जैसी संस्थाएं बस्तर के अंदर काम करती हैं, ओ.पी. चौधरी वहां पर रहकर जारंगा के अंदर बच्चों के लिए एक हब बना सकते हैं तो आपने 5 साल में वहां क्या किया? कोई एक सिंगल बड़ा काम बताना, जो आपने किया हो। क्या आपने वहां मेडिकल कॉलेज खोल दिया? क्या बच्चों के लिए आपने एजुकेशन हब खोल दिया? आपने कौन सा काम किया है? आपने जाति और समाज को बांटने का काम किया। आपने नक्सलवाद जिंदाबाद के नारे लगाए, देश के हजार टुकड़े हों, उसके नारे को आपने समर्थन दिया। आपका विजन क्या था? जब हम शांति के टापू की बात करते हैं तो वहां जातिवाद की बात होती है। बस्तर शांत प्रदेश होना चाहिए, उन्नति और प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए और यह भारतीय जनता

पार्टी की सरकार है, विष्णुदेव साय जी की सरकार है, इस सरकार में चिंता करने की जरूरत नहीं है। कोई माफिया नहीं पनप पायेगा और जो माफिया पनपने की कोशिश करेगा, वह जेल के अंदर जायेगा और उसको कोई रोक नहीं सकता। यह बात मान के चलना। आप कब तक जनता को गुमराह करोगे, बेवकूफ बनाओगे? बस्तर का जल, जंगल, जमीन, बस्तर के आदिवासियों का है और रहेगा, उसको कोई मिटा नहीं सकता, उसको कोई रोक नहीं सकता। लेकिन यह वोट की मनगढ़ंत कहानी कब तक चलेगी? अपनी राजनीतिक रोटी सेकने के लिए, विकास के नाम पर डेव्हलपमेंट नहीं हो सके, उसके लिए अपनी बातचीत करें। यहां बैठकर किस-किस की बातचीत करेंगे? जीवन की हकीकत यही है कि जब नया रायपुर की बातचीत करता हूं। स्मार्ट सिटी के नाम पर प्रदेश के दो स्थान, रायपुर और बिलासपुर को चिन्हित किया। नया रायपुर भी इस हिस्से में था। कम से कम 5000 करोड़ रुपये आया है। 450 करोड़ रुपये तो केवल रायपुर में पानी के लिए खर्च कर दिये और नाली पर नाली बनाये गये। एक वाटर लाइन के ऊपर दूसरी वाटर लाइन बना दिये गये। आपने पानी पहुंचाने के लिए व्यवस्था बनाई लेकिन पानी नहीं पहुंचा पाए। डेव्हलपमेंट कहां है? शहर के विकास के नाम पर पूर्व मुख्यमंत्री जी ने 2022 में रायपुर के तीन बड़े प्रोजेक्ट का भूमि पूजन किया। खारून रिवर फ्रंट का ना टेंडर हुआ, ना डी.पी.आर. बना, केवल भूमि पूजन कर दिया। शारदा चौक चौड़ीकरण के लिए नारियल फोड़ दिया। नारियल में पानी भी नहीं निकला। तेलीबांधा में वाई फ्लाईओवर का प्रोजेक्ट लाये। वह कहां है? आपने सिर्फ भूमि पूजन, वाह-वाही और पेपर बाजी की।

श्री अजय चन्द्राकर :- राजेश जी, रायपुर में कितने सारे फ्लाईओवर बन रहे थे, उसको गिनेंगे तो 100-200 का आंकड़ा पार हो जाएगा। 5 साल में इतनी घोषणा किये और इतनी जगह में पेपर में छपा है।

श्री राजेश मूणत :- माननीय, मैं आपकी बात में आगे इसीलिए बोलता हूं कि कुछ किया हो तो बताएं ना ? आप रायपुर जिले में कोई एक बड़ी उपलब्धि बता दें कि कोई बड़ी रोड बनाई हो? बड़े-बड़े भूमि पूजन हो गए लेकिन राजधानी के अंदर कोई एक काम किया हो तो बता दीजिये ? पूरी कांग्रेस पार्टी गिना दे कि 5 साल में आपने क्या किया ? अगर आपने कुछ एक काम किया है, तो बताइये ? आप मास्टर प्लान लेकर आए और पूरे भू-माफियाओं के साथ मिलकर मास्टर प्लान लाने का काम किए। भूपेश सरकार ने जो काम किया, उससे ओ.पी. चौधरी जी परेशान हो गए। वे ढाई साल से संशोधन कर-कर के पागल हो गए कि किसमें संशोधन करें? पानी के नीचे 400 एकड़ जमीन है, उसको रेसिडेंशियल घोषित कर दिए। गजब साहब। व्यक्तियों को बुला-बुलाकर, चिन्हित कर, करके यह सब काम किये हैं। मैं नाम नहीं ले सकता, लेकिन अगर नाम लेकर कहता तो दस्तावेज के साथ दे सकता हूं, जिनको बुला-बुला करके पैसा ले-ले करके लैंड यूज चेंज किए हैं। राजधानी का मास्टर प्लान, क्या सोच, क्या कल्पना, क्या फ्यूचर विजन था? कहीं कुछ नहीं। आपने क्या किया? हमने किया है। आने वाले

समय में हमारा नया मास्टर प्लान आएगा। रायपुर शहर की जनता को राहत मिलेगी और आगे डेव्हलपमेंट के रास्ते खुलेंगे, इस सोच के साथ हम आगे काम कर रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) आप सोचिए यदि रायपुर के अंदर 1 हजार सीट का नालंदा परिसर फेज-2 बन सकता है, यह क्या सोच है? (मेजों की थपथपाहट) आप बताइये कि आपने कभी कोई एक नया कॉलेज खोला है? हमारी सोच है कि आने वाला बच्चा कॉम्पिटिशन में पढ़ेगा, लिखेगा, आगे बढ़ेगा, वह कॉम्पिटिशन एग्जाम में जाएगा, तहसीलदार बनेगा, एस.डी.एम. बनेगा, कलेक्टर बनेगा, एस.पी. बनेगा, वह बच्चा आगे पी.एस.सी. के माध्यम से सलेक्ट होगा। उन बच्चों का फ्यूचर बनाने के लिए, उन गरीब बच्चों के लिए हम ये नालंदा परिसर जैसी संस्था लेकर के आए हैं। प्रदेश में लगभग 16 जगहों पर नालंदा परिसर का निर्माण हो रहा है। यह कोई छोटी-मोटी बात नहीं है। हम इसकी कल्पना नहीं कर सकते। 5 मेडिकल कॉलेज कैसे खुल गए, किसी ने सोचा था? दंतेवाड़ा में मेडिकल कॉलेज खुल जाएगा, किसी ने कल्पना की थी? आप कई जगह तो घोषणा करके चले गए। अभी टी.एस. बाबा अंबिकापुर के मेडिकल कॉलेज के विषय में बोल रहे थे। उसका पैसा भी, माननीय मुख्यमंत्री जी अभी गए, माननीय ओ.पी. चौधरी जी गए, वह बोले कि हम बनायेंगे। उधर तो कोई विश्वास ही नहीं था। 05 साल की सरकार में वह तो बोल दिये कि इधर कुछ हो ही नहीं सकता। अगर 05 साल का इतिहास उठाकर देखना है तो पाटन, दुर्ग, साजा तीन जगह जाकर देख लो और उसके आगे कहीं देखने को मिल जाये तो बतायें। और इसीलिये विजय शर्मा जी ने बताया कि किन-किन के विधान सभा क्षेत्र में कितना-कितना पैसा इस सरकार के माध्यम से दिया गया। यह खाली आपको बताने के लिये नहीं, एहसान करने के लिये नहीं, यह आपकी, हमारी छत्तीसगढ़ की 3 करोड़ जनता की चुनी हुई सरकार में लोकतंत्र का स्थान विधान सभा है और हम 90 विधायक एक दूसरे के साथी हैं, एक दूसरे को सपोर्ट देना और प्रदेश का विकास करना विष्णु देव साय सरकार की सोच है। इसके आगे हमने एक काम करना प्रारंभ किया। हमने यही काम प्रारंभ नहीं किया, हमने आगे गई चीजें की, जिन चीजों के आधार पर हमने आगे बहुत सारे काम किये। अब मैं क्या बताऊं ? छत्तीसगढ़ के बच्चे बहुत अच्छे खेलते हैं। आपने बढ़िया बस्तर ओलंपिक किया। उसके लिये साधुवाद। लेकिन साहब एक बात बोलूँ कि 05 साल छत्तीसगढ़ के जितने खिलाड़ी बच्चे थे, उनका अलंकरण का कार्यक्रम ही आपने रोक दिया। (शेम-शेम की आवाज) खेल विभाग का ये अलंकरण का कार्यक्रम ही नहीं हुआ। और तो और, आपने क्या किया? आपने राजीव मितान क्लब के नाम पर प्रदेश में एक बढ़िया कार्यक्रम करायें। टी शर्ट, ट्रैक सूट, टोपी बिना टेंडर के 2 करोड़ 37 लाख रुपये का सामान खरीद लिया। पूरा पैसा खर्च हो गया। और जिसको आर्डर दिया, उसका टेंडर भी नहीं हुआ और उसका पेमेंट आज तक नहीं हुआ। क्योंकि उसको वर्क ऑर्डर ही नहीं मिला। यानि खिलाड़ियों की ऐसी दुर्गति की, और हम नैतिकता की क्या बात करेंगे?

माननीय सभापति महोदय, बोरे बासी का कार्यक्रम हुआ। आधुनिक तरीके से बढ़िया ए.सी. डोम लगाया, बढ़िया बैठ करके बासी खाने की योजना बनाई और वह भी चम्मच से। 9 करोड़ रुपये खर्च हुए, इतिहास लिखने का काम है। अरे, यह तो मैं छोटा-छोटा बता रहा हूं। यानि आश्चर्यजनक लगता है, अपनी उपलब्धि में ये भी बताओ कि हमने ये काम किया। मैं बता रहा हूं न कि हमने मेडिकल कालेज खोले, हाईस्कूल खोले, कालेज खोले, नालंदा परिसर खोला, एक्सप्रेस वे बनाने का काम किया, फोरलेन बनाने का काम किया, रायपुर से बिलासपुर फोरलेन बनाने का काम किया, आपने क्या किया? आपने बोरे बासी, महादेव एप का काम किया और गरीब का चावल भी खा गये। मैं कल दयालदास बघेल जी को इसीलिये बोल रहा था। माननीय धरमलाल कौशिक जी के एक प्रश्न में हमने उठाया कि साहब केन्द्र सरकार ने कोविड काल में गरीब लोगों को प्रति व्यक्ति 5 किलो चावल दिया। छत्तीसगढ़ सरकार ने 78 लाख प्रति व्यक्ति के हिसाब से अपनी लिस्ट दी। केन्द्र सरकार ने पूरा का पूरा चावल छत्तीसगढ़ को दिया। छत्तीसगढ़ सरकार ने ले लिया और गरीब परिवार जो एक व्यक्ति, दो व्यक्ति, तीन व्यक्ति है, तीन व्यक्तियों का जिनका राशन कार्ड बना है, उन तीनों व्यक्तियों को प्रति व्यक्ति 10 किलो चावल मिलना चाहिए, 5 किलो छत्तीसगढ़ सरकार का और 5 किलो केन्द्र सरकार का मिलना चाहिए। केन्द्र का चावल ही गायब कर दिये।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी।

श्री राजेश मूणत :- आप तो उस कमेटी में थीं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- मैं उस कमेटी में थी।

श्री राजेश मूणत :- आपने साइन किया है। आपने समिति में रहकर साइन किया है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी को कहना चाह रही हूं कि बार-बार हमारे माननीय जी बोल रहे हैं, उस कमेटी में हूं और उस कमेटी का रिजल्ट भी आया है। कल भी सुशांत शुक्ला जी का ये प्रश्न आया था, उसमें हमने भी कहा। अगर इसमें पूर्ववर्ती सरकार का है तो आप उसको सस्पेंड कर दीजिये, अधिकारी पर कार्रवाई करिये। आपने क्यों नहीं किया? महोदय जी, आप बार-बार आरोप लगा रहे हैं, आरोप सिद्ध होगा तब तो करेंगे।

श्री राजेश मूणत :- हो गया न, जांच रिपोर्ट तो आ ही गयी। हमने ही तो साइन किया है, दूसरों ने थोड़ी न किया है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उसमें अगर आरोपी हैं तो कार्रवाई करें न। हम तो बोल रहे हैं कि कार्रवाई होनी चाहिए। कार्रवाई क्यों नहीं हो रही है? कहीं न कहीं उसमें छिपाया जा रहा है। हमने चावल दिया है।

श्री राजेश मूणत :- किसको?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हमने केंद्र और राज्य का दोनों चावल दिया है । अभी तक कार्रवाई नहीं किये, हम तो बोलते हैं कि अभी भी कार्रवाई करवाने का आदेश कर दीजिये ।

अध्यक्ष महोदय :- समिति की रिपोर्ट पर बहस करने की जरूरत नहीं है । जो अनुशंसा हो गया, हो गया । वह सरकार देखेगी, इस प्रकार बहस नहीं होती । आप अपनी बात जारी रखिए और समाप्त करिए ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चंद्राकर जी ने पहले ही सवेरे अपने शुरुआत के भाषण में बोल दिया था । उन्होंने अपने पी.ए. को बोला था कि छोटा-मोटा भ्रष्टाचार के बारे में बिल्कुल बात मत करना । आप अविश्वास प्रस्ताव में यह 5-10 किलो चावल की चर्चा मत करिए ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हम जम्बूरी पर कर लेते हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अगर कोई करोड़ों का घपला हो, कुछ और हो तो आप उसको बोल सकते हैं लेकिन यह क्या है 5-10 किलो चावल ? यह अविश्वास प्रस्ताव का विषय नहीं है ।

श्री राजेश मूणत :- यह करोड़ों का है ।

श्री सुशांत शुक्ला :- अध्यक्ष महोदय, बोरे बासी पर बोल दें ।

श्री राजेश मूणत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब सरकार की कोई परिस्थितियां क्लियर नहीं हो, सरकार आरोप-प्रत्यारोप पर जाना चाहती है तो तथ्यात्मक बातों के ऊपर ही बात हो । माननीय नेता जी ने एक बात कही विजन, जिस सरकार का कोई विजन नहीं हो तो वह किस विजन की बात करेंगे ? पूर्व सरकार का तो एक ही विजन था कि रेती में माल कहां से आयेगा ? भू-माफियाओं से पैसा कहाँ से आयेगा ? दारू में पैसा कहाँ से आएगा ? अवैध कब्जे में पैसा कहाँ से आयेगा ? राईस मिल से पैसा कैसे आयेगा ? एम.ओ.यू. से पैसा कैसे आएगा ? पूर्व सरकार में 169 एम.ओ.यू. हुए हैं ।

श्री अमर अग्रवाल :- मल्टीप्लाई 50 ।

श्री राजेश मूणत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 50 भी है, 75 भी है और 1 भी है । तीनों का रेट अलग है और कहें तो मैं उन अधिकारियों का नाम भी ले दूँ जिन्होंने डिलीवरी लिया । तथ्य के साथ में, प्रूफ के साथ में जिनका एम.ओ.यू. हुआ है । ओनली एग्रीमेंट सरकार और व्यापारी के साथ में और एग्रीमेंट का पैसा । वाह रे, भगवान कसम छत्तीसगढ़ को क्या जादू दिखाया, आश्चर्य होता है । 170 लोगों से...

श्री अजय चंद्रकार :- लहर गिनकर पैसा कमा लिये ।

श्री धर्मजीत सिंह :- यह लोग थोड़ी कमाये हैं ।

श्री सुनील सोनी :- उनको नहीं मालूम है ।

अध्यक्ष महोदय :- आरोप पत्र आप लोग दिए हैं या यह लोग दिए हैं, समझ में नहीं आ रहा है । (हंसी) इतनी लम्बी बहस के बाद तो मैं कंप्यूज हो रहा हूँ । (हंसी)

श्री सुनील सोनी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वह मना कर रहे हैं। वह ऐसा बोल रहा है कि हमको नहीं मालूम है करके।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करिये।

श्री राजेश मूणत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने पहले ही कहा है। माननीय अजय अजय जी ने कहा कि आईने में सबका चेहरा दिखता है इसलिए आरोप लगाने के पहले इन चीजों पर भी विचार कर लेना चाहिए और मैंने यह नहीं कहा है। मैं तो आगे और नहीं कहना चाहता हूँ कि चावल के अन्दर क्या किया, मैं यह नहीं कहना चाहता हूँ। वह रोशन चंद्राकर किसका क्या है? मैं यह भी नहीं पूछना चाहता हूँ। अभी कौन अंदर है, किसका कोषाध्यक्ष है, मैं उसमें भी कुछ नहीं कहना चाहता हूँ लेकिन एक चीज बता दो कि हम टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हैं, सब लोग टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हैं। जब छत्तीसगढ़ सरकार ने खनिज विभाग के अन्दर डॉक्टर रमन सिंह जी की सरकार के समय ऑनलाइन परमिशन देने की व्यवस्था करके रखी थी तो उसको ऑफ लाईन करने की जरूरत क्यों पड़ गयी? यह कोई बता दे, तथ्य का उत्तर दे दे। आज हम कम्प्यूटर में जाकर हर चीज ऑनलाइन हो रही है, मोबाइल का उपयोग कर रहे हैं, व्हाट्सएप का उपयोग कर रहे हैं और उसके अन्दर जाकर टिकट करा लो, चालान पटा दो। ऐसी क्या आवश्यकता पड़ गयी थी कि हमें ऑफलाइन करना पड़ गया? अब दीदी आप तो बता नहीं सकती हैं क्योंकि आप तो और वह दादी भी कुछ नहीं बोल सकते हैं क्योंकि वह जबरदस्ती का बलि का बकरा बना है।

श्री धर्मजीत सिंह :- दीदी क्या बतायेंगी। वह जो रेडी टू ईट को यह फैक्ट्री में बनवाने के लिए ऑर्डर कर दी थी। कोई एक दाल तड़का वाला है। उसका नाम मॉटी चड़्ढा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- अब दादी भी क्या बतायेंगे, दादी का तो पैकेज वाला था।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कोई मॉटी चड़्ढा है, उसका एक हाथ है, वह दारू भट्टी वाला है। उसको आपने कर दिया। आपने तलवार से महिलाओं का गला काटकर चक से अलग कर दिया, आप क्यों यहां महिलाओं के बारे में ज्यादा बोलती हैं? उसमें आपका दोष भी नहीं है। उस समय आपकी चलती भी कहां थी? भाभी जी, जो लोग चलाना चाहते थे, उन लोगों ने चला लिया।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कहां कुछ बोल रही हूँ। आज मैंने प्रश्नकाल में अपने प्रश्न में परेशान भी नहीं किया।

श्री राजेश मूणत :- आप समय रहते, सब समझ गईं।

श्री सुशान्त शुक्ला :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से कुछ कहना चाह रहा हूँ। पूर्ववर्ती सरकार में कौन थी नूरजहां, जिसके चमड़े के सिक्के चले और कौन थे जिल्लेइलाही और उनके नवरत्न। आज माननीय राजेश मूणत जी, धर्मजीत सिंह जी चर्चा कर रहे हैं। पूर्ववर्ती सरकार में चमड़े के सिक्के चलाये गये, परदे के पीछे वह नूरजहां, मुगलिया सल्तनत की व्यवस्था के तहत महादेव घाट

में मुगलिया वंशजों के साथ पलटी मारते थे। जिल्लेइलाही सल्तने दरबार के वह नवरत्न कौन थे ? आज यह भी चर्चा का विषय आना चाहिए।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह मुगलिया सरकार क्या है ?

श्री सुशान्त शुक्ला :- वह तो आप बतायेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- राजेश जी समाप्त करिये।

श्री राजेश मूणत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं दो-तीन छोटे-छोटे विषयों के ऊपर बोलकर, अपनी बात खत्म करना चाहता हूँ। जिस प्रकार से सरकार ने प्राथमिकता के आधार पर जिन कामों को आगे बढ़ाने का काम किया है और यहां पर समस्त मंत्रियों ने अपनी बात रखी है। मैं दो-तीन चीजों पर कहना चाहूंगा। रायपुर में कानून-व्यवस्था ठीक करने की दृष्टि से कमिशनर प्रणाली लेकर आये हैं। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी और माननीय गृहमंत्री जी का अभिनंदन करता हूँ। इस चीज की एक नई विजन, एक सोच और कल्पना की गई। अगर यहां पर लॉ एण्ड ऑर्डर को कंट्रोल करने के लिए एक कमिशनर प्रणाली का अध्ययन करने के उपरांत प्रयोगात्मक रूप से पहला कमिशनर रायपुर राजधानी में बैठाया है। तो यहां पर लॉ एण्ड ऑर्डर पर कंट्रोल हो रहा है, उसके कारण हमारे यहां एक बहुत अच्छी चीज खड़ी हुई है। वही एक बात है। मैंने जैसे कहा है कि जिसकी सोच, विजन, कल्पना और जो दूरदर्शिता से काम करता है। हमारा वर्ष 2047 का विजन है। हमारा यह छत्तीसगढ़ प्रदेश कैसा होना चाहिए। हमारे छत्तीसगढ़ प्रदेश का विकास कैसा होना चाहिए ? हमें किन-किन सेक्टरों का उपयोग करना चाहिए। अगर छत्तीसगढ़ प्रदेश में खनिज उपज हैं, मिनरल्स हैं तो उसका हम सदुपयोग कैसे करें ? इस छत्तीसगढ़ प्रदेश में सड़कों का जाल कैसे बिछे, इस छत्तीसगढ़ प्रदेश में नहरों का जाल कैसे बिछे, हमारे प्रदेश की शहरों से कनेक्टिविटी कैसे जुड़े, हमारे गांवों की कनेक्टिविटी कैसे जुड़े, अगर इसका कोई विजन प्लान बनाकर, चल रहा है तो छत्तीसगढ़ प्रदेश के माननीय विष्णु देव साय सरकार ने आने वाले विजन 2047 का प्लान बनाकर रखा है। वह अपनी कार्ययोजना लेकर आगे चल रहे हैं। मेरा आपके माध्यम से इस बात का विश्वास है कि आपको छत्तीसगढ़ प्रदेश की जनता ने तीन बार आराम करने का मौका दे दिया। वर्ष 2024 में केन्द्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी, नगरीय प्रशासन में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी, जिला पंचायत में हमारी सरकार बनी, यही हमारी जनता का विश्वास है जिसने हमें यहां बैठाया है। हमें ऐसे ही नहीं बैठाया है। वापस फिर वर्ष 2028 में भारतीय जनता पार्टी बैठेगी, आप वहीं बैठकर, इंतजार करते रहिये। आरोप-प्रत्यारोप के साथ मैं जय श्री राम कहते रहिये। यही मेरा आज का कहना है। आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- इस अविश्वास प्रस्ताव में 5 बजकर 30 मिनट तक का समय निर्धारित था। अभी 9.00 बज गये हैं और आधे वक्ता हुए हैं। यानी 12.00 बजे से लेकर करीब 9.00 घण्टे हो गये हैं।

आपका धैर्य कितना है, यह मैं नहीं जानता, मगर मैं यह आग्रह कर रहा हूँ जितने वक्ता बाकी है, जिस तरीके से अभी भी बोला जा रहा है तो सुबह के 7.00 बज जाएंगे, मैंने डिनर की व्यवस्था की है। मैंने सुबह चाय की व्यवस्था नहीं की है, मैं आपको यह भी बता दूँ। (हंसी) तो हमें समेटना है। कृपा करके, सभी वक्ता बहुत सारी बातें रिपीट-रिपीट करते जा रहे हैं। आग्रह है कि यदि 10-10 मिनट में बोलेंगे, तो थोड़ा समय बच सकता है क्योंकि आधे वक्ता अभी भी बाकी हैं। और ऐसे-ऐसे वक्ता हैं, जो डेढ़ घंटे से कम समय लेते ही नहीं हैं, बड़े मजबूत लोग हैं। इसीलिए मैं सबसे आग्रह कर रहा हूँ कि 10 मिनट में यदि अपनी बात रखने की कृपा करेंगे तो हम सबके लिए और आप सबके लिए भी सुविधाजनक होगा।

समय :-

9.00 बजे

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जैसे विनियोग में होता है कि जिन चीज़ों का हम उल्लेख कर चुके हों, उन चीज़ों का उल्लेख विनियोग में नहीं कर सकते, यह किताब में लिखा है। तो आप ऐसी व्यवस्था दे दीजिए कि अब नई गाली देनी है, पुरानी गाली नहीं बकना है।

श्री विक्रम मंडावी (बीजापुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं हमारे प्रतिपक्ष द्वारा राज्य सरकार के खिलाफ में लाए गए अविश्वास प्रस्ताव के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज यह अविश्वास प्रस्ताव लाने के लिए हम मजबूर क्यों हुए ? पिछले दो-ढाई वर्षों से अधिक समय से हम विपक्ष की भूमिका निभाते हुए आ रहे हैं। सरकार सत्ता के मदमस्त में रहकर जनता के मुद्दों को अनसुना कर रही है, उसी के कारण आज हम मजबूर होकर इस सरकार के खिलाफ में कांग्रेस विधायक दल ने यह अविश्वास प्रस्ताव लाया है। इस लोकतंत्र से सरकारें बनती हैं और छत्तीसगढ़ में भी दो-ढाई साल पूर्व चुनाव हुआ, और चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को छत्तीसगढ़ की पौने तीन करोड़ जनता ने बहुमत दिया और भाजपा बहुमत में आई है। इस बहुमत मिलने के बाद में, इस राज्य के सरकार के मुखिया के तौर पर हमारे विष्णु देव साय जी मुख्यमंत्री बने। विष्णु देव साय जी भी आदिवासी समाज से आते हैं, हम सभी आदिवासी समाज से आते हैं। हमें भी बहुत ही उम्मीद और भरोसा था, पूरे आदिवासी समाज को भरोसा था कि कहीं न कहीं विष्णु देव साय जी आदिवासी समाज से आते हैं, वे मुख्यमंत्री बने हैं तो आदिवासी समाज के लोगों का, गरीबों का दशा और दिशा बदलेगी, यह हम सोचे थे, यह सब सोच रहे थे, सबको जान रहे थे। जैसे हमारे मंत्री रामविचार नेताम जी ने भी हमारे अविश्वास प्रस्ताव पर कहा कि यह अविश्वास प्रस्ताव राज्य सरकार पर नहीं है, आदिवासी समाज पर है। मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि हम भी आदिवासी समाज से आते हैं। कवासी लखमा जी भी आदिवासी समाज से आते हैं, वह भी मंत्री थे। अनिला भेंडिया जी भी आदिवासी समाज से आती हैं, वह भी मंत्री थीं। और भी हमारे सभी साथी इस आदिवासी समाज से आते

हैं। लेकिन आपको जब आपके खिलाफ अगर कोई बोलता है, तो वह आदिवासी होता है, और इधर जब बोलता है, तो क्या वह आदिवासी नहीं है ? मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूँ कि यह अविश्वास प्रस्ताव जो लाया गया है, वह किसी समाज या विशेष वर्ग के खिलाफ मैं नहीं है, यह सरकार की जो गलत नीतियों के खिलाफ मैं यह अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जिस तरीके से हमारे मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी पिछले दो-ढाई सालों से, वर्षों से राज्य शासन कर रहे हैं, वे आदिवासी समाज से हैं । आज उनके सरकार में बैठने के बाद में आदिवासियों की क्या स्थिति है, यह आप, हम सभी, पूरा प्रदेश और पूरा आदिवासी समाज देख रहा है। आज लगातार आदिवासी समाज सड़कों पर है। चाहे मैं बस्तर की बात करूँ, सरगुजा की बात करूँ, कोरबा की बात करूँ, हसदेव की बात करूँ, हर जगह आदिवासी समाज आज पूरे छत्तीसगढ़ में सड़कों पर न्याय की लड़ाई लड़ रहा है, अपने हक-अधिकार की माँग कर रहा है, अपने जल-जंगल-जमीन को बचाने की लड़ाई लड़ रहा है, लेकिन कहीं पर भी उन आदिवासी समाज के लोगों को आज तक न्याय नहीं मिल रहा है। हम मानते हैं हमारे मुखिया आदिवासी समाज से हैं, तो क्या उस आदिवासी समाज को न्याय देने की, उन गरीब लोगों को न्याय देने की उस मुखिया की जिम्मेदारी नहीं है? क्या उनको इन ढाई वर्षों में न्याय मिला, क्या उनका अधिकार मिला? आज हसदेव की क्या स्थिति है? हम सभी जान रहे हैं। लगातार वहाँ पर लोग आंदोलन कर रहे हैं, उन आंदोलनों और उनकी आवाज़ को अनसुना किया जा रहा है, उनसे बात तक नहीं की जा रही है, उनके पास सरकार का प्रतिनिधिमंडल मिलने तक नहीं जा रहा है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- विक्रम जी, एक सेकण्ड । आपने 136 बिन्दु के जो आरोप-पत्र दिए हैं, नियमतः तो यह बोलता है कि जब एक्सटेंपोर बोल रहे हैं तो आरोप पत्र देना नहीं चाहिए और यदि एक्सटेंपोर नहीं बोलना है तो फिर 136 बिन्दु में केन्द्रित रहो।

श्री विक्रम मण्डावी :- आप कौन से बिन्दु पर बोले थे ?

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं तो आरोप-पत्र नहीं दिया था।

श्री विक्रम मण्डावी :- हम बोल रहे हैं, विचार करिये। माननीय सदस्य बार-बार बोलते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आदिवासियों की बात कर रहा था। बस्तर से लेकर सरगुजा तक, हसदेव की बात हो, तमनार की बात हो, हर जगह हमारे आदिवासी समाज के लोग आंदोलन कर रहे हैं, अपनी बात कर रहे हैं। लेकिन सरकार में बैठे हुए लोग न आज उनसे मिलने जा रहे हैं ना उनकी बातों को सुन रहे हैं ना उनके दर्द को समझने का प्रयास कर रहे हैं। आज हसदेव क्या पूरा सरगुजा, बस्तर किसको सौंपा जा रहा है ? यह हम सभी जानते हैं। बड़े उद्योगपतियों के लिए नियम को ताक पर रखा जा रहा है। वहाँ पर जल, जंगल और जमीन को साफ किया जा रहा है। उनके खनिज संसाधनों को लूटा जा रहा है, दिया जा रहा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता प्रतिपक्ष से लेकर ये वक्ता तक यही हवा-हवाई की बात, आरोप में सरकार के लिए कर रहे हैं कि बस्तर सरगुजा सौंपा जा रहा है।

श्री विक्रम मण्डावी :- आप तो पिछले 5 साल की बात किये हो। अपने कार्यकाल की बात ही नहीं किये हो।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक सेकेण्ड, सुन लीजिये। आरोप-पत्र में प्रक्रिया है। यदि इनके पास कोई दस्तावेज है तो आवेदन देकर, नाम लेकर दस्तावेज समेत आरोप लगाये, मौखिक नहीं। क्या सौंपा जा रहा है, किसको सौंपा जा रहा है, हिम्मत है तो दस्तावेज रखकर आरोप लगाओ।

श्री विक्रम मण्डावी :- हम क्यों नहीं बोलेंगे ? जब आप बोले तो क्या है ? जब बोल रहे तो ठीक है।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह जबर्दस्ती हवा-हवाई बात बंद करो।

श्री देवेन्द्र यादव :- भईया बॉडी लैंग्वेज, बॉडी लैंग्वेज।

श्री अजय चन्द्राकर :- कितने लोग हैं, जो शुरुआत से अभी तक हवा-हवाई बात कर रहे हैं।

श्री देवेन्द्र यादव :- भईया बॉडी लैंग्वेज, बॉडी लैंग्वेज।

श्री विक्रम मण्डावी :- कोई हवा-हवाई बात नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या बोला हूँ ? फिर बोलू ?

श्री देवेन्द्र यादव :- भईया बॉडी लैंग्वेज। मैं आपको याद दिला रहा हूँ।

श्री विक्रम मण्डावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह समय ले रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप कन्टीन्यू करिये।

श्री विक्रम मण्डावी :- कोई हवा-हवाई बात नहीं है। जिस तरीके से आज पूरा आदिवासी समाज नाराज है, मैं उन बातों को बार-बार आपके सामने कर रहा हूँ। हमारे सत्तापक्ष के जो भी साथी यहां पर आये हैं, बार-बार बस्तर की बात कर रहे हैं। ठीक है, बस्तर की बात होनी चाहिए। हम भी बस्तर से आते हैं। आज बस्तर में नक्सलवाद के खात्मे की बात हो रही है। हम सब बस्तर के लोग हैं, हम सबसे ज्यादा नक्सल प्रभावित क्षेत्र से आते हैं। मेरा बीजापुर क्षेत्र सबसे ज्यादा नक्सल प्रभावित क्षेत्र रहा है। हमने बचपन से देखा है।

श्री केदार कश्यप :- बस्तर से आते थे।

श्री विक्रम मण्डावी :- बस्तर से आते हैं। हमने देखा है और हमने इस बात की लड़ाई लड़ी है। स्व. महेन्द्र कर्मा जी के नेतृत्व में सलवा-जुडूम के माध्यम से, जनजागरण के माध्यम से लड़ते आ रहे हैं। 1990 से, 1992 से 2004 से लेकर आज तक वह दौर देखा है कि किस तरीके से नक्सलवाद के विरुद्ध आपके शासनकाल में सलवा जुडूम अभियान चला, उसमें भी प्रमुखता से भूमिका अदा किये थे, हम लोगों ने देखा है। हमारे लोग शहीद हुए हैं। लेकिन हम लोग कभी भी इस लड़ाई में राजनीति करने

का काम नहीं किया। आज नक्सलवाद खत्म हुआ, यह बात जान रहे हैं। पूरा बस्तर जान रहा है, पूरा प्रदेश जान रहा है। लेकिन इसमें किसी की सबसे बड़ी भूमिका है, तो वह जवान है, जो लगातार वहां पर लड़ाई लड़े हैं। जवान जो लगातार जंगलों और पहाड़ों में बिना खाये-पीये लड़े हैं, वे लड़ाई लड़े हैं। आज नक्सलवाद की सब बात करते हैं, लेकिन उन जवानों का नाम कौन लेता है ? जो शहीद हुए हैं, उनका नाम कौन ले रहा है ? आज उनकी भी बहुत बड़ी भूमिका है। अगर वहां पर नक्सलवाद के साथ कोई सबसे बड़ी लड़ाई लड़ा है तो जवान है, आदिवासी हैं, जिन्होंने अपना घर द्वार छोड़कर लड़ा है। उनसे लड़ने के लिए सामने आया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप आदिवासी-आदिवासी बहुत बोल रहे हैं। अभी अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा चल रही है। आप झीरम का भी बहुत उल्लेख कर रहे हो। सलवा-जुडूम का ऐसा हुआ। झीरम के बाद महान आदिवासी नेता के साथ क्या व्यवहार हुआ है , वह उद्घाटित कर दो। उसको मार भी पड़ी है, लोग ऐसा बोलते हैं।

श्री विक्रम मण्डावी :- उनको कोई मार नहीं पड़ा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब वह तो नेता जी बतायेंगे और वह (श्री भूपेश बघेल सदस्य की ओर इशारा करते हुए) बतायेंगे कि कागज को छिपाकर रखो, ये सब पूरा लाइव देखे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय सदस्य बार-बार डिस्टर्ब कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- अजय जी, वक्ता को थोड़ा बोलने दीजिये। समय कम है। डिस्टर्ब मत करिये।

श्री विक्रम मण्डावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो जवान है, चाहे वह कहीं से भी हो। डी.आर.बी. के हों, सी.एफ. के हों, अर्द्धसैनिक बल हों, सी.आर.पी.एफ. के हों, सभी जवान लगातार काम किये हैं बड़ी लड़ाई को लड़ने और जीतने में सफलता हासिल की है। हमें उनको भी नहीं भूलना चाहिए। वहां पर उनकी बहुत बड़ी भूमिका है। जिस तरीके से बस्तर की स्थितियां हैं, आज सरकार बार-बार यह कहती है कि नक्सलवाद में सरकार, मैं अपने साथियों से कहना चाहता हूं कि नक्सलवाद की जो लड़ाई हुई है, वह बहुत पहले से लड़ रहे हैं। आप भी 15 साल थे। उस समय भी बड़े-बड़े निर्णय वहां पर हुए हैं। उससे पहले भी हुए हैं। माननीय भूपेश बघेल की सरकार और हमारी कांग्रेस की सरकार ने भी बड़े-बड़े निर्णय वहां पर लिये हैं। लगातार पुलिस कैंप आया है। जहां लोग जा नहीं पाते थे, पिछले 5 सालों में वहां कैंप लगे। वहां पर पहुंचने का काम हम सभी ने किया है। तो ऐसा यह कहना कि सिर्फ दो-ढाई सालों की सरकार ने किया है, पहले की सरकार ने नहीं किया, चाहे वह आपकी 15 साल की सरकार हो, चाहे भूपेश बघेल जी की 5 साल की सरकार हो, इसको मैं सही नहीं मानता। जहां तक केंद्र की सरकार है, आप भी थे, मुख्यमंत्री थे, केंद्र में मनमोहन सिंह की सरकार थी, तब भी ऐसे बहुत सारे वहां पर जो सहयोग मिलना चाहिए, चाहे केंद्र से अर्द्धसैनिक बल की बात हो, चाहे बजट की बात हो, उस समय भी केंद्र की मनमोहन सिंह की सरकार ने, हमारी यू.पी.ए. की सरकार ने दिया है। लेकिन उस पर हमने और

हमारी पार्टी ने राजनीति करने का काम कभी नहीं किया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी जो पिछली सरकार थी, भूपेश बघेल की सरकार, 5 सालों में बस्तर की बात अगर करें कि बिल्कुल काम नहीं किया, मैं आपको और हमारे साथियों को बताना चाहता हूँ कि पिछले 5 सालों में बस्तर के अंदरूनी क्षेत्रों में सरकार की पहुंच नहीं थी। हमारी सरकार उन परछित क्षेत्रों में पहुंची, वहां के आदिवासियों से, जनप्रतिनिधियों से बातचीत की, नीति-नियम बनायी, किस तरीके से वहां पर सरकार पहुंचे, उसके लिए रणनीति बनायी और उसका एक बहुत बड़ा लाभ वर्तमान सरकार को भी मिला है, ये मैं मानता हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, नक्सल मोर्चे पर बस्तर फाइटर्स के लिए कवासी लखमा जी यहां पर बैठे हैं, हम सभी लोगों ने माननीय मुख्यमंत्री से बात की थी और बस्तर फाइटर्स की भर्ती की, हर जिलों में तीन-तीन सौ पदों का और जो आगे चल कर डी.आर.जी. जैसी बड़ी लड़ाई जो आज नक्सल मोर्चे पर लड़ाई लड़ रहा है, वे डी.आर.जी. के जवान थे। उसमें बड़ा निर्णय लेने में हमारी सरकार ने बस्तर फाइटर्स को भर्ती करने के रूप में किया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार चाहे किसी की भी हो, चाहे आपकी 15 साल की सरकार हो, चाहे राज्य की हमारी भूपेश बघेल की सरकार हो, चाहे विष्णु देव साय की सरकार हो, सब सरकार ने काम किया है। तो सिर्फ एक सरकार ने ही काम किया है, ऐसा मानना उचित नहीं है। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज बस्तर तो नक्सल मुक्त हो चुका है, नक्सलवाद का खात्मा हो चुका है, यह अच्छी बात है, उसका हम सभी स्वागत करते हैं, पूरे बस्तर की जनता स्वागत करती है। लेकिन मैं हमारे साथियों से कहना चाहता हूँ कि आप एक बार और अभी वर्तमान बस्तर जाइए, अंदरूनी क्षेत्रों में जाइए और वहां बस्तर में रहने वाले लोगों से, बस्तर के आदिवासियों से पूछिए कि वर्तमान में उनकी क्या स्थितियां हैं। वह क्या चाहते हैं? एक बड़ी समस्या को आपने तो खत्म किया, लेकिन वहां कितनी और बड़ी ऐसी समस्या है, जो वहां के लोगों में डर पैदा कर रही है। आज लगातार वहां से बाहर से लोग आ रहे हैं, जमीनों को लिया जा रहा है। जमीन लेने के लिए सुबह उठते ही लोग आते हैं कि हमको जमीन लेनी है 100 एकड़, 200 एकड़, 300 एकड़। क्यों जमीन लेनी है? उद्योग लगाना है। आज छोटे-छोटे उद्योगपति, बड़े-बड़े उद्योगपति बस्तर में घूम रहे हैं, जमीन लेने का काम कर रहे हैं। जमीन वहां पर ले रहे हैं। वहां का जल-जंगल-जमीन सुरक्षित नहीं है। खनिज संसाधन अपने-अपने उद्योगपतियों को देने का काम किया जा रहा है। यह डर का, भय के माहौल की स्थिति है, जो वहां पर आने वाले समय में बस्तर को देखने को वहां पर मिल रहा है। आज खनिज संसाधन की बात करें तो नियमों को ताक पर रखकर तीन-तीन, चार-चार बड़े-बड़े खदान दिया गया है। 5,000 से ज्यादा पेड़ रावघाट में काटे जा रहे हैं, कोई परमिशन नहीं। नियमों को ताक पर रख कर दिया जा रहा है। आखिर ये कैसे हो रहा है? जिसको लेकर पूरा बस्तर आज वहां पर चिंतित है माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस तरीके से वहां पर वर्तमान समय में जो परिस्थितियां निर्मित हुई हैं, नक्सलवाद खात्मा होने के बाद जल-जंगल-जमीन की बात करें, खनिज संसाधनों की बात करें, खदानों की बात करें, तो वहां कहीं न कहीं वर्तमान समय में

आदिवासियों की संस्कृति, भाषा, बोली और आने वाले समय में सबको बचाने की भी एक बड़ी चुनौती है, उस ओर भी सरकार को ध्यान देने की जरूरत है। वहां पर भी सरकार failure साबित हुई है। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज बस्तर में जो युवाओं को रोजगार देने की बात है, सरकार की जो एक विज्ञान की बात होती है, वह कहीं नहीं दिखता है कि कैसे वहां के युवाओं को रोजगार दिया जाए? बस्तर के बारे में क्या रोडमैप बने? विज्ञान की बात होती है तो उस विज्ञान में कहीं पर भी देखने को नहीं मिल रहा है। जब तक हम वहां के लोगों को रोजगार नहीं देंगे, लोगों का विश्वास नहीं जीतेंगे, तो मैं जहां तक समझता हूं, एक अच्छे बस्तर की कल्पना करना भी उचित नहीं होगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, किसानों की अगर मैं बात करूं, आज पूरे प्रदेश में किसान आंदोलन कर रहा है। धान, बीज के लिए किसान सड़कों पर हैं, खाद के लिए...

अध्यक्ष महोदय :- यह कई बार आ चुका है।

श्री विक्रम मण्डावी :- बस दो मिनट, दो मिनट। किसान सड़कों पर हैं, पूरे किसान परेशान हैं। समय पर खाद नहीं मिल रहा है। अभी हमारे माननीय कृषि मंत्री जी थे, उन्होंने बड़ी-बड़ी बातें कीं, लेकिन किसानों के बारे में वे कोई भी बात नहीं किये। तो आज पूरे किसान लगातार परेशान हैं, बैंकों से ऋण नहीं मिल पा रहा है। किसान दोगुने दाम पर खाद खरीदने के लिए मजबूर हो रहे हैं। प्रदेश में कानून-व्यवस्था की क्या स्थिति है, वह आप देख ही रहे हैं। माननीय गृह मंत्री के जिलों में कानून-व्यवस्था संभल नहीं पा रही है, तो पूरे प्रदेश में कानून-व्यवस्था की क्या स्थिति होगी, यह आप समझ ही सकते हैं। हर दिन हत्या, लूट, डकैती और बलात्कार की घटनाएं हो रही हैं। पहली बार छत्तीसगढ़ में अफीम की खेती हो रही है, जो आपके पिछले 15 वर्षों के शासनकाल में कभी नहीं हुई थी, लेकिन पिछले दो वर्षों में यह भी देखने को मिल रहा है। आज युवाओं से 33,000 शिक्षकों की भर्ती करने का वादा किया गया था। मोदी की गारंटी के नाम पर बड़े-बड़े दावे किए गए थे, बड़े-बड़े पोस्टरों में मोदी की गारंटी लगवाये गये थे, लेकिन उनकी आज क्या स्थिति है? उनका कौन सा वादा पूरा हुआ है? 500 रुपये में गैस सिलेंडर देने की बात कही गई थी, जो इन ढाई वर्षों में अभी तक पूरी नहीं हुई है। आज युवा भी खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। हमारे साथी लखमा जी ने भी पंचायतों की चिंता जताई है। आज पंचायतों की स्थिति यह है कि वे सिर्फ नाम के पंचायत रह गए हैं। वहां विकास कार्य ठप पड़े हैं और किसी भी पंचायत को विकास कार्य के लिए राशि नहीं मिल रही है। पंचायत जनप्रतिनिधि भी खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। इस पर भी यह सरकार पूरी तरह विफल साबित हुई है। हमारी पिछले 5 वर्षों की कांग्रेस की सरकार ने भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में आम जनता, गांव, गरीब, किसान और आदिवासियों के हित में काम किया था। उनके द्वारा किसानों के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं लाई गई थीं। उन्होंने आदिवासियों के लिए देवगुड़ी का निर्माण किया और बस्तर में बंद पड़े स्कूलों को फिर से खोलने का काम किया था। हमारी सरकार ने युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर तलाशने, बेरोजगारों को

भत्ता देने, वन भूमि के पट्टे देने, गोठानों के माध्यम से गोबर खरीदकर किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करने तथा महिला समूहों को जोड़ने का काम किया है। इस प्रकार हमारी सरकार ने लगातार जनता के हित में काम किया है। पिछले 2 वर्षों से हम सरकार की गलत नीतियों के खिलाफ सदन से लेकर सड़क तक लड़ाई लड़ रहे हैं, लेकिन सरकार हमारी बातों और जनता के मुद्दों को सुनने के लिए तैयार नहीं है। इसीलिए मजबूर होकर आज हमने यह अविश्वास प्रस्ताव लाया है क्योंकि यह सरकार छत्तीसगढ़ की पौने तीन करोड़ जनता का विश्वास पूरी तरह से खो चुकी है। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- श्री धर्मजीत सिंह जी।

श्री धर्मजीत सिंह (तखतपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के प्रतिपक्ष के नेता श्री चरणदास महंत जी द्वारा लाए गए अविश्वास प्रस्ताव का विरोध करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ। महंत जी, आप और डॉक्टर साहब इस सदन के अत्यंत अनुभवी और विभिन्न संसदीय दायित्वों का निर्वहन करने वाले नेता हैं। पूरा सदन आपका बहुत आदर करता है, लेकिन आज आप स्वयं विश्वास के संकट से जूझ रहे हैं। आपके आगे-पीछे, दाएं-बाएं आपकी पार्टी के अंदर ही आप पूरी तरह से विश्वास प्राप्त ही नहीं कर पा रहे हैं। आपकी पार्टी का भी इस देश की संघीय व्यवस्था में ...।

श्री अजय चन्द्राकर :- आज तो वे फ्लोर में विश्वास मत प्राप्त किए हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं मान लिया, उनका सम्मान करता हूँ। नेता प्रतिपक्ष जी, आपकी पार्टी सी.बी.आई. में विश्वास नहीं करती, उसके ऊपर आप लोगों को विश्वास है ही नहीं। आप सी.बी.आई., एन.आई.ए., ई.डी., सी.आई.डी. और एस.आई.टी. पर विश्वास नहीं करते हैं। आप आई.टी. पर भी विश्वास नहीं करते हैं। आप हाईकोर्ट पर भी विश्वास नहीं करते हैं। आप सुप्रीम कोर्ट के फैसलों पर भी टिप्पणी उठाते हैं। आपको निर्वाचन आयोग पर भी भरोसा नहीं है, सेना और एयरफोर्स की एयर स्ट्राइक पर आपको भरोसा है। हमारे बहादुर जवानों के ऑपरेशन सिंदूर पर भी आपको भरोसा नहीं है। पहलगाम हमले में मारे गए लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करने के बजाय आप प्रश्नवाचक चिन्ह लगाते हैं। जब आपको इन सभी संस्थाओं पर विश्वास नहीं है, तो मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि आखिर यह देश कैसे चलेगा? जब आपको देश की इन संस्थाओं पर ही भरोसा नहीं है तो विष्णुदेव साय जैसे ईमानदार, स्वच्छ छवि के, सीधे, शांत और सौम्य मुख्यमंत्री, जिनके ऊपर कोई आरोप नहीं है, उन पर अविश्वास करने का तो कोई प्रश्न ही नहीं बनता है। मैं कल रात को 1:30 बजे तक 151 पेज का आरोप पत्र पढ़ा है। मैंने सोचा कि आप लोग कोई मंत्री के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप लगाए होंगे कि यह मंत्री यहां पर रिश्वत लेते पकड़ा गया या इस वाले डील में कोई अंडरग्राउंड को सेटिंग हो गई। ऐसा कुछ नहीं है। वह तो ऐसे ही रोजमर्रा के आमसभा में भाषण देते हैं, वैसे ही आपने उसको टाईप कराया और सदन में आकर दे दिया, अब इसमें चर्चा हो रही है और चर्चा करेंगे।

डॉ.चरणदास महंत :- आपने जितने अच्छे से ढंग से मेरे अविश्वास प्रस्ताव को देखा और समझा है, उतने अच्छे ढंग से आपके पड़ोसी ने नहीं देखा है। बिना मतलब के अपना दिमाग खराब कर रहे हो।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मैं पूरी गंभीरता के साथ पढ़ा है।

डॉ.चरणदास महंत :- हेल्थ मिनिस्टर डेढ़-डेढ़ घण्टे तक बोल रहे हैं। अभी भी आप थोपने में लगे हो कि बहुत खराब है। मैं तो कह रहा हूँ कि निन्दा करो और खत्म करो।

श्री अजय चन्द्राकर :- उसमें जो तीखापन होना था। आप पड़ोसी की तरफ आ गये, मैं बोलते-बोलते एक लाईन भूल गया था। मैं पूछ लेता हूँ। देवकांत बरूआ जी “इंदिरा इज इंडिया” और “इंडिया इज इंदिरा” कहने के बाद मैं कांग्रेस से इस्तीफा दे दिये थे। कांग्रेस से झाड़ू लगाने के बाद या पहले आप इस्तीफा कब दे रहे हो, इसको बता दीजिए?

डॉ.चरणदास महंत :- झाड़ू लगाना हमारी स्वामिभक्ति का प्रतीक है। आप जैसे थोड़े हैं कि रामजी का नाम लिये और पेड़ काटते रहो।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं आपका आदर करता हूँ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बहुत सम्मान करता हूँ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मेरे पास नेता प्रतिपक्ष जी की प्रतिभा पर प्रश्न उठाने वाली क्षमता नहीं है। मैंने तो यह कहा है कि अविश्वास प्रस्ताव में अधिकांशतः यह होता है कि सरकार ने इस प्रकरण में भ्रष्टाचार इतने लंबे का किया है तो मैं सोचा कि शायद लगा हो, यह मुझे नहीं मिला। खैर, कोई बात नहीं है। 26 नंबर में आपने एसआईआर का जिक्र किया है, लाखों वैध मतदाताओं के नाम काट दिये गये और राज्य सरकार ने मौन रहकर अपनी सहमति दी है। 19 लाख 13 हजार 450 नाम काट दिये गये हैं। इसका मतलब है कि एसआईआर की प्रक्रिया पर आपको विश्वास नहीं है। मैं आपके समक्ष 39 नामों में से 2-4 नाम पढ़ देता हूँ और यह लिस्ट भी दूँगा। मोहम्मद तनवीर-पिता मोहम्मद ताहिर, विधान सभा कवर्धा। ईपिक नंबर सोएण्डसो। यह सहसपुर लोहारा बूथ में था। अब यह ईपिक नंबर रायपुर में लाकर फिर से वोटर हो गया है। हफीज खान-वल्द वाहिद खान, इसके तीन ईपिक नंबर हैं, एक सहसपुर लोहारा बूथ के बूथ क्रमांक 373 में दर्ज है, एक रायपुर बूथ के 117 नंबर में दर्ज है और 50 रायपुर बूथ क्रमांक 118 में दर्ज है, यह व्यक्ति वर्तमान में रायपुर में दो ईपिक नंबर के नाम से दर्ज है एवं एक ईपिक नंबर को कवर्धा विधान सभा से फिर रायपुर ट्रांसफर कराया है। जब यह 40 नाम 5 मिनट के अंदर मेरे पास आ सकता है तो 19 लाख नाम इसी प्रकार से कटे हैं और एसआईआर पूरे देश में हो रहा है। यहां तो अभी चुनाव नहीं है। केरल में भी हुआ और आपने वहां चुनाव जीता है और अपना मुख्यमंत्री बनाया है। ईवीएम अगर छत्तीसगढ़ में आपको 70 सीट देता है तो ईवीएम बहुत अच्छा है, कर्नाटक में अगर ईवीएम से आपकी सरकार बनती है तो कर्नाटक का ईवीएम

ठीक है। हिमांचल में अगर सरकार बनती है तो वह ईवीएम ठीक है, लेकिन अगर आप यहां 2023 का चुनाव हार जाते हैं तो इलेक्शन कमीशन खराब है, ईवीएम खराब है, एसआईआर खराब है, नाच न आये आंगन टेढ़ा जो कहावत है, अगर आपकी क्षमता थी तो आपने जीता, आपकी क्षमता नहीं थी और जनता को आप पसंद नहीं आये तो जनता ने आपको हराया। जनादेश को सिर झुकाकर स्वीकार करना चाहिये बजाय इसके कि चुनाव आयोग, हाई कोर्ट, एसआईआर, ई.डी. सीआईडी, जैसे संस्थाओं को बदनाम करें। आप क्या बतायेंगे जब आपकी सरकार में इंकम टैक्स के लोग सदर बाजार में गाड़ी में गये थे तो उनकी 25 गाड़ियों को पुलिस के लोग जाकर लॉक लगा दिये थे, यह संविधान है? भारत का एक संस्थान आपके प्रदेश में जांच के लिये आया है और आपकी सरकार थी तो आपको उसमें लॉक नहीं लगाना चाहिये था, आखिर में न्यायालय तो है ना? अगर कोई पुलिस या कोई एजेंसी कोई गड़बड़ करे तो न्यायालय सब के लिये है। आपने सत्ता के पॉवर का उपयोग करके अपनी आस्था उन संस्थानों से खत्म कर दी। मैं आपसे निवेदन यह करना चाहता हूँ कि 123 नंबर में कहा है कि प्रदेश के शासकीय विभागों में व्यापक भ्रष्टाचार का बोलबाला है। छत्तीसगढ़ में आम आदमी जिन सरकारी दफ्तरों में ज्यादा चक्कर लगाता है, 29 माह के रिकॉर्ड के अनुसार जनवरी 2024 से मई 2026 तक एसीबी/ईओडब्ल्यू ने राज्य भर में 128 ट्रेप कार्रवाई करते हुए 178 अधिकारियों और कर्मचारियों को रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़ा गया। इसमें आपने जिले को इनाम भी दिया है रायगढ़, मुंगेली, रायपुर, बिलासपुर, सूरजपुर और सरगुजा है। मतलब यहां आपका सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार हुआ है।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, इतना सब होने के बाद पिछले 5 साल में भूपेश बघेल की सरकार में एसीबी ने एक भी चालान पेश नहीं किया।

श्री धर्मजीत सिंह :- महंत जी, इसमें स्थिति यह है कि यह कार्रवाई इस बात को प्रसिद्ध करती है कि विष्णु देव साय की सरकार में भ्रष्ट अधिकारियों, कर्मचारियों, नेताओं, राजनेताओं और राजनेताओं के चमचों, किसी के लिए भी कोई स्थान नहीं है। उनको जेल के सीखचों में जाना ही पड़ेगा। मुझे इस बात को बोलने में खुशी हो रही है कि ईओडब्ल्यू और एसीबी का अभी प्रदेश में जबरदस्त काम चल रहा है और उसके डर से भी कई अपराधी कांप रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) पहले तो एसीबी, ईओडब्ल्यू में ज्यादा दिन रुकते नहीं थे, अधिकारी बदल दिए जाते थे, ट्रांसफर हो जाता था, उनको जो टास्क दिया जाता था, वह नहीं करते थे तो हट जाते थे या कुछ ज्यादा कर देते थे तो हट जाते थे। लेकिन यह जो आपका आरोप है, वह अपने आरोप का आप ही खंडन कर रहे हैं कि इतनी घटनाओं को एसीबी ने जब्ती की, गिरफ्तार की, यह उस बात का प्रमाण है। आपके 94 नंबर में डीएमएफ मद की राशि की [xx] लिखा है। कोरबा में कैसे [xx] हुआ था, आपका जिला है, आप जानते हैं। मैं यहां पर बोलकर किसी को आहत नहीं करना चाहता। आपने इसमें लिखा है कि विपक्ष के विधायकों को बैठक में भी नहीं बुलाया जाता। अभी 1 महीना पहले डीएमएफ की बैठक बिलासपुर के सभा कक्ष में कलेक्टर ने बुलाई। उसमें उस

जिले के दो कांग्रेस विधायक श्री अटल श्रीवास्तव और दिलीप लहरिया को बुलाया गया। वे बैठे भी हैं। आपको डीएमएफ की बैठक में बुलाया गया था कि नहीं बुलाया गया था, आप ही बता दीजिए। हां ना बोल दीजिए, मुंडी हिला दीजिए। (सर हिलाकर सहमति दी गई) इनको बोला गया था कि आप अपना प्रस्ताव दे दीजिए, वही हमको बोला गया है। अभी ना हमारा काम मंजूर हुआ है, ना उनका काम मंजूर हुआ है। ये अप्लाई-सप्लाई वाला काम तो हम आज तक जानते भी नहीं है कि डीएमएफ में सप्लाई भी होती है। लेकिन आपने लोगों को बता दिया कि ये सप्लाई-वप्लाई का भी काम उसमें मिलता है तो यह ठीक नहीं है। डीएमएफ मद का पैसा पूरी पारदर्शिता से, नियमों के अनुकूल होगा। अब नया नियम आ गया है कि जो रेत खनन, उत्खनन क्षेत्र है उसके 12 किलोमीटर के अंदर में ही वह पैसा दिया जाएगा। वहां का पैसा और कहीं नहीं दिया जाएगा, वहां के जो प्रभावित गांव के लोग हैं, उनको यह सब व्यवस्था दी जाएगी।

श्री ब्यास कश्यप :- धर्मजीत भैया, जांजगीर-चांपा जिले में भी कल दिशा समिति की बैठक हुई थी ।

श्री धर्मजीत सिंह :- दिशा नहीं, दिशा और डीएमएफ अलग-अलग है।

श्री ब्यास कश्यप :- नहीं, मेरी बात को सुन लीजिए ना । दिशा समिति की बैठक हुई थी, हम सभी विधायक विधानसभा में थे। हमने आग्रह भी किया कि भाई सभी विधायक विधानसभा में हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- कहना क्या चाहते हैं, सीधा बोलिए न।

श्री ब्यास कश्यप :- मैं यही चाह रहा हूं कि डीएम साहब माने नहीं, बोले ऊपर का आदेश है। रही बात डीएमएफ की, डीएमएफ की बैठक में बुलाते हैं परंतु जब काम वितरण की बात आती है वहां पर हमारे जिले में हम विरोधी दल के विधायक हैं, परंतु वहां पर काम के लिए हमको जिस ढंग से राशि दी जानी चाहिए, वह राशि हमको दी नहीं जाती। उससे हमसे कहीं ज्यादा सत्ताधारी के जो सामान्य कार्यकर्ता हैं, उन नेताओं को, उनकी अनुशंसाओं पर काम दे दी जाती है।

श्री धर्मजीत सिंह :- ठीक है, आपने अपनी बात कह दी। माननीय उपमुख्यमंत्री यहां बैठे हैं, सुनेंगे और आपका सम्मान पूरा खयाल रखा जाएगा, आप भी जनप्रतिनिधि हैं। लेकिन हमारे बिलासपुर जिले में हमारे सब विधायकों को काम मिला है और सब विधायकों से प्रस्ताव मांगा गया है और सब विधायक वहां मीटिंग में थे, वहां पर कोई भेदभाव नहीं हुआ है। (मेजों की थपथपाहट) 68 नंबर में आपने कह दिया डिमरापाल, जगदलपुर स्थित सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में बहुत अव्यवस्था है। बिलासपुर में भी एक सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल है, वहां भी व्यवस्था है। इसके प्राइवेटाइजेशन के बारे में पीपीपी मोड में जो होना है उसमें भी आप आपत्ति कर रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, जब नक्सली उत्पात चरम पर था, हमारे जवानों को गोली लगती थी, स्वयं विद्याचरण शुक्ल जी को जब गोली लगी तो वहां के महारानी के जिला अस्पताल में उनको कई घंटे तक रखना पड़ा और रायपुर लाते तक बहुत देरी हो चुकी थी।

अगर एक सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल बन रहा है और अगर पीपीपी मोड में अपोलो या अंबानी या और किसी हॉस्पिटल से टाईअप करके वेल इक्विपड हॉस्पिटल बनेगा तो क्या तकलीफ है? उसमें क्या तकलीफ है और उसमें क्या भ्रष्टाचार है? आप देखते हैं कि चाहे आपकी सरकार हो या हमारी सरकार हो या और किसी की सरकार हो, सरकार के संस्थानों में व्यवस्था नहीं हो पाती। सरकारी व्यवस्था सरकारी ही रहती है लेकिन जैसे आज बिलासपुर में अपोलो बना है तो वहां हमारा इमरजेंसी में ऑपरेशन व ट्रीटमेंट हो जाता है। रायपुर में बड़े अस्पताल हैं, लेकिन जगदलपुर तो वनांचल क्षेत्र है, नक्सली प्रभावित क्षेत्र है। डिमरापाल अस्पताल के बारे में आप मत बताइए कि क्या तकलीफ है। इसको यह बोलिए और आप माननीय स्वास्थ्य मंत्री को नैतिक साहस दीजिए कि वह डिमरापाल और बिलासपुर के अस्पताल की अच्छे से व्यवस्था कर सकें। आपने कह दिया कि मेडिकल कॉलेज की व्यवस्था मान्यता प्राप्त नहीं है? आपने जब यह ड्राफ्ट किया होगा, तब तक मान्यता प्राप्त नहीं थी। अब केंद्रीय सरकार ने पांच मेडिकल कॉलेजों को मान्यता दे दी है। (मेजों की थपथपाहट) मुख्यमंत्री जी का बयान भी आ गया है। भवन भी बन रहा है और सर्टिफिकेट भी आ गया है। मैं माननीय गृह मंत्री के साथ कवर्धा के दौरे में था। उन्होंने मुझे बताया कि मैं मेडिकल कॉलेज के लिए इतना सिसियरली सोच रहा हूं, काम कर रहा हूं कि हर महीने मैं मेडिकल कॉलेज भवन के निर्माण स्थल को देखने जाता हूं। यह संवेदनशीलता है। हमको इच्छा है, आपकी भी इच्छा है कि इस प्रदेश में मेडिकल सुविधा बढ़े। कौन नहीं चाहेगा? लेकिन कानूनी लिखा-पढ़ी, ऊपर के परमिशन का लफड़ा है, जो हमारे हाथ में नहीं है। अगर वह आ गया है तो आगे उस मेडिकल कॉलेज को बनाएंगे। हमारे चिल्फी, तरेगांव, बोड़ला, कुकदुर, पंडरिया जैसे आदिवासी अंचल के लोगों को वहां पर सुविधा मिलेगी। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आपसे ज्यादा कोई और इस दर्द को नहीं जानेगा। हमारे अपने राजनीतिक जीवन में यहां के हर विधायक के पास पीड़ित लोग, दुःखी लोग, बीमार लोग आते हैं और हम अपनी सीमा के अंदर उनको मदद तो कर पाते हैं। लेकिन जब बात बहुत आगे बढ़ जाती है तो मुख्यमंत्री विशेष सहायता योजना की तरफ हम फॉर्म भरवाकर भेजते हैं और उनको चिकित्सा सुविधा देते हैं। हम और आप तो कैसे भी करके अपना इलाज करा लेंगे, अपनी जिंदगी बचाने की जद्दोजहद कर लेंगे, लेकिन एक गरीब साधारण से इलाज के अभाव में दम तोड़ दे, यह हमारे लिए लज्जा की बात है और इसे हम चुनौती के रूप में लेकर इन पांच मेडिकल कॉलेजों को भरवा रहे हैं। आपके एक आरोप पत्र में यह भी था कि पूरे प्रदेश के अस्पतालों में डॉक्टर, नर्स वगैरह नहीं हैं। नेता जी, ऐसा तो नहीं है कि इन ढाई सालों में ही 1800 पद खाली हो गये हैं? यह तो रेगुलर कई वर्षों से चले आ रहा है। अगर आपने भर दिये होते तो हमें कम भरना पड़ता, अगर आपने भर दिये होते तो हमें कम आंकड़े बताने पड़ते। लेकिन आपने पूरे आंकड़े बता दिये और सबका ठीकरा विष्णु देव साय की सरकार पर फोड़ दिया। तो यह उचित नहीं है, न्याय संगत तर्क नहीं है। नगरीय प्रशासन में हमारी सरकार ने पढ़ने वाले बच्चों के लिए 38 नालंदा परिसर का इंतजाम किया है। (मेजों की थपथपाहट) 38

नालंदा परिसर के लिए 200 करोड़ रुपये से ऊपर का फंड दे रहे हैं। नगर-निगम और नगर पालिकाओं के विकास के लिए 3000 करोड़ रुपये से ऊपर की राशि हमारे उप मुख्यमंत्री जी ने दी है और उसमें कोई भेदभाव नहीं किया है। (मेजों की थपथपाहट) तखतपुर विधान सभा में भारतीय जनता पार्टी का अध्यक्ष नहीं है। मैं आपको कहना चाहता हूँ कि आप अभी वहाँ की अध्यक्ष महोदया श्रीमती पूजा मक्कड़ को टेलीफोन लगाइए और पूछिए कि करोड़ों रुपये की स्वीकृति बिना किसी भेदभाव के हमने तखतपुर की जनता के विकास के लिए माननीय अरुण साव जी से दिलवायी है। वहाँ पर फलड लाइट लगी है, वहाँ स्टेडियम बन रहा है, वहाँ चौपाटी बन रहा है, वहाँ राम सदन बन रहा है, वहाँ पर और भी बड़े-बड़े कई काम हैं, जिसको मैं अभी बता नहीं सकूंगा। गलियाँ, नालियाँ, सड़क, लाइट, रोड। तखतपुर शहर के लिए 19 करोड़ रुपये की 5 किलोमीटर की रोड बन रही है। यह सब हम इसलिए भेजे हैं, क्योंकि जनता के प्रति हमारी जवाबदेही है। यह तो स्थानीय व्यवस्था है। चुनाव में हार-जीत तो होती ही है। हमारे पास जनादेश को मानने की हिम्मत है। हम जनादेश स्वीकार करते हैं कि अगर वहाँ कांग्रेस पार्टी की अध्यक्ष बनी हैं, तो हम उसका भी उतना ही सम्मान करेंगे, जितना अपनी किसी पार्टी के अध्यक्ष का करती और हमने उनके साथ बिना किसी भेदभाव के परिवार के एक सदस्य की तरह नगर के विकास के लिए एक सहयोगी की तरह उनको वायदा किया है कि उनको हम सहयोग करेंगे और करते रहेंगे और अरुण साव जी ने पैसा दिया है और वह देते रहेंगे। (मेजों की थपथपाहट) हम राजनीतिक चश्मों को लगा करके राजनीति नहीं करते। जनता के विकास में राजनीति का चश्मा बहुत आड़े आता है। अध्यक्ष महोदय, 12,000 करोड़ रुपये की सड़क, इस प्रदेश में ढाई साल, पौने तीन साल में जो भी हुआ हो, उसमें पुल-पुलिया, सड़क के लिए मंजूरी हुई है। कमी-बेशी हो सकती हैं। कहीं पर ठेकेदार या लोकल लेवल में भ्रष्टाचार का छोटा-मोटा काम किसी ने किया होगा, लेकिन मंत्री तो कार्रवाई करेंगे ना? यह सदन है। आप जब पूछेंगे तो कौन कार्रवाई नहीं करेगा और क्यों कार्रवाई नहीं करेगा? उसको भ्रष्टाचार का मुद्दा बना करके यदि अविश्वास प्रस्ताव आए, तो यह उचित नहीं है। माननीय डॉक्टर साहब, नक्सलियों के प्रतिदिन के हिंसक वारदात को आपने 15 साल में कई बार महसूस किया है। डॉक्टर साहब, मैं एक घटना बताना चाहता हूँ। नंद कुमार पटेल जी के संग मैं कांग्रेस पार्टी के विधायक के रूप में एराबोर में जो ब्लास्ट हुआ था, उसको देखने के लिए कांग्रेस विधायक दल गया था।

समय:

9.36 बजे

(सभापति महोदय (श्री विक्रम उसेण्डी) पीठासीन हुए)

हम लोग जगदलपुर पहुंचे। रात को 11:00 बजे मुख्यमंत्री, डॉक्टर रमन सिंह का फोन आया। पटेल जी को भी आया, मुझे भी आया कि आप लोग एक सुरक्षित जगह है, उससे ज्यादा आगे मत बढ़िएगा, मैं जाने नहीं दूंगा और उन्होंने पोलमपल्ली के पहले एराबोर में हम लोगों को गिरफ्तार करवाया

और सी.ए.एफ. के कैंप में रखा। नक्सली समस्या का निराकरण हुआ। आप जो छोटे-मोटे कानून के उल्लंघन का उल्लेख किए हैं कि यहां हत्या हो गई, वहां बलात्कार हो गया, वहां लूट हो गई, वहां मिर्ची डाल के पैसा लूट लिए, यह कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं है। है, लेकिन उसका निराकरण है और हो भी रहा है। नक्सली समस्या से हम मुक्त हुए, उसके लिए तो विष्णु देव साय जी का और हमारे जांबाज गृह मंत्री जी का तो स्वागत होना चाहिए। ऐसा गृह मंत्री जो वहां मोटरसाइकिल में जाता था। वही पुलिस के जवान हैं, वही पुलिस के आई.पी.एस. अफसर हैं, वही पुलिस की गाड़ियां हैं, वही पुलिस की बंदूकें हैं। आपको ज्यादा बटालियन मिला। बस्तर वही है, पहाड़ वही है, नदी वही है, उनकी गुफाएं और नक्सलियों के कैंप वही हैं, उनके स्मारक वही हैं। फिर क्या कारण है कि आपने थोड़ी-सी भी सफलता प्राप्त नहीं की? क्या कारण है कि अमित शाह जी और प्रधानमंत्री के निर्देश पर हमारे यशस्वी मुख्यमंत्री और तेजस्वी गृह मंत्री, दोनों ने नक्सली समस्या को समूल नष्ट कर दिया? अब बस्तर आजाद हो गया। बस्तर खूनी क्रांति से आजाद हो गया। सभापति महोदय, मुझे अफसोस हुआ कि हमारे सदन के वरिष्ठ नेता, पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने एक बयान दे दिया। उनको शायद यह पसंद था कि नहीं था कि नक्सली समस्या हल हो। लेकिन उन्होंने बयान दे दिया कि जब नक्सली समस्या हल हो गई तो फोर्स को क्यों रखे हो? बताइए, कभी ऐसा कुछ होता है? अभी एक घंटे पहले नक्सली समस्या खत्म हुई, दूसरे दिन फोर्स उठा लिये, फिर वे आकर घुस जाएं। अभी साल भर भी रखना पड़े तो रखिए, दो साल भी रखना पड़े तो रखिए। वहां नक्सलियों की परछाई भी नहीं आनी चाहिए। (मेजों की थपथपाहट) आप हमारे बस्तर का ग्रहण खत्म किए हैं। वहां पर किसी प्रकार से कोई कंप्रोमाइज नहीं होना चाहिए और आपने जो एक सूत्र रखा है कि बस्तर का चहुंमुखी विकास हो, वह होगा। अब आप लोग बात-बात में अदाणी, अदाणी, अदाणी कहते हैं। मान लीजिए कि कोई उद्योगपति आएगा भी तो उसको आप कैसे रोकेंगे? एक उद्योगपति तो आया था लेकिन आपने उसको भगा दिया। आप उस टाटा की कितनी एकड़ जमीन लिए थे? आपने जमीन वापस ले ली। आप उद्योगपति को वहां आने नहीं देते। मान लीजिए अदाणी नहीं आयेगा तो कोई दूसरा आएगा और कोई दूसरा आता है तो उसको आने नहीं देते।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय सभापति महोदय, आपने दो बातें कही। एक तो अभी कहा कि हमने टाटा उद्योग को जमीन दी, यह आप अधूरी जानकारी दे रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- आपने दो बातें कहीं कि एक तो अभी जो टाटा उद्योग की जमीन हमने दी, आप ये अधूरी जानकारी दे रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- सर, पूरा कर दीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- पूरी जानकारी यह है कि आप ही के शासनकाल में उन्होंने लिखकर दे दिया कि हम उद्योग यहां नहीं लगायेंगे। उसके बाद ये कार्रवाई हुई है। दूसरी बात जो आपने नक्सली समस्या के बारे में कहा, नक्सली समस्या तब समाप्त मानी जायेगी जब हम पूरी तरह से आजाद हो जायेंगे,

सुरक्षित हो जायेंगे। और जब ये बटालियन यहां से चली जायेगी और सबके जो जेड प्लस सुरक्षा वाले घूम रहे हैं, वह हट जायेगी। उस दिन हम मानेंगे कि नक्सली समस्या खत्म हो गई है।

श्री धर्मजीत सिंह :- सर, तो मैं आपसे निवेदन यह भी कर रहा हूँ कि ये जो फोर्स वहां पर है, उनके कई करोड़ रुपये नगदी जो गढ़ों में रखे हुए हैं, उनको यहां की फोर्स ने जब्त किया। जो आई.ई.डी. लगा हुआ है, उसको इन्होंने जब्त किया। मैं ये कह रहा था कि वही पुलिस, वही थाना, वही गोली थी, लेकिन राजनीतिक इच्छाशक्ति पर ये सब निर्भर करता है। अगर आपका विल पॉवर तगड़ा है, अगर आप राजनीतिक इच्छाशक्ति रखते हैं तो पुलिस वाला भी काम करेगा।

श्री भूपेश बघेल :- आप ये कहना चाह रहे हैं कि रमन सिंह जी जगह उसी समय विष्णु देव साय जी को मुख्यमंत्री बना देते तो नक्सल समस्या कब की खत्म हो जाती।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं ये नहीं कह रहा हूँ। मैं दिल्ली की बात कह रहा हूँ। जब वह लोग सोच लिये, उसको ये लोग अमल में लाये हैं। आपने भी अपना प्रयास किया है, मैं आपके प्रयास को थोड़ी नकार रहा हूँ कि आपने नहीं किया।

श्री अजय चन्द्राकर :- जब आप इस सदन में उपनेता था, महेन्द्र कर्मा जी नेता थे। सलवा जुड़ूम आप दोनों ने रमन सिंह जी के साथ मिलकर ही उन्मूलन के लिये शुरू किया था। आपने भी उसका समर्थन किया था कि रमन सिंह जी प्रयास कर रहे हैं। आप उसको राजनीतिक अर्थों में ट्विस्ट कर रहे थे। ऐसा नहीं है। आपने कुछ नहीं किया, मैंने कुछ नहीं किया, ये आप स्वीकारिये।

श्री भूपेश बघेल :- वह सलवा जुड़ूम स्वप्रेरित था। जहां सलवा जुड़ूम में शासकीयकरण हो गया, पैरामिलिट्री फोर्स घुस गई, वहीं से गड़बड़ शुरू हो गई।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप तो एक-एक पल के गवाही हैं। अब आप उसको राजनीतिकरण कर रहे हैं। आपके समय दिन कैसा था? जब छत्तीसगढ़ में पहली बार गीदम थाना लूटा गया तो अजीत जोगी जिंदाबाद के नारे लगे। ये आपके साथ क्या संबंध थे, वह दर्शाता है।

संसदीय कार्य मंत्री (केदार कश्यप) :- ये नक्सलवाद पर बात कर रहे हैं। इन्होंने झीरम घाटी पर जो बड़ी-बड़ी बात करते हैं कि शहीद हुए, शहीद हुए। उनके नाम से इन्होंने जगदलपुर में करोड़ों रुपये का स्मारक बनाया है। आप जाकर देखियेगा 1 लाख रुपये से ऊपर का नहीं है। मतलब इस तरीके से इन लोग भ्रष्टाचार करने में, अपने शहीदों को भी अपमानित करने से कहीं पीछे नहीं हटते, इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा। (शेम-शेम की आवाज)

श्री अजय चन्द्राकर :- लेकिन एक बात आरोप-प्रत्यारोप में झीरम निकल गई, लेकिन आदरणीय नेता जी का जेब के सबूत भर को नहीं देख पाये। दूसरा माननीय नेता प्रतिपक्ष जी आप नहीं थे तो एक बात पूछा था। ये बैठे हैं, उनके साथ अस्पताल में आपकी क्या गुफ्तगू हुई? ये आपको बताना चाहिए। और एकात हाथ इसको दिये थे, ऐसा लोग बोलते हैं, भई हम नहीं जानते।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं कोई आपत्तिजनक बात नहीं करूंगा। माननीय अध्यक्ष जी, नेता जी ने अपने आरोप-पत्र में ये कहा है कि यहां इतनी घटना हो गई, ये लूट लिये, वो खसोट लिये। आप भी हाफ एनकाउंटर शुरू करवाओ- अभियान लंगड़ा। सबके पैर में गोली मरवाओ। अपराधी सब ठीक हो जायेंगे। यू.पी. से उसका थोड़ा फार्मूला मंगवा लीजिए और यहां भी शुरू करा दो। सब ठीक हो जायेंगे। फिर बाद में यही बोलेंगे कि गोली मार रहे हैं। अपराधियों से हमको छत्तीसगढ़ को बचाना है। अफीम की खेती, अरे कौन खेती किया, काहे को किया, कोई उसको सरकार का संरक्षण है क्या ? कौन मुख आदमी संरक्षण देगा? राजनीति में कौन है, कोई भी संरक्षण नहीं देगा। जो एकदम अनपढ़ होगा, वह भी नहीं देगा। लेकिन आपने अच्छा किया। उसके ऊपर बहुत बढ़िया कार्रवाई की और जरूरत पड़े तो और सख्त कार्रवाई करिये। इस प्रकार से अफीम के चिंदीचोरी का धंधा करने वालों को थोड़ा ठीक कर दीजिए। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आपने शराब के बारे में भी कह दिया कि बहुत शराब बिक रही है, यहां पर बहुत दारू की गंगा बह रही है। अरे भाई आपके जमाने में साल का 5 हजार करोड़, 6 हजार करोड़ रुपये आता था। आज की तारीख में 10 हजार करोड़ रुपये से ऊपर आमदनी हो रही है तो दारू बिकेगी तभी तो आमदनी आयेगी न। पहले तो बिकता ही नहीं था तो कहां से आता।

सभापति महोदय :- धर्मजीत जी, आप और कितना समय लेंगे ?

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, मैं जल्दी खत्म कर दूंगा, ज्यादा नहीं है। दारू बिक रहा है, पैसा आ रहा है और राजस्व में जमा हो रहा है। उसको कोई इधर-उधर नहीं कर रहा है। रेत में गेंगवार, जब भूपेश बघेल जी की सरकार थी तो मैंने तो 4 साल पहले यहां बयान दिया था कि रेत के नक्शे-खसरे बनाकर टेंडर करने की प्रक्रिया आपके समय में ही शुरू हुई थी तो मैंने यह बोला था कि आजू-बाजू दो रेत वाले रहेंगे तो लड़ाई होगी और मैंने बोला था कि गेंगवार होगा और वह गेंगवार हो ही गया लेकिन गृहमंत्री जी उनको सख्ती से कुचलियेगा। आप यह प्रदेश रेत के ठेके में ले सकते हो लेकिन रेत के नाम से यहाँ की शांति में कोई खलल नहीं डाल सकता। आप जरूर लीजिये, कोयले में क्या हुआ और किसमें क्या हुआ, वह सब कोई जानते हैं, मैं नहीं बोलूंगा। अब महतारी वंदन में हमने 70 लाख महिलाओं को 1000 रुपये महीना दिया, अब उनको नहीं मिला, 5 लोगों को उनको नहीं मिला। आप बड़े प्रॉस्पेक्ट में देखिये कि हमने प्रदेश की ढाई करोड़ जनता में से 70 लाख महिलाओं को हमारी सरकार ने 1000 रुपये देने की हिम्मत की, उनको हम दे रहे हैं। कोई कमी हो तो बताइए, आज मैंने ही आंगनबाड़ी महिला विकास मंत्री जी से प्रश्न पूछा था। मैं कौन सा उनके ?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- नहीं। कमी होगी तो बताओ बोल रहे हैं तो आपने विधवा लोगों का 500 रुपये काट दिया था, वही बता रही हूँ।

श्री धर्मजीत सिंह :- हां, वह ठीक है। हम भी आपकी उस बात को मानेंगे लेकिन उसके नाम से, एक कमी के नाम से पूरी इतनी बड़ी उपलब्धि को आप प्रश्नवाचकचिह्न में नहीं ला सकते। यह विष्णुदेव

सरकार की ही हिम्मत है कि 70 लाख महिलाओं को हर महीने 1000 रुपया देने का साहस यह सरकार कर रही है। (मेजों की थपथपाहट) और हमारे वित्त मंत्री जी ने वित्तीय प्रबंधन से उसका इंतजाम भी किया है और आगे भी देंगे। आपके आरोप में एक आरोप था कि कृषि उपज मंडी में मंत्री, अध्यक्ष बन गए हैं और कृषि उपज मंडियों में नामजद होने वाले हैं या नामजद करेंगे। आप जरा यह बताईये कि आपकी सरकार में कहाँ से चुनाव हुआ था? कौन था अध्यक्ष? पिछली सरकार में कृषि मण्डी बोर्ड में कौन अध्यक्ष निर्वाचित हुआ था और कब उसका निर्वाचन हुआ? तब भी आपके लोग नामजद थे, आज भी नामजद हैं और जब चुनाव होगा तब इसको हम कराएंगे। आपने तो नगर पालिका के चुनाव में पूरा पैटर्न ही बदल दिया। हमने डायरेक्ट जनता की च्वाइस पर चयन कराया और आपने पार्षदों की खरीद-फरोख्त पर भरोसा किया और उनको आपने महापौर बना दिया। नकटी गांव, नकटी के बारे में बहुत हल्ला हुआ। आप व्यक्तिगत रूप से कहेंगे तो नकटी की घटना का मैं बिल्कुल समर्थक नहीं हूँ। नकटी के तोड़-फोड़ के बारे में मुझे खुद बहुत पीड़ा है लेकिन जो फिगर फैक्ट्स हैं वह मुझे यहाँ आपको बताना ही पड़ेगा। छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा कलेक्टर कार्यालय को पत्र क्रमांक-1747 शो एंड शो के माध्यम से ग्राम नकटी के खसरा क्रमांक-420, रकबा-15.479 हैक्टेयर भूमि को सामान्य आवासीय योजना हेतु आवंटन की मांग प्रस्तुत की गयी। इस सम्बन्ध में नक्शा खसरा संलग्न किया। उस समय प्रदेश में कांग्रेस की सरकार थी। जिनके कार्यकाल में इस योजना की नींव रखी गई, उस गाँव की कुल जनसंख्या 2110 है, कुल शासकीय भूमि 22.736 हैक्टेयर, निजी भूमि 24.175 हैक्टेयर, शेष भूमि को चारागाह के रूप में दर्ज किया है और वर्ष 2022 के बाद वहाँ पर अचानक बेजा कब्जा शुरू हुआ और मैं निर्मित मकानों के आकार का विवरण भी बता देता हूँ। 1000 वर्ग फीट के 7 मकान हैं, 1200 वर्ग फीट के 3 मकान हैं, 5000 से 10 हजार वर्ग फीट के 13 मकान हैं, 10 हजार वर्ग फीट से अधिक के 21 मकान हैं और इस तरह से सरकार को मजबूरी में उनके ऊपर सख्त कार्रवाई करनी पड़ी लेकिन उन्हें हमारी सरकार ने 1-1 कमरा दिया। पक्के कमरे हैं, छोटे भले हो सकते हैं पर उनको छतविहीन नहीं किया। दूसरी तरफ 147 घर कच्चे-पक्के मकान जिसमें 6 प्रधानमंत्री रोड, नाली, स्ट्रीट लाइट इसको डॉक्टर रमन सिंह जी सेरीखेड़ी में बनवाए थे। वहाँ पर वर्ष 2019-20 में विधायक, सांसदों, अधिकारियों एवं हाउसिंग बोर्ड के कुल 157 एकड़ भूमि पर विधायकों की कॉलोनी हेतु 82 एकड़ एवं हाउसिंग कॉलोनी बनाने हेतु दी थी। जिस भूमि के खदरा भाठा में 147 परिवार अधिक गरीब लोग रहते थे, वहाँ डॉ. साहब ने सब सुविधा दी थी। उनको तोड़ दिया गया और आज तक उन्हें एक छोटे से कमरे की छत भी नहीं नसीब हुई है। यह कार्यवाही आपके शासनकाल की है और यह कार्यवाही श्री विष्णु देव सरकार जी की कार्यवाही है।

सभापति महोदय :- कृपया आप समाप्त करें।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, मैं केवल 5 मिनट में अपनी बात समाप्त करता हूँ। मानवीय रूप से हम उन पीड़ित परिवारों के साथ हैं। हम यह मांग भी करते हैं कि सही मायने में उनके व्यवस्थापन की व्यवस्था होनी चाहिए।

माननीय सभापति महोदय, आपने हसदेव अरण्य के बारे में दो-तीन अलग-अलग हिस्सों पर लिखा है। हसदेव अरण्य के बारे में, मैं पहले दिन से इस बात के लिए बोलते आ रहा हूँ कि वहां के जंगल को बचाना हम सब का धर्म है, लेकिन उस समय भी जब मैंने कांग्रेस की सरकार के समक्ष अशासकीय संकल्प पेश किया था, आप आसंदी में थे और कृपापूर्वक आपने मुझे बोलने का अवसर दिया था। मैंने उसकी महत्ता को बताने का प्रयास किया कि यहां नदियों का कैचमेंट, नदियों का जल स्रोत हसदेव में आता है। उस हसदेव को बनाने के लिए 61 गांवों को उजाड़ा गया था। उसे बनाने में आपके पिताश्री का बहुत योगदान था। उससे कोरबा के लिए पानी जाता है, बिजली पैदा होती है, खरसिया, डबरा, मुझे अजीत जोगी जी के साथ उसके जाने का अवसर मिला, माननीय अजय चन्द्राकर जी ने उस समय टर्न की सिस्टम का बहुत विरोध किया था। वह पहला टर्नकी कैनाल था। मैं उनके साथ गया था। उसका डबरा में शिलान्यास हुआ था।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें। अभी 8-9 लोगों को बोलना है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, वहां नदी का पानी रुक रहा है, मैंने यह बोला। लेकिन उस समय राजस्थान पावर लिमिटेड को वह पावर सेक्टर दे दिया गया। उसके ओ.एम.डी. अडानी बने और कांग्रेस की सरकार ने उसका एग्जीमेंट अडानी से किया। यहीं की कांग्रेस की सरकार ने किया। मैं वह तारीख भी बता दूंगा। माननीय सभापति महोदय, मेरे पास यहां के वन मंत्री का जवाब है। गृह मंत्री ने कहा कि यह हमारे हाथ में नहीं है। प्रदेश सरकार के हिस्से में नहीं है, यह दिल्ली की सरकार का मामला है हम इसमें कुछ नहीं कर सकते हैं। वहां जिस मंच पर राहुल गांधी जी ने सभा की थी और उन्होंने यह कहा था कि मैं गरीब आदिवासियों को नहीं उजड़ने दूंगा, उसी कांग्रेस की सरकार में उसकी बेदखली का नोटिस जारी हुआ। (शेम-शेम की आवाज) उस समय राजस्थान के मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ आये थे और यहां के मुख्यमंत्री से मिलकर गये थे। उन्होंने भी कुछ वायदें, बातें की होंगी और वह मामला वहीं के वहीं राजस्थान के पाले में गया। अडानी के पाले में गया और हम उसमें कुछ नहीं कर पायें। लेकिन माननीय सभापति महोदय, एक बात और है। उस समय कांग्रेस पार्टी के 7-8 विधायकों ने, उसमें लालजीत सिंह जी आप भी थे, आपने चिट्ठी लिखी थी कि वहां 450 वर्गकिलोमीटर में हाथी अभ्यारण्य रखिये। यह लेमरू का मामला है, आप थोड़ा सुन लीजिए। वही सब मामला आता है। उसमें बड़े-बड़े लोग थे। अगर लेमरू का एरिया 3000 किलोमीटर कर दिया जाता तो आज यह लेमरू, एलीफेंट अभ्यारण्य की समस्या खत्म हो चुकी होती। उसमें ले-देकर 1900 वर्गकिलोमीटर हुआ। मैं हसदेव अभ्यारण्य के बारे में पूछते रहा। मुझे यह बताया गया कि वाडफनगर, चिरमिरी, सूरजपुर और कहां-कहां

का जवाब था, मेरे पास लिखित में जवाब है। मैं वह जवाब नहीं बना रहा हूँ, इसमें यह लिखा हुआ है। इसको आप कभी भी पढ़ लीजिएगा। मेरी पूरी मंशा थी, मैंने पूरी ताकत लगायी थी और सभापति महोदय यह आपकी भी मंशा थी, भाभी जी श्रीमती ज्योत्सना महंत जी ने भी इसके लिए चिट्ठी लिखी थी। इसमें महंत जी की भी रुचि थी। इस विषय को विधान सभा में लाने के लिए आपकी रुचि अलग झलक रही है क्योंकि आप चिंतित हैं। हसदेव अरण्य कई प्रकार के तरीके से इस अविश्वास प्रस्ताव में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

माननीय सभापति महोदय, हम पुलिस की नाकामी के बारे में बात करते हैं। सब इंस्पेक्टर प्लाटून कमाण्डर के लगभग 950 पदों पर कांग्रेस की सरकार जो बनी थी, उसके पहले डॉ. रमन सिंह जी की सरकार में भर्ती हो चुकी थी। आपने 5 सालों तक नियुक्ति नहीं दी इसलिए क्योंकि वे रमन सिंह जी के समय की भर्ती हैं। उसे विष्णु देव साय जी की सरकार ने नियुक्ति दी है, प्रशिक्षण दिया है और वे सब अभी फील्ड में हैं। (मेजों की थपथपाहट) 341 पदों की परीक्षा चल रही है, ये नये सब इंस्पेक्टर बनेंगे और कांग्रेस की तरह नहीं कि इनको फील्ड में लाकर हम दिखाएंगे, इनको हम नहीं लटकाएंगे, नहीं भटकाएंगे, हम इनको फील्ड में लाकर दिखाएंगे और हमारे बहादुर नौजवान बच्चे काम करेंगे। लगभग 6 हजार कांस्टेबल के पदों में भर्ती की प्रक्रिया पूर्णता पर है। आप लोग राजनांदगांव की भर्ती प्रक्रिया का बार-बार जिक्र करते हैं, वहां कुछ गलतियां हुई होंगी, लेकिन राजनांदगांव की परीक्षा को निरस्त करके खैरागढ़ में इस परीक्षा को पुनः कराया गया था। (मेजों की थपथपाहट) उस गलती को छिपाया नहीं गया है, उस गलती पर पर्दा नहीं डाला गया है। हमने वहां पब्लिक सर्विस कमीशन जैसे किसी के डिप्टी कलेक्टर बनाने वाले अधिकारियों को वहां पर मौका नहीं दिया, पब्लिक सर्विस कमीशन का अधिकारी जेल में है। यह छत्तीसगढ़ हिन्दुस्तान का इकलौता राज्य है, जहां तीन-तीन आई.ए.एस. अधिकारियों ने जेल की शोभा बढ़ाई है, अभी भी बढ़ा रहे हैं। मैं आई.ए.एस. अधिकारियों से भी कहना चाहता हूँ कि सत्ता में बैठे हुए लोगों के आदेश का आँख मूंद कर पालन मत किया करो, यही हथ्र होता है, जो अभी इनकी सरकार में हुआ है।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति जी, नूरजहां का प्रश्न फिर खड़ा होता है।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, आने वाले समय में बस्तर फाईटर के भी हजारों पदों पर भर्ती की जाएगी। ये सब जवान मजबूत होंगे, आगे आएंगे, ट्रेड होंगे, अपराधियों की पकड़-धकड़ करेंगे, कानून-व्यवस्था को सम्हालेंगे। हमारा शांत प्रदेश और उसमें भी सबसे सुन्दर खूबसूरत बस्तर जो कि केरल प्रदेश से बड़ा है, जहां की सुरम्य वादियों को देखने के बाद मन प्रफुल्लित होता है, वहां आपने शांति का संदेश दिया। गृहमंत्री जी अपनी जोन जोखिम में डालकर गए। इनके पहले के गृहमंत्री का तो मुझे नहीं मालूम है, अगर आपको मालूम है तो बताना कि कहां-कहां गए। हमारे नेताओं को यह श्रद्धांजलि है कि आपने बस्तर को उस कलंक से मुक्त किया। (मेजों की थपथपाहट) ये श्रद्धांजलि है

हमारे बस्तर के उन बेगुनाह आदिवासियों भाइयों, माताओं और बहिनों की, जिसे नक्सलियों ने अपने उपयोग के लिए गोली मारी। ये श्रद्धांजलि है-उन नवजवानों को, बहादुर जवानों को, जिन्होंने अपने प्राण की आहुति दी, जिनके सिर में गोली लगी और सीने में गोली लगी, हम उनको श्रद्धांजलि देने के लिए खत्म किए हैं और हमारे जवानों की शहादत बेकार नहीं जाएगी, हमारा बस्तर बढ़ेगा, सुरक्षित रहेगा। गृहमंत्री जी और मुख्यमंत्री जी, इस प्रदेश में इतिहास में हमेशा आपका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा कि आपने एक ऐसे कलंक से हमें मुक्ति दिलाई, जो 40 साल में कई गृहमंत्री और मुख्यमंत्री आए और गए, उसमें आपके किस्मत में यह यश लिखा था। (मेजों की थपथपाहट) आपने मेहनत की, मैं आपको बधाई देता हूँ और दो लाईन कहकर अपनी बात समाप्त करता हूँ -

हमने कांटों में भी चलकर मंजिल का रास्ता बनाया है,

हमने कांटों में भी चलकर मंजिल का रास्ता बनाया है,

हर चुनौती को अवसर बनाकर दिखाया है।

आज जो प्रश्न उठा रहे हैं विश्वास पर

आज जो प्रश्न उठा रहे हैं विश्वास पर,

उन्हें जनता ने ही हर बार जवाब सुनाया है, बार-बार जवाब सुनाया है। (मेजों की थपथपाहट)

गृहमंत्री जी, 50 चुनाव हारने का रिकॉर्ड इनके नेता के नाम से दर्ज हो गया है। मैं तो भगवान से प्रार्थना करूंगा कि महंत जी चुनाव लड़ें और जरूर जीतें, वे अच्छे नेता हैं। इनको तो कब से मुख्यमंत्री बन जाना था, पर ये बनने देंगे, तब न।

सच की नींव पर जो सरकार खड़ी होती है,

सच की नींव पर जो सरकार खड़ी होती है,

जनता के विश्वास से उसकी राह बड़ी होती है,

आरोपों के शोर से सच कभी दबता नहीं,

विश्वास जनता का हो तो अविश्वास कहीं टिकता नहीं। (मेजों की थपथपाहट)

इसलिए मैं इस अविश्वास प्रस्ताव का विरोध कर रहा हूँ। नेता जी, आपकी मेहनत की सराहना करता हूँ। मैंने अपने राजनीतिक जीवन में कई अविश्वास प्रस्ताव में भाग लिया है, 150-151 पेज के आरोप-पत्र को पढ़ने में बहुत मेहनत लगी है, पर आप बनाए होंगे तो आपको और ज्यादा मेहनत लगी होगी, पर यह आपका संवैधानिक अधिकार है और आपने अपने अधिकार का प्रयोग किया, लेकिन जनता के विश्वास, जनता के प्यार, मुख्यमंत्री के काम, सरकार की छवि आपके इस अविश्वास प्रस्ताव का बुरा हाल थोड़ी देर में करेगा, इसका मुझे आपके प्रति दुःख भी होगा और मुझे अपनी सरकार के प्रति खुशी भी होगी। आप लोग ऐसा काम करिये, जनता के प्रति जो जवाबदेही का काम कर रहे हैं, उस काम से

हम जनता का दिल जीतेंगे। आने वाले दिनों में चुनाव भी जीतेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद। (सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती संगीता सिन्हा (संजारी बालोद) :- माननीय सभापति महोदय जी, आज हमने सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया है। बहुत देर से चर्चा चल रही है। सभी ने अपने-अपने तरीके से अपनी बातों को रखा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कहना यह चाहती हूँ कि जब कोई भी चुनाव होता है और जब सरकार का चयन होता है तो मेनोफेस्टो मायने रखता है कि वह सरकार जो चुनाव में खड़ी है, उस सरकार की कार्ययोजना क्या है ? उसी कार्ययोजना को देखते हुए जनता निर्णय लेती है कि कौन सी सरकार हमारे काम की है और कौन सी सरकार नहीं। जिस विश्वास के साथ भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई है तो मैं उनको बधाई भी देती हूँ कि आपको जनता ने चुना है। लेकिन आपका फर्ज होता है कि जिस विश्वास के साथ जनता ने चुना है, आप उस विश्वास पर खरा उतरें। लगातार ढाई साल हो गये हैं, किसी भी काम पर, किसी भी कार्यशैली पर, किसी भी जगह खरा नहीं उतरे हैं, जिसके लिए हमको अविश्वास प्रस्ताव जनता की तरफ से लाना पड़ा। यह हम नहीं कह रहे हैं। छत्तीसगढ़ की जनता पूरे राज्य की जनता कह रही है कि यहां की जो सरकार है, वह काम नहीं कर रही है। न वह किसान भाईयों के लिए काम किया, न महिलाओं के लिए काम किया, न ही युवा साथियों के लिए और बुजुर्ग महिलाओं के लिए काम किया है।

आदरणीय सभापति महोदय जी, मेरे ही विधानसभा क्षेत्र की आज की ही घटना है। बच्चियों और महिलाओं की सुरक्षा को लेकर मेरा कल भी प्रश्न लगा था कि महिलाएं आपके राज में सुरक्षित नहीं हैं। इन्होंने इस बात को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। आज ही की घटना है। एक बच्ची जो 3 दिन से कांकर से लापता थीं, मेरे यहां पर्यावरण पार्क में निर्वस्त्र पाई गई, ओपन अवस्था में पाई गई। मैं अभी जिला अस्पताल में फोन की हूँ तो जिला अस्पताल के डाक्टर का कहना है कि पुलिस ने किसी भी प्रकार से चेक करने से मना कर दिया है। मैं सिर्फ मेडिकल चेकिंग किया हूँ। मैं कोई और चेकिंग नहीं किया हूँ। सभापति महोदय, यह क्या है ? फिर मैं पुलिस विभाग में फोन की, टी.आई. को फोन की। टी.आई. से पूछी मामला क्या है ? उसने कहा कि लड़की ओपन अवस्था में पाई गई। हमने सिर्फ डाक्टरी मुलाहिजा करवाया है और उसको सखी सेन्टर में छोड़ दिया। आदरणीय सभापति महोदय जी, यह इतना गंभीर मामला है। उसके साथ क्या दुष्कर्म हुआ है, उसकी तो जांच होनी चाहिए न। इस तरीके से सरकार हर चीज को दबाने का प्रयास करती है। मैंने इस बात को कहा था। मैंने लगातार आकड़े दिये थे कि आपकी सरकार में लगातार 2-3 हजार, इस प्रकार मामले बढ़ते जा रहे हैं। आपकी क्या कार्ययोजना है ? कोई जवाब नहीं है। महिलाओं को, बेटियों को कैसे सुरक्षित किया जाये। नाबालिग बच्चियों का अपहरण लगातार बढ़ते जा रहा है, वह बढ़ते क्रम में है। कहीं कोई संज्ञान में नहीं ले रहा है। मैं आपको याद

दिला देना चाहती हूँ कि हमारी महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का कथन है कि जिस राज्य में दुष्कर्म होता है वहाँ यदि 24 घंटे के अंदर दुष्कर्म करने वाला व्यक्ति नहीं पकड़ाता है तो राज्य में उस मुख्यमंत्री को इस्तीफा दे देना चाहिए। कहाँ है ? महामहिम का यह कथन है। कहाँ पालन हो रहा है ? आपको तो खुले आम इस्तीफा देना चाहिए। हमको बोलने की जरूरत नहीं पड़नी चाहिए कि आपका कानून-व्यवस्था खराब है। (व्यवधान)

श्रीमती भावना बोहरा :- यह लाइन आप यह बोल रही हैं, आपकी जब कांग्रेस का शासन था, मुख्यमंत्री थे तो आप पर यह बात लागू होती थी या नहीं, ज़रा ये भी बता दीजिए। उसके हिसाब से फिर इस्तीफा दे देना चाहिए था।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, मैं सुबह से सुन रही हूँ।

श्रीमती भावना बोहरा :- जब आप बात बोल ही रही हैं तो सुनना तो पड़ेगा न। अगर आप गलत बात करेंगे तो सामने से तो जवाब मिलना ही है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- जब से अविश्वास प्रस्ताव चल रहा है तब से पूर्ववर्ती सरकार की बातें चल रही हैं। हम ढाई साल का अविश्वास प्रस्ताव लाए हैं ।

श्रीमती भावना बोहरा :- नहीं, क्यों नहीं चलेगी। बातें तो बिल्कुल सुननी पड़ेगी न। एक उंगली उठायेंगी तो दो उंगली आपकी तरफ भी उठेंगी। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, हम ढाई साल का लाए हैं । अगर आप पूर्ववर्ती सरकार की चर्चा करने बोलेंगे, हम कर लेंगे। हम उसके आगे की चर्चा करना चाहते हैं। जब आप पूर्ववर्ती सरकार की चर्चा करना चाह रही हैं, तो हम आपके 15 साल का चर्चा करेंगे । (व्यवधान)

श्रीमती भावना बोहरा :- आपके मुख्यमंत्री को इस्तीफा दे देना चाहिए था। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- क्यों नहीं चर्चा, अगर यह लोग गलत बोलेंगे। 15 साल तक तो चुनाव हारते रहे हैं। हम चर्चा कर दिये। ये देखिए 5 साल भ्रष्टाचार को समर्पित कर दिया। (व्यवधान)

श्रीमती शकुंतला सिंह पोर्ते :- आप लोगों के कार्यकाल में भी बहुत अच्छा नहीं था। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हम अविश्वास प्रस्ताव की बात कर रहे हैं। हम तैयार हैं, आप चर्चा करने के लिए तैयार हैं? हम तैयार हैं। आप अविश्वास प्रस्ताव की बात करें, अविश्वास प्रस्ताव की बात करें। आदरणीय सभापति महोदय जी, आदरणीय सभापति महोदय जी, आपने उनको बोलने दिया, हमको भी बोलने दिया जाए। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- ये कौन सी परिवार की चरण वंदना की चाटुकारिता में छत्तीसगढ़ के संसाधनों को समर्पित करने वाले लोग आज 15 साल की बात कर रहे हैं? अपने 5 साल के कुकर्मों पर चर्चा कीजिए। आपके 5 सालों की कर्मों की चर्चा कीजिए, जिसके कारण आज वहाँ बैठे हैं।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- ढाई साल में आपकी कोई उपलब्धि ही नहीं है। उपलब्धि रहता तो चर्चा करते। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- हम यही तो बता रहे हैं कि क्या उपलब्धि है?

श्रीमती शकुंतला सिंह पोर्ते :- बहुत उपलब्धियां हैं दीदी, बहुत सारी हैं। आप लोग महिलाओं को 500 रुपये नहीं दे पाए हैं। आप लोग कितनी बार दिये, बताइए? यहां महिलाओं को बहुत सारी योजनाएं दी जा रही हैं। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- इसलिए आप वहां बैठी हो। (व्यवधान)

श्रीमती अनिला भेंडिया :- 5 साल में जगते हो, 5 साल में सरी कर्म कर रहे हो। ढाई साल का तो कुछ बोल ही नहीं रहे हो। (व्यवधान)

श्रीमती भावना बोहरा :- कौन-कौन से सरी करम कर दिए दीदी, वो भी बता दीजिए ज़रा। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- जशपुर में 5 साल की नाबालिक लड़की के साथ दुष्कर्म होता है। सभापति महोदय जी, गुण्डरदेही में, बालोद जिला में 19 साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म होता है। दुर्ग में 6 साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म होता है। 5 साल की बच्ची के साथ दुर्ग में हुआ है, बोरी से बांध के छोड़ दिया गया था। सूरजपुर में 5 साल की बच्ची, आपके ही शासनकाल में। नवरात्रि के पहले दिन 9 साल की बच्ची के साथ दुर्ग में रेप होता है। सभापति महोदय जी, तीसरे दिन कवर्धा में 1 साल की बच्ची के साथ, अष्टमी के दिन धमतरी में 5 साल की बच्ची के साथ, दुर्ग में फिर से 5 साल की बच्ची के साथ सभापति महोदय जी, हो क्या रहा है? लगातार बच्चियाँ और बच्ची की ज्यादा एज नहीं, 5 साल, 3 साल, 4 साल, 6 साल। बालोद, यहां सब जगह हो रहा है। पोटा केबिन में जो नाबालिक बच्ची है, वह गर्भवती पाई जाती है, कौन है इसके जिम्मेदार? सरकार आपकी है। आपकी जिम्मेदारी बनती है, आपकी जिम्मेदारी है कि कैसे हम बच्चियों को सुरक्षित रख सकते हैं, कहां है सरकार? सभापति महोदय जी, अगर सरकार है तो जिम्मेदारी सबकी लेनी चाहिए। बच्चियां कहां हैं? बच्चियां की सुरक्षा को लेकर कि बच्ची हॉस्टल में कैसे सुरक्षित रहें, यहां तो हॉस्टल में नारायणपुर में बच्चे, युवा बच्चे लोग शौचालय में सो रहे हैं, मैं खुद जांच समिति में गई थी। सभापति महोदय जी, आपकी जिम्मेदारी है कि अगर बच्ची का अपहरण हो रहा है तो उसको ढूँढ के लाने की, कहां है? व्यवस्था लचर है। सिर्फ ये कानून व्यवस्था को वसूली के सिवा कुछ नहीं है। अगर कोई व्यक्ति बालोद से निकलता है रायपुर तक, अगर 500 रुपये लेकर निकलता है, हर जगह वहां पर पुलिस रोकती है, कोई सीट बेल्ट के नाम पर, कोई बेल्ट के नाम से, कोई कागज़ दिखाने के नाम पर, पैसा लूटने का काम सरकार कर रही है।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति महोदय, सूपा बोले तो बोले, चलनी बोल रही है। सूपा बोले तो बोले, चलनी बोल रही है? जिनकी सरकार में थाने नीलामी पर थे, वर्दी की बोली लगती थी, वसूली का

तांडव नाचा जाता था, आज वे प्रश्न उठा रहे हैं? ये विश्वासघाती लोग आज विश्वास पर प्रश्न उठाते हैं, तो ये प्रश्न जायज नहीं है।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय, ये क्या बात करेंगे? इनकी सरकार में, इनके ही धरसीवा के भा.ज.पा. के एक कार्यकर्ता स्वर्गीय संतोष पटेल जी, उन्होंने ट्रेन के नीचे कटकर अपनी जान दे दी। क्यों दे दी? वह शराब कोचिए के खिलाफ शिकायत करते थे, लगातार शिकायत करते थे, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं होती थी। उन्होंने यह समझा कि जान देना बेहतर है, लेकिन सरकार में कोई सुनवाई नहीं आई। ऐसी तो इनकी सरकार है, ये क्या बात करेंगे?

श्री सुशांत शुक्ला :- ये तो अपने लोगों को ही जेल भिजवा दिए साहब। इनकी आधी सरकार जेल में, आधी सरकार बेल में थी। ये क्या बात करेंगे? आज भी बेल में हैं। किसलिए हैं? पूछिए अपने अंतर्मन से, स्वीकार कीजिए कि छत्तीसगढ़ की संपदा को लूटने वाले लोग कौन थे?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- इन लोग तो दूध के धोये हैं।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम तो संविधान को मानने वाले लोग हैं, संवैधानिक व्यवस्था में अपने अधिकार की बात करेंगे और संवैधानिक ढांचे पर सवाल उठाने का अधिकार माननीय सदस्य का बनता नहीं है। लेकिन इनको बुरा लग गया, क्योंकि मैंने इनके एक कार्यकर्ता का दर्द इस सदन में बता दिया, उसके लिए ये बातों को घुमाने की कोशिश कर रहे हैं। यदि हम इस प्रदेश की हालात देखें तो निरंतर महिलाओं के साथ अत्याचार हो रहे हैं। कई मामलों में तो इनके स्वयं के कार्यकर्ता भी थानों के चक्कर काटते रहते हैं, अपना सर पटकते रहते हैं, लेकिन कोई सुनने वाला नहीं होता। विधायक जी की भी वहां कितनी सुनवाई होती है, यह हम ज्यादा नहीं जानते हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय, माननीय मंत्री जी ने कहा कि हम तुरंत FIR दर्ज करते हैं। लेकिन मेरे विधान सभा क्षेत्र में एक बच्ची के साथ छेड़खानी हुई। वह युवक उस बेटे का कॉलेज और हॉस्टल तक पीछा करता था। उसके पिता एक अंगरक्षक की तरह उसके पीछे-पीछे जाते थे। जब बच्ची कॉलेज पढ़ने जाती थी, तो उसके पिता बाहर बैठकर इंतजार करते थे कि कहीं उनकी बेटे के साथ कोई छेड़खानी न हो। जब उसको घर लाते हैं, वह बालोद से लेकर दुर्ग पढ़ाई करने जाते हैं, उसके बाद वे लोग FIR दर्ज कराने गए तो FIR दर्ज नहीं की गई। मैं स्वयं उस बच्ची की मां के साथ FIR दर्ज कराने SP कार्यालय गई थी, लेकिन वहां भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। परिणामस्वरूप तीसरे दिन आत्मग्लानि से पीड़ित होकर उस पिता ने आत्महत्या कर ली। ऐसी सरकार को शर्म आनी चाहिए, जो एक बच्ची की रक्षा नहीं कर पाती है और जिसके कारण एक पिता को आत्महत्या करनी पड़ी। हमारी सरकार से मांग है कि कोई भी FIR दर्ज कराने जाता है, उसका FIR दर्ज करनी चाहिए। बिलासपुर में जो मासूम बच्ची के साथ दुष्कर्म हुआ, उसमें पांच दिनों तक FIR दर्ज नहीं की गई और उसका हश्र यह हुआ कि वहां के Additional SP का ट्रांसफर करा दिया गया। एक ऑडियो भी वायरल हुआ है, जिसमें

30,000 रुपये के लेनदेन की बात हो रही है और कहा जा रहा है कि हमको ऊपर तक पैसा पहुंचाना पड़ता है। मैं एक-एक बात विस्तार में नहीं बोलना चाहती हूं, लेकिन इतना जरूर कहूंगी कि यदि सरकार है तो बच्चियां सुरक्षित होनी चाहिए। आप सुशासन तिहार चला रहे हैं, लेकिन कहीं कोई सुशासन नहीं है। बच्चियां और महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं, वे ट्यूशन तक नहीं जा पा रही हैं। एक तरफ आप लोगों का छत्तीसगढ़ महतारी वर्ष चल रहा है, आप लोग महतारियों का वंदन कर रहे हैं। कोरिया जिले में जो घटना हुई, जिसमें कार के अंदर लोगों को जिंदा जला दिया गया। उनको आपके लोगों ने जलाया है। जो तीन लोग जलकर खत्म हुए हैं, उन्होंने FIR दर्ज कराई थी। यदि समय पर FIR दर्ज होती तो आज वे लोग जीवित होते। सरकार की जिम्मेदारी है कि वह जनता को कैसे सुरक्षित रखे, लेकिन आपकी लापरवाही के कारण तीन लोगों को जिंदा जलकर मरना पड़ा। उनके परिवार की जिम्मेदारी कौन लेगा? गौरेला-पेंड्रा-मरवाही में खुलेआम सुनार की दुकान लगाने वालों को गोली मार दी जाती है। सकती में एक बच्ची को दिनदहाड़े गोली से उड़ा दिया गया। धमतरी के एक ढाबे में तीन लोगों को दौड़ा-दौड़ा कर मारा गया। आखिर जनता कहां सुरक्षित है? खुलेआम मारपीट और गोलीबारी हो रही है। सरकार जो आंकड़े पेश करती है, वे आंकड़े कम बताते हैं क्योंकि आप FIR दर्ज ही नहीं करते। आप आंकड़ा बता देते हैं कि पूर्ववर्ती सरकार से आंकड़ा कम है। आंकड़ा कैसे कम नहीं आएगा, क्योंकि आप लोग FIR दर्ज करते ही नहीं हैं। बहुत लोग FIR दर्ज कराने के लिए घूमना पड़ता है। हम स्वयं जाते हैं, तब भी FIR दर्ज नहीं होती है, यह इस सरकार की सच्चाई है। इस सरकार को इस बात को स्वीकार करना चाहिए। मुझे लगता है कि आज हम जो अविश्वास प्रस्ताव लाए हैं, उसे देखते हुए सरकार को स्वयं इस्तीफा दे देना चाहिए। मैं अतिक्रमण की बात करना चाहती हूं। नकटी गांव में भारी बारिश के दौरान 85 घरों को तोड़ दिया गया। जब हम वहां गए तो सरकार की तरफ से कोई भी मंत्री या विधायक वहां नहीं पहुंचे थे। मैंने कहा था कि आप उन्हें छत दें या न दें, इससे मुझे मतलब नहीं, लेकिन यदि आपको घर तोड़ने ही थे तो दो महीने पहले तोड़ देते। एक कहावत है कि 15 जून के बाद तो पटवारी भी खेत की नाप-जोख नहीं करता है। यहां तो आप भारी बरसात में घर तोड़ दिये। आपने सोशल मीडिया में देखा होगा कि एक बच्चा अपने साईकिल के पास निहारते हुये बैठा है, क्या आपको दर्द महसूस नहीं हुआ है? आवास की बात करते हैं, छत देने की बात करते हैं, 85 लोगों को भारी बारिश में आपने बेघर कर दिया? सभापति महोदय, हम जब गये तो बच्चे छज्जा के नीचे में बैठे थे, आपको तोड़ना था तो तोड़ देते, लेकिन एक समयसीमा में तोड़ते? आपने घर से बेघर कर दिया, नकटी में जहां इंदिरा आवास है, जहां पर पी.एम. आवास है, जहां पर नल-जल योजना है, जहां पर सरकारी रोड़ है, जहां पर बिजली खंबा है, जहां पर कला मंच है, वहां पर शासकीय योजना जारी है तो वह घर कैसे टूटेगा?

श्रीमती भावना बोहरा :- वहां पर इंदिरा आवास भी था, यदि डाटा हो तो बता दीजिएगा । हम लोगों को मालूम नहीं था । आप लोग हर चीज का फेवर करते हैं, इसलिये आपसे पूछ रहे हैं कि इसे टेबल कर दीजिए । एक बार बता दीजिए ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :-सभापति महोदय, वहां पर शासन की हर योजना है ।

श्री शकुंतला सिंह पोर्ते :- आप लोग प्रधानमंत्री आवास क्यों बंद किये थे, जनता का बहुत हित सोचते हैं तो आपने प्रधानमंत्री आवास क्यों बंद किया ? आपकी सरकार में एक भी नहीं बना था ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, जब सभी योजनायें वहां पर है तो फिर अवैध कैसे हुआ है ? सभापति महोदय जी, यही बात पर मैंने प्रश्न लगाया था इनके लोग जो जनपद अध्यक्ष हैं, नगर अध्यक्ष हैं, जनपद के उपाध्यक्ष हैं..।

सभापति महोदय :- कितना समय लेंगे ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय, अभी तो शुरूआत हुई है। मैं ज्यादा लंबा नहीं करूंगी, बस पांच मिनट लूंगी । जनपद का अध्यक्ष है, जनपद का उपाध्यक्ष है, मेरे पास उसके डाकुमेंट्स हैं । मैंने मंत्री जी को दिखाया है कि कमिश्नर का आदेश है, एस.डी.एम. का आदेश है, तहसीलदार का आदेश है, कलेक्टर का आदेश है, उसका मकान नहीं टूटता है, क्योंकि वह आपके लोग हैं । मेरे पास प्रूफ है । मंत्री जी बैठे हैं ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- मेरे बालोद जिले के जामड़ीपाट का भी है । नकटी में हुआ है, जामड़ीपाट में हुआ है और कई जगह हुआ है । इनके क्षेत्र में भी हुआ है। वहां आप लोगों के आदमी का नहीं टूटा है और जो सामान्य व्यक्ति है उसका घर तोड़ दिया गया है ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, यहां पर भेदभाव हो रहा है और मैं चाहती हूँ कि सभी में समानता हो, सभी जनता ने आपको वोट दिया है, सभी मिलकर आपकी सरकार लाये हैं तो भेदभाव क्यों हो रहा है ? आपने जिनका घर तोड़ा है, वही लोगों ने आपको वोट दिया है । अब यह आपकी समस्या है कि आप पर विश्वास क्यों नहीं हुआ और वोट क्यों नहीं दिये ? (हंसी) सभी ने नहीं दिये हैं तो हो सकता है कि आपके ऊपर विश्वास नहीं है, लेकिन आप तो सभी के हो ना?

श्रीमती भावना बोहरा:- आप लोग उधर बैठे हैं, वह किसके विश्वास पर है, यह बता दीजिए ? वह भी तो जनता का विश्वास ही था ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, यह सरकार जब से आई है तो कौन सा ऐसा विभाग है जिसने हड़ताल नहीं किया है ? आपके स्वास्थ्य विभाग हड़ताल में है, आपके तहसीलदार हड़ताल में है, आपके एन.एम.लोग हड़ताल में है, आपके दिव्यांग लोग हड़ताल में है, पी.एच.ई.वाले हड़ताल में है, आपके रसोईया संघ वाले हड़ताल में है, आदरणीय सभापति जी रसोईया संघ की महिलायें लगातार टेंट लगाकर

नया रायपुर में तीन महीने तक बैठी रही है। इस सरकार के कान में जूँ तक नहीं रेंगा। यह सरकार सोती रही है।

श्री रामविचार नेताम :- सभापति महोदय, ऐसा है कि आप बोल तो रही हैं लेकिन पूरी तरह से तथ्यहीन बात कर रही हैं। मैंने तो आपसे यह निवेदन किया है कि आप बहुत अच्छा पंडवानी का रोल अदा करती हैं, यहां पंडवानी तो मत सुनाओ ?

श्री देवेन्द्र यादव :- वह भेलपुरी वाला आपने बहुत अच्छा बताया है, एक बार फिर आप उसको दोहरा दीजिए। (हंसी)

श्रीमती भावना बोहरा :- वह डिवीजन मांगने के बाद बताया जाएगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- श्री देवेन्द्र यादव जी, 10 रुपये की भेलपुरी में आप लोग निपट गए। यहां भी भेलपुरी गली-गली में खिलवाएंगे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, दिव्यांगजन भी लगातार हड़ताल करते हैं, रसोईया संघ की महिलाएं लगातार हड़ताल में रही हैं।

श्री रामविचार नेताम :- संगीता जी, आप बहुत अच्छा पंडवानी का रोल करती हैं। एकाध दिन यहां भी करिए।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- धन्यवाद। अनिला दीदी घलोक करथे। आदरणीय सभापति महोदय जी, मैं कहना यही चाहती हूं रसोइयां संघ लगातार हड़ताल में रही।

श्री राजेश मूणत :- संगीता जी, एक मिनट। माननीय सभापति जी, ओरिजिनल दर्द अभी आया नहीं। सरकार ने अटैचमेंट खत्म कर दिया। जो शिक्षाकर्मी थे, अपने यहां दो-तीन अटैच करके रखी थी। सरकार ने आदेश निकाल दिया। (हंसी)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय, मैं शिक्षा विभाग में आ रही हूं।

श्री देवेन्द्र यादव :- आदरणीय इतने वरिष्ठ लीडर हैं। पूरे प्रदेश के अंदर जो बलात्कार की घटनाएं हुईं, हत्या की घटनाएं हुईं, वह सब संवेदनशील विषयों पर किसी पर टिप्पणी नहीं कर रहे हैं। लेकिन हम तो उम्मीद करते हैं कि आप इसमें समर्थन करेंगे, आप इस पर बात करेंगे।

श्री राजेश मूणत :- अगर मैं गलत बोल रहा हूं तो पड़ोस में पूछ लीजिए।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय जी, फिर मेरा समय बढ़ाइए मेरे समय में वृद्धि करिए क्योंकि वे मेरा समय ले रहे हैं।

श्री राजेश मूणत :- नहीं, मैं गलत बोल रहा हूं तो आप सही-सही बता दीजिए। हां, असली दर्द वह है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- मूणत जी, मैं उसमें आ रही हूं, आदरणीय सभापति महोदय जी, डीएड, बीएड वाले बच्चे लगातार पानी में आधे डूब के बच्चियां रात को दो-दो बजे तक धरना प्रदर्शन की हैं।

श्री राजेश मूणत :- कहां पर ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आपको पता नहीं है? ये सरकार है और आपको पता नहीं है? मूणत जी को पता नहीं है कि डीएड-बीएड वाली बच्चियां लगातार हड़ताल कर रही हैं। ये तो सरकार के लिए बड़ी लज्जा की बात है। आप अपनी जनता की आवाज को नहीं सुन रहे हैं।

श्रीमती भावना बोहरा :- संगीता जी, थोड़ा पीछे जाईए न, हमारी विधवा बहनें पेंशन के लिए लगातार बाल मुंडन करवा रही थीं, उन्होंने अपना केस मुंडन करवाया था। आप थोड़ा पीछे आईए। हमारी विधान सभा में केस मुंडन करवाई हैं। संवेदनशीलता तब भी दिखा देते। संवेदनशीलता हर सरकार में बराबर रहनी चाहिए।

श्रीमती अंबिका मरकाम :- भावना जी, संगीता जी बहुत अच्छा बोल रही हैं थोड़ा सुनिए ना।

श्रीमती भावना बोहरा :- हमने कब बोला कि वह अच्छा नहीं बोल रही हैं। बहुत अच्छा बोल रही हैं।

श्रीमती शकुंतला सिंह पोर्ते :- आप लोगों की सरकार में पूरा राम राज था। कुछ खराब नहीं था, अभी बहुत सारी परेशानी है।

श्रीमती अंबिका मरकाम :- वह महिलाओं के बारे में, शिक्षकों के बारे में बोल रही हैं, थोड़ा सुनिए।

श्रीमती भावना बोहरा :- आपने आदेश दिया तो अब सुनना ही पड़ेगा, भई।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, माननीय मुख्यमंत्री जी ने जब शपथ ग्रहण किया, अब मैं पूर्ववर्ती में पहुंचती हूं, क्योंकि लगातार पूर्ववर्ती सरकार की बातें हुई हैं। हमारी पूर्ववर्ती जो सरकार थी, जब हमारे भूपेश बघेल जी की सरकार ने शपथ ग्रहण ली, सबसे पहले कर्जा माफ किया। 5 साल की सरकार में लगभग 95 योजना लाएं हैं, आपकी सरकार को ढाई साल हो गया, ढाई साल में कौन सी योजना आयी? हमने तो आत्मानंद स्कूल बच्चों को फ्री में पढ़ाया, हमने तो गौठान योजना लाया। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति महोदय, बिना बजट की योजना लाए। (व्यवधान)

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- आप अपनी सरकार में एक योजना नहीं बना पा रहे हैं, किसी योजना को सफल नहीं कर पा रहे हैं, ढिंढोरा पीटते हैं। आपकी एक भी योजना अभी तक सफल नहीं हो पाई है। (व्यवधान)

श्रीमती भावना बोहरा :- बकाया बोनस किसानों को कब दिया जाएगा ? (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आपने 500 रुपये में सिलेंडर देने की बात कही थी। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आप लोग आपस में बात न करें, आप लोगों की बात रिकार्ड में नहीं आ रही है। (व्यवधान)

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- इनकी सरकार सुशासन तिहार मनाती है तो उसमें भी इनका आवेदन आता है। (व्यवधान)

श्रीमती भावना बोहरा :- आपने दूसरी लाईन में कर्ज माफी के बारे में लिखा है, वह बताईए न। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, जब माननीय मुख्यमंत्री जी, शपथ ग्रहण किए।

श्री राजेश मूणत :- कौन से वाले ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, वर्तमान मुख्यमंत्री जी शपथ ग्रहण किए तो उस समय घोषणा पत्र में 57 हजार शिक्षकों की भर्ती की बात की थी, यहां पर नए बच्चों को रोजगार देने की बात कही थी। जब यहां पर हमारा पहला सेशन लगा, हमारे शिक्षा मंत्री माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी थे, जिनको इन्होंने प्लानिंग के तहत दिल्ली भेज दिया, हां, आप लोग प्लानिंग के तहत भेज दिए। आज बृजमोहन जी रहते तो हो सकता है 33 हजार शिक्षकों की भर्ती की घोषणा पूरी कर लेते। आपने शिक्षा भर्ती में 33 हजार लोगों को लेने की घोषणा की थी। 33 हजार शिक्षक कहां हैं, इन्होंने तो युक्तिकरण ला दिया और शिक्षक लोगों को कम कर दिए।

श्री राजेश मूणत :- सभापति महोदय, क्या है कि दर्द यह है कि वह अटैचमेंट उन्हीं के समय हुआ था।

स्कूल शिक्षा मंत्री (श्री गजेन्द्र यादव) :- एक मिनट, सुनिये। सभापति महोदय, माननीय महोदय बोल रही हैं। आपने उस समय 10,000 से ज्यादा ट्रांसफर किया था, उसके कारण अनबैलेंस हुआ। शहर में जहां बच्चे कम थे, वहां टीचर अत्यधिक थे और गांव में जहां बच्चों की ज्यादा संख्या थी, वहां टीचर नहीं थे। जब हम लोग इस सरकार में आए, जब हमारी गवर्नमेंट आई तो 6,000 ऐसे स्कूल थे जो एकल शिक्षकीय थे। 435 स्कूल ऐसे थे जो शिक्षकविहीन थे। हम लोगों ने जब युक्तियुक्तकरण किया तो उसको हमने निरंक किया। यह तो हमने युक्तियुक्तकरण किया। (मेजों की थपथपाहट) अभी जब हमने वीएसके ऐप लॉन्च किया है तो 9,600 ऐसे शिक्षक हैं जो दूसरे-दूसरे विभाग में काम कर रहे हैं। कोई बाढ़ आपदा विभाग में काम कर रहा है, कोई बाल संप्रेषण गृह का सिपाही बन गया है, कोई एनआईसी का कंप्यूटर ऑपरेटर है, कोई और कहीं बन गया है। यह सुधारने का काम हम कर रहे हैं। आपने जो पुराना रायता फैलाया था, उसको समेट हम लोग रहे हैं तो आप हमारे ऊपर कैसे आरोप लगा रहे हैं?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- ठीक है, मंत्री जी। मैं यह कहना चाह रही हूं कि आपने युक्तिकरण लाया, लेकिन भर्ती तो दूर और टीचर बच गये। बोलते हैं कि हमारे पास बहुत सारे टीचर हैं तो हम क्यों भर्ती लेंगे? तो जो बच्चे पढ़े हैं वे लोग कहां जाएंगे? जो बेरोजगार युवा साथी हैं, उनको तो रोजगार

चाहिए न। आज बेरोजगार युवा जिन्होंने डी.एड., बी.एड. किया हैं, वह काम की तलाश में खाली घूम रहे हैं। इन्होंने युक्तिकरण ला दिया और युक्तिकरण में स्कूलों को मर्ज कर दिया।

श्री ललित चंद्राकर :- सभापति जी, पिछली सरकार में जो बेरोजगारी भत्ता लेने वाले थे, वह अभी भी बेरोजगार घूम रहे हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- ललित भैया, एक मिनट, मुझे बोलने दीजिये। स्कूल को मर्ज करने के बाद टीचर को दो-दो कर दिया गया। आज स्थिति यह है कि वहां मैथ्स और बायो के टीचर नहीं हैं और क्या है कि जब हम स्कूल में दौरा करने जाते हैं तो वहां बच्चे झाड़ू लगाते हैं क्योंकि एक टीचर मीटिंग में गये हैं और एक टीचर बोलते हैं कि मैं एक से पांचवीं कक्षा तक पढ़ा नहीं सकता। वे बच्चे झाड़ू लगाते हैं। मेरे पास प्रूफ है। उसके बाद यह भी कम नहीं हुआ, इन्होंने उनसे कुकुर गिनने का काम शुरू करवा दिया, कुकुर भगाने का काम शुरू करवा दिया। मुझे तो इस सरकार के ऊपर लज्जा आती है कि जो शिक्षक हमारे आदरणीय होते हैं, जिस शिक्षक की हम पूजा करते हैं, जिनको गुरुदेव मानते हैं, उनसे आप कुकुर गिनने का, कुकुर भगाने का काम करवाते हैं? ओमन कुकुर ला गिने के, कुकुर ला भगाये के काम करथे। (हंसी)

श्री गजेन्द्र यादव :- सभापति महोदय, फिर यह गलत आरोप लगा रही हैं। सरकार ने कहीं कुत्ता गिनने के लिए नहीं बोला है। (व्यवधान)

सुश्री लता उसेण्डी :- आपमन गोबर खरीदे बर काला लगाये रहे हव?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, मैं आरोप लगाती हूं कि आपने कुकुर भगाने का काम किया है। (व्यवधान)

सुश्री लता उसेण्डी :- गोबर खरीदने और पैरा खरीदने के लिए आप लोग किसको लगाये थे? (व्यवधान)

श्री ओंकार साहू :- सभापति महोदय, ओ भी कुकुर ला कलर देख के पहचानना हे, ए टास्क दे गे रीहिस हे। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, मैं आरोप लगा रही हूं कि इन्होंने कुकुर गिनने और कुकुर भगाने का काम किया है। (व्यवधान)

श्री गजेन्द्र यादव :- सभापति महोदय, ये कुछ भी आरोप लगा रही हैं। माननीय सुप्रीम कोर्ट का निर्देश था, कुत्ता गिनने का काम नहीं था। बलौदाबाजार में एक घटना घटी। मध्यान्ह भोजन बना था, एक कुत्ता आया और उसे चट कर गया। उसके कारण स्कूल शिक्षा विभाग पर हाई कोर्ट ने 24 लाख रुपये का फाइन लगाया और उसको आधार मानकर ऐसा कई राज्यों में हुआ। उत्तर प्रदेश के किसी जिले में ऐसी घटना घटी, उसको संज्ञान में लेते हुए सुप्रीम कोर्ट ने सारे प्रदेशों को यह आदेश किया कि शिक्षक यह ध्यान दें कि जहां स्कूल का परिसर है वहां ऐसा कोई लावारिस कुत्ता न आए, जिससे बच्चों के

जीवन-मृत्यु पर कोई असर पड़े। उसको जानबूझकर हमारे विपक्ष के साथी ऐसा दुष्प्रचार कर रहे हैं कि हमने कुत्ते के लिए किसी को ड्यूटी में लगाया है।

श्रीमती अंबिका मरकाम :- माननीय मंत्री जी, उसके लिए तो नगर-निगम है।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- माननीय सभापति महोदय, उसके लिए चपरासी रखा जा सकता है। उसके लिए चपरासी की ड्यूटी लगायी जा सकती है। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, दो शिक्षक हैं। आप चपरासी रख सकते हैं। शिक्षक हा कुकुर ला भगाही, ते बच्चा मन ला पढ़ाही? मान लो कि अगर कुत्ता अंदर आ गहे अउ ओ ए.बी.सी.डी. पढ़ात हे तो ओ कुत्ता ला भगाए बर जाही कि बच्चा मन ला पढ़ाही?

श्रीमती अंबिका मरकाम :- संगीता जी, 1 मिनट। माननीय मंत्री जी, आप सुप्रीम कोर्ट का हवाला दे रहे हैं, लेकिन आपके पास तो संस्था है, नगर निगम है, नगरपालिका है तो वे लोग क्यों नहीं कर रहे हैं? आप शिक्षकों को क्यों लगा रहे हैं?

श्री गजेन्द्र यादव :- सभापति महोदय, मैं उसी बात को बोल रहा हूं कि उसमें सुप्रीम कोर्ट का निर्देश है, हमारे स्कूल का वह काम नहीं है। यह काम स्थानीय निकाय, ग्राम पंचायत का है, उनको वह जानकारी देंगे, यह उसमें लिखा हुआ है।

श्रीमती अंबिका मरकाम :- माननीय मंत्री जी, लेकिन उसमें शिक्षक लगे हुए थे।

श्री गजेन्द्र यादव :- अगर कोई लावारिस कुत्ता है, तब शिक्षक उसकी जानकारी देंगे और यह कुत्ता को हटाने का काम, पकड़ने का काम स्थानीय निकाय में जो व्यवस्था है, उनको देने का है। कहीं भी किसी भी आदेश में यह नहीं है कि शिक्षक कोई कुत्ता पकड़ेगा। यह सिर्फ हमारे विरोधी लोग जनता में उसका दुष्प्रचार कर रहे हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, हमारे पास खुद टीचर आए थे।

सभापति महोदय :- आप जल्दी समाप्त कीजिये।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हां, मैं जल्दी-जल्दी बोलत हो। सभापति महोदय, हमारे पास खुद टीचर आए थे कि हमको कुत्ता भगाने के लिए आदेश आया है तो क्या वह टीचर असत्य बोल रहे हैं?

श्री धर्मजीत सिंह :- संगीता जी, आपसे हाथ जोड़कर विनती है कि अब आप कुत्ता से आगे बढ़ जाओ। कुत्ता बहुत हो गया भाई। (हंसी)

सभापति महोदय :- समाप्त करिये।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय, शिक्षा विभाग में आज बच्चों की स्थिति बिल्कुल अच्छी नहीं है। महिला एवं बाल विकास विभाग में बोलना चाहती हूं। यह अनिला दीदी का स्पेशल है, क्योंकि उनको मौका नहीं मिला।

श्री केदार कश्यप :- वहां घर में ओकर भैया हर नइ सुनत हे, ये मन यहां आकर हमन मन ला सुनाथे ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय जी, महिला बाल विकास में जो अभी महिलाओं को पैसा दे रहे हैं।

श्री केदार कश्यप :- सुन ना, तोर बात ला घर में नइ सुनत हे का ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- नइ सुनय।

श्री केदार कश्यप :- तो यहां आकर हमन मन ला सुनाथे । (हंसी)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हव। सभापति महोदय, हमारे साथ और हमारी बुजुर्ग महिलाओं के साथ महतारी वंदन में भेदभाव हुआ है।

श्री ललित चन्द्राकर :- आप ला नइ मिलत हे का ?

श्रीमती रायमुनी भगत :- आप लोग पूरी स्व सहायता समूह की महिलाओं के साथ भेदभाव कर दिये थे। रेडी टू इट में महिलाएं काम करती थी, उसको बंद कर दिये थे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, आपने यह कहा कि महतारी वंदन में 1 हजार रुपये मिलेगा।

श्री ललित चन्द्राकर :- आप ला महतारी वंदन योजना के लाभ नइ मिलत हे का ?

श्रीमती रायमुनी भगत :- संगीता जी, आप लोग भी सारी स्व सहायता समूह की महिलाओं के साथ अन्याय किये थे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- मैं ही नहीं यह लोग भी जाते हैं तो आप लोग को पूछते हैं कि बेटे महतारी वंदन योजना में मोला 500 रुपये काबर मिलथे, 1 हजार रुपये काबर नइ मिलय ?

श्रीमती रायमुनी भगत :- संगीता जी, महिला स्व सहायता समूह की महिलाओं का काम छीनकर बीज निगम को दे दिये थे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, आप बुजुर्ग का पैसा काटकर क्या कर लेंगे ? बुजुर्ग महिलाओं को सिर्फ डेढ़ हजार रुपये मिलता है। आपको आह लगेगी, आप सरकार से हट जायेंगे। बुजुर्गों को पैसा दे दीजिये। सभापति महोदय, जब इनको वोट लेना रहता है तो यह बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। एक-एक हजार रुपये मिलेगा, उसके बाद पैसा को हॉफ कर देते हैं।

समय:

10.31 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए)

श्री अजय चन्द्राकर :- ले चल अब घिरिया, हो गे हे कहात हव गा।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी, आप लोग नकली मंगल सूत्र बांट कर सुहाग की भावनाओं के साथ खेल रहे हैं, महिलाओं की भावनाओं के साथ खेल रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं हर सुबह बताये रहेव। सुधाकर खलखो धरना में बैठे रहिसे।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अभी जो हो रहा है उसको बोलिये ना। आप सुधाकर में कहां चल देते हैं?

श्री अजय चन्द्राकर :- तुंहर राज में गड़बड़ होत रिहीसे कहि के सुधाकर खलखो, सरकारी कर्मचारी होकर धरना में बैठे रिहीस।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी, मंगलसूत्र, जो महिलाओं का श्रृंगार है, उसके साथ अपमान हुआ है। आपको अगर नहीं देना था, तो नहीं देते। उसमें हमने बोला भी नहीं था। वह गरीब बी.पी.एल. परिवार की बच्चियां या महिलाएं कोई यह नहीं बोलती कि हमें सोने का मंगल सूत्र चाहिए। मंगल सूत्र सम्मान का प्रतीक है। आपने उनको धोखा दिया है और धोखा देकर आपने उनको..।

अध्यक्ष महोदय :- आपका समय आधा घण्टे से ज्यादा हो गया है। आपने 10 बजकर 01 मिनट में स्टार्ट किया था।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी, मैं 2 मिनट में खत्म करती हूं।

अध्यक्ष महोदय :- 10 बजकर 32 मिनट हो गये। कृपया अब बंद करें।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय, मैं 2 मिनट में खत्म कर रही हूं।

अध्यक्ष महोदय :- मैं अगले वक्ता नाम ले रहा हूं, आप बैठिए। किरण देव जी।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, एक लास्ट प्वाइंट बोलती हूं। आज नल जल योजना के लिए धरना प्रदर्शन किए हैं।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया, बहुत हो गया। आप लगातार रिपीट कर रही हैं, मैं सुन रहा हूं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय जी, नहीं कर रही हूं। जो प्वाइंट नहीं आया है, मैं वह प्वाइंट बोल रही हूं।

अध्यक्ष महोदय :- मैं पूरा भाषण सुन रहा था।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय जी, अभी भी नल-जल योजना की बात किसी ने नहीं कही है। नल-जल योजना में ठेकेदार लोग आत्महत्या कर रहे हैं,

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। ठीक है। आप शुरू करिये।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उसमें कृपया करके सरकार ध्यान दें। तीन लोगों ने सुसाइड किया है। इसको देखते हुए मुझे इस सरकार के ऊपर अविश्वास है। अध्यक्ष महोदय जी, इसके साथ मैं अपनी बातों को विराम देती हूं, धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, किरण जी, बोलिये।

श्री किरण देव (जगदलपुर) :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं आज इस अविश्वास प्रस्ताव के विरोध में अपनी बात रखने के लिए खड़ा हुआ हूँ। कांग्रेस के दल ने और हमारे आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी ने आज ये जो अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत किया है और इस दिन भर की चर्चा में हमारे बहुत बड़े-बड़े वरिष्ठ सदस्यों ने और विद्वान वक्ताओं ने भी संपूर्ण विषय पर अपना पक्ष रखा है। लेकिन मैं पहली बार विधान सभा के किसी अविश्वास प्रस्ताव का सामना कर रहा हूँ, उसको देख रहा हूँ और उसके विरोध में खड़ा हुआ हूँ। मुझे लगता है कि यह इतनी बड़ी विडंबना है कि जिस तरीके से अविश्वास प्रस्ताव जिस प्रारूप में प्रस्तुत किया गया, जिन आरोप पत्र को लेकर पक्ष-विपक्ष दोनों की तरफ से सभी वरिष्ठ सदस्यों ने इसमें बहुत चर्चा की। इतने समय बाद जब लगभग-लगभग अंतिम समय में यह अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। मुझे यह बात समझ में आई कि आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी को इस अविश्वास प्रस्ताव को प्रस्तुत करने के साथ-साथ इस अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष में भी विश्वास नहीं था। बहुत सारी बातें हुईं। 153-155 कंडिकाओं में आरोप लगे, लेकिन एक भी ऐसा आरोप नहीं है जो इस ढाई साल में आदरणीय मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी की सरकार में किसी भी मंत्री के ऊपर या सरकार पर किसी भी प्रकार के स्कैम के या भ्रष्टाचार के एक भी आरोप का जिक्र नहीं है। यह इस बात को सिद्ध करता है कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार आदरणीय मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में तेज गति से विकास के काम को आगे लेकर आगे चल रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोकतंत्र में विश्वास करने वाले हैं और विश्व के बड़े लोकतंत्र में से पहले, दूसरे नंबर पर हमारा देश आता है। इस लोकतंत्र की जो प्रामाणिकता है और उस लोकतंत्र में जनता का आदेश भगवान का आदेश माना जाता है। उसमें ईश्वर का आदेश निहित रहता है। अब इस अविश्वास प्रस्ताव के विषय को लेकर मैं इतना जरूर कहना चाहूंगा किसी भी तरीके से कांग्रेस या अन्य राजनीतिक दल से हमको प्रमाण पत्र लेने की आवश्यकता नहीं है। हमारा भारतीय जनता पार्टी की सरकार पर, आदरणीय मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी के ऊपर जनता ने बार-बार विश्वास व्यक्त किया है, यह विश्वास मत हमारे लिये सबसे बड़ा प्रमाण है। (मेजों की थपथपाहट) चाहे हम शुरू से देख लें, हमारे लोकसभा के चुनाव में उसके परिणाम देख लें, 11 में से 10 सीटें आईं। नगरीय निकाय का विषय आया। आप नगरीय निकाय में देख लीजिए। चाहे त्रिस्तरीय पंचायत के चुनाव हों, जनता ने बार-बार भारतीय जनता पार्टी की सरकार पर, उसके कार्यों पर अपनी मुहर लगाई है। (मेजों की थपथपाहट) यह लोकतंत्र है। आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी का वास्तव में बहुत अभिमान करता हूँ और आपको धन्यवाद देता हूँ इस बात के लिये कि बहुत विचार करने के बाद भी, बहुत ज्यादा मेहनत मशक्कत करने के बाद भी इस अविश्वास प्रस्ताव में सरकार के विरोध में, मुख्यमंत्री जी के विरोध में या किसी मंत्री जी के विरोध में एक भी आरोप आपने नहीं प्रदर्शित किया। इस बात को स्वयं प्रतिपादित करता है, इस बात को स्वयं प्रमाणित करता है कि ये स्वच्छ छवि की सरकार आदरणीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में निर्बाध गति से विकास की गति को प्रदान कर रही है। (मेजों की थपथपाहट)

मैं जब पूर्व में हमारे विपक्ष के सभी सम्माननीय मित्रों को, हमारे वरिष्ठ सदस्यों को सुन रहा था तो एक विषय आता था, पूर्व में हमारी तरफ से बहुत वरिष्ठ नेताओं ने, सदस्यों ने अपनी बात रखी। तो स्वाभाविक है कि जब विश्वास मत पर, अविश्वास मत पर जब बात होती है तो निश्चित रूप से तुलनात्मक अध्ययन तो होगा। तो इसमें मैं एक बात जरूर कहना चाहूंगा कि बहुत बड़े विश्वास के साथ पिछले 5 वर्षों में जनता ने कांग्रेस की सरकार को चुना था। 68 से करीब 70 के आसपास की संख्या में चुना था। फिर ऐसा क्या हो गया कि सिर्फ महज 5 वर्षों में ही जनता का कांग्रेस की सरकार से, कांग्रेस से मोह भंग हो गया। तो उसके पीछे 5 वर्ष की कहानी जो है तो आपके माध्यम से सदन में संक्षिप्त में रखूंगा। ऐसा क्या हो गया कि जनता का मोह भंग हो गया? अब जो सुशासन की सरकार चल रही है। मैं तो यह देख रहा था कि यह घटना यहां हो गई, वो घटना यहां हो गई, यहां पर चोरी हो गई, वहां पर बलात्कार हो गया, वहां पर हत्या हो गई, इसके छोटे-छोटे उदाहरण कहीं पर दिये गये। लेकिन आज मुझे तो लगता है कि ये बिना किसी ठोस आधार के, बिना किसी ठोस तथ्यों के ये अविश्वास प्रस्ताव में सारी बातों को समाहित किया गया है। अब ढाई वर्ष हो गये, जैसा मुझे समझ में आया, जैसा मैंने अपने वरिष्ठों से सुना, समझा, ढाई वर्ष में एक बार अविश्वास प्रस्ताव लाना है। तो ये अविश्वास प्रस्ताव मुझे विश्वास से कम और एक परंपराओं का निर्वहन और एक प्रक्रिया की अविश्वास प्रस्ताव आ जाये और इसका जो पॉलीटिकल माइलेज हो या अपने संगठन या अपने लोगों के बीच में ये विषय कि सजग प्रतिपक्ष की भूमिका कांग्रेस छत्तीसगढ़ में निभा रही है, ये ज्यादा प्रतीत होता है। और बस्तर से लेकर सरगुजा तक की बात, पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश की बात विकास को लेकर विभिन्न विभागों के माध्यम से उनके कार्यक्रम, उनकी कार्ययोजना, बजट में प्रावधान, ये सारा विषय आ गया है। लेकिन मैं लगातार बार-बार इस बात में आ रहा था कि यह जो पूरा डिवेट है, उसका मुख्यतः फोकस बस्तर पर रहा और होना भी चाहिए और ऐसा हुआ भी। बस्तर का विषय आता है तो मैं दो विषय एक-साथ कहना चाहूंगा कि बस्तर के विषय में आज तक की जो सबसे बड़ी घटना हुई है। यह है 4 दशक से लगातार चले आ रहे नक्सली आतंक का साफ होना, यह अपने आप में सबसे बड़ी कहानी है। (मेजों की थपथपाहट) इस पर बार-बार बात होती रही, जब-जब सदस्यों ने आपस में वाद-प्रतिवाद किया कि यह 15 साल की आपके मुख्य मंत्रित्वकाल में, आपके नेतृत्व में उस समय भी प्रयास किए गए। बिल्कुल सही है फिर इन 5 वर्षों में तो यह 5 वर्ष और इन ढाई वर्ष की तुलना जरूर होती रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इसमें केवल एक निवेदन करना चाहता हूँ कि नक्सलवाद पर और आपकी ही उपस्थिति, आपके निर्देश पर आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने सदन में एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें कि आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को, आदरणीय गृह मंत्री जी को और एक कृतज्ञता प्रस्ताव प्रस्तुत किया और उसमें हम सभी ने भाग लिया लेकिन नक्सली मुद्दे पर विपक्ष कितना गंभीर है यह उस समय समझ में आया कि पूरे

सदन से और विपक्ष का पलायन हो गया इससे इनकी गंभीरता का एहसास होता है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यहाँ पर सदन में जरूर यह बात करना चाहूंगा ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां से केवल 3 महिलाओं का पलायन हुआ है । पूरा विपक्ष का नहीं हुआ है । (हंसी)

श्री किरण देव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन के सामने यह बात जरूर रखना चाहता हूँ कि वास्तव में इतना महत्वपूर्ण विषय और आपकी संवेदना क्योंकि सारा विषय आज बस्तर के नक्सलवाद पर ही था तो उस पर जब गंभीर चर्चा और स्वाभाविक रूप से अपना गंभीर विषय, जब आप उस विषय से सहमत नहीं हैं । अगर आदरणीय प्रधानमंत्री जी को, आदरणीय केंद्रीय गृह मंत्री जी को कृतज्ञता नहीं देना है तो कोई दिक्कत नहीं लेकिन विषय पर चर्चा होनी चाहिए थी । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो आपके माध्यम से आदरणीय प्रधानमंत्री जी को, आदरणीय केंद्रीय गृह मंत्री जी को और विशेषकर आदरणीय मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जी को और गृह मंत्री, उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा जी का मैं अभिनन्दन करूंगा और साथ ही उन सशस्त्र बलों का भी मैं बहुत अभिनंदन करता हूँ । इस पूरी यात्रा में...

डॉ. चरणदास महंत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पार्टी के अध्यक्ष और हमारे यहाँ के विधायक जी से यह कहना चाहता हूँ कि आपने जो प्रस्ताव बनवाया था उसमें तो प्रधानमंत्री जी का नाम था, गृह मंत्री जी का नाम था, उसमें मुख्यमंत्री जी का नाम नहीं था, उसमें राज्य के गृह मंत्री का नाम नहीं था और उसमें मृतकों के बारे में भी कुछ एक शब्द होता न तो हम यहाँ रुके होते । हमारे यहाँ इतने लोग, बस्तर के लोग, चाहे पुलिस के हों, चाहे अर्धसैनिक हों, सैनिक दल हों, यहाँ के इतने नक्सली समस्या में मरने वाले लोग हों, उनको किसी के प्रति आपने संवेदना व्यक्त नहीं की और सिर्फ प्रधानमंत्री और केंद्रीय मंत्री जी को आपने धन्यवाद दिया इसलिए हम नहीं रुके । आप अगर मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देते, हमारे मंत्री जी का धन्यवाद लिखा होता तो हम रुकते, यह आप सुन लीजिए ।

श्री किरण देव :- आपके इस उद्गार में सम्मानसहित...

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आप प्रस्ताव की भाषा में उलझ गए । आपने प्रस्ताव की प्रक्रिया को नहीं समझा ।

डॉ. चरणदास महंत :- सब समझते हैं ।

श्री अजय चंद्राकर :- प्रस्ताव रखने वाले माननीय मुख्यमंत्री जी थे । आप समझ रहे हैं, आप पढ़ लीजिये और उसके बाद जो प्रस्ताव करता है वह अपना नाम कैसे लेगा ?

डॉ. चरणदास महंत :- प्रस्ताव किसी दूसरे से करवा लेते ।

श्री अजय चंद्राकर :- प्रस्ताव के समर्थन या विरोध मैं जिन लोगों ने...

डॉ. चरणदास महंत :- आपने प्रस्ताव अपने अध्यक्ष से क्यों नहीं कराया ? आप करवा लेते ।

अन्य किसी मंत्री से करवा देते, बस्तर के मंत्री से करवा देते । आप अपनी बात ही करना चाहते हैं । आप कहीं भी गलती स्वीकार नहीं कर रहे हैं ।

श्री अजय चंद्राकर :- आपने प्रक्रियाजनक बात कही । हम क्या करेंगे, वह अलग विषय है । आपने प्रक्रियाजनक बात कही तो मैं उसे आपको प्रक्रिया के तौर पर बता रहा हूँ ।

डॉ. चरणदास महंत :- मैं कह रहा हूँ कि किसी मंत्री से रखवा देते ।

श्री अजय चंद्राकर :- हम किससे रखवायेंगे वह हमारी स्वतंत्रता है ।

डॉ. चरणदास महंत :- आपकी मर्जी है, उसमें आपको क्यों तकलीफ हो रही है।

श्री अजय चंद्राकर :- आप यह देखिये। आप बहुत दिनों से हाऊस में हैं। यदि सदन के नेता किसी के लिए धन्यवाद का प्रस्ताव रखता है और कोई दूसरा आदमी रखता है, उसकी गंभीरता, इन दोनों में कितना अंतर है। आप थोड़ा अनुमान लगाइये और इतनी बड़ी घटना में माननीय मुख्यमंत्री जी धन्यवाद प्रस्ताव रख रहे हैं तो आपमें कभी यह कृतज्ञता का भाव नहीं था। इसीलिये छत्तीसगढ़ 40 सालों तक झुलसते रहा।

श्री किरण देव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जो विषय रखा है...

डॉ. चरणदास महंत :- आप किसी भी मंत्री से रखवा लेते। मैं नहीं समझा। मैं यह कह रहा हूँ कि आप किसी भी मंत्री से रखवा लेते। उनको तो कोई खतरा नहीं है, यहां डबल इंजन की सरकार है। वह मुख्यमंत्री हैं, उनके पीछे कोई नहीं पड़ा है तो उनको किस बात का डर है। किसी और से रखवा देते तो हम लोग आते। मैं यह आपके अध्यक्ष जी को बता रहा हूँ।

श्री किरण देव :- माननीय नेता जी, मैं वही विषय फिर से दोहराऊंगा। अगर उस समय रहते या पूरा कुछ रहता तो यह सारी बातें उसी समय आ जातीं। तो प्रस्ताव आदरणीय मुख्यमंत्री जी की ओर से था। जब हम इस पर चर्चा कर रहे थे। तो मैं इसको आगे बोलने ही वाला था कि उसमें केवल उस दिन मुख्यमंत्री जी, उप मुख्यमंत्री गृह श्री विजय शर्मा जी का धन्यवाद ज्ञापित नहीं किया, उस दिन उस अभियान से जुड़े हुए सभी लोगों सशस्त्र बलों का अभिनंदन किया गया, वहां पत्रकार से लेकर वहां की जनता का अभिवादन किया गया। सभी बातों का किया गया और हमारे जो सैन्य बल हैं उनका भी अभिनंदन किया गया तो इस तरीके से हुआ। लेकिन उस समय रहना था, मेरा यह मानना है कि उस पर बहुत सारे विषय हैं। हमारे विपक्ष के सम्माननीय सदस्यों ने रखा, यह भी विषय रखा कि इसके बाद क्या हुआ और बस्तर में दो-तीन विषयों को लेकर काफी चर्चा रही कि वहां आदिवासियों का सम्मान घटा, आदिवासियों के लिए कोई काम नहीं हुआ। बस्तर के हिसाब से वहां के विकास की दृष्टि से सरकार की कोई योजना नहीं बनी और वहां कुछ विकास के काम नहीं हुए। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आप ही से प्रारंभ करूंगा जो यहां आपका 15 वर्षों का कार्यकाल था। जिस तरीके से वहां पर उन 15 वर्षों में बस्तर से सुदूर वनांचल में भी विकास की कई ऐसी योजनाएं, कई ऐसे कार्यक्रम ने अपना कीर्तिमान न

सिर्फ अपने छत्तीसगढ़ में नहीं, पूरे देश में स्थापित किया है। ऐसे में बताना चाहूँ तो उसी समय में एक एजुकेशन हब के बारे में कहना चाहूँगा। उसी समय का एजुकेशन हब चाहे जवांगा का हो, चाहे सुकमा का हो, चाहे बीजापुर में शिक्षा का जो नया अध्याय खोले गये, उसमें हमारा कांकेर, कोण्डागांव, जगदलपुर है और इस तरीके से वहां कौंटा तक में आई.टी.आई. खोले गये। इस तरीके से वहां के बच्चों की शिक्षा के लिए जो आपने काम शुरू किया था, आज मुझे इस बात को बताते हुए खुशी हो रही है कि आदरणीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में शिक्षा के क्षेत्र में वहां पर तेज गति से कॉलेजों का निर्माण हो रहा है। मेडिकल कॉलेज दंतेवाड़ा, यह अपने आप में अभूतपूर्व है, यह निर्णय छोटा-मोटा निर्णय नहीं है। जबकि जगदलपुर में ऑलरेडी मेडिकल कॉलेज है, यह बड़ा विषय है। कांकेर में मेडिकल कॉलेज है, आज बस्तर शिक्षा की दृष्टि से मेडिकल के क्षेत्र में बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। उस समय का पूरे देश में आपको इस नाम से जाना जाता था कि आप एक रुपये, दो रुपये चावल की शुरुआत करने वाले आप थे, मैं पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी का अभिनंदन करता हूँ कि आपको चाउर वाले बाबा के नाम से पूरे देश में ख्याति मिली और मुझे यह भी याद है कि इसके परीक्षण को समझने के लिए हमारे छत्तीसगढ़ की यह जो खाद्य योजना को जानने के लिए झारखण्ड, उत्तरप्रदेश और अन्य प्रदेशों से अधिकारियों की टीम आयी। आप यह कैसे कर लेते हैं। उस समय की यह बहुत बड़ी घटना थी। आपका यह बहुत बड़ा काम था। मुझे यह याद है जब मैं उस समय महापौर था। आपका बस्तर प्रवास जगदलपुर में था। तब बीजापुर से बड़ी संख्या में लोगों को आना हुआ था। यह वह समय था जब बीजापुर और कौंटा से लोग सिर्फ कलेक्टर से मिलने के लिए या अपनी समस्याओं का समाधान कराने के लिए इतनी दूर से चलकर आते थे। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने बस्तर के हमारे उन वनवासियों की इस पीड़ा को समझा और बस्तर में नए छोटे-छोटे जिले बनाकर, चाहे संभाग मुख्यालय जगदलपुर हो, सुकमा हो, बीजापुर हो या दंतेवाड़ा हो, इसे 7 जिलों में विभक्त किया। उसका परिणाम भी देखने को मिला। वहाँ तेज़ गति से विकास हो रहा है और क्षेत्र तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। उसी का परिणाम है कि वहाँ इंफ्रास्ट्रक्चर का डेव्हलपमेंट हो रहा है, चाहे वह नारायणपुर हो, बीजापुर हो, सुकमा हो या दंतेवाड़ा हो। इस बात को याद दिलाना इसलिए ज़रूरी है, इस बात के परिप्रेक्ष्य में मैं यह कहना चाहता हूँ कि छत्तीसगढ़ में जब भी भारतीय जनता पार्टी की सरकार रही है, चाहे आपके नेतृत्व में 15 वर्ष हो या अभी आदरणीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में ढाई वर्ष रही है, भारतीय जनता पार्टी की सरकार के समय बस्तर में ऐतिहासिक कार्य हुए हैं। अब तो नक्सलाइट उन्मूलन के बाद आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने एक महत्वपूर्ण योजना "नियद नेल्लानार" मेरा अपना अच्छा गाँव शुरू की है। इस योजना के माध्यम से और बार-बार कहते हैं कि डबल इंजन की सरकार ने क्या किया तो पूर्व के वक्ताओं ने बताया, इस विषय को सभी सदस्यों ने बताया, लेकिन नियद नेल्लानार के माध्यम से डबल इंजन की सरकार के प्रयासों से, राज्य व केंद्र सरकार की 40 से भी अधिक योजनाओं का लाभ उन क्षेत्रों और गाँवों को मिल रहा है, जहाँ

के बच्चों ने कभी जिला मुख्यालय तक नहीं देखा था । आज वहाँ इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास हो रहा है, बड़ी संख्या में मोबाइल टावर लग रहे हैं, सड़कें और पुल-पुलियों का निर्माण हो रहा है। विद्युत की व्यवस्था की जा रही है। प्राथमिक और मिडिल स्कूलों की स्थापना हो रही है। वहां पर मिनी पीएचसी का निर्माण हो रहा है। वहां पर राशन की दुकानें और अन्य सुविधाएँ विकसित हो रही हैं, यह अपने आप में विकास की गाथा को तेज़ी से आगे बढ़ाने की दिशा में उठाए गए कदम हैं।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यह बताना चाहता हूँ कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार में क्या परिवर्तन आया है ? परिवर्तन यह आया है कि भाजपा ने विधानसभा चुनाव के समय जनता के समक्ष जो-जो वचन दिए थे, उन्हें वचन को शत-प्रतिशत निभाने का काम आदरणीय मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी की सरकार ने किया है, जिसे संक्षेप में मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ । एक विषय आया था कि बस्तर में क्या किया और छत्तीसगढ़ के बाकी क्षेत्रों में क्या किया ? तो सबसे बड़ा विषय था, यह छोटा-मोटा विषय नहीं है । आदरणीय वित्त मंत्री जी अभी सदन में नहीं हैं । हमने एक विषय रखा था कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद किसानों 3,100 रुपये प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदेंगे और 21 क्विंटल प्रति एकड़ धान खरीदने का काम करके अपने वचन को निभाने का काम किया, यह बहुत बड़ा विषय है ।

अध्यक्ष महोदय, महतारी वंदन योजना का विषय बार-बार आता है कि महतारी वंदन में नाम कट गया, उसका नाम नहीं आना था तो महतारी वंदन में इस बात का संतोष होना चाहिए कि भारतीय जनता पार्टी सरकार में आने के बाद जो वचन अपनी बिहनों को दिया था, उसमें कम से कम लगभग 68 से 70 लाख बहनों के खाते में 28 महीनों से 1,000 की राशि डालने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार कर रही है, उसके लिए अभिनंदन होना चाहिए । सरकार की किसी काम की तारीख विपक्ष को भी करनी चाहिए, जो काम हो रहे हैं । हर काम को गिनाना कि यह नहीं हुआ, जब हम किसानों के साथ न्याय की बात करते हैं तो एक अन्याय कांग्रेस की सरकार के समय में भी हुआ और वह महत्वपूर्ण था । यह चर्चा नहीं हुई । उस समय किसान भाइयों की गिरदावरी और यह देखने में सभी जगह मिला कि गिरदावरी के नाम पर उनके खेत का रकबा कम कर दिया गया, बारदाने की व्यवस्था नहीं की गई और उनके पैसे भी नहीं लौटाए गए। यह किसानों के साथ न्याय और अन्याय का विषय है । यह विषय मैं संक्षिप्त में रख रहा हूँ । हमारी सरकार ने किसानों के बकाया बोनस का भुगतान किया । धान खरीदी की व्यवस्था को अधिक पारदर्शी बनाया और फर्जीवाड़ा पर रोक लगाई ।

समय :-

10:55 बजे

(सभापति महोदय (श्री लखेश्वर बघेल) पीठासीन हुए)

अध्यक्ष महोदय, ऐसे लाखों किसानों को लाभ पहुंचाने का काम आदरणीय मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय जी की सरकार ने किया है। हमारी सरकार ने धान का मूल्य और समय पर बोनस देकर किसानों को आर्थिक रूप से मजबूत किया है। पहले ही वर्ष में 13 लाख किसानों को 3,716 करोड़ रुपये के धान का बोनस भुगतान किया गया। आज प्रदेश के 26 लाख किसान हमारे पी.एम. सम्मान निधि से लाभान्वित हो रहे हैं, जिसमें 32,500 किसान आदिवासी परिवार के हैं, इसमें शामिल हैं। पिछली सरकार के समय की तुलनात्मक बात का समय आता है तो पिछली सरकार की एक उपलब्धि है। बस्तर से विपक्ष का कोई साथी अभी नहीं हैं। फिर भी मैं यह एक विषय रखना चाहता था कि 5 वर्षों में विकास के नाम पर कांग्रेस की सरकार ने एक भी लाल ईंट बस्तर में लगाई हो, तो बतायें। पिछले 5 साल में एक भी काम नहीं हुआ है। वैसे का वैसे ही रहा।

श्री राजेश मूणत :- माननीय सभापति जी, सभापति के रूप में आसंदी में बस्तर के ही बैठे हैं और आप भी बस्तर के हो। दोनों जानते हो। आपके यहां बस्तर में एक बहुत अच्छा काम, जो इतिहास के पन्ने में लिखने लायक है। झीरमघाटी के अंदर हमारे नेतागण शहीद हो गये थे, उनका शानदार स्मारक बनाया गया है। एक बार नेता जी को ले जाकर जरूर दिखाना। जिस कांग्रेस पार्टी के नेता ने उसको बनाने का योगदान दिया, उसका सम्मान जरूर कर देना।

श्री किरण देव :- आदरणीय सभापति जी, मैं बस्तर के विषय में इतना ही कह रहा था, यह सही है कि आप भी बस्तर से हैं। आपने भी देखा है, यहां पर माननीय मंत्री जी भी हैं। हमारे बस्तर के विपक्ष के और अन्य सदस्य नहीं हैं। यह सब हम इसलिए कह सकते हैं कि जो एजुकेशन सिटी वहां पर बना, उसके बाद एक भी अतिरिक्त कक्ष का निर्माण नहीं हुआ था। हम वहां पर पर्यटन की दृष्टि से देखे, तो पिछले 5 वर्षों में चित्रकूट देख लीजिये, तीरथगढ़ को देख लीजिये, बारसूर को देख लीजिये, वहां पर ऐसे कई जगह हैं, जहां पर्यटन की दृष्टि से जितना विकास, जितना निर्माण पूर्व मुख्यमंत्री आदरणीय डॉ. रमन सिंह जी के समय हुआ था, उसके बाद अगर कभी और विकास के काम हुए हैं तो अभी आदरणीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में उनके निर्देश पर बस्तर में होमस्टे का काम आगे तेज गति से चल रहा है। चित्रकूट, तीरथगढ़ तथा अन्य स्थानों पर भी वहां के युवाओं को पर्यटन की दृष्टि से रोजगार से जोड़ने की दृष्टि से बेम्बो राफिटिंग का काम भी प्रारंभ हुआ है। ऐसे बहुत सारे काम हैं, अभी हमारी भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बीच में बहुत सारा विषय आ रहा था कि बार-बार तुलनात्मक अध्ययन क्यों होता है ? मैं बार-बार कहता हूं कि जिस तरीके से आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी की शैली, उनके बोलने के ढंग, जिस सादगी और सरलता के साथ कहने का स्वाभाव है, मैं वास्तव में हृदय से सम्मान करता हूं। लेकिन मैं एक विषय जरूर बोलूंगा। जब अविश्वास प्रस्ताव पर बात होती है तो पिछले 5 साल के कार्यकाल की तुलना हम लोग करते हैं तो उस समय घोटाले की बहुत बड़ी फेहरिस्त है। 5

साल में ही इतनी ज्यादा मतों से और संख्या से चुनी हुई सरकार यूं ही नहीं जाती है, यूं ही विश्वास नहीं खोती है। कितने घोटाले हुए, मैं विस्तार में नहीं जाऊंगा। मेरा किसी के ऊपर आरोप नहीं है, किसी के ऊपर आक्षेप नहीं है। सिर्फ इतना कहना चाहता हूं, चाहे आप गोबर घोटाला बोल लीजिये, महादेव एप का भी नाम आया, कोल घोटाला हुआ, शराब घोटाला हुआ। पिछली सरकार में सबसे बड़ा विषय जो आया था, उसका मुझे बहुत दुःख है। पूरे छत्तीसगढ़ के युवाओं के साथ खिलवाड़ हुआ। युवाओं के साथ जो खिलवाड़ हुआ, उनके सुनहरे भविष्य के साथ जो खिलवाड़ हुआ, वह पी.एस.सी. घोटाला था। मुझे संख्या नहीं मालूम है। आज भी न मालूम कितने जेल में हैं और कितने बेल में हैं, I do not know. लेकिन इतना जरूर कहूंगा इन सारी चीजों को जनता ने देखा है। जब इस अविश्वास प्रस्ताव पर बात हो रही है तो मैं पुनः इस बात को दोहराऊंगा।

समय :

11.00 बजे

अध्यक्ष महोदय, बहुत लंबा विषय है। सेवा डेरा का विषय जरूर रखना चाहूंगा, इतनी अनुमति मुझे जरूर प्रदान करें। मैं बस्तर से ही हूं। बस्तर में सेवा डेरा का उद्घाटन पिछले विगत 18 जून में हुआ। आदरणीय केंद्रीय गृह मंत्री जी ने, आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने और आदरणीय हमारे उप मुख्यमंत्री जी जब सेवा डेरा में गए और वहां पर सेवा डेरा का जब उद्घाटन किया, वह सी.आर.पी.एफ. का एक कैंप था और सी.आर.पी.एफ. के कैंप को सेवा डेरा के रूप में विकसित करने के दृष्टिकोण यह था कि उस क्षेत्र के आसपास, यह नेतानार में हुआ है, हम सब जानते हैं। स्वर्गीय शहीद गुंडाधुर का जो गृह ग्राम है वहां के आसपास के पंचायतों में।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय किरण जी, 1 मिनट।

अच्छा लगा था कि आप बस्तर के बारे में बात किया और बस्तर से थोड़ा बाहर आए थे। फिर बस्तर में चले गए? आप तो पूरे प्रदेश के अध्यक्ष हैं और विष्णु जी ने तो आपको मुख्यमंत्री भी बोल दिया है। तो कम से कम पूरे प्रदेश में रहिए, निकले तो अच्छा लग रहा था, भले हम पर आरोप लगा रहे थे, लेकिन अच्छा लग रहा था। फिर आप अब बस्तर में चल दिए, थोड़ा प्रदेश के बारे में बात करें।

श्री किरण देव :- आदरणीय पूर्व मुख्यमंत्री जी ने यह विषय रखा, मैं बस्तर को इसलिए फोकस कर रहा हूं, बस्तर सारा विषय सभी लोगों ने रखा है। बस्तर का विषय बार-बार उठाया, आप सभी ने बस्तर के विषय को उठाया। बोले नक्सलवाद खत्म हो गया, उसके बाद क्या हो रहा है? यह घटनाएं हो रही हैं, वह दुर्घटनाएं हो रही हैं, ऐसा हो रहा है, वैसा हो रहा है, तो मैं बस्तर से इसलिए शुरू करता हूं। फिर आदिवासी समाज से आदरणीय मुख्यमंत्री जी हैं, हमारे विपक्ष के सम्माननीय आदरणीय सदस्यों ने अपने विषय रखते समय बातों में यह सिद्ध करने की कोशिश की गई कि आदरणीय मुख्यमंत्री जो कि आदिवासी समाज से हैं, उसके बाद भी आदिवासी क्षेत्रों के विकास में कोताही हो रही है। इसीलिए यह

विश्वास वह हो रहा था, तो मैं आरोप पर आ रहा था। जब पी.एस.सी. घोटाले का विषय मैं जब रख रहा था, तो यह सारा विषय जब जनता के समक्ष है, आदरणीय सभापति जी, मैंने प्रारंभ में ही कहा कि लोकतंत्र में सबसे बड़ा प्रमाण पत्र, सबसे बड़ा विश्वास मत जनता का होता है। जनता ही विश्वास करती है, जनता ही अविश्वास करती है। तो जनता का विश्वास लगातार आदरणीय मुख्यमंत्री जी के और उनकी सुशासन व्यवस्था में, भारतीय जनता पार्टी की सरकार में है, उनके पक्ष में है। यह लगातार पिछले तीन चुनावों में जनता ने बताया, मैंने पहले इस बात को बताया। अब यह डबल इंजन की बात हो रही थी। डबल इंजन की सरकार की विशेषता को लेकर पूर्व में हमारे आदरणीय विजय शर्मा जी ने, उपमुख्यमंत्री जी ने विषय को रखा है कि क्या अंतर है। अब प्रधानमंत्री आवास योजना, उन्होंने बताया, हम सभी जानते हैं कि जिस तेजी से इन ढाई वर्षों में, सिर्फ ढाई वर्षों में, अभी तो ढाई वर्ष और हैं, इन ढाई वर्षों में 18 लाख का लक्ष्य लेकर आदरणीय मुख्यमंत्री जी चले थे। इन्होंने शपथ भी लिया था कि तब तक मैं मुख्यमंत्री निवास में कदम नहीं रखूंगा, जब तक कि 18 लाख प्रधानमंत्री आवास के फाइल पर हस्ताक्षर नहीं कर दूंगा और वह करके दिखा रहे हैं। 11 लाख से भी ज्यादा और 1500 से 1600 प्रधानमंत्री आवास रोज बन रहे हैं। रोज उसका निर्माण हो रहा है, यह बहुत बड़ा विषय है। इसको भुलाया नहीं जा सकता। बार-बार जब यह विषय आता है तो मैं आदरणीय मुख्यमंत्री जी का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं कि डबल इंजन की सरकार और उसके लक्ष्य को लेकर आदरणीय प्रधानमंत्री जी की जो योजनाएं हैं, उसको लेकर निरंतर तेज गति से सरकार आगे बढ़ रही है। मैं हमारे स्वास्थ्य के दृष्टि से एक विषय रखना चाहता हूं। अब बस्तर का विषय आता है तो मुख्यमंत्री जी की बस योजना उन क्षेत्रों में भी जा रहा है, जहां पूर्ववर्ती से लेकर और ऐसे क्षेत्रों में जहां साधारणतया उस समय कोई जा नहीं पाता था। ऐसे 70 बस वहां के लोगों के लिए, वहां के वनवासी क्षेत्रों में और मुख्य मार्ग तक पहुंचने की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। सेवा डेरा का मैंने बताया, मैं आपके समक्ष सेवा सेतु के विषय को रखना चाहता हूं। सेवा सेतु एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य योजना है, उसके लिए भी मैं आदरणीय मुख्यमंत्री जी का अभिनंदन करना चाहता हूं, जिसके इस कार्य योजना में और कई प्रकार के, चाहे आम जन-जनता की सुविधा से संबंधित सभी काम उसमें सम्मिलित हैं, चाहे राशन कार्ड हो, चाहे कोई शिकायतें हों या आवेदन हों, ऐसे 38 लाख से भी अधिक आवेदन आए हुए हैं। आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने इसे प्रारंभ किया है। यह एक एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म और वन-स्टॉप सोल्यूशन है। इसके माध्यम से प्रदेश के नागरिकों को जाति, आय, निवास, राशनकार्ड और भू-नक्शा जैसी 400 से अधिक विभिन्न शासकीय सेवाएँ सरकारी कार्यालयों के चक्कर काटे बिना घर बैठे आसानी से प्राप्त हो सकती हैं। इस योजना के अंतर्गत 36 विभागों की 400 से अधिक सेवाएँ जुड़ी हुई हैं। सभापति महोदय, अब मैं एक विषय बस्तर को लेकर रखूंगा और अपनी बात समाप्त करूंगा।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करिये।

श्री किरण देव :- सभापति महोदय, एक प्रमुख विषय है। स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने बस्तर में घर-घर स्वास्थ्य परीक्षण की एक बहुत ही महत्वपूर्ण योजना प्रारंभ की है, मैं इसके लिए स्वास्थ्य मंत्री जी का भी बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ। उनके निर्देश में यह योजना बहुत सफलतापूर्वक चल रही है। करीब 30 लाख से भी ज्यादा घरों के स्वास्थ्य का परीक्षण करने का जो निर्णय लिया गया, वह यूँ ही नहीं हुआ है। जैसे ही बस्तर नक्सल मुक्त हुआ, सरकार की वे योजनाएं और कार्यक्रम, जो अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के लिए बने हैं, उनका लाभ उस व्यक्ति तक पहुंच रहा है। इन बातों के साथ, मैं आदरणीय नेता प्रतिपक्ष द्वारा प्रस्तुत अविश्वास प्रस्ताव का विरोध करता हूँ और यह आग्रह करता हूँ कि इसे अस्वीकार किया जाए। आदरणीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- श्री ब्यास कश्यप जी।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं जो भी बोलूंगा, सच बोलूंगा और मैं भा.ज.पा. की आलोचना नहीं करूंगा।

श्री ब्यास कश्यप :- मैं जो भी बोलूंगा, सच बोलूंगा, सच के सिवाय कुछ नहीं बोलूंगा। आप लोग इसे स्वीकार करें।

सभापति महोदय :- चलिए, आप अपनी बात रखें।

श्री ब्यास कश्यप :- सभापति महोदय, मेरी बात शुरुआत होगी तो अजय जी का टोका-टाकी तो निश्चित है।

श्री रामकुमार यादव :- चंद्राकर जी लबारी के सिवाय आज तक कुछ नहीं बोले हैं, ओहा ओकरे शपथ ले ले।

सभापति महोदय :- उनको बोलने दीजिये।

श्री ब्यास कश्यप (जांजगीर-चांपा) :- माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ विधान सभा के कांग्रेस दल के सदस्यों ने वर्तमान विष्णुदेव सरकार एवं मंत्रि-परिषद् के ऊपर अविश्वास प्रस्ताव लाया है। इस अविश्वास का कारण केवल कांग्रेस दल की बात नहीं है, बल्कि इन ढाई वर्षों में क्षेत्र की जनता ने जो महसूस किया है, वह महत्वपूर्ण है। हम भी लोकतंत्र में विश्वास करते हैं। वर्ष 2018 से 2023 तक माननीय भूपेश बघेल जी ने सरकार चलाई, जिसमें 2 साल कोरोना काल भी था। चुनाव के समय इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के लोग शासन-प्रशासन के कार्य के आधार पर भूपेश बघेल के नेतृत्व में पुनः सरकार बनने की बात कह रहे थे, लेकिन यह लोकतंत्र है और जो परिणाम आया, उसे कांग्रेस ने स्वीकार किया। भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में और माननीय विष्णुदेव साय जी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ में सुशासन के लिए सरकार चलाने और घोषणाओं पर अमल करने की बात कही गई थी। परंतु आज ढाई साल में ही जनता तो दूर, किसान, बेरोज़गार युवा, व्यापारी आदि सभी वर्ग के लोग और यहाँ तक कि भा.ज.पा. के

कार्यकर्ता भी यह कहने लगे हैं कि हमें इस सरकार से बड़ी उम्मीद थी, लेकिन आने वाले समय में पता नहीं कि हम आर्येंगे या नहीं आर्येंगे, वे भी इसकी चिंता करने लगे हैं। इन्हीं सब बातों को देखकर कांग्रेस पार्टी ने अविश्वास प्रस्ताव लाया है, जो कि जनता की आवाज है। छत्तीसगढ़ धान का कटोरा है और छत्तीसगढ़ के 70% लोग खेती-किसानी से अपना जीविकोपार्जन करते हैं और आज जो किसान समृद्धि योजना 3100 रूपया और 21 क्विंटल की बात वर्तमान सरकार के द्वारा कही जा रही है तो उसका जो श्रेय जाता है वह भूपेश सरकार को है यह आम जनता बोल रही है कि आज 25 सौ रुपये का समर्थन मूल्य अगर हम नहीं लेते और 25 सौ ही नहीं जैसे जैसे एम.एस.पी. बढ़ती गई, उस एम.एस.पी. को और आगे बढ़ाते गये और 2840 रुपये तक की बात कांग्रेस सरकार ने पटाई है। वर्तमान सरकार एमएसपी की जिस समय बात आई थी, दो-दो बार यहां से 300 रुपये से अधिक की राशि केन्द्र के द्वारा बढ़ा दी गई है, 3100 रुपये भी अगर बढ़ जाता तो किसानों को लाभ होता। चूँकि आपकी मजबूरी है, यह आपके घोषणा पत्र में है, आप 3100 से आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं। मैंने कहा है कि जो भी बात कहूँगा सच कहूँगा और सच के सिवाय कुछ नहीं कहूँगा। कृपा करके आपसे निवेदन है कि थोड़ा बड़े दिल करके सुनिये..।

श्री अमर अग्रवाल :- सभापति महोदय, आप यह बताओ कि आप 18 से 23 के बीच की प्रशंसा कर रहे हो। आप कांग्रेस में कब गये थे, यह भर बता दो ? आप उसके पहले सार्वजनिक भाषण में क्या बोलते थे, वही भर बता दो ?

श्री ब्यास कश्यप :- सभापति महोदय, मैं वर्ष 2018 में भारतीय जनता पार्टी छोड़ दिया था और उसके बाद सदा ही विरोध में रहा हूँ। विरोध नहीं, वास्तव में जो कमजोरी रहती थी, उसके लिये मैं लड़ता था। धन्य है, हमारे दोनो नेता बैठे हैं, जो कि 31 अक्टूबर सरदार वल्लभ भाई पटेल के मूर्ति अनावरण के समय...।

श्री सुनील सोनी :- एक मिनट। आपने बोला कि एमएसपी का रेट बढ़ा है, आपके समय में एमएसपी का रेट दो बार बढ़ा है। एमएसपी का रेट दो बार बढ़ा है।

श्री ब्यास कश्यप :- रेट बढ़ा है सोनी जी, लेकिन रेट बढ़ने के हिसाब से दिया गया था, उसमें कोरोना काल को छोड़ दें। मैं वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ के 70 परसेंट उन किसानों की चिन्ता जो मैं कर रहा हूँ, वह चिन्ता निश्चित रूप से हम सब के लिये आवश्यक है कि सरकार इस पर सजग हो। विपक्ष में हमारा जो दायित्व है कि हम इस बात को सरकार के संज्ञान में लायें कि वर्ष 2024-2025 और वर्ष 2025-2026 की खरीफ में किसानों की मांग के अनुरूप पर्याप्त मात्रा में समय में खाद उपलब्ध कराने में सरकार विफल रही है। माननीय कृषि मंत्री जी ने इसे स्वीकार भी किया है, यह आरोप लगा देते हैं कि खाड़ी युद्ध के चलते हम लोग खाद का भण्डारण उस ढंग से नहीं कर पाये हैं। आप वर्तमान में देखियेगा सही, वर्षा ऋतु के लिये परेशानी थी, छत्तीसगढ़ में मानसून सक्रिय हो गया है। खेती

किसानी में बोनी का काम पूर्ण हो चुका है, रोपा पद्धति के लिये तैयारी चल रही है। हमको पहले डीएपी चाहिये, छत्तीसगढ़ सरकार की अव्यवस्था के कारण डीएपी की मात्र 56 परशेंट उपलब्धता हो पाई है और उसके बदले में जो प्रायवेट कारखाने हैं, उनके दबाव या मिलीभगत की वजह से खादों को यहां छत्तीसगढ़ के किसानों को खपाने का प्रयास किया जा रहा है। 22-32-16 तो इफको के नाम से आता है, परन्तु अन्य 20-20-10 विभिन्न प्रकार के हैं, उनको खपाने का प्रयास किया जा रहा है और प्रोत्साहित किया जा रहा है, पता नहीं कि कृषि मंत्रालय और उनके साथ क्या साठ-गांठ हुई है, जिससे किसानों का उत्पादन प्रभावित होगा। धान खरीदी के विषय में हम पूर्ववर्ती की बात नहीं करते हैं, परन्तु चिन्ता इस बात की है कि जिस प्रकार से इन्होंने समर्थन मूल्य की बात कही है, जो धान खरीदी की बात कही है, आपने खरीदा है हम उसे स्वीकार करते हैं, परन्तु पिछले साल से आपने किसानों को पैसा न देकर पोर्टल के माध्यम से कितने किसानों का आपने पंजीयन नहीं कराया है, जो किसान पंजीकृत हो गये थे, लाखों किसान धान बेचने के लिये असफल रहे हैं और उसके चक्कर में सेवा सहकारी समिति के माध्यम से जो खाद लिये, बीज लिये, एसीसी लिये, वह धान नहीं बेच पाये, छत्तीसगढ़ सरकार अरबों रुपये का कर्जदार हो गये हैं, इसके लिये भी भारतीय जनता पार्टी की सरकार की गलत नीतियां हैं। चूँकि 70 परशेंट किसान यहां खेती किसानी करते हैं। छत्तीसगढ़ धान का कटोरा है और मुख्यतः हम इस बात को कहते हैं कि सरकार किसानों के प्रति असफल रही है। सभापति महोदय, कृषि ऋण में ब्याज अनुदान की पर्याप्त राशि समय पर सहकारी संस्थाओं को देने में राज्य शासन की असफलता है और उसके कारण सहकारी संस्थाओं पर ब्याज का अपूर्णनीय भार पड़ा है। पूरे प्रदेश में ब्याज अनुदान की राशि लगभग 250 करोड़ राज्य सरकार पर बकाया है। यह किसी भी सरकार के लिए अच्छी स्थिति नहीं है। अब मैं कहूंगा, क्या हो गई है कहना उचित नहीं है, आप लोग समझदार हैं, ऐसा प्रतीत हो रहा है। जैसे बोलते थे कि डिफाल्टर हो गया, कुछ हो गया, मैं ऐसा नहीं कहना चाहता। लोगों के मन में यह स्थिति बनती जा रही है। आप किसानों को देखिएगा, आप एक तरफ प्रोत्साहन की बात करते हैं परन्तु प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत निजी बीमा कंपनियों के द्वारा की जा रही लूट से प्रदेश के लाखों किसानों के हितों की रक्षा करने तथा राजकोष की रक्षा करने में राज्य सरकार विफल हो गयी है। राज्य में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लागू है, इस योजना के अंतर्गत बीमा प्रीमियम की राशि में कृषकों का योगदान 14%, राज्य सरकार का योगदान 44% तथा केंद्र सरकार का योगदान 42% रहता है। खरीफ 2023, खरीफ 2024, खरीफ 2025 में धान की फसल का बीमा कराने के लिए बीमा प्रीमियम की कुल राशि 4,162 करोड़ 53 लाख का भुगतान निजी बीमा कंपनियों को किया गया और इन्हीं तीनों वर्षों में किसानों को कुल क्षतिपूर्ति का दावा मात्र 866 करोड़ 16 लाख प्राप्त हुआ है। यह कितने चिंतन की बात है कि एक तरफ हम 4000 करोड़ रुपये बीमा कंपनियों को देते हैं और दूसरी तरफ मात्र किसानों को 866 करोड़ रुपये ही प्रीमियम प्राप्त हो पाई है जो मात्र 31% है। इससे स्पष्ट है कि निजी

बीमा कंपनियों ने बीमा प्रीमियम के मद में घर बैठे भारतीय जनता पार्टी की सरकार के कार्यकाल में 3,296.37 करोड़ करोड़ का शुद्ध मुनाफा कमाया है। इसे ना हरा लगे ना फिटकरी, रंग चोखा कहते हैं। यह किसानों के प्रति छत्तीसगढ़ सरकार की संवेदनशीलता है। मैं आपको बता दूँ, मैंने कई बार माननीय दयालदास जी बघेल के विभाग के विषय में कहा है कि अगर छत्तीसगढ़ की कुछ असफल योजनाएं हैं, वह सरकार संज्ञान नहीं ले पा रही हैं। माननीय मंत्री महोदय नहीं हैं, मेरी बात आप कृपा करके सुनिएगा। समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन योजना अंतर्गत लाखों मीट्रिक टन धान की फर्जी खरीदी बताकर हजारों करोड़ की क्षतिपूर्ति करना या पहुंचाना। जैसे सरकार धान खरीद लेती है पर उस धान को मिलिंग करा कर यानी कि हम शुरुआत में जितनी धान खरीदी करते हैं, हम किसान से किस प्रकार से अधिक धान खरीदी करते हैं, हम लोग किसानों को किस ढंग से परेशान करते हैं परंतु जब धान खरीदी हो जाती है और खरीदी होने के बाद स्टोक लग जाता है तो सरकार की अव्यवस्था के नाम से लाखों मीट्रिक टन धान पर्याप्त संरक्षण व्यवस्था के नाम से खराब हो जाता है और खराब बता करके सरकार को हानि पहुंचाई जा रही है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार वर्तमान में उसके ऊपर अंकुश नहीं लगा पा रही हैं। आप देखिएगा कि सड़ गया, गल गया, ऐसा कह करके जब उसकी चावल की मिलिंग होती है तो मिलिंग को अमानक चावल लेने के लिए मजबूर हो जाते हैं, यह भी चिंता का विषय है। मुझे तो लगता है कि आज भी समय है, सरकार इस बात पर थोड़ा सा संज्ञान ले और सचेत हो कि किस प्रकार से चावल मिलिंग की पूरी प्रोसेसिंग की जो समस्या है, उसमें हजारों करोड़ का जो नुकसान छत्तीसगढ़ की सरकार का होता है, तो निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ की सरकार नहीं, छत्तीसगढ़ के आम जनों का यह नुकसान है। यह बात मैं आपसे कहना चाहूंगा। मैं आपको कुछ उदाहरण दे दूँ कि खरीफ विपणन वर्ष 24-25 में कुल 149 लाख 25 हजार मीट्रिक टन धान की खरीदी की गई थी। इसमें से 66.282 मीट्रिक टन धान खरीदी केंद्रों में शॉर्टेज हुआ। इस धान की राशि 3100 रुपये प्रति क्विंटल की दर से 205 करोड़ 47 लाख होता है। इस धान पर संग्रहण व्यय तथा बैंक ऋण का ब्याज आदि 600 रुपये प्रति क्विंटल की दर से 40 करोड़ रुपये होता है। विपणन संघ के धान संग्रहण केंद्रों पर कुल 1,57,426 मीट्रिक टन धान का शॉर्टेज था। जिसका मूल्य 3700 रुपये प्रति क्विंटल की दर से रुपये 542 करोड़ 40 लाख होता है। इस प्रकार खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 में धान की सुरक्षा और रखरखाव में राज्य सरकार के असफल रहने के कारण।

सभापति महोदय :- माननीय, समाप्त करें।

श्री ब्यास कश्यप :- महोदय, अभी तो एक ही विषय आया है, किसान के नाते और भी विषय हैं।

सभापति महोदय :- सारे विषय आ गए हैं। कोई दूसरी बात कहिये। आप सहयोग करें। समय हो गया है। समाप्त करें।

श्री ब्यास कश्यप :- महोदय, नहीं आए हैं। थोड़ा सा समय दीजिए। देखिए, सबने कहा है, हमने धैर्यपूर्वक सुना भी है और [xx] मैं उस बात को स्वीकार करता हूँ और जल्दी समाप्त करता हूँ। कुल-मिलाकर किसानों को परेशानी हो रही है। अमानक एवं नकली खाद-बीज, कीटनाशकों को किसानों को विक्रय करने से अपूरणीय क्षति पहुंच रही है। प्रदेश के गौठानों को बंद कर गौशाला एवं मवेशियों की रक्षा करने के संवैधानिक दायित्व को पूरा करने में सरकार विफल रही है, जिसके कारण पिछले दो वर्षों में लगभग 2,500 गोवंश सड़क दुर्घटनाओं में मारे गए। सरकार गोवंश संरक्षण में पूरी तरह विफल है। एक तरफ भूपेश बघेल की सरकार थी। जिसमें लाखों एकड़ जमीन को संरक्षित किया गया था। घेरा, बाउंड्री वॉल, गोठान, सभी की व्यवस्था की गयी थी, परंतु सरकार की यह नीति कि उसको पुरानी सरकार ने किया है, हम उसको लागू नहीं करेंगे। वह नहीं कर रहे हैं तो आप हर चीज में तो योजना बदल रहे हैं न। आप बदल दीजिए। दीनदयाल उपाध्याय जी, श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी, केशव प्रसाद जी, हेडगेवार जी, गुरुजी, किसी के भी नाम से रखें। लेकिन रखें तो सही। या फिर जो गौधन चलाते थे, आदरणीय देशमुख जी चलाते थे तो देशमुख जी के नाम से रख लेते। माननीय कृषि मंत्री जी, कहने का मतलब है कि आप भेदभाव मत कीजिए। सरकार की जो अच्छी योजनाएं रहती हैं, उन योजनाओं को आगे बढ़ना चाहिए। यह आपका कर्तव्य होता है, परंतु आपने दुर्भावनापूर्वक सभी योजनाओं को बंद करने का काम किया है, जिसका नुकसान छत्तीसगढ़ के आमजनों को हो रहा है। माननीय महोदय, मुख्य रूप से दो विषय और हैं।

सभापति महोदय :- चलिए, समाप्त करें।

कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री (श्री रामविचार नेताम) :- माननीय सभापति महोदय, यदि धान के बदले दूसरी फसल लेंगे तो 15,000 रुपये प्रति एकड़ देने की सरकार की योजना प्रारंभ हुई है। कृषि उन्नति योजना में शामिल कर रहे हैं।

सभापति महोदय :- माननीय मंत्री जी, आप बैठिए। उनको बोलने दीजिये।

श्री ब्यास कश्यप :- मुझे बोलने दीजिए। माननीय मंत्री महोदय, अच्छी बात है कि आप अन्य फसलों पर 15,000 रुपये देने की बात कर रहे हैं। आप अगर छत्तीसगढ़ के किसानों के असली हितैषी हैं तो खरीफ नहीं, रबी फसल में आप 15,000 रुपये देकर देखिए, उसके बाद छत्तीसगढ़ के किसान और छत्तीसगढ़ की उपलब्धि को देखिएगा। माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी किसान भी बैठे हैं। आप हमें रबी फसल पर 15,000 रुपये का प्रमोशन दीजिए, उसके बाद देखिएगा कि छत्तीसगढ़ में किस प्रकार की प्रगति होती है, किस प्रकार से किसान संपन्न होता है। केवल एक ही वर्ग संपन्न नहीं होगा। जब तक इस छत्तीसगढ़ का किसान वर्ग संपन्न नहीं होगा, तब तक छत्तीसगढ़ की कुल प्रगति नहीं मानी जाएगी। इस बात का चिंतन सरकार को करना है। दो विषय ऐसे हैं कि किसी भी प्रदेश में किसान के साथ-साथ जो आवश्यक हैं, रोटी, कपड़ा, मकान तो बोलते हैं, परंतु बेहतर शासन के लिए शिक्षा और चिकित्सा भी जरूरी है। शिक्षा के बारे में सभी लोगों ने कुछ न कुछ कहा है, परंतु कुछ पॉइंट्स में अभी वर्तमान में कहना चाहूंगा

कि जिस प्रकार से हमारे छत्तीसगढ़ में शिक्षा के प्रति सरकार गंभीर नहीं है, बल्कि अनदेखी कर रही है और प्राइवेटाइजेशन की ओर शिक्षा को बढ़ावा देने का प्रयास किया जा रहा है। माननीय सभापति महोदय, कुछ सरकारी आंकड़े हैं कि अगर 100 छात्र पहली से लेकर बारहवीं तक पढ़ेंगे तो 46 दशमलव कुछ प्रतिशत लगभग 47 प्रतिशत बच्चे ही पहुंच पाते हैं और 53 प्रतिशत बच्चे बारहवीं की कक्षा तक अपनी शिक्षा नहीं ले पाते। 57,036 स्कूलों में 57.57 लाख छात्र-छात्राएं पढ़ रहे हैं। यह सरकारी स्कूलों का आंकड़ा है और अभी आप देखिएगा सही कि जितने बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे हैं, उससे कहीं ज्यादा या उसके समकक्ष बराबर प्राइवेट स्कूलों में छात्र-छात्राएं पढ़ रहे हैं। मैं कुछ उदाहरण देना चाहूंगा कि अभी कुछ समाचार समूहों ने जांजगीर में एक कार्यक्रम कराया। जो 10वीं और 12वीं में 70 प्रतिशत और 90 प्रतिशत पाने वाले बच्चे हैं। दुर्भाग्य से हमारा जिला शानदार अंतिम पायदान से एक कदम दूर था। 32वें पायदान पर था।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करिये।

श्री ब्यास कश्यप :- सभापति महोदय, समाप्त नहीं, बहुत गंभीर विषय बोल रहा हूं, सुन तो लीजिये, सबके लिए हैं, यह समाप्त तो होगा ही, कुछ समय तो दीजिये। मैं भी वहां अतिथि था, वहां कलेक्टर थे, एस.पी. थे, डी.ओ. थे। मेरे मन में एक सामान्य पीड़ा होती है कि हम जिस समय पढ़ते थे, उस समय सभी वर्ग के बच्चे एक साथ पढ़ते थे। मैं सरकारी स्कूलों में इंडेक्स देखता हूं। भारतीय जनता पार्टी ने मुझे बेंटी बचाओ बेंटी पढ़ाओ योजना का जिला संयोजक बनाया था। मैं अधिकांश हाई स्कूलों में जाता था और इंडेक्स देखता था तो इंडेक्स में एक ही चीज दिखती कि अनुसूचित जाति, इतने, जनजाति, इतने, पिछड़ा वर्ग, इतने और सामान्य, जीरो, तो कुल मिलाकर स्कूल ही चलाना कोई बात नहीं है, परंतु संस्कार भी पाना महत्वपूर्ण है। यदि हम बड़े लोगों के साथ, अच्छे लोगों के साथ बैठेंगे, उठेंगे, पढ़ेंगे, लिखेंगे, खेलेंगे, कूदेंगे, तब जाकर संस्कार भी बढ़ेगा और संस्कार के साथ-साथ हमारा ज्ञान भी बढ़ेगा। मैंने जब पूछा कि यहां सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले कितने छात्र-छात्राएं हैं, हाथ उठाइए, तो सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले मात्र 10 प्रतिशत बच्चे 70 प्रतिशत पाए थे और प्राइवेट विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र-छात्राएं 90 प्रतिशत लाये थे, यह चिंता का विषय है, भविष्य के लिए चिंता का विषय है। छत्तीसगढ़ की सरकार इस बात पर ध्यान नहीं दे रही है। वह अपनी पीठ भले ही थपथपा ले कि हम शिक्षा के क्षेत्र में यह कर रहे हैं, वह कर रहे हैं।

श्रीमती शकुंतला सिंह पोर्ते :- आपके यहां हुआ होगा, हमारे यहां बलरामपुर जिले में टॉप-10 में 8 बच्चे सिर्फ वाड्रफनगर के थे।

सभापति महोदय :- चलिये, टोका-टाकी न करें।

श्री ब्यास कश्यप :- अच्छी बात है। जहां आए हैं, वहां आए हैं, मैं स्वागत करता हूं। मैं उसकी परवाह नहीं करता। परंतु वर्तमान में सरकार पूरी व्यवस्था नहीं कर पा रही है। विद्यालयों में शौचालय

के रैंक में हम राष्ट्रीय स्तर से आज भी पीछे हैं। माननीय शिक्षा मंत्री जी, 2024-25 के सत्र में जीरो एनरोलमेंट वाला एक भी स्कूल नहीं था लेकिन 2025-26 में ऐसे 149 स्कूल हो गए, जहां छात्र ही नहीं हैं, परंतु वहां 140 शिक्षकों की पदस्थापना है। यह चिंता का विषय है। कैसे, क्या कारण है कि सरकारी विद्यालयों में छात्र-छात्राएं पढ़ने को तैयार नहीं हैं? यह कितना चिंता का विषय है, इसको तो हमें देखना ही चाहिए।

सभापति महोदय :- चलिए समाप्त करें।

श्री ब्यास कश्यप :- सभापति महोदय, कुछ-कुछ बातें हैं, बोलने तो दीजिए। हमें स्वास्थ्य के प्रति भी चिंतित होना पड़ेगा। स्वास्थ्य का जो हाल है कि प्रदेश में संचालित शासकीय अस्पतालों में विशेषज्ञ चिकित्सकों के कुल मिलाकर 10,533 पद रिक्त हैं, इस बात की भी चिंता करें। शिक्षा और स्वास्थ्य राज्य की प्रगति के लिए आवश्यक है कि प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधा केंद्रों के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ देश के 28 राज्यों में 22वें स्थान पर हैं। इसका परिणाम देखिएगा सही, यह आप ही के आंकड़े हैं। प्रदेश में खांसी का जहरीला सिरप सरकार के संरक्षण में मरीजों को वितरित किया जाता है तथा किसी के विरुद्ध अपराध दर्ज नहीं किया गया। मजबूरीवश प्रदेश के गरीब निजी अस्पतालों में उपचार हेतु जाते हैं, जहां पर आयुष्मान भारत का भुगतान नहीं होने के कारण उपचार बंद हो गया है। लगभग जो प्राइवेट चिकित्सालय चल रहे हैं, उनको आयुष्मान योजना की 600 करोड़ से अधिक की राशि देना बाकी है, यह चिंता का विषय है। सरकार द्वारा योजना चलाना अलग बात है, परंतु योजना का क्रियान्वयन के लिए भी सरकार की जिम्मेदारी हैं। इसलिए हम लोग अविश्वास की बात करते हैं। शासकीय अस्पतालों में चिकित्सा विशेषज्ञ डॉक्टरों की भी कमी है। सरकार द्वारा रिक्त पदों को भरने के लिए इच्छाशक्ति के साथ कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है। जीवनदीप समिति के माध्यम से डॉक्टर भी रख रहे हैं, प्यून भी रख रहे हैं, यह स्थिति स्वास्थ्य विभाग की हो रखी है। मैं यह कहना चाहूंगा।

सभापति महोदय :- चलिये, कश्यप जी, समाप्त करें।

श्री ब्यास कश्यप :- सभापति महोदय, समाप्त तो मैं करबे ही करूंगा परंतु कुछ बातें और हैं।

श्री ब्यास कश्यप :- इस तरह आसंदी की तरफ बार-बार आपकी टिप्पणी ठीक नहीं है।

श्री ब्यास कश्यप :- कभी लगातार छत्तीसगढ़ सदन में यह बात भी हो रही है, इसी सदन में सर्वानुमति से 27 प्रतिशत ओ.बी.सी. आरक्षण की बात हुई थी। ओ.बी.सी. आरक्षण की बात तो छोड़िए, अब तो कोई वैकेंसी ही नहीं निकल रही है। वैकेंसी नहीं निकलने के कारण एस.सी., एस.टी., ओ.बी.सी. वर्ग के बच्चों के लिए बड़ी खस्ता हालत है। वे पढ़-लिख जा रहे हैं, उम्रदराज होते जा रहे हैं, उनके लिए चिंता करें।

सभापति महोदय, यहां हमारे माननीय कृषि मंत्री जी बैठे हैं। हम नीली क्रांति में 14वें स्थान पर है, यह कहकर अवगत करा रहे थे, अच्छी बात है। हम तो बोलते हैं कि जिस प्रकार से छत्तीसगढ़ धान

का कटोरा है, यानी यहां पानी की कमी नहीं रहती। माननीय नेताम जी, हमारे प्रदेश के किसी भी तालाबों में सूखा नहीं रहता। यहां बारहमासी तालाब है, हमको तो पहले नंबर में रहना चाहिए। इस बात की चिंता करें। मैं यह बात कहना चाहूंगा कि मत्स्य क्षेत्र में जिस प्रकार से आपके विभाग के द्वारा कहने के लिये हमें आसान लगता है कि उस विभाग में हमारे मछुआरा समितियों को तालाब मिल जाता होगा, परंतु मछुआरा समितियों को तालाब लेने में कितने पापड़ बेलना पड़ता है और कितनी राशि देनी पड़ती है, तब जाकर उनको तालाब मिल पाता है। बड़े-बड़े घराने के लोग, बड़े-बड़े उद्योगपति लोग उस पर काम करते हैं। यह बात कहना चाहूंगा। हां कुछ कहत हस भैया, बोल ले फिर कहूं।

कृषि मंत्री (श्री रामविचार नेताम) :- तालाब देने का काम अलग-अलग निर्धारित है। छोटे तालाब पंचायत, जनपद पंचायत, जिला पंचायत का, इस तरह से पंचायत राज में सबका अधिकार दिया हुआ है।

सभापति महोदय :- चलिये, जवाब देने की जरूरत नहीं है। आप बैठिये।

श्री ब्यास कश्यप :- माननीय मंत्री महोदय, आपके संज्ञान में ले आना चाहता हूं।

सभापति महोदय :- कश्यप जी, समाप्त करें।

श्री ब्यास कश्यप :- माननीय सभापति महोदय, एक आखिरी बात है। चूंकि मंत्री जी ने कहा है तो उनको संज्ञान में लाना जरूरी है। जो तालाब है...। बोलन दे न भैया, ओखर बाद तो तय बोलत करबे।

श्री अजय चन्द्राकर :- आखिरी बात नई हे भैया, तोला अउ बोलना हे। आखिरी बात में तोर आखिरी इच्छा हो जाही।

सभापति महोदय :- आदरणीय बैठिये। चलिये, आप समाप्त करिये।

श्री ब्यास कश्यप :- माननीय महोदय, आपने कहा कि तालाब है, निश्चित रूप से ग्राम पंचायत के लोग तालाब की स्वीकृति करते हैं। परंतु आपके विभाग में जो फिशरीज विभाग जाता है न, वहां किस ढंग से लेन-देन करने के बाद, कितने पापड़ बेलने के बाद उन लोगों को तालाब मिलता है, इस बात की चिंता है।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करिये।

श्री ब्यास कश्यप :- माननीय सभापति महोदय, मैं आज यह देख रहा था, मैं तो बैठबे ही करूंगा। अभी तक सत्तापक्ष में जितने भी मंत्री या विधायक अपनी बात रखे हैं, कांग्रेस के 5 वर्षों के कार्यकाल की बात की है, जबकि 02 साल कोरोना भी था। तब भी भूपेश सरकार ने जिम्मेदारीपूर्वक चलाई, पर अभी तक 02 साल के कोरोना का जिक्र किसी ने नहीं किया। सत्तापक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव इसलिए लाया गया है कि ढाई साल में इस सरकार ने जनता के बीच अपना अस्तित्व खो दिया है। यदि इनको अपनी बात रखनी है तो ढाई साल के कार्यकाल के उपलब्धियों को रखें। और वर्तमान में हम देख रहे हैं कि ढाई साल में आपने क्या, उस उपलब्धि को रखिये ना सही। आपने क्या किया, क्या नहीं किया, ये अपनी बात न कर पिछली सरकार की बात करते हैं। अगर हम भी पिछले के पिछले सरकार

की बात करें तो जिस समय मैं भा.ज.पा. में था, इस बात को मैं बोल भी रहा हूँ कि 2018 में अगर सरकार गई तो किसानों के नाम से गई। इसलिये कि मात्र 300 रुपये बोनस देने की बात थी और केन्द्र सरकार ने सेन्ट्रल पूल पर हम चावल नहीं लेंगे इसलिए डॉ. रमन सिंह जी ने वह योजना बंद कर दी जिसका परिणाम था कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार गई और भूपेश बघेल जी, चरणदास महंत जी, टी.एस. बाबा जी के नेतृत्व में कांग्रेस ने पुरुषार्थ दिखाया तब जाकर कांग्रेस की सरकार बनी। ठीक है कि लोकतंत्र है, हार-जीत लगी रहती है। आने वाले समय में जनता बोलती है कि तैयार रहिये, आप लोगों की सरकार आने वाली है। पर मैं एक बात कह दूँ कि सरकार का जो बजट आता है, ज्ञान और गति पर किसकी चल रही है मति, ये समझ में नहीं आया है कि ये इलाहाबाद से आता है, अहमदाबाद से आता है या दिल्ली से आता है ? इसीलिये जो बाहर से योजना आती है, उसी के नाम से इस सरकार के प्रति जनता में अविश्वास है। और इसका परिणाम बता दूँ कि जिस प्रकार से आप निजी विश्वविद्यालय उद्योग घरानों के लिये ओपन कर रहे हैं, खुले रूप से जो बाहर के लोग आयेंगे, छत्तीसगढ़ प्रदेश बच नहीं पायेगा। सरकार को चिंता करनी चाहिए। छत्तीसगढ़ी होने के नाते उनकी चिंता हमको है, इसीलिये अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। बात उनकी है, कांग्रेस ने जरूर लाया है, इसलिए हम अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये समय दिया, टोका टिप्पणी तो चलती रहती है, उसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद।

उप मुख्यमंत्री, लोक निर्माण (श्री अरूण साव) :- माननीय सभापति महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपके बार-बार टोकने के बाद ही ब्यास कश्यप जी बैठे हैं, पर अंततः अपनी बात उन्होंने पूरी कर ली।

श्री भूपेश बघेल :- आपके पुराने साथी हैं।

श्री अरूण साव :- हां जी, पुरानी साथी हैं। यहां पर हम सब साथी ही हैं। लोकतंत्र के साथी हैं। कांग्रेस पार्टी के द्वारा लाये गये अविश्वास प्रस्ताव के खिलाफ विपक्ष में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूँ। हमारे देश के लोकतंत्र की यह खूबसूरती है और लोकतांत्रिक व्यवस्था में विपक्ष का अधिकार है कि वे सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव ला सकते हैं। पर कोई भी संवैधानिक अधिकार का उपयोग कौन कर सकता है, किसे अधिकार है और कब किया जा सकता है, यह भी बड़ा महत्वपूर्ण विषय होता है। पर ये अविश्वास प्रस्ताव आया है, लोकतंत्र की खूबसूरती है। 151 पेज का आरोप पत्र है। माननीय सभापति महोदय, यह आरोप पत्र वैसा ही असत्य का बंडल है जैसा वर्ष 2018 में कांग्रेस पार्टी का जन घोषणा पत्र था। पूरी तरह से असत्य का बंडल, निराधार, बेबुनियाद, तथ्यहीन, तर्कहीन, पूरी तरह से असत्य का बंडल, यह आरोप पत्र है फिर भी यह आरोप पत्र आया है और सदन में चर्चा हो रही है। मैं इन पंक्तियों से अपनी बात की शुरुआत करूंगा कि -

इतने हल्के हैं, कहते हैं हमें नहीं तौला जाये।

इतने हल्के हैं, कहते हैं हमें नहीं तौला जाये ।

यह राष्ट्र विरोध करें पर इनको कुछ न बोला जाए ।

यह राष्ट्र विरोध करें पर इनको कुछ न बोला जाए ।

गूंगे सिखा रहे हैं हमको मुंह कितना खोला जाए, मुँह कितना खोला जाए । (मेजों की थपथपाहट)
माननीय सभापति महोदय, यही हालात कांग्रेस के हैं । कांग्रेस का क्या काम है -

न जनहित से नाता है, न विकास करना आता है ।

न जनहित से नाता है, न विकास करना आता है,

न देश हित भाता है केवल भ्रष्टाचार से नाता है । (मेजों की थपथपाहट)

माननीय सभापति महोदय, यह कांग्रेस पार्टी है और कांग्रेस पार्टी यह अविश्वास प्रस्ताव लेकर आयी है । कौन सी कांग्रेस पार्टी ? वही कांग्रेस पार्टी जो वर्ष 2023 में 75 पार, 75 पार यह कहते थकते नहीं थे, घूम-घूम कर चिल्लाते थे अबकी बार 75 पार, अबकी बार 75 पार लेकिन जनता ने जनादेश क्या दिया । पूरा पार कर दिया, ले-देकर 42.23 प्रतिशत वोट के साथ 35 सीट कांग्रेस पार्टी की आयी और भारतीय जनता पार्टी जिसे रिकॉर्ड 54 सीटें मिलीं और 46.27 प्रतिशत वोट पाकर भारतीय जनता पार्टी जीती उस भारतीय जनता पार्टी की सरकार के खिलाफ यह अविश्वास प्रस्ताव आया है । माननीय सभापति महोदय, किस कांग्रेस पार्टी ने यह अविश्वास प्रस्ताव लाया है कि लोकसभा चुनाव में 11 में से केवल 1 सीट 41.06 प्रतिशत वोट पाकर किस सरकार के खिलाफ, किस पार्टी की सरकार के खिलाफ जिसने 52.06 प्रतिशत वोट के साथ 11 में से 10 सीटें जीतीं । (मेजों की थपथपाहट)

माननीय सभापति महोदय, 5-6 महीने बाद ही यह चुनाव हुआ और इसके 6 महीने बाद रायपुर दक्षिण का चुनाव उसके योद्धा सुनील सोनी जी यहाँ बैठे हैं, बाहर होंगे । रायपुर दक्षिण का उपचुनाव यहाँ पर भी बड़े-बड़े वादे किए पर हश्र क्या हुआ, जनादेश क्या आया ? भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी श्री सुनील सोनी 46 हजार 167 वोटों से जीते और वोट प्रतिशत 65.03 प्रतिशत वोट पाकर और कांग्रेस कितना प्रतिशत वोट पायी केवल 31.38 प्रतिशत फिर क्या हुआ ? सभापति महोदय, नगर निगम, नगर निकायों के चुनाव हुए और विष्णुदेव साय जी की सरकार ने चुनाव भी कैसे कराये, प्रत्यक्ष प्रणाली से । कांग्रेस की सरकार ने जोड़-तोड़कर अपनी सत्ता बनाने के लिए जनता को अपना महापौर और अध्यक्ष चुनने का लोकतांत्रिक अधिकार छीन लिया था। लेकिन हमने हिम्मत दिखायी और जनता पर भरोसा दिखाया। फिर महापौर और अध्यक्ष का चुनाव हुआ तो 10 के 10 नगर निगमों में भारतीय जनता पार्टी ने जीती और यह वही भारतीय जनता पार्टी है और जो 10 की 10 सीटें हारीं वह कांग्रेस पार्टी अविश्वास प्रस्ताव लेकर आएगी। अधिकांश जिलों में जिला पंचायत के चुनाव में भी अधिकांश सीटों में भारतीय जनता पार्टी जीती है, यह इस बात का द्योतक है कि विष्णु देव जी की सरकार पर जनता का विश्वास लगातार बढ़ता ही चला गया है। फिर आखिर यह अविश्वास प्रस्ताव क्यों आया? यह कांग्रेस पार्टी क्यों

अविश्वास प्रस्ताव लेकर आयी है। हम पर जनता का तो विश्वास बढ़ रहा है। इसकी वास्तविकता यह है कि कांग्रेस पार्टी की दिक्कत क्या है यह सत्ता के बिना ऐसे तड़पते हैं जैसे बिना पानी के मछली तड़पती है वैसे कांग्रेस पार्टी सत्ता के बिना तड़पती है और दूसरी बात यह है कि सत्ता को अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते हैं। यह भारतीय जनता पार्टी कैसे सत्ता में आ सकती है, कैसे एक गरीब गांव का बेटा मुख्यमंत्री बन सकता है, कैसे एक सीधे-सादे किसान परिवार का बेटा मुख्यमंत्री बन सकता है। कांग्रेस पार्टी को यह दर्द हो रहा है इसलिए ये अविश्वास प्रस्ताव लेकर आये हैं। वास्तविकता यह है कि ये डर गये हैं और यह हमसे डरे हुए हैं जिस तरह से भारतीय जनता पार्टी की सरकार के ऊपर भरोसा बढ़ रहा है, भारतीय जनता पार्टी का जनाधार बढ़ रहा है इन्हें यह डर लग रहा है कि कहीं आने वाले समय में दिल्ली के जैसा हश्र न हो जाये, पश्चिम बंगाल की तरह न हो जाये, उत्तर प्रदेश की तरह न हो जाये, यह उस डर के कारण जनता में किसी तरह से भरोसा रहे, इस ध्येय से यह अविश्वास प्रस्ताव आया है।

माननीय सभापति महोदय, परन्तु यह कांग्रेस पार्टी सुधरने वाली नहीं है। कांग्रेस अपना रास्ता बदलने वाली नहीं है। क्योंकि

“सफर में धूप तो होगी, जो चल सको तो चलो।।

सभी हैं भीड़ में तुम भी निकल सको तो चलो।

किसी के वास्ते राहें कहां बदलती है

तुम अपने आप को बदल सको तो चलो।”(मेजों की थपथपाहट)

माननीय सभापति महोदय, कांग्रेस पार्टी एक ऐसी पार्टी है जिसका जनाधार लगातार बढ़ रहा है, इस पर जनता का विश्वास लगातार बढ़ रहा है, जब ऐसी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लेकर आये हैं। तो यह भी देखना पड़ेगा कि जब उनको जनता का विश्वास में मिला था, उस विश्वास पर कितना खरे उतरे थे। आपने जनता के विश्वास का कितना आदर किया। यह भी सोचने का विषय है। इस पर भी विचार करने की आवश्यकता है। वर्ष 2018 के चुनाव में मैंने जैसे बताया कि यह जन घोषणा पत्र लेकर आये थे, उसमें बड़े-बड़े वायदे किये थे और वह जन घोषणा पत्र कैसा था, यह जनता के बीच बाद में साबित हुआ, जिसे शुरुआत में मैंने कहा कि यह पूरा असत्य का पुलिंदा है। यह छत्तीसगढ़ की जनता धर्मभीरु जनता है, यह प्रचारित किया गया कि हमने गंगा जल धरकर कसम खायी, यह प्रचारित हुआ, उस समय क्या हुआ था, मुझे यह नहीं मालूम है, लेकिन यह प्रचारित किया गया। छत्तीसगढ़ की भोली-भाली जनता, यह धर्मभीरु जनता है, इनके बहकावे में आ गयी, इनके लुभावने वादे में आ गई और 43 प्रतिशत वोटों के साथ 68 सीटों पर भारी जनादेश के साथ उन जन घोषणा-पत्र पर भरोसा करके कांग्रेस को सरकार चलाने का अवसर दिया, पर फितरत बदलती नहीं है, जिसको जो आदत रहती है, वह करते हैं और पहले दिन से ही चालू हो गए। ये नारा लेकर आये थे, जैसे हम नारा लेकर आये हैं कि हमने बनाया है, हम ही सँवारेंगे और छत्तीसगढ़ को सँवारने का काम

पहले दिन से हम कर रहे हैं। यह नारा लेकर आये-गढ़बो नवा छत्तीसगढ़, ये टैग लाईन लेकर आये थे। छत्तीसगढ़ की जनता को लगा कि हां, कुछ नया होने वाला है तो छत्तीसगढ़ की जनता ने कहा कि इन्हें भी देख लेते हैं, इन्हें भी मौका देते हैं और छत्तीसगढ़ की जनता ने मौका दिया, लेकिन पहले दिन से [xx] और [xx] का काम शुरू हो गया। क्या चालू किया, पहला वाक्य क्या कहा-नरवा, गरुआ, घुरुआ, बारी - छत्तीसगढ़ के चार चिह्नारी।

समय :-

11:46 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए)

अध्यक्ष महोदय, महुँ गांव के लईका आंव। मैं सोचें कि मोर सियान मन तो कभू नहीं बताए हे कि ये हमर छत्तीसगढ़ के चिन्हारी ए। हमर छत्तीसगढ़ के चिन्हारी ला हमर सियान मन बताए हे कि ये भगवान राम के ननिहाल हे, कौशल्या माता के धरती हे, इहां चित्रकूट जल प्रपात हे, मैनापाट जईसे धरती हे, सिरपुर जईसे हमर केन्द्र हे, रतनपुर के महामाया माता, डोंगरगढ़ के बम्लेश्वरी माता, चंद्रपुर के चन्द्रहासिनी माता, दंतेवाड़ा के दंतेश्वरी माता, भोरमदेव, कवर्धा के शहीद वीर नारायण सिंह, मिनीमाता, गुरु घासीदास बाबा ये सब छत्तीसगढ़ के हे, जेकर से नाम छत्तीसगढ़ के होए हे। अब मैं सोचें कि आखिर ये बात काबर केहे गे हे। वास्तविकता ये हे कि नरवा, गरुआ, घुरुआ, बारी ला मध्यप्रदेश में जाकर देखबो कि ए कहां मिलथे। नरवा कहां होथे, गरुआ कहां होथे, घुरुआ कहां होथे, बारी कहां होथे? तो वास्तव में ये छत्तीसगढ़ के नहीं, ए गांव के चिन्हारी हे नरवा, गरुआ, घुरुआ, बारी। यदि मध्यप्रदेश के गांव होही त वहां भी नरवा, गरुआ, घुरुआ, बारी होही, उत्तर प्रदेश के गांव होही त वहां भी नरवा, गरुआ, घुरुआ, बारी होही। पहला वाक्य [xx] से शुरूआत होईस। ओकर बाद, ओकर बाद अउ मजेदार होईए। गेड़ी चढ़े बर, भौरा चलाए बर। कतका पीढ़ी ले हमर गांव के लईका गेड़ी चढ़थे, भौरा चलाथे। अब सरकार हमला गेड़ी चढ़ना सीखाए लगिस, भौरा चलाना सिखाए लगिस। अउ तो अउ बासी खाएबर सिखाए लगिस, वहुँ कामा ? काटा-चम्मच मा। काटा-चम्मच में बासी खवाए बर सिखाए लगिस।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय मंत्री जी, एक मिनट सुन लीजिए। अगर गेड़ी चलाने, बासी खिलाने के लिए सरकार ने सीखाया तो उसमें गलत क्या है और दूसरी बात, आपने हमारी सरकार की शुरूआत असत्य से की है। आप प्रदेश अध्यक्ष थे, मैं आपके ही घोषणा-पत्र के बारे में बोल रहा हूँ। आपके घोषणा-पत्र में यह बात है कि दो साल के अंदर हर घर को नल से पानी पिलाएंगे, यह वादा है और केवल और केवल 6 और 7 प्रतिशत के अंदर आपने काम किया है। 72 प्रतिशत काम हमारी सरकार में हुआ। आप दोषारोपण करते हैं।

स्वास्थ्य मंत्री (श्री श्याम बिहारी जायसवाल) :- द्वारिकाधीश जी, बासी खाने में दिक्कत नहीं है, कांटा-चम्मच से बासी खाने में दिक्कत है।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- मैं उप मुख्यमंत्री जी से बोल रहा हूं, वे सक्षम हैं ।

श्री अरूण साव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में कतका जमाना से गेड़ी चढ़े के काम, भौंरा चलाए के काम, हर गांव में, हर घर में होथे, लेकिन वो अईसे होंगे कि ये सरकार गेड़ी के ब्राण्ड एम्बेसडर है, भौंरा के ब्राण्ड एम्बेसडर है, बोरे बासी के भी अविष्कार ये सरकार करिस, ऐसे प्रचारित करिन।

श्री दिलीप लहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दुनिया में योगा कब से चलते आ रहा है ? लेकिन योगा के ब्राण्ड एम्बेसडर कौन बना ? मोदी जी।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय..।

अध्यक्ष महोदय :- जब तक मंत्री जी खड़े होकर बोल रहे हैं तो आपको बोलना नहीं चाहिए। अनुमति लेकर बोलना चाहिए। आप कन्टीन्यू करिये।

श्री अरूण साव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, स्कूल मा एक ठन कविता पढ़े रहें। शिकारी आता है, जाल फैलाता है, दाने का लोभ दिखाता है, जाल में नहीं फंसना चाहिए। यह बाद में समझ आया कि यह सब बात तो जाल फैलाय गय रहिस। जाल फैला के का करना रहिस हे ? अब छत्तीसगढ़ के जनता ला, ऐसे जाल फैला के सरकार के का काम चालू होइस ? तो शराब घोटाला, कोयला घोटाला, डी.एम.एफ.घोटाला, महादेव एप बेटिंग घोटाला, पी.एस.सी. घोटाला, गोबर घोटाला, गौठान घोटाला, खटाखट, खटाखट खटाखट खटाखट, घोटाला पर घोटाला करीन। छत्तीसगढ़ के जनता ला भुलवार के, भावनात्मक रूप से भुलवार के छत्तीसगढ़ के खजाना ला दूनू हाथ ले लूटे के काम चालू होइस। अध्यक्ष महोदय, ऐसे कौन सा वर्ग नइ हे, जेन ला 5 साल मा कांग्रेस पार्टी धोखा नइ दीस। ऐसे कौन सा वर्ग हे। यदि मैं किसान के बात करव, वर्मी कम्पोस्ट के नाम पर, छत्तीसगढ़ के किसान ला कैसे परेशान करे गय रहिस, वर्मी कम्पोस्ट के नाम पर कैसे लूट करे गय रहिस । धान के पैसा किशत-किशत मा पैसा, किसान ला किशत किशत मा पैसा दीस। बड़ा किसान के हितैषी बनत रहिन हे। ओ दिन ला भुला गय। छत्तीसगढ़ बने के बाद पहली सरकार, जेन सरकार धान ला रगड़-रगड़ के, परखी मार के, पानी मा बोर-बोर के रिजेक्ट करिस। यदि धान बिक भी गय तो ओ चेक पाय बर किसान के चप्पल घिस जात रहिस हे, ओ दिन ला भुला गय।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जब आप मुख्यमंत्री थे, तब आपने धान की खरीदी की, आपने पुख्ता व्यवस्था की, किसी और ने नहीं किया था। (मेजों की थपथपाहट) छत्तीसगढ़ का किसान वह दिन भूल नहीं सकता है कि कैसे उसके साथ अन्याय और अत्याचार हुआ था। वर्मी कम्पोस्ट के नाम पर लूट, किसानों को किशत-किशत में धान का पैसा तरसा-तरसा कर पैसा दिया गया। फिर चौथे किशत में कटौती कर दी गई। आपने किसका पैसा काटा ? आपने किसका पैसा खाया ? किसान का चौथे किशत पैसा क्यों काटा ? फिर रकबा कटौती की गई।

एक माननीय सदस्य :- अपना भी बोल रहे हैं। अपना बोल रहे हो ?

श्री अरूण साव :- अध्यक्ष महोदय, रकबे की कटौती करके, पम्प हाऊस बना है, उसका रकबा काटो, इसका रकबा काटो, आपने कैसे परेशान किया। आपने बड़ा वादा किया था कि 2 साल का पुराना बोनस देंगे। आपने 5 साल नहीं दिया, याद नहीं आया ? किसानों की चिंता नहीं थी। 200 फूड पार्क बनायेंगे कहा था, किसानों को सक्षम बनायेंगे कहा था। वह फूड पार्क कहां है ? कहां है ? आज छत्तीसगढ़ की जनता खोज रही है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रधानमंत्री आवास की बात हो चुकी है। मैं उसको दोहराऊंगा नहीं। मैं कई बार सोचता हूं कि कोई सरकार अपने राज्य के गरीबों के साथ कैसे अन्याय करती है क्या ? कोई संवेदनशील सरकार, लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई सरकार, ऐतिहासिक बहुमत से चुनी हुई सरकार गरीबों के हक पर ऐसा डाका डाल सकती है क्या ? कोई असंवेदनशील सरकार ही गरीबों के साथ अन्याय कर सकती है। उसमें भी नाना प्रकार के धोखा करके उन गरीबों की भावनाओं को खेला। कोई अपनी योजना लाकर, कोई एक किश्त की पैसा देकर चुनाव से पहले। गरीब के भावनाओं से खिलवाड़ करने वाली वह सरकार। युवाओं के साथ क्या किया? पी.एस.सी. घोटाला। पी.एस.सी. घोटाला किया। ऐसे अपने युवाओं के सपनों को तोड़ने वाली सरकार। युवाओं के सपनों के साथ खेलने का काम, छत्तीसगढ़ के भविष्य को तबाह करने का काम इस सरकार ने किया। बेरोजगारी भत्ता के नाम पर कैसा धिनौना मजाक छत्तीसगढ़ के नौजवानों के साथ हुआ। बेरोजगारी भत्ता के नाम पर छत्तीसगढ़ के नौजवानों के साथ कितना बड़ा धोखा और अन्याय उस सरकार ने किया। अध्यक्ष महोदय, मैं जन घोषणा पत्र पढ़ रहा था । घर-घर नौकरी, हर घर नौकरी ये लिखा हुआ है। घर-घर नौकरी, हर घर नौकरी। 10 लाख युवाओं को नौकरी और विधानसभा में इनकी पोल खुली थी।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष जी, मोदी जी की गारंटी भी पढ़ लिया करते। अर्बन मिनिस्टर हो, कुछ उस बारे में भी बता दो। अच्छा लगेगा।

श्री अरूण साव :- विधानसभा में पोल खुली थी। धरम कौशिक जी ने प्रश्न लगाया था। होर्डिंग में क्या संख्या दी थी, वास्तविकता में क्या था? (शेम-शेम की आवाज) असत्य, फरेब, धोखा। खिलाड़ियों के साथ क्या किया? राज्य अलंकरण बंद कर दिया। उत्कृष्ट खिलाड़ियों की घोषणा नहीं की और न जाने क्या-क्या अन्याय राज्य के खिलाड़ियों के साथ किया और महिलाओं के साथ तो कितना बड़ा अन्याय और अत्याचार उस सरकार ने किया था। माननीय अध्यक्ष महोदय, शराब बंदी का बड़ा-बड़ा वादा, बड़ा-बड़ा वादा किया, सरकार आते ही भूल गए। बंदी का वादा भूल कर घोटाले में लग गए। रेडी टू ईट छीन कर, माताओं और बहनों के लिए वादा किया था कि हम सशक्त बनाएंगे, लोन देंगे, उल्टा रेडी टू ईट छीन लिया। उनको बेरोजगार कर दिया। 500 रूपया प्रति महीना देने का वादा करके धोखा दिया, 5 रूपया नहीं दिया और तो और अध्यक्ष महोदय, ऐसी सरकार जिसने बुजुर्गों को भी धोखा दिया। वादा

किया था, 60 से अधिक उम्र के बुजुर्गों को 1000 रुपये देंगे। 75 साल से अधिक वालों को 1500 रुपये देंगे, विधवा पेंशन 1000 रुपये देंगे। 5 साल नहीं दिया, 5 साल नहीं दिया। हर वर्ग को ठगने का काम, धोखा देने का काम कांग्रेस की सरकार ने 5 साल में किया, यही उनका रिकॉर्ड है। मैं तो यह कह सकता हूँ कि ऐसा कोई सगा नहीं जिसे कांग्रेस की सरकार ने ठगा नहीं। (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, इन्होंने और क्या किया? जनता ने विश्वास दिया, जनादेश दिया, भारी बहुमत दिया। कैसे विश्वासघात किया? मैं आपको बताऊँ तो इस छत्तीसगढ़, इस खूबसूरत राज्य को, भोले-भाले लोगों के राज्य को, सामाजिक सौहार्द वाले राज्य का क्या कबाड़ा इन्होंने 5 साल में किया। नशे का गढ़ बना दिया, अपराध का गढ़ बनाया, भ्रष्टाचार का गढ़ बनाया, भू-माफियाओं का गढ़ बनाया। भू-माफियाओं का क्या आतंक था। कब किसकी जमीन पर कब्जा कर ले, कब कहां पर आकर धावा बोल ले। ये जमीन मुझे बेचना पड़ेगा, इस रेट पर बेचना पड़ेगा। भू-माफियाओं का क्या आतंक था। पूरे प्रदेश में भू-माफियाओं का गढ़ बनाया और अध्यक्ष महोदय, इस सरकार ने एक रिकॉर्ड बनाया।

समय :

12.00 बजे

श्री भूपेश बघेल :- मंत्री जी, तारीख बदल गई है, अब तो आप लौट आइए। आप अपनी सरकार की कुछ उपलब्धियाँ बता दीजिये। (हंसी)

श्री अरुण साव :- सब बताएंगे, सब बताएंगे। थोड़ा धैर्य रखिए। मैं भी पूरे दिन भर धैर्य रखकर बैठा हूँ।

एक माननीय सदस्य :- मंत्री जी, नकटी गांव के बारे में बता दीजिए कि वहां किसकी-किसकी जमीन है।

श्री अरुण साव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहली बार इस प्रदेश में सांप्रदायिक झगड़े हुए और उसके लिए राज्य में पहली बार कर्फ्यू लगा। छत्तीसगढ़ की जनता कवर्धा में भगवा ध्वज के अपमान की घटना को कभी नहीं भूलेगी, विजय शर्मा जी इसके गवाह हैं। बीरनपुर की घटना जैसी कितनी घटनाएँ मैं बता सकता हूँ। ईश्वर साहू जी यहाँ बैठे हैं, जिन्होंने अपना पुत्र खोया है। पर ऐसी संवेदनहीन और निष्ठुर सरकार ने राज्य के सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ने का काम किया है, राज्य को धर्मांतरण का गढ़ बनाने का काम किया है, रोहिंग्या और बांग्लादेशी लोगों को बसाने का काम किया है। उनकी सरकार पिछले 5 वर्षों में छत्तीसगढ़ को बर्बाद करने की दिशा में काम कर रही थी। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि ये लोग ढाई-ढाई साल के झगड़े में आपस में ही पांच सालों तक झगड़ा करते रहे और छत्तीसगढ़ की जनता इनके झगड़े में पिसती रही।

श्री उमेश पटेल :- माननीय मंत्री जी।

श्री अरुण साव :- ढाई-ढाई साल के नाम पर ये लोग 5 सालों तक लड़ते रहे।

श्री उमेश पटेल :- माननीय मंत्री जी।

श्री अरूण साव :- आप मुझे रोकने वाले कौन होते हैं? अध्यक्ष जी बोलेंगे। आपके कहने से मैं रुकने वाला थोड़ा न हूँ। (हंसी) (मेजों की थपथपाहट)

श्री उमेश पटेल :- मैं तो आपसे निवेदन कर रहा हूँ, भाई। आप सुन तो लीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय उप मुख्यमंत्री जी, आपने कितने रोहिंग्या को पकड़ा और कितने को बांग्लादेशी भेजा, यह बता तो दीजिए।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय मंत्री जी, माननीय अध्यक्ष महोदय ने आपको केवल असत्य बोलने की अनुमति नहीं दी है। आप अपने विभाग की कुछ बात तो बताइए।

श्री विजय शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, नई बात व नया शब्द आया है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप प्रदेश अध्यक्ष रहे हों। आप बड़े नेता हों। (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आपके दल के नेता ने बोला है। हिंदुस्तान के पहले नंबर के एंकर वाले शहर रायपुर में तो कुछ बोलिए।

श्री उमेश पटेल :- आपने कितने रोहिंग्या को भगाया, कितने को बसाया, उसका सबूत तो रखिए।

श्री विजय शर्मा :- एक दिन चर्चा रख लीजिए, उस पर भी बात कर लेंगे। आप बुला लीजिएगा।

श्री उमेश पटेल :- चर्चा नहीं। आप आरोप लगा रहे हैं, वह रिकॉर्ड में आ रहा है। इसलिए जो सबूत है, उसको पटल पर रखिये।

श्री विजय शर्मा :- आप एक दिन चर्चा रखवा लीजिए। आप लोग माननीय अध्यक्ष महोदय से बात कर लीजिये। चर्चा में हम बता देंगे कि कितने रोहिंग्या पकड़े गये और कितने वापस भेजे गये।

श्री उमेश पटेल :- हम लोगों को सबूत चाहिए, हिम्मत है तो आप बता दीजिये। (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आप विषय से भटकाने का प्रयास मत कीजिये।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वे केवल और केवल आरोप लगा रहे हैं। आप कोई सबूत रखिए।

श्री दिलीप लहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक शायरी बोलना चाहता हूँ?

अध्यक्ष महोदय :- अब समापन की ओर है।

श्री दिलीप लहरिया :- अध्यक्ष महोदय, मुझे एक शायरी सुनाने का मौका दीजिये। मेरा शायरी सुनने के बाद वह और अच्छा बोलेंगे। मेरा नाम भी कटा है, इसलिए मैं थोड़ा बोल देता हूँ। (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है।

श्री दिलीप लहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय,

सत्ता का नशा ऐसा चढ़ा कि जनता ही दुश्मन लगने लगी,

जो चुनकर भेजे, उसी से मुँह मोड़ लिया,
क्योंकि अब हर सड़क डबरा-खचवा लगने लगी।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय,
हम तो गर्दिशों से घिरे हैं, संवर जाएंगे।
जो जनता की नजर में गिरे हैं, वह कहाँ जाएंगे?(मेजों की थपथपाहट)

श्री दिलीप लहरिया :- अध्यक्ष महोदय, इसीलिए मैं कहता हूँ कि -
रसोइया का बजट हिल गया,
पर सत्ता को खबर नहीं,
गैस, तेल, दाल सब महंगा हो गया,
पर देखने के लिए आपके पास नजर नहीं। (मेजों की थपथपाहट)

श्री सुशांत शुक्ला :- अध्यक्ष जी,
हार कर मैदान में जो शोर मचाते हैं,
अक्सर वही अपनी हार को जीत भी बताते हैं
जनता ने जो फैसला सुना दिया था कुछ वर्ष पहले
उसी फैसले से आजकल विपक्ष के लोग घबराते हैं (मेजों की थपथपाहट)

श्री दिलीप लहरिया :-अध्यक्ष महोदय, मैं लॉस्ट कर देता हूँ ।
अध्यक्ष महोदय :- चलिये ।

श्री दिलीप लहरिया :- अध्यक्ष महोदय,
वादा था रोजगार का, डिग्री हाथ में है पर नौकरी नहीं,
युवाओं का भविष्य गिरवी रख दिया, ऐसी सरकार का रहना
अब जरूरी नहीं (मेजों की थपथपाहट)

श्री सुशांत शुक्ला :- अध्यक्ष महोदय,
हम बोलते कम हैं, करके दिखाते हैं
हमने जो कहा, वह करके दिखाया है
बहुत मुश्किल है वफा की कहानी लिखना
जैसे पानी पर पानी से पानी लिखना (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- रामकुमार जी बोल दो भाई ।

श्री रामकुमार यादव :- अध्यक्ष महोदय, एखर मन के भाषण ला सुनके मैं निष्कर्ष निकालें हंव । (हंसी)

श्रीमती चातुरी नंद :- अध्यक्ष महोदय, खाये बर खरी और बताय बर बरी ।

श्री रामकुमार यादव :- निष्कर्ष निकल हे-

अऊ ला कथे कुछू कहीं, एक ला कइथे खर्चा

अतका दिन होगे मोर उमर हा, लेकिन ए सरकार असन नइ

देखेंव लबरा (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, एक और हो जाये ।

श्री अनुज शर्मा :- अध्यक्ष महोदय,

मैंने कब कहा मैं ध्यान नहीं देता

लेकिन हर बात का संज्ञान नहीं लेता

मेरी प्रतिक्रियायें मेरे नियंत्रण में है

उकसाने वालों को मैं उतना सम्मान नहीं देता (मेजों की थपथपाहट)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अंतिम मोर डाहर ले ।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया, बस । मंत्री जी । अभी और समय आऊंगा, देखूंगा ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अंतिम बोल देथंव ।

अध्यक्ष महोदय :- अभी समय आयेगा ना । अभी बहुत लोग बोलने वाले हैं । आपको भी अवसर मिल जायेगा । चिंता मत करिये । दिन बदल गया है । मंत्री जी, जल्दी समाप्त करेंगे क्या ?

श्री अरूण साव :- जी । माननीय अध्यक्ष महोदय, 5 साल तक वह ढाई-ढाई साल तक झगड़ा चलता रहा, झगड़ा चलता रहा, झगड़ा चलता रहा । ढाई-ढाई साल के झगड़े में छत्तीसगढ़ की जनता 5 साल पिसती रही है । माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2023 में लगता था कि हमने तो अब जाल बिछा दिया है, छत्तीसगढ़ की भोली-भाली जनता है, हमारे जाल में तो दाना भी डाल दिया है, छत्तीसगढ़ की जनता फंस जायेगी और फंसेगी ही, यह पूरा विश्वास था और इसीलिए बड़े शान से घूम-घूमकर कहते थे कि अब की बार 75 पार । अध्यक्ष महोदय, लेकिन यह भूल गये थे कि दही के भोरहा में एके पईत कप्सा हा लिलाथे, बार-बार नइ लिलावय । (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, झूठ को छिपाने की कोशिश की जा रही थी, विश्वासघात छिप नहीं सकता है । अध्यक्ष महोदय, दान करने से रुपया जाता है, लक्ष्मी नहीं घड़ी बंद करने से घड़ी रुकती है, समय नहीं, असत्य छिपाने से असत्य छिपता है, सच

नहीं। (मेजों की थपथपाहट) छत्तीसगढ़ की जनता के सामने इनकी सच्चाई आ गई और ऐतिहासिक वोटों से, ऐतिहासिक सीटों से भारतीय जनता पार्टी को जीत मिली। विष्णुदेव साय जी के नेतृत्व में सरकार बनी और माननीय अध्यक्ष महोदय में छत्तीसगढ़ में घूमता हूँ और सब जगह जाकर पूछता हूँ कि भईया बताओ कि विष्णुदेव साय जी की सरकार कैसे काम कर रही है, सब जगह से एक ही आवाज आती है कि सांय-सांय काम कर रही है। (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, उसके पीछे कारण है। यह केवल कपोल कल्पित नहीं है, हमने जो मोदी की गारंटी में वादा किया था, मोदी की गारंटी यानी पूरा होने की गारंटी, यह करके दिखाया है, धरातल पर लेकर आए हैं। हमने वादा किया था कि हमारी सरकार बनेगी, हमारा मुख्यमंत्री आवास बाद में बनेगा, 18 लाख प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत करेंगे। 13 दिसंबर को शपथ लिए, 14 दिसंबर को कैबिनेट में 18 लाख प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति प्रदान कर दी। यह मोदी की गारंटी और विष्णु का सुशासन है। ठीक 12वें दिन, जो 5 साल में कांग्रेस की सरकार ने नहीं किया। 13 दिसंबर को शपथ लिए, 25 दिसंबर छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता अटल बिहारी वाजपेई जी के जन्म जयंती के दिन 2 साल का पुराना बोनस 12 लाख किसानों के खाते में 3716 करोड़ रुपये डाले। केवल 12 दिन में वह वादा पूरा किया जो 5 साल में आप नहीं कर पाए। माननीय अध्यक्ष महोदय, यही विष्णु का सुशासन है, डबल इंजन की सरकार, विकास लगातार, विश्वास लगातार। (मेजों की थपथपाहट) विधानसभा चुनाव में 46.27% वोट, लोकसभा चुनाव में 52.06% वोट, रायपुर दक्षिण में 65.03% वोट।

श्री भूपेश बघेल :- भाई वह फोटोकॉपी है क्या? पहले तो बोल चुके हैं।

श्री अरुण साव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये ग्राफ लगातार बढ़ा है, जनाधार बढ़ा है, इसी से तो आप घबराए हुए हैं। आखिरकार कांग्रेस पार्टी को क्या नैतिक अधिकार है, जिसने जब मौका मिला तो जनता के साथ विश्वासघात किया। दूसरी तरफ वह सरकार जिसकी जनाधार और जनविश्वास बढ़ रही है, उसके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने का? फिर भी लेकर आए हैं। मुझे यह कहना है कि वास्तव में इस लोकप्रिय सरकार, जिसका जनाधार जनविश्वास लगातार बढ़ रहा है, उसके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने का नैतिक अधिकार नहीं बनता है। संवैधानिक रूप से होगा, आप लेकर आए हैं जो कि असत्य का पुलिंदा है। मैं अपने विभाग के कामों पर आऊंगा। सबसे पहले मैं नगरीय प्रशासन विभाग में जो काम किए हैं, वह आपको बताना चाहूंगा। नहीं बताऊंगा तो यह बोलेंगे अपने विभाग की उपलब्धि नहीं बताए, इसलिए सुनना पड़ेगा।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अरुण जी, आप तो वहां पर बोल रहे थे 20 मिनट से ज्यादा नहीं बोलूंगा, 45 मिनट हो गया।

श्री अरुण साव :- अब मेरे साथियों ने कहा कि भई आपको पूरी बात बोलना है। हम लोग अपना मौका छोड़े हैं तो हमारे मौका का उपयोग आप कर लीजिए।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- माननीय मंत्री जी, कोई बजट भाषण नहीं है। आपने तो कह दिया जितना कहना था, जितनी गाली देनी थी दे दी, जितना ठोकना था ठोक दिया, अब क्या कर रहे हो? (हंसी) मजा किरकिरा हो जाएगा।

श्री अरुण साव :- अध्यक्ष महोदय, बस थोड़ा सा 5 मिनट में मैं बड़ी-बड़ी बातें कह देता हूँ।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय मंत्री जी, मैं एक बात याद दिला देता हूँ। इनोवेशन हब की बात की गई थी कि छत्तीसगढ़ राज्य में भारत का सेंट्रल इनोवेशन हब बनाया जाएगा, रायपुर में 6 लाख रोजगार पैदा किए जाएंगे। यह आपकी मोदी की गारंटी में था। 500 रुपये में सिलेंडर दिया जाएगा, मोदी की गारंटी में था। रिक्त शासकीय पदों को 2 साल के अंदर भरा जाएगा, मोदी की गारंटी में था। ऐसी बहुत सारी गारंटियां हैं, उस पर भी प्रकाश डालें।

श्री अरुण साव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले ढाई वर्षों में नगरीय प्रशासन विभाग में सबसे पहला जो बड़ा काम किया, महापौर और अध्यक्ष के चुनाव प्रत्यक्ष प्रणाली से करके जनता को उनके लोकतांत्रिक अधिकार दिया और जो अलोकतांत्रिक निर्णय जनता के अधिकारों को छीना था, उसे वापस दिया और जो अलोकतांत्रिक निर्णय जनता के अधिकारों को छीना था, उसे वापस दिया। एक राष्ट्र एक चुनाव की दिशा में राज्य के समय व संसाधन की बचत करते हुए एकसाथ चुनाव कराने का एक बड़ा निर्णय हमारी सरकार में हुआ। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके सामने महत्वपूर्ण चीजों को बताऊंगा। हमने एक नई योजना प्रारंभ की। मुख्यमंत्री नगरोत्थान योजना शहरी विकास के लिए बड़ी परिवर्तनकारी योजना है। केवल ढाई सालों में नगर-निगमों में जो अधोसंरचना के महत्वपूर्ण काम हैं, उसके लिए 904 करोड़ रुपये की स्वीकृति 71 बड़ी परियोजनाओं के लिए इन ढाई सालों में हमारी सरकार ने किया है। 15वें वित्त आयोग का हमारी सरकार ने पिछले ढाई सालों में 608.17 करोड़ रुपये 4,395 कामों की स्वीकृति दी, जिससे शहर की मौलिक मूलभूत नागरिक सुविधाओं में उसका उपयोग हो। हमने अधोसंरचना विकास के लिए पिछले ढाई सालों में 1,942 करोड़ रुपये नगरीय निकायों को विकास के लिए जारी किया। आज हमारे शहर स्वच्छ, सुंदर और सुविधापूर्ण बन रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत हमारी सरकार ने 6,666.92 करोड़ रुपये की 412 परियोजनाएं स्वीकृत कीं। इनमें 126 आकांक्षी शौचालय, 96 एसटीपी, इंटरसेप्शन डायवर्शन परियोजनाएं, 190 ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और प्रसंस्करण की परियोजनाएं शामिल हैं। हमारी सरकार ने 96 नगरीय निकायों में एसटीपी, इंटरसेप्शन डायवर्शन कार्यों के लिए 448.36 करोड़ रुपये की परियोजनाएं स्वीकृत की हैं। अमृत मिशन 2 के अंतर्गत हमारी सरकार ने ढाई वर्षों में 32 परियोजनाओं के लिए 2,007.98 करोड़ रुपये के कार्यादेश जारी करके कार्य प्रारंभ कराये हैं। निकायों को 829.84 करोड़ रुपये जारी किये हैं तथा 758.25 करोड़ रुपये का वास्तविक व्यय सुनिश्चित हुआ है। बेहतर सुधारात्मक प्रदर्शन के लिए राज्य को 25 करोड़ का रिफॉर्म इंसेंटिव भी प्राप्त हुआ है। हमने 38 नालंदा परिसर के लिए 237 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्रदान

की है, जिनमें से 30 परिसरों का निर्माण प्रगतिरत्न है, जो हमारे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवाओं को आधुनिक पुस्तकालय एवं अध्ययन केंद्र के रूप में विकसित होंगे। हमारे छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी की प्रतिमा हम लोगों ने 191 निकायों के लिए 47.37 करोड़ रुपये की लागत से स्वीकृत किए। 187 परिसरों का निर्माण पूरा कर लिया गया है। इसी तरह से हमने नगरीय निकाय में संपत्ति अंतरण में एक व्यापक सुधार किया है ताकि हमारे नगरीय निकायों की संपत्ति का सदुपयोग हो, हमारे निकायों की आय बढ़े। वर्षों से भटक रहे अनुकंपा नियुक्ति के पात्र परिवारों के लिए हमने 258 पदों पर अनुकंपा नियुक्ति प्रदान की, जो वर्षों से लंबित थे। इस प्रकार से हमारे शहर स्वच्छता की दिशा में लगातार आगे बढ़ रहे हैं। हमारे 7 निकायों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित होने का अवसर मिला है। हमारे शहर स्वच्छ, सुंदर और सुविधापूर्ण बने, इसके लिए हमारी सरकार लगातार आज विष्णुदेव साय जी के मार्गदर्शन में काम कर रही है। मैं लोक निर्माण विभाग की बात करूंगा। पिछली कांग्रेस सरकार ने 2,643.36 करोड़ रुपये का बड़े इंटरेस्ट पर लोन लिया था। हमने उस छोड़े हुए लोन को पटाया और 3,414.94 करोड़ रुपये के अपूर्ण कार्यों की भी अदायगी की। इस प्रकार आपकी सरकार के समय के कुल 6,058 करोड़ रुपये के दायित्वों का निराकरण हमारी सरकार में हुआ है। वर्ष 2023-24 में उन सड़कों को जर्जर स्थिति में छोड़ा था, उन सभी सड़कों का निर्माण मरम्मत, कार्य वर्तमान सरकार के द्वारा किया गया है। विजय शर्मा जी ने भी उसके लिए कहा कि वर्तमान सरकार द्वारा कार्ययोजना के तहत बिना भेदभाव के सभी क्षेत्र में समान रूप से कार्य संपादित किये जा रहे हैं। शहरी यातायात को व्यवस्थित करने के लिए शहरी भाग एवं महत्वपूर्ण मार्गों में फोरलेन मार्ग निर्माण के लिए 85 कि.मी. के लिए 1 हजार करोड़ रुपये की स्वीकृति दी गयी है। मैं समय बचाने के लिए कामों को नहीं पढ़ रहा हूं। आधारभूत सड़क लंबाई 6,968 कि.मी., 243 पुल, 48 भवनों के लिए विगत ढाई वर्षों में 1236 कार्यों के लिए 12,610 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्रदान की गयी है।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी, इतने डिटेल में विभाग के कामों की जानकारी देना आवश्यक नहीं है। अविश्वास प्रस्ताव में आपने इशारा कर दिया कि बहुत अच्छा काम हो रहा है और उतना पर्याप्त रहेगा। बाकी मुख्यमंत्री जी के जवाब में आ जायेगा। आप संक्षिप्त कर लें।

श्री अरूण साव :- अध्यक्ष महोदय, जी। मैं 2 मिनट में कनक्लूड कर देता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- जी, जी।

श्री अरूण साव :- अध्यक्ष महोदय, आज राज्य में सड़कों का तेज गति से विकास हो रहा है। पहली बार इतने बड़े पैमाने पर प्रशासकीय स्वीकृति मिली है। हम एक नई योजना लेकर आये हैं। ओ.पी.आर.एम.सी. योजना, इसके अंतर्गत हम सड़कों को 5 साल तक मेंटेनेंस के लिए देने वाले हैं और हमने इन ढाई सालों में 8 हजार कि.मी. खराब सड़कों की मरम्मत का काम किया है। केंद्र सरकार से भी लगातार स्वीकृतियां मिली हैं। हमने एक द्रुतगामी सड़क संपर्क नामक एक नई योजना लायी है, जिसमें

36 सड़कों को शामिल किया गया है। पहुंचविहीन गांवों में हम सड़क से जोड़ने की योजना भी लेकर आये हैं।

अध्यक्ष महोदय, पी.एच.ई. की बहुत बात होती है। मैं उस पर कहना चाहूंगा कि यह योजना 15 अगस्त, 2019 को प्रारंभ हुई। 29,160 योजनाएं इसके लिए स्वीकृत हुई थी। लगभग 50 लाख परिवारों में घरों तक नल के कनेक्शन से जल पहुंचाने का दिसंबर, 2023 तक 29,160 योजनाओं में से मात्र 172 योजना ही पूर्ण की गयी थी, जो केवल 0.58 प्रतिशत थी। इसमें घोर विफलता एवं नाकामी का पर्दा डालने पूर्ववर्ती सरकार ने 37 लाख 21 हजार नल चबूतरे का निर्माण कर अक्रियाशील, बिना नियमित जल आपूर्ति के सुनिश्चित किये 74 प्रतिशत प्रगति का भ्रामक एंट्री की और 3 हजार से ज्यादा गांवों के भूगर्भी स्त्रोत पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं थे। ऐसे ग्रामों हेतु 2021 में 70 समूह जल प्रदाय योजना स्वीकृत किये गये थे और 2 साल बाद कार्यादेश जारी हुआ। इन्होंने जो जल जीवन मिशन की गाइडलाइन थी, उसमें रेत कॉन्ट्रैक्ट व्यवस्था को बदलकर खुली निविदा प्रणाली लागू करके योजना की दुदृशा की, लेकिन आज हमारी सरकार जल जीवन मिशन योजना को तेज गति से आगे बढ़ाने का काम कर रही है। आज 7,250 गांवों में हर घर में नल से जल आ रहा है, जो 6,216 प्रमाणित भी हो चुका है। 12,389 योजनाएं पूर्ण हो चुकी है (मेजों की थपथपाहट) और जिसमें से 9,539 योजनाएं ग्राम पंचायतों को हस्तांतरित हो चुकी है। इन ढाई सालों में हमने 6,103 नए स्त्रोत का निर्माण भी किया है।

अध्यक्ष महोदय, खेल विभाग की तो बहुत बड़ी-बड़ी उपलब्धियां हैं। अधोसंरचना के विकास में काम हो रहा है। हमने बस्तर ओलंपिक किया, सरगुजा ओलंपिक किया, नेशनल ट्राइबल गेम्स किया और खेल अलंकरण प्रारंभ किया, उत्कृष्ट खिलाड़ियों का अलंकरण किया। आने वाले समय में मुख्यमंत्री खेल उत्कर्ष योजना के लिए बजट में 100 करोड़ रुपये का प्रावधान है। इस तरह से खेल के क्षेत्र में भी हमारी सरकार लगातार आगे बढ़ रही है, काम हो रहा है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे इतना कहना चाहता हूं कि जब भारतीय जनता पार्टी सरकार पर जनता का विश्वास लगातार बढ़ रहा है। आज ऐसी कोई परिस्थितियां नहीं हैं कि विपक्ष को अविश्वास प्रस्ताव लाना पड़े। उसके बाद भी अविश्वास प्रस्ताव आया है, मैं इसका विरोध करता हूं। और अंत में इन पंक्तियों के साथ अपनी बात समाप्त करूंगा।

वक्त की साख को तोड़ लाने का हुनर रखते हैं

ये जिंदगी हम गम में भी मुस्कुराने का हुनर रखते हैं।

इतनी आसानी से तोड़ नहीं पायेगा वक्त हमें,

हम बिखरकर भी संवरने का हुनर रखते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने के लिये समय दिया, उसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- भूपेश बघेल जी। (मेजों की थपथपाहट)

श्री भूपेश बघेल (पाटन) :- माननीय अध्यक्ष महोदय।

श्री अजय चन्द्राकर :- नेता प्रतिपक्ष जी, जब खड़े हुए तो एक ने भी ताली नहीं बजाई थी, एक ने टेबल नहीं ठोका था।

श्री भूपेश बघेल :- अच्छा भाई, अजय जी के लिये एक और जोरदार मेज थपथपा दो। (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस पार्टी की ओर से हमारे विधायक दल के नेता ने मुख्यमंत्री और मंत्रिमंडल के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव लाया है और 136 बिन्दु और 151 पृष्ठ के ये आरोप हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अजय चन्द्राकर जी और धर्मजीत सिंह जी को धन्यवाद दूंगा कि उन्होंने पूरा पढ़ा है। उनके भाषणों से लगा कि हां, उन्होंने अध्ययन किया है। उपमुख्यमंत्री जी भाषण देने के बाद जब दूसरा भाषण देवया रहित तो सुन के जायें।

श्री विजय शर्मा :- पानी पीने गये हैं।

श्री भूपेश बघेल :- पानी पीने गये हैं। अतएव जोर से चिल्लाये के जरूरत नई रहिस हे, हमन बहरा तो नई रहेन। गला फाड़-फाड़ के चिल्लावत रहिस हे। माननीय अध्यक्ष महोदय, लेकिन माननीय अजय जी ने जो बातें कहीं और सीधा-सीधा हमारे नेता जी पर उन्होंने आरोप लगाया कि आप तो झाड़ू लगाने के लिये तैयार हैं। सोनिया जी कहें तो झाड़ू लगाने के लिये तैयार हैं। बिना उसके भाषण हो ही नहीं सकता। यदि सोनिया जी, राहुल जी, नेहरू जी का नाम न लें तो इनके भाषण की शुरुआत नहीं हो सकती है। और फिर इनका प्रिय देश इटली है, उसकी भी चर्चा हमारे साथीगण कर लेते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, ये बात बिल्कुल सही है कि श्रीमती सोनिया गांधी जी का माइका इटली है। भारत आई और भारत की होकर रह गई। हम लोगों को हमारे नेता पर गर्व है। लेकिन मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि आप जिस संस्कृति की बात करते हैं, जिस परंपरा की बात करते हैं, जिस शुचिता की बात करते हैं। आपको स्मरण दिलाना चाहूंगा, आपके बहुत सारे साथी नहीं जानते होंगे, लेकिन अजय जी जरूर जानते हैं, अमर अग्रवाल जी भी जानते होंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय, 1931 में गोलमेज का सम्मेलन हुआ, गांधी जी भी गये थे, देश के बहुत सारे नेता गये थे। उसमें बी.एस.मुंजे भी गये थे। मुंजे जी सीधे भारत नहीं आये, वह इटली रुकते हुए आये और इटली में मुसोलिनी से उन्होंने वहां के राष्ट्रवाद को सीखा। और इटली से लाये क्या? वह ड्रम जो आर.एस.एस. के लोग बजाते हैं, नागपुर में बहुत बड़ा ड्रम बजाते हैं, जो हाफ पेंट और काली टोपी पहनते हैं, वह यूनिफार्म भी वहीं का है। अध्यक्ष महोदय और ये भी मैं आपको बताना चाहता हूं कि हम लोग नमस्ते करते हैं, प्रणाम करते हैं, जयहिंद करते हैं, लेकिन ये जो नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे आप करते हैं न, ये वहीं से आया है। तो आपकी जो पहचान है, आपकी संस्कृति है, आपकी जो प्रेरणा है, वह वहीं का है मुसोल्ली से...।

श्री अजय चंद्राकर :- एक सेकेण्ड । आप किसी भी तरह से साबित कर दें, कहीं से भी । आप

अभी ए.आई. से लेकर गूगल खोल लें । चलिये, आप यह बताईये कि मुंजे से आर.एस.एस. का क्या संबंध था ? आप खोलकर बताईये कि मुंजे आर.एस.एस. में कब थे, कैसे थे ?

श्री भूपेश बघेल :- विश्व हिंदू परिषद के थे ।

श्री अजय चंद्राकर :- विश्व हिंदू परिषद बनाया किसने ? कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी ने । आप सुन लीजिये कि वह कांग्रेस के बड़े नेता थे ।

श्री भूपेश बघेल :- वैसे भी जिन्होंने आर.एस.एस. बनाया वह भी वर्ष 1925 से पहले कांग्रेस में थे ।

श्री अजय चंद्राकर :- बिल्कुल थे ।

श्री सुशांत शुक्ला :- उसके बाद एक परिवार के हो गये ।

श्री अजय चंद्राकर :- आप जिस विषय में चल रहे हैं, मुंजे जी कब आर.एस.एस. में थे ? एकाध साहित्य, एकाध किताब या गूगल वगैरह कुछ भी खोल लीजिये और यहीं बता दीजिये । ए.आई. खोल लीजिये । कुछ भी इटली से, आप इटली से जुड़े हो । आप दुनिया को क्यों जोड़ रहे हैं ? अच्छी बात है । (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह तो बहुत सुविधाजनक है न क्योंकि आर.एस.एस. में कोई सदस्यता तो होती नहीं है तो आप जब चाहें उसको अपना बना लेते हैं और जब चाहें यह बोलते हैं कि वह हमारे नहीं हैं । यह तो सुविधाजनक है । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- यह फिर आरोप है । जिसका आरोप पत्र में कहीं नाम नहीं, कहीं दूर-दूर तक संबंध नहीं, वह आर.एस.एस. की सदस्यता पर बात हो गई। आपने 36 बिंदु पढ़ने के लिए मुझे धन्यवाद दिया तो आप पहले यह साबित करो कि आपने इसको पढ़ा कि नहीं पढ़ा है ?

श्री भूपेश बघेल :- मैंने पढ़ लिया, मैं तो अभी भी रखा हूं । मैंने पढ़ा भी है और रखा भी है । माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं इस आरोप पत्र में आ जाता हूं । माननीय मुख्यमंत्री जी तैयारी करने चले गये ।

श्री कवासी लखमा :- दिनभर से कर रहे हैं ।

श्री भूपेश बघेल :- दिनभर से तैयारी कर रहे हैं तो आज एक्सपेम्पोर बोलेंगे या देख-देखकर पढ़ेंगे ?

श्री अजय चंद्राकर :- मैं आपको फिर से इंटरप्ट कर रहा हूं ।

श्री भूपेश बघेल :- बिल्कुल करिये, आपका स्वागत है । (हंसी) आप नहीं करेंगे तो मजा नहीं आयेगा ।

श्री अजय चंद्राकर :- आप थोड़ा मेरी बात सुनिए । मैं इधर-उधर की चीजों से इंटरप्ट नहीं करूंगा । माननीय अध्यक्ष महोदय, वह देखकर पढ़ेंगे या बोलेंगे बोले तो उसकी शुरुआत कैसे हुई । हम

लोग एक कागज को ऐसा रेफरेंस के लिये रखकर बोल लेते हैं । जिस नेता के नाम से उन्होंने भाषण की शुरुआत की न, उसको देख के पढ़ने की अनुमति संसद में अटल बिहारी वाजपेयी जी ने दी । वहीं से देख के पढ़ने की शुरुआत हुई । अटल बिहारी वाजपेयी जी को धन्यवाद देकर अपनी बात शुरू करिए ।

श्री भूपेश बघेल :- अटल बिहारी वाजपेयी जी लोकसभा अध्यक्ष नहीं थे ।

श्री अजय चंद्राकर :- सहमति दी । मैं यह बोल रहा हूँ कि प्रस्ताव रखा कि इनको देखकर बोलने दिया जाये करके ।

श्री भूपेश बघेल :- इसका मतलब यह है कि श्रीमती सोनिया गांधी जी का अनुसरण हमारे मुख्यमंत्री जी करते हैं । (हंसी) माननीय अध्यक्ष महोदय, जो बातें माननीय नेता जी ने कही और हमारा जो पहला आरोप है उसमें यही है कि यह सरकार 13 दिसंबर को बनी और 11 दिसंबर को हसदेव कटना शुरू हो गया इसका मतलब यह है कि अदृश्य शक्ति है जिसने छत्तीसगढ़ को चलना शुरू कर दिया । किसके आदेश से, उस अधिकारी को किसने आदेश दिया ? वह पेड़ काटने की अनुमति दी ? और वहीं से यह परम्परा चली आ रही है, आज भी कि कौन सरकार चला रहा है ? किसके ईशारे पर चल रहा है ? कौन दिशा-निर्देश दे रहा है ? यह आज तक किसी को समझ में नहीं आ रहा है । आम जनता तो छोड़िए भाजपा के कार्यकर्ता को समझ नहीं आया है कि किस मंत्री के पास जाएं, किसके पास जाएं, किस अधिकारी के पास जाएं ? अधिकारी यह पूछते हैं किससे डायरेक्शन लें ?

श्री सुनील कुमार सोनी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मनमोहन सिंह जी जब प्रधानमंत्री थे उस समय भी हम यह पूछते थे कि सरकार को कौन चला रहा है करके?

श्री भूपेश बघेल :- मनमोहन सिंह जी के बारे में, उनके व्यक्तित्व के बारे में आप क्या कहिएगा ? अमेरिका के राष्ट्रपति भी उनका सम्मान करते थे और आज स्थिति यह है कि अमेरिका के राष्ट्रपति हमारे प्रधानमंत्री जी का 75 बार उनको अपमानित कर चुके हैं, देश का अपमान कर चुके हैं । हमें इस बात का दुख है और हमारे प्रधानमंत्री के बारे में क्या-क्या नहीं बोल रहे हैं । मैं उसकी राजनीतिक हत्या कर सकता हूँ, राजनीति बर्बाद कर सकता हूँ, यह तक बोल सकते हैं । यह अमेरिका के राष्ट्रपति आन रिकॉर्ड बोल रहे हैं । मनमोहन सिंह जी के बारे में ऐसा नहीं बोल सकते, न कभी किसी ने कहा और जब वह अर्थव्यवस्था के बारे में बोलते थे तो पूरी दुनिया सुनती थी ।

श्री विजय शर्मा :- लेकिन वह बोलते कहां थे?

श्री भूपेश बघेल :- लेकिन जब वह बोलते थे तो पूरी दुनिया सुनती थी।

अध्यक्ष महोदय :- आप कंटीन्यू करिये। आप लोग ज्यादा टोका-टाकी मत करिये।

कृषि मंत्री(श्री रामविचार नेताम) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, भूपेश जी का कहना ठीक है कि जब वह बोलते थे तो पूरी दुनिया सुनती थी, लेकिन वह कुछ बोलते ही नहीं थे तो सुनिया क्या सुने।

श्री भूपेश बघेल :- अब जो प्रधानमंत्री हैं, वह इतना बोलते हैं कि कोई सुनता ही नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- आप मुद्दे पर आईये।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय मैं तो विषय पर ही हूँ।

श्री रामकुमार यादव :- वह टॉफी बांट रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय रामकुमार जी आप बैठिये तो।

श्री ओ.पी. चौधरी :- आदरणीय पूर्व मुख्यमंत्री जी, यह चन्नी सुन रहा है या नहीं, आप यह बता दीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- हां जी, उन्होंने कल क्या बोला। कल चन्नी जी प्रेस के सामने क्या बोले हैं। वह आपने सुना है या नहीं सुना है या मैं आपको सुनाऊं। मैं यही सुना दूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे सत्तापक्ष के साथी जितना बोले हैं, मेरे माननीय रामविचार नेताम जी को छोड़ देता हूँ। बचत सारे लोग ऐसा बोल रहे थे, पूरे 5 साल पहले का जो भाषण है, वही घिसा-पीटा रिकॉर्ड, चाहे वह कौशिक जी का हो या और किसी का हो, वही घिसा-पीटा रिकॉर्ड चल रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह हमारे खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। मैंने अजय जी को बार-बार टोका कि आप अपनी उपलब्धियों के बारे में बताते, अब तो आ जाईये। अपनी सरकार की कुछ उपलब्धियों के बारे में बताओ या आरोप पत्र के बारे में कुछ बोलिए। लेकिन उन्होंने एक शब्द नहीं बोला, क्योंकि कुछ बोलने के लायक है ही नहीं। नहीं तो अजय चन्द्राकर जी बोलने के लिए खड़े होते हैं तो पूरा सदन ध्यान से सुनता है, लेकिन आज माननीय अजय जी आपके भाषण में मजा नहीं आया। आप बहुत तीखा हमला करते थे, हम लोग सुनते थे, हमें मजा आता था। जब आप धारा प्रवाह बोलते थे लेकिन आप अटक-अटक कर बोल रहे थे आपके दिल से आवाज नहीं निकल रही थी।

उप मुख्यमंत्री (लोक निर्माण) (श्री अरूण साव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब सचिन तेन्दुलकर मैदान में होते हैं, वह डबल सेंचुरी मारते हैं तो लोगों को यह लगता है कि वह त्रिपल सेंचुरी मारे, आदरणीय भूपेश बघेल जी जो बोल रहे हैं, अजय चन्द्राकर जी के लिए यही बात है। डबल सेंचुरी के बाद भी उनको यह लग रहा है कि उनकी त्रिपल सेंचुरी होनी चाहिए।

श्री भूपेश बघेल :- लेकिन आज वह जीरो में आऊट हो गये। माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग वही सुन रहे थे, वही गौठान, वही धान खरीदी और कोई तो वर्ष 2000 से वर्ष 2003 में पहुंच गये। यहां बता रहे थे कि पहले धान डूबो के खरीदते थे, रगड़ के खरीदते थे। आज आप क्या कर रहे हैं? आप आज यहां पर क्या कर रहे हैं आज रकबा कटौती नहीं हो रही है। आपके छत्तीसगढ़ सरकार और भारत सरकार के दो-दो पोर्टल खुले हुए हैं। वहां किसान कितने चक्कर लगा रहे थे। यहां हर किसान तहसीलदार, पटवारी के चक्कर लगा रहे हैं। कोई ऐसा किसान बता दें जिसने पटवारी और तहसीलदार के चक्कर न लगायें हों, उसके बाद भी रकबा कट रहा है आपकी व्यवस्था पूरी तरह से फेल रही है आप कितना भी कहें, लेकिन आप किसी किसान से पूछ लीजिएगा इस साल धान खरीदी में कितनी स्थिति

खराब हुई। उन्हें धान बेचने में कितनी परेशानी आयी और आज अजय जी धान खरीदी के बारे में बोल रहे थे कि इतना हुआ, आपने फिर से इतना किया, इन एक-एक बिन्दुओं पर, को-ऑपरेटिव, एग्रीकल्चर, फूड के अलग, वह सारे इसमें लिखे गये हैं। प्रदेश में कहां-कहां गड़बड़ी हुई, आरोप पत्र में उसके बारे में सारी चीजें हैं, इसे बहुत विस्तार से बनाया है मैं इसके लिए आदरणीय नेता जी को बधाई देना चाहता हूँ कि आपने बहुत गंभीरता से बहुत अच्छे से यह आरोप पत्र तैयार किया है। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, धान खरीदी के बारे में जो व्यवस्था थी उसे आपने बदल दिया। आपने जो व्यवस्था बनायीं, हमारे सरकार ने उसे वर्ष 2000 में शुरू किया। आपने उसमें और अच्छा करने की कोशिश की और उसके बाद हमारी सरकार आयी तो हमने और अच्छा करने की कोशिश की। वहां से तीन दिनों में धान का उठाव हो जाना चाहिए, लेकिन जब से आपकी सरकार आयी है तब से आज तक के धान बरसात में भीग रहा है, पूरे छत्तीसगढ़ में बाढ़ आयी हुई है, खासकर हसदेव बांगो, शिवरीनारायण के एरिया में, बिलासपुर में धान पड़े सड़ रहे हैं। हमने यह व्यवस्था की थी कि अप्रैल तक के पूरा धान उठ जाये। लेकिन आपके पास तो यह है कि धान संग्रहण केन्द्र में है, धान खरीदी केन्द्र में है, राईस मिलर के पास है, जमा नहीं हो रहा है। पिछले साल का धान जमा नहीं हो रहा है। डबल इंजन की सरकार का केवल एक फायदा आपको मिला कि नवम्बर तक चावल जमा करने का आपको पूरे देश भर में अधिकार मिला हुआ है, आदेश मिला हुआ है और आपको अप्रैल तक समय मिला, उसके बाद भी जमा नहीं कर पाए ? यह आपकी नाकामयाबी है और इससे सरकार को नुकसान हो रहा है और आप किसको प्रताड़ित कर रहे हैं ? सोसाइटी के कर्मचारियों को प्रताड़ित कर रहे हैं, सोसाइटी के कर्मचारी जेल जा रहे हैं। वो कोर्ट में जाकर बेल ले रहे हैं। गलती आप करें और भुगतान वो कर्मचारी भुगतें? और आपने क्या स्थिति बना रखी है ? पूरी सोसाइटी खत्म हो जाएगी। अभी आपने खाद में क्या ? आपके पास 'डबल इंजन' की सरकार है, आप एक बोरा DAP उपलब्ध नहीं करा पाया, लोग DAP के लिए भुगत रहे हैं। प्राइवेट में जाएंगे तो अब पूरा मिलेगा, लेकिन सहकारी समितियों में जाएंगे, तो आपको मिलने वाला नहीं है। ऐसी स्थिति क्यों बनी ? आप युद्ध की बात करते हैं, बिल्कुल सही बात है कि युद्ध हुआ है, उसका प्रभाव पड़ा है। लेकिन यह प्रभाव हमारी सोसाइटी में ही क्यों पड़ा ? प्राइवेट एजेंसी पर क्यों नहीं पड़ा ? आप प्राइवेट में जाइए, आपको खाद मिलेगा और 500 रुपए का लादन देते हैं। 1300 रुपए का DAP 1800 रुपए में मिलता है। अब तो सरकार ने, चाहे केंद्र सरकार हो या राज्य सरकार, एक बढ़िया व्यवस्था कर ली है। पहले आप शॉर्टेज क्रिएट करिए। चाहे वो डीजल का हो, चाहे पेट्रोल का हो, चाहे रसोई गैस का हो, चाहे वह खाद का हो। पहले शॉर्टेज बता दिया कि पेट्रोल पंप में पेट्रोल नहीं, खाद गोदाम में खाद नहीं, रसोई गैस की शॉर्टेज है, फिर उसके बाद धीरे से रेट बढ़ा दिया। यह काम करने की शैली आपकी रही है। हर आदमी ने यह कहा कि पेट्रोल और डीजल महंगा मिले, मिले तो। आज किसान के साथ वही स्थिति है, चाहे महंगा मिले, लेकिन खाद मिले तो। आप निकाल

लीजिए अध्यक्ष महोदय, आप NPK दे रहे हैं। अभी ब्यास जी ने बहुत बढ़िया बात कही-20:20:10 की बात कही, 13:13:10 की बात कही, 15:15:15 की बात कही, 12:32:16 की बात उन्होंने कही, लेकिन आप उसमें यदि निकालें तो यूरिया में 46% होता है, यदि वह 266 रुपए का है, यदि उसका भाग देंगे तो नाइट्रोजन 12 प्रति किलो पड़ता है। यदि फॉस्फेट खरीदें, 18% उसमें रहता है, 465 रुपए का है, उसको निकालें तो फास्फोरस 52 रुपए प्रति किलो मिलेगा। यदि पोटाश की बात करें, वह 1700 या 1800 रुपए है, यदि उसमें 60% है, तो वो करीब 80-82 रुपए पड़ता है। यदि आप NPK को निकालेंगे तो आप जितना खाद दे रहे हैं, उससे किसानों को 200 से लेकर 700 रुपए प्रति बोरी उनको नुकसान हो रहा है। वह वो महंगा क्यों मिल रहा है, किसान उसको समझ ही नहीं पा रहे हैं। आपके एग्रीकल्चर विभाग वाले यह बताने को तैयार नहीं हैं, वह तो DAP डालने के आदी हैं, कोई यूरिया डालने के आदी हैं, कोई पोटाश डालने के आदी हैं, लेकिन आप NPK दे रहे हैं। उसको एक एकड़ में कितना डालना है ? यह आपके एग्रीकल्चर वाले बता नहीं रहे हैं। यह तो सरासर किसानों के साथ अन्याय हो रहा है, उनके साथ धोखा हो रहा है। उत्पादन निश्चित रूप से फर्क होगा। अगर किसान बिना सोचे-समझे डालेंगे तो उसका उत्पादन में प्रभाव पड़ेगा। कुल मिलाकर षड्यंत्र क्या है? एक तो उनको लूटो और दूसरी तरफ किसानों का उत्पादन खत्म। यह साजिश चल रही है।

कृषि मंत्री (रामविचार नेताम) :- अध्यक्ष महोदय, माननीय भूपेश बघेल जी जिस तरह से संकेत कर रहे हैं, मैं आपको स्पष्ट कर दूँ कि 1 जून से लेकर के 30 जून तक, पूरे एक महीना तक, पूरे प्रदेश भर में विभाग के अधिकारी, विभाग के हमारे कृषि वैज्ञानिक, KVK के तमाम सारे कृषि वैज्ञानिक, प्रदेश के सभी जगहों में जाकर के मैदानी अमला में, सभी जाकर उनके द्वारा किसानों को समझाइश दी गई है कि इस बार परिस्थितियां कुछ अलग हैं, थोड़ी DAP और यूरिया की शॉर्टेज है और इसलिए हम जो अभी तक खाद का जितना उपयोग करते हैं, हमें किस प्रकार से उपयोग करना है, नैनो यूरिया, नैनो DAP को भी प्रमोट करने के लिए भारत सरकार से हम सबको निर्देश मिला था। उसके आधार पर सभी जगह किसानों को जागरूक भी किया गया है और इसके साथ में खाद का पर्याप्त भंडारण भी फिर अंतिम समय में हो गया है। इसलिए किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं है। आप लोगों को इस प्रकार से भरमाने का काम कर रहे हैं। साहब, आपकी तो पुरानी आदत है, आप उस आदत को अभी भी तो छोड़ दो।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं भरमा नहीं रहा हूँ न भरमाने की मेरी आदत है। माननीय मंत्री जी बहुत वरिष्ठ विधायक हैं। मुझसे भी पहले आपके साथ विधान सभा में थे। मंत्री भी रहे। केन्द्र में भी थे अब फिर से मंत्री बन गये हैं। अध्यक्ष महोदय, पूरे जून भर एक महीने तक अभियान चला है। मैं आपसे केवल एक प्रश्न पूछ लेता हूँ। यदि किसान दो बोरा डी.ए.पी. एक एकड़ में डालता है और एक बोरा यूरिया डालता है और अब एन.पी.के दे रहे हैं तो कितना डालना चाहिए ? आपने

अभी एक महीना अभियान चलाया है। आप बहुत सक्षम मंत्री हैं। आप बता दीजिये कि यूरिया, नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटैश की मात्रा की समानता कितनी मात्रा में कैसे डालने से होगी ?

श्री रामविचार नेताम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सभी जगह बकायदा पाम्पलेट भी बांटा गया है। (हंसी) सभी जगह जानकारी दिया गया है, बताया गया है।

श्री भूपेश बघेल :- हो गया, अध्यक्ष महोदय।

श्री रामविचार नेताम :- इसलिए बरगालाने का काम मत करिये। यह कोई गणित का विषय थोड़ी है, भाई।

श्री भूपेश बघेल :- आप मंत्री हैं। आप पाम्पलेट में बांटेंगे ? आप एक एकड़ में 25 किलो डी.ए.पी. दे रहे हैं, 25 किलो यूरिया दे रहे हैं, आपने यह स्थिति बनाकर रखा है।

अध्यक्ष महोदय, यह किसानों का प्रदेश है। पाम्पलेट में नहीं होता है। आपका एक महीने का अभियान चला है। मैं दो दिन पाटन विधान सभा क्षेत्र में घूमा तो आकड़ा मिल गया। 15-20 सोसायटियों में गया। जब मैं देखा कि अलग-अलग जगह में अलग-अलग खाद है तो मैं बोला कि कितनी-कितनी मात्रा में डालेंगे, वहीं एग्रीकल्चर के अधिकारी से पूछा तो कोई बताने को तैयार नहीं है। वह बोले कि साहब हमको समझ में नहीं आ रहा है कि आप सवाल क्या पूछ रहे हैं ? आपकी और आपके विभाग की यह स्थिति है। मैं मैदान की बात कर रहा हूँ। जब मैं अपने क्षेत्र में गया तो किसी पीछे-पीछे खाद आना शुरू हो गया। भूपेश बघेल दौरा कर रहे हैं इसलिए खाद तो पहुंचा दो। कलेक्टर ने मेहनत करके भिजवा दिया। खाद मेरे आगे पहुंचता था या मेरे पीछे पहुंचता था। लोग बोले कि साहब आप सब सोसायटियों में घूम दीजिये तो हमारे सब सोसायटियों में खाद आ जायेगा।

श्री रामविचार नेताम :- मतलब आज भी आपका उतना ही सम्मान है।

श्री भूपेश बघेल :- क्या ?

श्री रामविचार नेताम :- हमारी सरकार में आपका सम्मान हो रहा है, वह क्या कम बड़ी बात है ?

श्री भूपेश बघेल :- सरकार को तो यह होना चाहिए कि जब सीजन आये तो खाद पहुंच जाना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार की तुलना कर रहे थे। कोरोना काल था, जब ट्रेने नहीं चल रही थीं, ट्रक नहीं चल रही थीं, उस समय किसानों को खाद की कमी नहीं होने दी। मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश में लोग लाईन मर गये। (मेजों की थपथपाहट) लेकिन यहां हमने किसी किसान को खाद की कमी नहीं होने दी। हमने तब भी व्यवस्था किया था। आपकी तो डबल इंजन की सरकार है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने यह कहा कि सोसायटी में खाद नहीं है और बाजार में खाद है। मैं ध्यान से सुन रहा था। आपके समय सिंगल लॉक और डबल लॉक के लिए क्या पॉलिसी थी ? आप सिंगल लॉक और डबल लॉक में कितना प्रतिशत देते थे ? थोड़ा बताईये तो जरा।

श्री भूपेश बघेल :- साहब, हमारे समय में 60:40 का रेशियो था और आपके यहां 70:30 हो गया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप क्या बात कर रहे हो ?

श्री भूपेश बघेल :- आपकी सरकार में 70:30 का रेशियो कर दिया गया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप क्या बात कर रहे हो ? आप 70 प्रतिशत खुली मार्केट में देते थे।

श्री भूपेश बघेल :- अभी, मैं नकदी की बात कर रहा हूं।

श्री रामविचार नेताम :- आपकी जानकारी बिल्कुल अधूरी है।

श्री भूपेश बघेल :- आपकी सरकार में किसान को 30 प्रतिशत का ऋण और 70 प्रतिशत नकदी मिल रहा है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उस समय 60:40 का रेशियो था। आप ऐसा नहीं बोल सकते हैं।

श्री रामविचार नेताम :- आपकी जानकारी सही नहीं है। आप अभी भी अपनी जानकारी को सुधार लीजिये।

श्रीमती हर्षिता बघेल :- आप ऐसा नहीं बोल सकते हैं। बहुत सी सोसायटियों में अभी भी खाद पहुंचा ही नहीं है। अभी तक डी.ए.पी. आया नहीं है।

श्री रामविचार नेताम :- अभी भी 64:36 रेशियो के हिसाब से सभी जगह खाद का भण्डारण हो गया है।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, रहमान डकैत जो बोल रहे हैं, सही बोल रहे हैं।

श्री अनुज शर्मा :- अध्यक्ष महोदय,

उल्फ़त बदल गई, सीरत बदल गई,

खुदगर्ज जब हुए तो नीयत बदल गई।

अपना कुसूर दूसरों पर डालकर,

आप लोग समझते हैं कि हकीकत बदल गई। (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- क्या बात है। (व्यवधान)

श्री अटल श्रीवास्तव :- नकटी में क्या हुआ? (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- नकटी का क्या हुआ भाई? (व्यवधान)

श्री अनुज शर्मा :- नकटी में आप बिल्कुल आओ, आओ न। बताओ न। बात करो न। (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- नकटी का क्या हुआ भाई?

श्री अनुज शर्मा :- नकटी के आप बताओ न। का कर लैहव, जेन दिन टूटत रहिस तेन दिन त कोनो नहीं दिखे हो। टूट गे तब गे हव आप मन हा। ओखर पहली जाये के हिम्मत ही नहीं होइस।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप लोग 7 बजे से तोड़े हो। छुट्टी के दिन तोड़े हो। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- 4 बजे तोड़े हव। मंझनिया तोड़े हव (व्यवधान)

श्री अनुज शर्मा :- सेरीखेड़ी के 148 परिवार ला तो आप मन कुछ नहीं देवव। उहू तो हमरे क्षेत्र हे। एक भी परिवार ला घर देहौ का बतावव। एक भी परिवार ला घर नहीं दे हव। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- सेरीखेड़ी बिलासपुर के चाटापारा और गोलपारा भी बता देवव। (व्यवधान)

श्री अनुज शर्मा :- हमर सरकार हा त सब परिवार ला घर देन। आप तो एक ठन नहीं दे पाये हव।

श्री सुशांत शुक्ला :- अध्यक्ष महोदय, अटल श्रीवास्तव नकटी की बात किये, वे पर्यटन मंडल के अध्यक्ष थे। बिलासपुर के गोलपारा और चाटापारा में क्यों चुप थे? आज बोले कि बिलासपुर के गोलपारा और चाटापारा में क्यों चुप थे? (व्यवधान)

श्री अटल श्रीवास्तव :- पहले नकटी का बताइए। (व्यवधान)

श्री अनुज शर्मा :- नकटी में घर दिये है?

श्री अटल श्रीवास्तव :- 1200 एकड़ में कौन सा खेल होने वाला है? मुझे तो मालूम है कि किसी मंत्री के नाम पर भी ज़मीन है। 1200 एकड़ में 200 एकड़ किसको दिया जा रहा है?

श्री सुशांत शुक्ला :- आपके राज में बिलासपुर के गोलपारा और चाटापारा में क्यों चुप थे? बताइए। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- बात में अतेक मिर्ची। बात में अतेक मिर्ची ।

अध्यक्ष महोदय :- बैठिए। बैठिए। आप जारी रखिए।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसानों की बात बहुत लंबा नहीं करूंगा, लेकिन आप किसानों को ठगने का काम कर रहे हैं, इस बात के लिए यह अविश्वास प्रस्ताव लाया है। यह प्रदेश सबसे बड़ा किसानों का प्रदेश है। किसानों के भरोसे सारे 70-80% लोग जीवन यापन करते हैं, उनके साथ आपने मज़ाक कर रखा है। अध्यक्ष महोदय, दूसरा, बहुत गरीबों की बात कर रहे थे, लेकिन आप बताइए, मनरेगा में कितने मजदूरों को आपने काम दिया? जी राम जी तो अभी लागू हुआ, अब इसमें तो कोई काम होगा नहीं। इसके पहले तो मनरेगा था, कितने मजदूरों को आपने काम दिया? अभी कृषि मंत्री बोल रहे थे कि धान के बदले कोई दूसरा फसल ले, तो 15,000 रुपये दिया जाएगा। आपने कितने लोगों को दिया? हमारी सरकार थी तो प्रति एकड़ 10,000 रुपये देते थे, चाहे वह मक्का बोए, चाहे वह कोदो-कुटकी-रागी बोए।

श्री राम विचार नेताम :- हमने 11,000 रुपये देना शुरू किया, इसके बाद अभी उसे रिवाइज करके 15,000 रुपये किए हैं। (मेजों की थपथपाहट)

श्री भूपेश बघेल :- 11,000 कितने किसानों को दिए हैं? 11,000 कितने किसान को दिए हैं?

श्री राम विचार नेताम :- हैं आंकड़े हैं, हम दिखा देंगे।

श्री भूपेश बघेल :- किसी को मिला ही नहीं है।

श्री राम विचार नेताम :- दिया है भाई।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लोगों की आय कैसे खत्म हो, उसका षड्यंत्र इस सरकार ने किया है। अध्यक्ष महोदय, इस प्रदेश में कोदो-कुटकी-रागी बोया जाता है खासकर वनांचलों में। ये कांकेर से लेकर आपके राजनांदगांव जिला, मोहला-मानपुर, कवर्धा तक के आप जाएंगे, अब खूब कोदो-कुटकी बोया जाता है। हमने खरीदी की व्यवस्था की, समर्थन मूल्य घोषित किया, खरीदी की व्यवस्था की। आपने बंद क्यों कर दिया? बड़े आदिवासी हितैषी हैं, इसको बंद आपने क्यों किया? आर्थिक रूप से उसे कमजोर करने का षड्यंत्र आपने किया। अध्यक्ष महोदय, आदिवासियों की एक प्रमुख आय तेंदूपत्ता होता है। वन मंत्री जी बैठे हैं, आप तो 5500 रुपये देने की बात कहे थे, उसके बाद 4500 बोनस देने की बात कहे थे। ये तीसरा साल है, कितने लोगों को 4500 रुपये बोनस मिला? वह 160 करोड़ रुपये बांटे, वह हमारी सरकार का था। अध्यक्ष महोदय, पहली बार यह स्थिति है कि इस सरकार को तेंदूपत्ता खरीदने के लिए कर्ज लेना पड़ा है। (शेम-शेम की आवाज) पहली बार। आप भी 15 साल सरकार चलाएं हैं, लेकिन कभी तेंदूपत्ता खरीदने के लिए आप कर्ज नहीं लिए। लेकिन इस सरकार ने लिया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, जितने लघु वनोपज हैं, उसकी खरीदी की व्यवस्था क्या है? कैसे वनांचल में रहने वालों की आर्थिक स्थिति सुधरेगी? जो हमने किया था, आपने सब बंद कर दिया। काजू कितना खरीदे? लघु वनोपज कितना खरीदे? कोदो-कुटकी-रागी कितना खरीदे?

श्री केदार कश्यप :- आपको डाटा दे देता हूं। पहले आप सुन लीजिए। आप सुन लीजिए। वर्ष 2021-22 में कोरोना काल में जब मार्केट पूरी तरीके से बंद था, तब आपके पास में वे लोग बेचे थे, तो आप सोच रहे हो कि आप ज़्यादा खरीद लिए। उसके बाद आपने कितना खरीदा? आप वर्ष 2023 का डाटा देखिए। इन्होंने केवल 1 साल खरीदी की है। उसके पहले कभी इतनी खरीद नहीं हुई थी। वह तेंदूपत्ते की बात कर रहे हैं तो इनके समय में तेंदूपत्ते की खरीदी मात्र 1 दिन के लिए होती थी।

श्री कवासी लखमा :- इस साल तो 1 दिन भी खरीदी नहीं हुई है। उड़ीसा में खरीदी हो गई है।

श्री केदार कश्यप :- अध्यक्ष महोदय, 13-13 लाख मानक बोरा की खरीद की गई है।

लोक स्वास्थ्य मंत्री (श्री श्याम बिहारी जायसवाल) :- दादी, आप तो उड़ीशा-उड़ीशा की ही बात करते हैं।

श्री बघेल लखेश्वर :- आजकल वे ज्यादातर उड़ीशा में ही रहते हैं न। (हंसी)

श्री केदार कश्यप :- दादी, आप तो बात ही मत कीजिए। हम लोग गए थे, तेंदूपत्ते के कारण ही हम लोगों को धरने पर बैठना पड़ा था। आपको याद है या नहीं? लता जी साक्षी हैं। हम लोग दूसरे काम से गए थे, तब वहां के लोग धरना दे रहे थे।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गरीबों के हित की बहुत बात हुई है। आज चाहे वह चावल लेने जाए, चाहे महतारी वंदन योजना का पैसा लेने जाए, चाहे पेंशन लेने जाए, वहां बिना नेट के कोई काम नहीं होता है। आज 1000 रुपये लेने के लिए भी, चाहे बस्तर हो, चाहे गरियाबंद जिला हो, चाहे वनांचल मोहला-मानपुर की बात करिये, लोग कई किलोमीटर पैदल चल रहे हैं। वहां नेट ही नहीं है, जिसके कारण लोग घंटों लाईन पर खड़े रहते हैं और कई दिनों तक खड़े रहते हैं। 1000 रुपये लेने के लिए उनकी कई दिनों की मजदूरी चली जाती है। आपने क्या व्यवस्था की है? आपकी डबल इंजन की सरकार है। e-KYC न होने के कारण इस सरकार में 30 लाख लोग राशन लेने से वंचित हो गए हैं। भाई, अंगूठा ही नहीं लग रहा है। बुजुर्ग महिलाओं और बुजुर्ग पुरुषों का निशान नहीं मिल रहा है। जो मेहनत कर रहे हैं, जो खंती चलाते हैं, उनका तो अंगूठे का निशान ही मिट गया है। किसी महीने मिलता है, किसी महीने नहीं मिलता है।

खाद्य मंत्री (श्री दयालदास बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे नेता जी बहुत गरीबों की बात कर रहे हैं। कोरोना काल में आपने क्या किया था, वह भी तो बता दीजिए। आपने 28 महीनों तक गरीबों को 5 किलो चावल नहीं दिया था। 12 लाख मीट्रिक टन, 4500 करोड़ का घोटाला, यह कहा गया? कोरोना जैसे समय में शराब की घर पहुंच सेवा थी, उसको भी बता दीजिये।

श्री भूपेश बघेल :- बिल्कुल सही बात है। बहुत बढ़िया, मैं जवाब दे रहा हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, कोरोना काल में छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य था, जिसने 3 महीने का राशन एक साथ उनके घर में पहुंचाने का काम किया था। (मेजों की थपथपाहट) और जब स्कूलें बंद थीं, तब हमने सूखा राशन बच्चों को देने का काम किया था।

श्री दयालदास बघेल :- वह बता दीजिए न कि आपने 5 किलो चावल क्यों नहीं दिया? केंद्र की सरकार 10 किलो दे रही थी, आपका 5 किलो कहा गया था? 4500 करोड़ का 12 लाख मीट्रिक टन चावल कहा गया? और आप बहुत गरीब की बात करते हैं।

श्री भूपेश बघेल :- बघेल जी, मंत्री तो आप हैं। सरकार कोई भी रहे, जवाब तो आपको ही देना है, जबकि आप सवाल मेरे से पूछ रहे हैं। लेकिन मैं आपसे कुछ पूछ लेना चाहता हूँ कि यह जो शॉर्टेज हुआ, जो ज्यादा चावल दिया गया था, वह चावल राशन दुकानों में किस सन् में दिया गया था? आप यह ईमानदारी से बताइएगा।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय नेता जी, मेरा सवाल वही है। भाई, केंद्र सरकार 10 किलो चावल दे रही थी, लेकिन आपने 5 किलो चावल नहीं दिया।

श्री भूपेश बघेल :- नहीं, नहीं। आप जो पूछ रहे हैं, लेकिन मैं उत्तर देने के लिए नहीं कह रहा हूँ। मैं आपको बता रहा हूँ कि यह 2016 का दिया हुआ चावल है। वह चावल आपकी सरकार में दिया गया था, जिसके कारण शॉर्टेज निकला है।

श्री दयालदास बघेल :- 28 महीने का चावल 12 लाख मीट्रिक टन होता है, उन गरीबों का चावल आपने नहीं दिया है।

श्री रामकुमार यादव :- ओ मूसवा ला हमन आज तक खोजत हन, हमन पावत नइ हन।

श्री भूपेश बघेल :- अच्छा, बघेल जी, जो मूसवा हा धान खा है, ओहा कहां गइस?

श्री दयालदास बघेल :- कहां खाहे मूसवा हा, बता दीजिये न।

श्री भूपेश बघेल :- कवर्धा मा खाय है, राजनांदगांव मा खाय है।

श्री रामकुमार यादव :- मोर क्षेत्र में खाय है।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- मैं महासमुंद जिले का बताऊं कि कितने खाया है? (व्यवधान)

श्री दयालदास बघेल :- 2021 का धान कहां गया?

श्री रामकुमार यादव :- हमन नेता जी बताय रिहीस है कि अतका कन धान ला 20 करोड़ मूसवा खाय है। ओ मूसवा मन इहां रही ता हमन ला छोड़ के भागे बर पड़ी।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आपके अधिकारियों ने लिखित में स्टेटमेंट दिया है।

श्री दयालदास बघेल :- 500 करोड़ का धान कहां गया, जिसका पैसा सहकारी सोसाइटियों में जाता था। (व्यवधान) उसको भी बता दीजिये।

श्री दिलीप लहरिया :- अभी पानी गिरा है, फिर से मूसवा निकलेगा, उसको आप कैसे संभालेंगे? उसको कॉकरोच खाएगा?

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- मुसवा के गजब कहानी है। चांऊर खाये, उधर दारू भी पिया है।

श्रीमती लता उसेण्डी :- दुबई तरफ तो नहीं है ?

श्री भूपेश बघेल :- अजय जी ने एक सवाल किया था कि वर्ष 2020-2021 में जो धानी खरीदी हुई है, उसमें घाटा हुआ है। मैं कहता हूँ कि इसमें बिल्कुल घाटा हुआ है। केन्द्र सरकार ने कहा कि आप बोनस दे रहे हैं, हम धान नहीं खरीदेंगे, चावल नहीं लेंगे। आपने नहीं कहा है तो दूसरे ने कहा होगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- साल भर तक आपके स्टेट सड़क से बिलासपुर में दिखते थे। जो-जो आपने उत्तर दिया था, उस पूरे प्रश्नों को उस विषय पर हाई कोर्ट में गया हूँ। बोनस देंगे या नहीं देंगे उस पर नहीं, बल्कि आपके कूप्रबंधन पर गया हूँ, जो क्षति हुई है। नीलामी प्रक्रिया में जो क्षति हुई है, सड़े धान पर जो क्षति हुई है, बोरा खरीदी में लेट हुई है, निस्तारण में लेट हुई है, उन सब विषय में सिर्फ दो साल के मुद्दे में हाई कोर्ट गया हूँ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- अभी 2900 करोड़ का हुआ है, उसमें क्या होगा ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आज मैं आपकी बात को ध्यान से सुन रहा हूँ। इधर-उधर ट्विस्ट मत करिये ना।

श्री भूपेश बघेल :- मैं ट्विस्ट नहीं कर रहा हूँ । मैं उन्हीं बातों को कह रहा हूँ जो आप कह रहे हैं । मुझे बहुत अच्छा लग रहा है कि मंत्री लोग मेरे से सवाल पूछ रहे हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आपको अच्छा इसलिये लग रहा है कि आपके भाषण में लोग बहुत दिनों के बाद टोका-टाकी कर रहे हैं । (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- अजय जी, मेरे भाषण में तो हमेशा टोका-टाकी होता है । आप तो परमानेंट टोका-टाकी वाले हैं । दूसरे लोग भी टोकते हैं तो अच्छा लगा । अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि हमारी सरकार थी तो केन्द्र सरकार ने चावल लेने से मना कर दिया तो हमको नीलामी करनी पड़ी । यही बात भी सही है कि कोरोनाकाल में ट्रांसपोर्टिंग बंद था और इस कारण से धान का उठाव नहीं हो पाया और नुकसान हुआ । सोसायटियों को भी नुकसान हुआ था तो हमने उसकी प्रतिपूर्ति 250 करोड़ को देकर किया, लेकिन आप तो सोसायटियों को मारना चाह रहे हैं । अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आपकी तो डबल इंजन की सरकार है, आप क्यों नीलामी कर रहे हैं, आपको नीलामी की क्या जरूरत है ?

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके कार्यकाल में कितना धान खरीदी होता था और आज कितना धान खरीदी हो रहा है ? आप लिमिट बताइये ना ।

श्री दलेश्वर साहू :- अध्यक्ष महोदय, इनको शांत बैठने के लिये बोले ।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, तोर डबल इंजन के सरकार हे तै काबर नीलामी करथस ?

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय मंत्री जी, इस साल आपका धान खरीदी कम हो गया है । दो साल में 2900 करोड़ नुकसान में ला दिये हो ।

श्री दलेश्वर साहू :- क्यों फजीहत करा रहे हो मंत्री जी, आप शांत बैठे रहिये।

श्री भूपेश बघेल :- अब ऐसा है ना कि इसके बाद मंत्रिमंडल रिशफल होने वाला है, दयाल भईया लगे हैं कि न निकले, इसलिये हाऊस में थोड़ा ज्यादा सक्रियता दिखा रहे हैं ।

श्री दिलीप सिंह लहरिया :- मोहिले जी मुस्कुरा रहे हैं । (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दूसरा महत्वपूर्ण विषय है कि अभी विधान सभा का पावस सत्र चल रहा है, लेकिन सप्लीमेंट्री नहीं लाये हैं । अध्यक्ष महोदय, इसके दो ही कारण हो सकते हैं या तो आपके पास पैसे नहीं हैं या केन्द्र से आपको पैसा नहीं मिल रहा है । यदि केन्द्र सरकार के विभागों से पैसा आता है तो आप सप्लीमेंट्री बजट रखते । आप एक साथ ही जवाब दे दीजिए ना । मैं आपसे आधा-अधूरा नहीं पूरा जवाब लूँगा । मैं तो अभी शुरूआत किया हूँ । अध्यक्ष महोदय, इसका दुष्परिणाम क्या है, अभी गरीबों को पेंशन नहीं मिल रहा है, विधवा पेंशन नहीं मिल रहा है, वृद्धावस्था पेंशन नहीं मिल रहा है और तो और स्थिति यह है कि नगर निगम में, नगर पंचायतों में, नगर पालिका

में कर्मचारियों को तन्खवाह नहीं मिल रहा है। सरकार तन्खवाह नहीं बांट पा रही है। कर्मचारी हमारे पास आ रहे हैं कि हमें 4 महीने का तन्खवाह नहीं मिला है। मेरे पास नाल गांव के लोग आये थे, आज स्थिति क्या है, आज जितने भी हमारे नगर निगम के महापौर हैं, अध्यक्ष हैं, पार्षद हैं, निधि नहीं मिल रही है, विकास निधि नहीं मिल रही है, उनको जो राशि देते थे, मानदेय देते थे, वह बंद हो गया है, पंचायतों में बंद हो गया है। क्या हो रहा है? अभी हमारे उप मुख्यमंत्री जी सड़क के बारे में भाषण दे रहे थे 2024 तक के बताए। उसके बाद 2025-26 में कितनी स्वीकृत हुई कितनी सड़क बन गई? डामर का भाव बढ़ गया है, उसका कितना प्रभाव पड़ेगा, इसके बारे में उन्होंने नहीं बताया। अब आप कुछ कहना चाहेंगे तो स्वागत है।

वित्त मंत्री (श्री ओ.पी.चौधरी) :- अध्यक्ष महोदय, मैं बस एक छोटा सा विषय स्पष्ट करना चाहूंगा। सम्माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी ने विषय रखा है कि सप्लीमेंट्री क्यों नहीं लाया गया? मैं विशेष रूप से बताना चाहूंगा कि कोई भी सरकार बजट जो लाती है, वह एक वर्षीय योजना होती है और बार-बार ज्यादा सप्लीमेंट्री लाना पड़ता है वह आपकी अव्यवस्थित योजना को प्रदर्शित करता है। मैं स्पष्ट करना चाहूंगा कि हम पहले से ज्यादा अच्छी वर्किंग के साथ लाते हैं। (मेजों की थपथपाहट) पहली चीज, दूसरी चीज केंद्र के लिए जो भी योजना आती है, उसमें स्टेट मैचिंग ग्रांट देना पड़ता है, सम्माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी ने आरोप लगाया कि केंद्र से या तो आपको पैसा नहीं आता होगा, केंद्र से बराबर पैसा आ रहा है, अभी अगला सत्र आएगा उसमें आज आप जितनी बात बोल रहे हैं, उसका सप्लीमेंट्री में जवाब दूंगा, उस दिन जरूर रहिएगा, आप उस समय रहते नहीं हैं। केंद्र से पूरा पैसा आ रहा है, हम स्टेट का मैचिंग ग्रांट भी दे रहे हैं। हमने एक अमेंडमेंट किया है, इस तरह की कोई इमरजेंसी आती है, उसको पूरे वित्तीय वर्ष में विधायिका का कभी भी अनुमोदन ले सकते हैं, उसके कारण हमको यह लिबर्टी है कि बार-बार सप्लीमेंट्री लाने की आवश्यकता नहीं पड़ रही है तो एक बेहतर वित्तीय प्रबंधन का यह उदाहरण है, एक रिफॉर्म का उदाहरण है लेकिन समझने वाले समझेंगे, जिनको समझना नहीं, वह कभी नहीं समझेंगे।

श्री भूपेश बघेल :- क्या बात है, क्या बात है। ओ.पी. जी, मैं आपको धन्यवाद देता हूं। माननीय मंत्री जी को बहुत-बहुत बधाई देता हूं धन्यवाद देता हूं। माननीय अमर अग्रवाल जी आप 5 साल वित्त मंत्री रहे, डॉक्टर साहब आप भी 10 साल वित्त मंत्री रहे, मैं भी 5 साल वित्त मंत्री रहा। हम लोगों को प्रबंधन नहीं आता। माननीय ओ.पी. चौधरी को आता है, मैं आपको बधाई देता हूं। अब ओ.पी. को बधाई दी तो मेज नहीं थपथपाएंगे। (हंसी) माननीय अध्यक्ष महोदय, उसके बाद कानून व्यवस्था की स्थिति आती है। सभी माननीय सदस्यों ने कानून व्यवस्था के बारे में बहुत सारी बातें कही, मैं बहुत ज्यादा डिटेल में नहीं जाऊंगा। आप सामान्य प्रशासन की बात करें चाहे कानून व्यवस्था की बात करें, आज स्थिति यह है कि सत्ता पक्ष के लोगों को भी सरकार पर विश्वास नहीं है। यदि सरकार पर विश्वास होती सरकार में पकड़ होती तो सीतापुर में विधायक तहसीलदार को पीट नहीं रहा होता। माननीय अध्यक्ष

महोदय, यह जो बैकुंठपुर की लड़ाई हुई, उसमें माइनिंग भी शामिल है, सामान्य प्रशासन विभाग भी शामिल है और उसमें आपके गृह विभाग भी शामिल हैं। रेत का अवैध उत्खनन हो रहा है। विभाग संभल नहीं रहा है और स्थिति क्या बनी ? जिसको ठेका मिला, वह काम लेने के लिए जा रहे थे, दूसरा उसको रोक रहे हैं, दोनों तीन पीढ़ी के दोस्त, दोनों सत्ता पक्ष के लोग और खून के इतने प्यासे, बंद गाड़ी में पेट्रोल डालकर जला दिया गया और जो जलते हुए भाग रहा था, उसको दौड़ा दौड़ा कर पीटा गया। अध्यक्ष महोदय, मुझे जानकारी मिली, मैं उस घर में गया था, मैं पीड़ित परिवार के तीनों घर में गया था। वे लोग बिलख-बिलख कर बोल रहे थे इस सरकार पर हमें भरोसा नहीं, सत्ता पक्ष के लोग हैं। अध्यक्ष महोदय, उन्होंने कहा कि उसे पुलिस कस्टडी में भी नहीं रखा गया, घटना यहां की, दूसरी जगह उसकी गिरफ्तारी दिखाई जाती है और तीसरी जगह उसका रोड में जुलूस निकाला जाता है जैसे वह बहुत बड़ा काम करके आया है, उसका पुलिस रिमांड नहीं। माननीय अध्यक्ष महोदय, परिवार के लोग चीख-चीख के कह रहे हैं, हमको न्याय मिलना चाहिए, सी.बी.आई. जांच होनी चाहिए, वह यह कह रहे हैं कि सत्ता पक्ष के विधायक की भी जांच होनी चाहिए। आपने सी.बी.आई. को दिया आपको बधाई। रामविचार नेताम जी भी गए थे। लेकिन सत्ता पक्ष के विधायकों की भूमिका क्या रही ? सी.बी.आई. जांच में वह आना चाहिए। आप तो जीरो टॉलरेंस वाले हैं। यदि जीरो टॉलरेंस वाले हैं तो इस बात को भी शामिल करना चाहिए। बलौदाबाजार की घटना के बारे में बहुत चर्चा हो गई, लेकिन आज तक जो समाज यह डिमांड कर रही है कि जैतखाम को काटा किसने? उसमें समाज के लोग सीबीआई जांच कराने की मांग कर रहे थे, वह आज तक नहीं हुआ। कहीं यह षड्यंत्र तो नहीं? षड्यंत्रकारियों को बचाने की कोशिश तो नहीं? कृषि मंत्री जी सब जगह जांच करा रहे हैं। कल का या आज का प्रश्न था तो उन्होंने कहा कि 2,000 नमूने लिए गए, 96 गलत पाए गए। मंत्री जी, आपके ही आदेश से।

श्री अजय चंद्राकर :- आपने बलौदाबाजार का उल्लेख किया, वहां तो आप गए रहे होंगे?

श्री भूपेश बघेल :- हां जी, मैं गया था। घटना के बाद गया था।

श्री अजय चंद्राकर :- ऐसी घटना में आपके दल की संलग्नता क्या थी? आप समाज की बात कर रहे हैं तो बलौदाबाजार की घटना में आप किस भूमिका में वहां उपस्थित थे, क्यों उपस्थित थे? जो भीमा कोरेगांव में बाहरी तत्व हावी थे, उसी तरह आप लोग वहां गए थे। भीमा कोरेगांव में जो तत्व गए थे, उस तत्व की भूमिका वहां आप लोग निभा रहे थे। (शेम-शेम की आवाज) वहां गए थे और 4 महीने जेल में बहादुरी करके आए हैं, जो भी आए हैं वह। नाम समाज का लेते हैं, भूमिका कांग्रेस की दिखती है।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप उसकी न्यायिक जांच करा लें, हमें कोई आपत्ति नहीं है। सीबीआई जांच करा लें, हमें कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन जहां तक आप मुझे कह रहे हैं तो घटना घटी, कंपोजिट बिल्डिंग जल गयी। गांव के लोगों को घर में घुस-घुसकर, कपड़े उतारकर उनकी पिटाई की जा रही थी। जो भी सफेद कपड़ा पहना हुआ है, चाहे वह थियेटर में पिकचर देख रहा हो, चाहे

साड़ी दुकान में कपड़े खरीद रहे हो, चाहे वह रास्ते में चल रहे हो, जो भी सफेद कपड़ा पहना है और उस पिटाई में तो मोतीलाल साहू जी के रिश्तेदार भी फंसे थे। भतीजा है या बेटा है? वह भी सफेद कपड़ा पहनकर चला गया था तो वह क्यों गया था भाई? लेकिन उसकी भी पिटाई हुई। आज भी समाज यह कह रहा है कि जो जैतखाम कटा है, उस घटना के बारे में सीबीआई जांच होनी चाहिए। सरकार घोषणा करे। जब सब बातों में आप सीबीआई जांच दे रहे हैं तो इसमें भी आपको सीबीआई जांच देनी चाहिए। आदरणीय, अजय जी बीच में टपक गए, मैं तो आपके बारे में बात कर रहा था। ताजा घटना है। आपने आदेश किया कि जो भी नमूने गड़बड़ हैं, उस पर कार्रवाई होनी चाहिए। बोड़ला में भी हुआ। सूचना मिली कि वहां नकली खाद है। अधिकारी दौड़कर गए तो सच में पाया गया कि 500 बोरी नकली खाद पड़ी हुई है। लेकिन दुर्भाग्य है कि वह सत्ता पक्ष का आदमी है। वह लौटकर आये, बेदम पिटाई हुई है। वह तो विधान सभा सत्र चल रहा है, इस कारण से दबा हुआ है। कौन मारने वाला है, हमको वह भी पता है। कौन-कौन मारे, वह भी पता है। बताने का मतलब यह है कि शासन-प्रशासन पर सत्ता पक्ष के लोगों का ही विश्वास नहीं है। जब आप पर आपको ही विश्वास नहीं है, मंत्री को विश्वास नहीं है, विधायकों को विश्वास नहीं है, आम कार्यकर्ता को विश्वास नहीं है तो आपके विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव क्यों नहीं लाना चाहिए? इसलिए हम अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। डराने के लिए आपने कहा कि जीरो टॉलरेंस है। अभी आप बहुत बढ़िया भाषण दे रहे थे। ईडी ने कार्रवाई की, महादेव सट्टा में विकास गर्ग को पकड़कर लाये हैं। हमने अपने आदमी को नहीं छोड़ा है। बिल्कुल सही बात है, आपने नहीं छोड़ा। क्यों नहीं छोड़ा? क्योंकि जो कमाई थी न, उसके बंटवारे में उसने गड़बड़ी कर दी। जैसे उस चढ़ावे में गड़बड़ी हुई, बंटवारे में गड़बड़ी हुई, चढ़ावे के बंटवारे में गड़बड़ी हुई, तब वह उजागर हुआ। यह भी वैसे ही है। तो जहां-जहां बंटवारे में गड़बड़ी हो रही है, वहीं-वहीं लड़ाई हो रही है, वहीं उजागर हो रहा है। यह आपकी स्थिति है। माननीय अध्यक्ष महोदय, किस प्रकार से मंत्री जी पेसा कानून के बारे में बोल रहे थे। हमने अध्ययन किया, लागू किया, विलंब हुआ। पेसा कानून तो बहुत पहले से लागू है लेकिन हमारे प्रदेश में लागू नहीं हो पाया था, उसे हमने लागू किया, उसके बाद मध्य प्रदेश में भी लागू हुआ। वहां तो चार-चार बार आपकी सरकार थी, यहां भी आपकी तीन बार की सरकार थी लेकिन आप लागू नहीं कर पाये। हमने लागू किया। उसमें आपने नियम बनाये, कानून बनाया ठीक है। वह प्रक्रिया चलती रही। लेकिन स्थिति क्या है ? आपके जितने पंचायती राज कानून है, आपके जितने पेसा कानून है, जो गांव वालों को ताकत देता है, जिससे जंगल में रहने वालों को ताकत मिली है, सबको छीन लिया। आपने अपने घोषणा पत्र में कहा न कि हम 5 लाख आदिवासियों को पट्टा देंगे। आपने कितनों को दिया है ? आपने एक भी पट्टा दिया है ? क्या आपने शुरूआत भी की है ? लेकिन जिनको मिला है, तमनार में क्या हुआ ? गांव वालों को 74 एकड़ जमीन मिली हुई थी, लेकिन पुलिस के घेरे में, एस.डी.एम. के निर्देश में, अदाणी के गुण्डों ने पूरा जंगल काट दिया। विद्यावती सिंदार को नजरबंद करके रखे थे, अरेस्ट कर लिये थे। हम लोगों

को जाने नहीं दिये। प्लांट के सामने गाड़ी अड़ा कर रखे थे। हम लोगों को जाने नहीं दे रहे थे, मेरे साथ सभी विधायक भी थे, ट्रेलर अड़ाकर रखे थे। अदाणी के कोड़ातरई प्लांट के सामने ट्रेलर रोक दिया गया, ताकि वहां विधायक न जा सके। हम दूसरे रास्ते से घूमकर गये। यह आपकी पुलिस प्रशासन है ? आप आदिवासियों का इस प्रकार से हित करेंगे ? जिस तरह से कोई अदृश्य शक्ति है, जो हसदेव बांगो का जंगल कटवा रही है, उसी प्रकार से तमनार का भी हुआ है और इसी प्रकार से आप देख लीजिये। मैं आपको एक और उदाहरण बता देता हूं। बस्तर में क्या हो रहा है, बस्तर के लोग क्यों डरे हैं ? नक्सलवाद समाप्त हो गया है, अच्छी बात है और मैं उसके लिए बधाई देता हूं। लेकिन अलनार की पहाड़ी में रायपुर के किसी उद्योगपति को 50 वर्ष के लिए खनिज पट्टा मिला है। 5 कि.मी. तक ऐसी स्थिति है कि पैदल नहीं जा सकते और वहां से 34 लाख मी.टन लौह अयस्क निकाल लिया गया और सरकार को 25 लाख रुपये रॉयल्टी भी मिल गयी। जहां आप पैदल नहीं जा सकते, वहां आप आयरन ओर उत्खनन कर लिये। यह आपकी साय-साय सरकार है। साय-साय हो रहा है। इसका क्या मतलब है ? इसका मतलब है कि लोहा कहीं और का है, आप दिखा कहीं और का रहे हैं। आप यह स्थिति बनाकर रखे हैं। इसी कारण वहां के लोग डरे हुए हैं। नक्सली बाहर और यह जमीन माफिया अंदर। उनके डर का कारण यही है। आज जंगल कटाई हो रही है तो वे डरे हुए हैं। यह स्थिति है। अध्यक्ष महोदय, सब चाहते हैं, नक्सलवाद समाप्त हो। नक्सलवाद खत्म हो गया, बहुत अच्छी बात है, हम सब स्वागत करते हैं। लेकिन कृपा करके आप अकेले श्रेय मत लीजिए। उसमें आपने जवानों को भी धन्यवाद दिया, लेकिन पिछली सरकारों का भी योगदान है, उसको आप मत भूलियेगा। कोई अलादीन का चिराग नहीं है कि आपने एक दिन में खत्म कर दिया। कोई जादुई छड़ी नहीं है कि जिसको आपने घुमाया और नक्सलवाद खत्म कर दिया। इसी सदन में कितनी घटनाएं होती थी, हम लोग सदन छोड़कर जाते थे। रिपोर्ट देते थे तो चर्चा होती थी। सब लोग गये हैं। हमने बहुतों को खोया है। लेकिन सभी सरकारों का श्रेय रहा है, सबने अलग-अलग तरीकों से नक्सलवाद खत्म करने की कोशिश की है। मंत्री जी, मैं एक बात पूछना चाहता हूं कि आप मोदी की गारंटी तो पूरा कर रहे हैं। यह बात अलग है कि उन दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों को 100 दिन में दुगुना करने वाले थे, वह नहीं हुआ है। 500 रुपये में सिलेण्डर नहीं मिला है। मैं उसमें बहुत ज्यादा विस्तार में नहीं जाऊंगा। लेकिन अमित शाह जी तो यहीं छत्तीसगढ़ में आकर घोषणा किये, हमारे प्यारे गृहमंत्री जी ने कहा था कि जो गांव नक्सल मुक्त होगा, जो पंचायत नक्सल मुक्त होगी, 1 करोड़ रुपया दिया जायेगा। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि कितने पंचायत को 1 करोड़ रुपये मिला है? इसलिए आप पर अविश्वास है। आप बोलकर मुकर जाते हैं, लोगों को धोखा दे रहे हैं। आदिवासियों को, बस्तर के लोगों को धोखा दे रहे हैं। सार्वजनिक रूप से छपा है कि 1 करोड़ रुपया हर पंचायत को मिलेगा। आपने दिया? नहीं मिला। माननीय अध्यक्ष महोदय, किसानों की एक और बात कहना चाहता हूं कि मंत्री जी, 2014 तक के फसल बीमा, बीमा कंपनी सरकारी होती थी, अब 2014 के

बाद प्राइवेट हो गया है। अभी किसानों को कितना बीमा दे रहे हैं? 800 करोड़ रुपये मिल रहा है और कमा कितना रहे हैं, प्राइवेट एजेंसी हर साल 3200 करोड़ रुपये कमाकर ले जा रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, स्थिति ये है कि शुद्ध मुनाफा है, किसानों को ठग रहे हैं, लूट रहे हैं। हर्षा लगेन फिटकरी, रंग चोखा का चोखा। ये स्थिति आपकी है। आप हमारी आलोचना करिये, जमकर करिये, आपको पूरी छूट है। आप करेंगे तो हम कर भी क्या लेंगे? जितना मर्जी करिये लेकिन कम से कम हम लोग जो योजना चालू किये थे, उसका नाम तो मत बदलिये। आपको कुछ नहीं आता। गौठान के बारे में इतनी आलोचना हुई। आज भी भाषण में गौठान, गोबर सुन रहा था।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप नाम खुद कितना बदले हैं, थोड़ा सा ये बताइये। आप कम से कम 1 हजार नाम बदले होंगे। अलग-अलग जगह, योजना, चौक-चौराहे, बिल्डिंग, भवन मिलाकर बदले होंगे। आप कल उल्लेख कर रहे थे कि मेरे परिवार के लोग कलाकार हैं, वासुदेव दाऊ के नाम ये यूनिवर्सिटी रखा हूँ, वह कामधेनु यूनिवर्सिटी थी। कोई नई संस्थान बनाकर उसका नाम रखते तो मैं मानता कि हां आपने अपने गुरु के लिये कुछ किया है। ऐसी अन्यान्य योजनायें, इसी नई राजधानी में, बस्तर में और कौशल्या विहार हो गई। तो आप ये नाम बदलने की राजनीति के तो जनक हैं। कहां आप पूछ रहे हैं ?

श्री भूपेश बघेल :- नहीं, इसके पहले भी केन्द्र सरकार ने 34 योजनायें..।

श्री अजय चन्द्राकर :- 1 हजार नाम बता रहा हूँ।

श्री भूपेश बघेल :- 1 हजार तो योजना ही नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- बिल्डिंग, भवन, सड़क सब मिलाकर।

श्री भूपेश बघेल :- आपने उतना बनाया ही नहीं तो बदलेंगे कहां से ? उतना तो आपने बनाया ही नहीं।

श्री अजय चन्द्राकर :- जितना बना है, आप स्वीकार करते हैं न कि नाम बदले हैं करके। आप स्वीकार करते हैं या नहीं करते हैं ?

श्री भूपेश बघेल :- कौन से बदले हैं, पहले 1 हजार लिस्ट दीजिए। आप टेबल में रख दीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप नहीं स्वीकार करते ?

श्री भूपेश बघेल :- नहीं स्वीकार करते, आप पटल में रखिये। आप 1 हजार की लिस्ट पटल में रखिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- अच्छा जितना बदले हैं, अगले सत्र में मैं पटल में रख दूंगा।

श्री भूपेश बघेल :- एक हजार होना चाहिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- नाम बदलने के शुरुआत करने वाले उसके जनक आप हो।

श्री भूपेश बघेल :- आपकी सरकार ही नहीं है। देखिये आपकी सरकार तो 2014 में आई। भाई, 2014 में देश आजाद हुआ, उसके बाद तो हमारी सरकार नहीं है तो हम नाम कैसे बदले लेंगे। क्योंकि आपके सांसद कहते हैं कि 2014 में देश आजाद हुआ। अब आपकी सरकार है।

श्री रामविचार नेताम :- आपकी गाड़ी वहीं खड़ी है, आगे तो बढ़े।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चलिये, बस एक का ही लूंगा। माननीय चौधरी जी हमेशा कहते हैं कि गौ अभ्यारण्य बनायेंगे, गोधाम बनायेंगे। आपने कितने गोधाम बनाये ?

श्री रामविचार नेताम :- 67 बन गया है। (मेजों की थपथपाहट)

श्री भूपेश बघेल :- ढाई साल में 67।

श्री रामविचार नेताम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपकी अनुमति से मैं नेता जी को, सदन को यह बताना चाहूंगा कि आपकी सोच अलग थी, हमारी सोच बिल्कुल लोगों की भावना और हम पशुओं को, गौमाता को संरक्षण के लिये, उसकी बेहतरी के लिये, उसकी कैसे हम देखभाल अच्छे से कर सकते हैं, इसके साथ-साथ मैं समुचित पूरा वहां पर सभी तरह का प्रकल्प शुरू कर रहे हैं। ऐसी भावना लेकर हम लोग काम कर रहे हैं और धीरे-धीरे हम बहुत आगे और भी सभी जगह ला रहे हैं। ऐसा नहीं है कि जैसे आपने हर गांव में खोल दिया, हर जगह चारागाह खोल दिया। कांग्रेस के लोगों के लिये वह चारागाह बन गया था, हम ऐसा होने नहीं देंगे। हम ऐसे लोगों को ला रहे हैं जिनकी निष्ठा हो, जिनके समर्पण की भावना हो, जिसकी संवेदना हो ऐसे लोगों को उसमें लगा रहे हैं।

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय।

श्री भूपेश बघेल :- अच्छा, मैं आपके बारे में भी बोलूंगा।

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- नहीं, मैं ऐसे ही आप लोगों को थोड़ा सा रिलैक्स दे रहा हूं। देखिये क्या है कि मैंने तैयारी की थी लेकिन मुझे बोलने का अवसर नहीं मिला तो मैं थोड़ा दो लाईन बोलना चाहता हूं, वह योजना का नहीं है। - वह धुआं दिखाकर सूरज को छिपाना चाहते हैं। हम रोशनी से हर घर का रास्ता बनाना चाहते हैं। अंतर केवल राजनीति का नहीं, प्राथमिकताओं का है। वे सत्ता पर लौटना चाहते हैं। हम जनता तक पहुँचना चाहते हैं। (मेजों की थपथपाहट)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप कबीर साहब के दोहा से चालू कर रहेओ और उहीच में फेर एखर समाप्ति ला करत हओ। मलमल धोए शरीर को, धोए न मन का मैल। नहाय गंगा गोमती रहे बैल के बैल।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नाम बदलने की सूची रखने के लिये कहा, आज मुझसे गलती हो गयी, वह कागज गिर गया तो उसका जो कवरिंग लेटर है उसको मैंने अभी उमेश जी को पढ़ने के लिये दिया हूं कि इसको पढ़ लो। बाकी कागज मैं कल दे दूंगा, कितने नाम बदले गये हैं उसको और यह विधानसभा का उत्तर है न। मैं इधर-उधर की बात नहीं करूंगा।

श्री भूपेश बघेल :- हां, देश की आजादी के बाद, वर्ष 2014 के बाद...।

श्री उमेश पटेल :- आपने यह जो पेपर दिया है यह वर्ष 1996 का दिया है ।

श्री अजय चंद्राकर :- आपके सामान्य प्रशासन का होगा, वह नहीं । मुझे जो मिला है, मैं उसको दे रहा हूं । मैं आज जो लाया था वह गिर गया है ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करिये ।

श्री भूपेश बघेल :- जी, बिल्कुल । माननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षा के बारे में बहुत बात होती है । एक मंत्री जी थे, जिन्होंने 33,000 की घोषणा की जिसकी शुरुआत आदरणीय नेता जी ने कही लेकिन आज तक 33,000 शिक्षकों की भर्ती नहीं हुई । वहां जो अतिथि शिक्षक थे, आज भी भटक रहे हैं । जितने शिक्षक हैं उनकी हालत बेहद नाजुक है, आंदोलन कर रहे हैं लेकिन उनको कोई पूछने वाला नहीं है । इसी प्रकार से आप उच्च शिक्षा में देखेंगे तो व्याख्याता लोग ही कॉलेज चला रहे हैं, कोई प्रोफेसर नहीं, कोई प्रिंसिपल नहीं । स्थिति यह है । माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वामी आत्मानंद...।

श्री रामविचार नेताम :- आप कॉलेज की बात कर रहे हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, इनके समय में आप जब मुख्यमंत्री थे, उस समय इनकी सरकार के बाद, हम लोगों की सरकार जब बनी तो यह तो व्याख्याता चला रहे हैं न, उस समय एक चपरासी दो कॉलेज का प्रभारी प्रिंसिपल बना था । (हंसी)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- मंत्री जी, आप उस कॉलेज का नाम तो बताईये ।

श्री रामविचार नेताम :- प्रतापपुर । आप नोट कर लो, नोट करो । (व्यवधान) (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- हो ही नहीं सकता । आप कुछ और बोल रहे हैं । (व्यवधान)

श्री रामविचार नेताम :- प्रतापपुर और वाइफनगर ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आप सदन को गुमराह कर रहे हैं । हो ही नहीं सकता । (व्यवधान) चपरासी, प्रभारी हो ही नहीं सकता ।

श्री रामविचार नेताम :- एक चपरासी दो जगह का प्रभारी था । (व्यवधान) आप बता दीजियेगा, मैं सजा देने लिये तैयार हूं । (व्यवधान)

श्री दलेश्वर साहू :- मंत्री जी, एक में दो गाड़ी के धान के उठाव होत रहिस हे। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- मैं आपको चैलेन्ज करता हूं कि अगर ऐसा हुआ होगा । (व्यवधान)

श्री रामविचार नेताम :- इसके बाद हमारी सरकार ने...। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- मैं आपको चैलेंज करता हूं कि अगर कोई चपरासी, कॉलेज का प्रिंसिपल रहा है तो आप उसको पटल पर रखिये । (व्यवधान)

श्री रामविचार नेताम :- भैया, मैं पटल पर रख दूंगा । (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- आप जो सजा बोलेंगे, मैं तैयार हूं । (व्यवधान) अगर यह सत्य होगा तो आप सजा बुला दीजियेगा । (व्यवधान) यह लोग असत्य बोल रहे हैं । (व्यवधान)

श्रीमती चातुरी नंद :- माननीय मंत्री जी, मैं अभी आपके शिक्षा विभाग के बात बता देथों । अभी वर्तमान में आपके शिक्षा विभाग के बात बता देथों । जेखर 3 इंक्रीमेंट रोके गे हे, आप मन अभी उही ला सहायक संचालक बनाये हओ ।

श्री रामकुमार यादव :- अतके कन लबारी ला देखकर चंद्राकर जियत कइसे हे। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं पटल पर रखने के लिये तैयार हूं । (व्यवधान) मेरे पास वेरीफाई के लिये आ गया है, आप अनुमति दें तो मैं पटल पर रख देता हूं, जितने नाम बदले गये हैं । (व्यवधान)

श्री दलेश्वर साहू :- अध्यक्ष महोदय, वह आराम से जाकर सोयें । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- ओला तो अतका लबारी ला सुन के बेहोश हो जाना रहिस हे ।

श्री अजय चंद्राकर :- आपने जितने नाम बदले हैं, उसको पटल पर रख देता हूं। (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- आप रखिये, उसमें क्या है।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट। भई, इस प्रकार आवाज निकालना ठीक नहीं है। अजय जी आप बैठिये और उसके भी पटल पर रखने की जरूरत नहीं है। आप अपना भाषण समाप्त करिये।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वास्थ्य बहुत महत्वपूर्ण विषय है। लेकिन इस स्वास्थ्य विभाग का स्वास्थ्य खराब है। मंत्री जी भर ठीक है, बचत पूरा विभाग बीमार है, पूरा हॉस्पिटल बीमार है, मेकाहारा जैसे हॉस्पिटल की भी हालत खराब है। दूसरे जिला अस्पताल रेफर सेन्टर बने हुए हैं, वहां न डॉक्टर हैं, न नर्स हैं, न स्टॉफ है, न दवाई है और दवाई में भी जिनको ब्लैक लिस्टेड किया गया है। जो गुजरात में जो ब्लैक लिस्टेड हुआ, कम से कम उसको तो यहां ब्लैक लिस्टेड करते। उनसे भी दवाई खरीद रहे हैं। यह स्थिति...।

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- उस दिन आप प्रश्न लगा कर, पता नहीं कहां चल दिये, मैंने तो बहुत तैयारी की थी, मैं आपको समझाने वाला था। आपने अटल जी को भीड़ा दिया, उन्होंने तैयारी नहीं की थी, वह समझ नहीं पायें।

श्री भूपेश बघेल :- अब ऐसा है उस भूमिका में बहुत जल्दी विजय शर्मा जी आने वाले हैं। जब विजय शर्मा जी उधर दिल्ली दौड़ लगायेंगे तो आप समझ सकते हैं। आप क्यों उदास हो रहे हैं अच्छा लगेगा, हम दोनों भाई दिल्ली जाएंगे।

उप मुख्यमंत्री (गृह)(श्री विजय शर्मा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग बिहार के राज्य सभा चुनाव में, झारखण्ड के राज्य सभा चुनाव में साथ ही थे।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बंगाल में नहीं था जहां सौरभ सिंह जी थे।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह अजय जी जो ने मुझे पटल में रखने वाला भेजा है इसमें एक कॉपी वर्ष 1994 की है, एक कॉपी 1976 की है..।

डॉ. चरणदास महंत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय उमेश जी से यह निवेदन करूंगा। माननीय चन्द्राकर जी सुन तो लीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या है, किसी सिक्के के दो पहलू होते हैं।

डॉ. चरणदास महंत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो पोंगली बनाने वाले थे, आप इधर पोंगली बना लीजिए। आप मेरे लिए पोंगली बनवा रहे थे तो इसको पोंगली बनवा लीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसा है, किसी सिक्के के दो पहलू होते हैं। भूपेश बघेल जी जितना भाषण दे रहे हैं। वह हर विषय में आधा भाषण दे रहे हैं। वह दूसरा भाषण नहीं बोल रहे हैं। यह उमेश जी जो पढ़ रहे हैं, वह भी वैसे ही है। यह किसको पढ़ रहे हैं, मैं यह जानता हूँ। यदि आप पूरा भाषण करेंगे तो टाईम लग जायेगा, नहीं तो जैसे बलौदा बाजार में पिटाई हुई, ऐसा बोलें, उस समय पिटाई हुई, वहां कैसे पिटाई हुई, किन कारणों से हुई, क्या परिस्थिति हुई, वह गोल- हो गया।

श्री देवेन्द्र यादव :- आप उसकी सी.बी.आई. जांच करवा लें।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह अपने अनुकूल भाषण दे रहे हैं। ऐसा नहीं है कि वह सत्य उद्घाटित कर रहे हैं। आपके बारे में भी वही बात कर रहे हैं। मैंने यह बोला कि जितना बोलना है, वह उस्ताद हैं। वह 7 बार के एम.एल.ए. हैं, उनको बोलना आता है कि उन्हें क्या बोलना है। वही है बस। वह केवल उतनी कलाकारी जानते हैं।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे पास शोले फिल्म की अमिताभ बच्चन का सिक्का नहीं है। वह आपके पास ही हो सकता है। मेरे पास वह सिक्का नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप जो विषय बोल रहे हैं, वह आप अपने अनुकूल बोल रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे पास वह सिक्का नहीं है। वह सिक्का आपके पास है। वह चित भी गिरे, पट भी गिरे, वह सब आपका है।

अध्यक्ष महोदय :- यह तरीका ठीक नहीं है। मैं अभी तीन बार बता चुका हूँ। सीधी बात करना बिल्कुल उचित नहीं है। आपको जो भी बात कहना है, मैं यहां पर बैठा हूँ। आप आसंदी की ओर देखकर बात करिये और यह बात करने का समय भी नहीं है। जब जवाब अंतिम रूप से आ रहा है। इसके बार मुख्यमंत्री जी का जवाब आएगा, इसलिए कृपया करके गंभीरता से लें। चलिये आप समाप्त करिये।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो समाप्त कर रहा हूँ। आप आदेश करते हैं मैं समाप्त करने के लिए खड़ा होता हूँ तो कुछ-कुछ और टोक देते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह आरोप पत्र इस सरकार के ढाई साल किये गये जो कार्य हैं, जो जनता विरोधी निर्णय लिये हैं उसका यह दस्तावेजी सबूत है। यह सरकार इन ढाई सालों में पूरी तरह से नाकाम रही है, जनता, किसानों, मजदूरों, गरीबों, जंगल में रहने वाले लोगों, व्यापारियों और उद्योगपतियों के खिलाफ जो फैसले लिये हैं, उसका यह आरोप पत्र है। इस सरकार को एक मिनट भी

कुर्सी में रहने का अधिकार नहीं है पूरे मंत्रिमण्डल को तत्काल इस्तीफा दे देना चाहिए। इन्हीं शब्दों के साथ, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी। (मेजों की थपथपाहट)

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज कांग्रेस पार्टी के द्वारा मंत्रिमण्डल के विरुद्ध लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा कर रहे हैं और चर्चा को करीब साढ़े 13 घंटे से ऊपर हो गए हैं। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। पूर्व मुख्यमंत्री सहित 17 माननीय सदस्यों ने इस चर्चा में भाग लिया है, जिसमें हमारे मंत्रिगण भी हैं, पक्ष और विपक्ष के सदस्य हैं, मैं सबको धन्यवाद देता हूँ। मैं पक्ष और विपक्ष के सदस्यों की बातें शुरू से ही सुन रहा हूँ। हमारे साथियों ने तो विपक्ष को अच्छी तरह से धोया है। (मेजों की थपथपाहट) अभी भी कुछ सुनने की क्षमता है क्या? हमको समझ में नहीं आ रहा है कि यह अविश्वास प्रस्ताव किसके प्रति लाया गया है। क्या यह अविश्वास प्रस्ताव छत्तीसगढ़ की 3 करोड़ जनता के प्रति लाया गया है, जिन्होंने 2023 के विधान सभा चुनाव में हम लोगों को 54 सीट देकर सरकार में बिठाने का काम किया या 6 महीने बाद जो लोकसभा का चुनाव हुआ, उसमें 11 में से 10 सीट हम लोगों को जीताकर अपना आशीर्वाद दिया या कुछ दिनों बाद जो नगरीय निकाय चुनाव हुए, उसमें सभी 10 नगर निगम में हमारी पार्टी जीती और 70 प्रतिशत नगर पालिका और नगर पंचायत में भी हम लोग जीते। क्या उन जनता के प्रति, उनके खिलाफ में अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है? या जो छत्तीसगढ़ धान का कटोरा है, उन किसानों के खिलाफ में अविश्वास प्रस्ताव है, जिनको हम लोग 31 सौ रूपए प्रति क्विंटल धान की कीमत दे रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) इस साल हमने 144 लाख मेट्रिक टन धान खरीदा है और उनके अंतर की राशि भी हमने एक साथ दी है, आपके जैसे 4 बार में नहीं दिया। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, 70 लाख माताएं, जिनको हम लोग महतारी वंदन योजना का पैसा हर महीने प्रथम सप्ताह में ही देते हैं (मेजों की थपथपाहट) 29-30 महीना दे चुके हैं। आप लोगों ने 500 रूपए का वादा करके 5 साल में एक रूपए भी नहीं दिया (शेम-शेम की आवाज) हम लोगों ने 18 हजार करोड़ से ज्यादा उनके खातों में भेज चुके हैं तो उन माताओं के खिलाफ में अविश्वास प्रस्ताव है क्या? हमारी सरकार को ढाई साल हो गए हैं और कोरम पूरा करने के लिए मंत्रिपरिषद के खिलाफ में कांग्रेस ने अविश्वास प्रस्ताव लाया है, जिसमें कोई दम-खम नहीं है। हमारे सभी साथियों ने विपक्ष को अच्छी तरह से धोया है। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, हमारे शास्त्रों में कहा गया है-सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः। हमेशा सत्य की जीत होती है, सत्य परेशान हो सकता है, लेकिन पराजित नहीं हो सकता। (मेजों की थपथपाहट) इसलिए आप लोग कितना भी भ्रम फैलाने का प्रयास करेंगे, उससे कुछ नहीं होने वाला है। मैं तो कहता हूँ कि अगर असत्य बोलने और भ्रष्टाचार करने में अगर पी.एच.डी. होता तो

सामने बैठे लोग उसमें बहुत विशेषज्ञ हो जाते । (मेजों की थपथपाहट) शायद इनको पच नहीं रहा है कि एक गांव के आदिवासी किसान का बेटा आज मुख्यमंत्री के पद पर बैठा है (मेजों की थपथपाहट) इसलिए अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है । आज ये लोग आदिवासियों के हित की बहुत बात करते हैं । आप लोगों ने क्या किया ? आजादी के 75 वर्षों में 55-60 साल तक आप लोगों की एक छत्र रूप से सरकार रही, केन्द्र में भी रही और अधिकांश शत-प्रतिशत प्रदेशों में आपकी सरकार रही । लेकिन खाली वोट बैंक के रूप में आप लोगों ने अनुसूचित जनजाति, आदिवासी समाज का इस्तेमाल किया है । आदिवासी समाज को किसी ने समझा है, सम्मान दिया है तो भारतीय जनता पार्टी ने दिया है । (मेजों की थपथपाहट) आप लोगों को मालूम होगा कि देश में आदिवासियों की इतनी बड़ी आबादी है, 55-60 साल में आप लोगों को कभी ख्याल नहीं आया कि ऐसे आदिवासी लोग जो भोले-भाले हैं, जो गांव में रहते हैं, जंगलों में रहते हैं, उनके विकास के लिए अलग से मंत्रालय का गठन किया जाये । 55-60 साल में आपको और आपके बड़े नेताओं को कभी सूझा ? जब श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी इस देश के प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने देश के आदिवासियों के विकास के लिए एक अलग से मंत्रालय का गठन किया था। (मेजों की थपथपाहट) आज देश का सर्वोच्च पद महामहिम राष्ट्रपति का है। आज वहां पर आदिवासी समाज की हमारी एक बहन श्रीमती द्रौपदी मुर्मु विराजमान हैं। आप लोगों को कभी ख्याल नहीं आया कि आदिवासियों को सम्मान दिया जाये। आप लोग बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। आज जितना मान और सम्मान आदिवासियों का हुआ है, भारतीय जनता पार्टी की सरकार में हुआ है, चाहे केन्द्र में चाहे प्रदेश में हो, वह कभी नहीं हुआ है। आज हमारे देश के माननीय यशस्वी प्रधानमंत्री आदिवासियों के विकास के लिए धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष योजना और पी.एम. जनमन योजना चल रहे हैं। पी.एम. जनमन योजना, जो राष्ट्रपति के दत्तक पुत्र कहे जाते हैं, जो विशेष पिछड़ी जनजाति के लोग हैं। हमारे छत्तीसगढ़ में भी कोरवा, बिरहोर, कमार और बैगा तथा नारायणपुर में अबूझमाड़ हैं, आप लोगों ने कभी भी उन लोगों की तरफ देखा था ? कभी उनके विकास की चिंता की थी ? आज वहां जाकर देखिये कि पी.एम. जनमन योजना के तहत किस तरह से सुन्दर सड़कें बन रहीं हैं, वहां पर नल के द्वारा पानी पहुंच रहा है, उनके घर प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बन रहे हैं। उनका राशन कार्ड बन रहे हैं। आप लोग जाकर देखिये, आप लोगों को देखना चाहिए। छत्तीसगढ़ का 6,661 गांव धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष योजना में शामिल है। सरकार की योजना का लाभ तो मिल ही रहा है। चाहे भारत सरकार का योजना हो, चाहे प्रदेश सरकार की योजना हो, लाभ तो मिल ही रहा है। उसके अलावे अनुसूचित जनजाति समाज, आदिवासी समाज के विकास में किसी तरह के संसाधन की कमी नहीं रहे, इसके लिए माननीय प्रधानमंत्री जी का यह विशेष प्रयास है। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष योजना और पी.एम. जनमन योजना चला रहे हैं। जब हम लोगों की सरकार थी, छत्तीसगढ़ में भी सरकार थी। मैं यह भी बता दूँ कि आप लोग छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण बहुत पहले कर सकते थे।

आप लोगों के हाथ में वह अधिकार था। लेकिन आप लोग छत्तीसगढ़ राज्य की मांग करके नाटक करते रहे, लेकिन नहीं बनाया। लेकिन छत्तीसगढ़ निर्माण का कार्य भी श्रद्धेय भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी जी ने किया। आप लोग आदिवासियों के हितों की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। आज डॉ. साहब विधान सभा अध्यक्ष की आसंदी पर हैं। आप जब 15 साल तक मुख्यमंत्री थे तब छत्तीसगढ़ का चहुंमुखी विकास किया। छत्तीसगढ़ एक पिछड़ा हुआ एक गरीब क्षेत्र के नाम से जाना जाता था। लेकिन जब सन् 2003 में जनता ने भारतीय जनता पार्टी को आशीर्वाद देकर सरकार में बैठाई, डॉ. रमन सिंह जी मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने दो-दो विकास प्राधिकरण का गठन किया था। सरगुजा विकास प्राधिकरण और बस्तर विकास प्राधिकरण का गठन किया। (मेजों की थपथपाहट) इस क्षेत्र में जो जनजातीय लोग हैं, उनको किसी भी तरह से विकास में संसाधन की कमी नहीं हो, यह डॉ. साहब ने किया। आप सबको मालूम होगा कि यहां पर पहले भूखमरी होती थी। लोग भूख से मरते थे। कोदो, कुटकी भी नसीब नहीं होता था। लोग महुआ खाते थे। लेकिन जब यहां पर सन् 2003 में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी, डॉ. रमन सिंह मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने यहां पर सुन्दर पी.डी.एस. लाया, जो पूरे देश में विख्यात हुआ और उसके बदौलत डॉ. साहब चाउर वाले बाबा के नाम से भी विख्यात हुए हैं। (मेजों की थपथपाहट) यहां गरीबी थी, लोग भूख से मर जाते थे। मुझे मालूम है कि मध्यप्रदेश में दिग्विजय सिंह की सरकार थी, हम लोग उस समय विधायक थे तो हमारे जशपुर जिले में ही लोग भूख से मरे थे। विधायकों की कमेटी बनी थी। जांच में सही पाया गया था कि 4 लोग भूख से मरे हैं। पहले यह स्थिति होती थी। जितना हमारे आदिवासी समाज का, जनजातीय समाज का भारतीय जनता पार्टी और भारतीय जनता पार्टी की सरकार श्रद्धेय हमारे अटल बिहारी बाजपेयी जी, नरेन्द्र मोदी जी, डॉ. साहब और आज हम लोग चिंता कर रहे हैं, उतना आपने कभी नहीं किया। आप लोग खाली वोट बैंक के रूप में जनजातीय समाज का इस्तेमाल करते रहें। आज हम लोगों को जनजातीय समाज का आशीर्वाद मिलता है। चारों लोकसभा सीट जनजातीय समाज का है, वह बहुत समय तक भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में है। आज हमारे आदिवासियों का आशीर्वाद मिला है। हमारे ज्यादा एम.एल.ए. बने हैं, तभी आज हम लोग 54 सीट लेकर आज यहां पर सरकार में हैं। इसलिए जनजाति समाज अब आप लोगों के भूल-भुलैया में आने वाला नहीं है। अब इतनी समझ हमारे जनजाति समाज में भी आ गई है कि वह भला-बुरा सोच सकता है और यह आप लोगों का जो अविश्वास प्रस्ताव आज लाए हैं, ये महज एक औपचारिकता है, इसमें कोई दम-दिलासा नहीं है। आप लोगों का क्या हुआ? आप ढाई साल की आप बात करते हैं। ढाई-ढाई साल तो आप लोगों की पिछली सरकार में भी खूब चला है। एक तो जो राजा था, वह अपनी कुर्सी बचाने में लगा रहा और एक महाराजा थे जो कुर्सी हथियाने में लगे रहे। (हंसी) राजा और महाराजा में 5 साल सरकार चली, लेकिन उसका खामियाजा कौन भुगता? छत्तीसगढ़ की जनता भुगती।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आप टी.एस. सिंहदेव को महाराजा कहें, समझ आता है। मैं राजा नहीं हूँ। इस बात का ध्यान रखिए।

श्री विष्णु देव साय :- मुख्यमंत्री थे, तो लोकतंत्र के तो राजा हुए न। (हंसी) (मेजों की थपथपाहट) लोकतंत्र के राजा हुए मुख्यमंत्री।

श्री भूपेश बघेल :- मतलब अभी आप राजा हैं? अभी राजा हैं आप?

श्री विष्णु देव साय :- देखिए, पिछले 5 साल 2018 के विधानसभा चुनाव में, जबकि 15 साल छत्तीसगढ़ में बी.जे.पी. की सरकार थी और छत्तीसगढ़ का चहुंमुखी विकास तत्कालीन सरकार बी.जे.पी. की डॉ. रमन सिंह, तत्कालीन मुख्यमंत्री जी ने किया। उसके बाद भी वर्ष 2018 का जब विधानसभा चुनाव आया, तो छत्तीसगढ़ की जनता ने बहुत बड़ा विश्वास आप लोगों के ऊपर किया था। शायद 67 सीट आप लोग जीते थे। 68 सीट, इतना बड़ा जनादेश हम लोग भी नहीं ला पाए हैं। लेकिन उसका क्या हुआ? आपने क्या दिया? जनता को क्या दिया?

श्री राम विचार नेताम :- इस बार इससे ज्यादा लाएंगे।

श्री विष्णु देव साय :- हां, लाएंगे, इस बार तो 70 से ज्यादा लाएंगे। आप लोग लिख लीजिए, हां। (मेजों की थपथपाहट) तो इतना बड़ा जनादेश के बाद आप लोगों ने क्या दिया? आप लोगों के जनघोषणा पत्र में आपका कितना वादा था? 36 वादा था और आप लोगों को 5 साल पूरा सरकार चलाने का समय मिला, लेकिन वह ढाई-ढाई साल की कुर्सी खींचातानी में पूरा बीत गया। आप जब मुख्यमंत्री थे तो मैं उस समय 2 साल प्रदेश अध्यक्ष था और कई बार आपको हम चुनौती देते आए कि अगर 36 वादा में आप एक वादा भी शत-प्रतिशत पूरा किए हैं, उसको बता दीजिए तो मैं राजनीति छोड़ दूंगा। लेकिन आपकी कभी हिम्मत नहीं हुई। (मेजों की थपथपाहट) क्योंकि आपने 36 में एक भी वादा शत-प्रतिशत कभी पूरा नहीं किया। छत्तीसगढ़ के 3 करोड़ लोगों को आपने 5 साल में ठगा, छला। (शेम-शेम की आवाज) (मेजों की थपथपाहट) आपके विषय में आपकी सरकार के विषय में तो एक कहावत चल गयी थी कि छत्तीसगढ़ में ऐसा कोई सगा नहीं जिसको कांग्रेस की सरकार या भूपेश बघेल ने ठगा नहीं। (मेजों की थपथपाहट) छत्तीसगढ़ के अंदर कोई भी वर्ग ऐसा नहीं था, जो ठगा नहीं गया। सारे लोग ठगे गए। किसान की आप बात करते हैं। कितना वे बारदाना के लिए तड़पे। अंतर की राशि को चार-चार बार साल भर में चार किश्त में आप देते थे। एक किश्त तो आप दिए भी नहीं। चौथा किश्त आप दिए भी नहीं। 500 रुपये पेंशन देने की बात हुई थी, एक रुपये भी नहीं दिए। 2 साल का बकाया बोनस 13 लाख किसानों का था, आपके जन घोषणा पत्र में 36 वादे में भी था। लेकिन वह 3716 करोड़ रुपये नहीं दिए। हम लोग जब सरकार में आए, तो सरकार बनने के 12 दिन में हम लोग वह 3716 करोड़ रुपये 13 लाख किसानों को देने का काम किए। (मेजों की थपथपाहट) पूरे छत्तीसगढ़ को भ्रष्टाचार का गढ़ बना दिए, अपराध का गढ़ बना दिए और इसीलिए इतना बड़ा जनादेश के बाद भी, बाद में तो शायद उप चुनाव वगैरह हुआ तो 71

तक पहुंच गए थे शायद। 70-71 तक पहुंच गए थे। इतना बड़ा विश्वास आप लोगों के प्रति छत्तीसगढ़ की जनता ने किया था। लेकिन आप लोगों ने छत्तीसगढ़ की जनता के साथ विश्वासघात करने का काम किया और इसलिए वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में छत्तीसगढ़ की जनता ने आप लोगों को उखाड़ के फेंक दिया। यह सब आप लोगों की करनी का नतीजा है। लेकिन हम लोग वैसे नहीं हैं, हमारी कथनी और करनी में एकरूपता है। हमारी नीति और नियत दोनों साफ हैं। हम जो कहते हैं, उसे पूरा करते हैं। (मेजों की थपथपाहट) आज छत्तीसगढ़ की जनता ने हमें 54 सीटें देकर शासन हम लोगों को सत्ता में बैठाई है। 2023 के चुनाव में हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने स्वयं छत्तीसगढ़ की 3 करोड़ जनता से जो वादे किए थे कि आप बी.जे.पी. की सरकार बनायेंगे तो हम अमुक-अमुक काम करेंगे। उन सारे वादों को हमने मोदी की गारंटी का नाम दिया है। हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि दी की गारंटी का मतलब है—गारंटी पूरी होने की गारंटी। (मेजों की थपथपाहट) मात्र ढाई साल में हमने अपने अधिकांश वादे पूरे कर दिए हैं। आप लोगों ने 5 वर्षों के कार्यकाल में 18 लाख गरीबों का हक छीना था। हर व्यक्ति का सपना होता है कि उसका अपना एक घर हो, लेकिन आपने उन 18 लाख गरीबों को मकान नहीं दिए थे। इतना ही नहीं, डॉ. रमन सिंह जी के समय जो कार्य शुरू हुए थे, वे अधूरे ही रह गए। आपने उन्हें पूरा नहीं होने दिया, जिसके कारण आपके पंचायत मंत्री को इस्तीफा तक देना पड़ा। केंद्र सरकार के बार-बार आग्रह और पत्राचार के बावजूद आपने गरीबों का हक इसलिए छीना क्योंकि आपको डर था कि उसका श्रेय केंद्र सरकार और मोदी जी को चला जाएगा। हम बोल रहे हैं तो आप सुनने की क्षमता भी रखिए। (मेजों की थपथपाहट)

श्री भूपेश बघेल :- माननीय मुख्यमंत्री जी, यदि आप अनुमति देंगे तो मैं बोलूंगा।

श्री विष्णु देव साय :- जी।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शुरुआत से अजय जी से लेकर अरुण साव जी तक का भाषण है, वही रिपीट हो रही हैं।

श्री विष्णु देव साय :- मैं कुछ नया भी बोलूंगा।

श्री भूपेश बघेल :- हाँ, मोदी जी ने क्या-क्या वादे किए थे, क्या-क्या गारंटी दी थी और क्या-क्या वादे पूरे कर दिये हैं, यह सब आप बता दीजिये।

श्री विष्णु देव साय :- वह सब चीज आप लोगों को सुनना पड़ेगा।

श्री भूपेश बघेल :- हाँ, हम पूरी रात बैठने को तैयार हैं। हम मुख्यमंत्री का भाषण क्यों नहीं सुनेंगे।

श्री विष्णु देव साय :- अध्यक्ष महोदय, आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने वादा किया था कि बी.जे.पी. की सरकार बनने पर मुख्यमंत्री का पहला काम 18 लाख प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत करना होगा। (मेजों की थपथपाहट) आपको मालूम है कि हमने 13 दिसंबर, 2023 को शपथ ली और 24 घंटे की भी देरी न

करते हुए अगले दिन 14 दिसंबर, 2023 को पहली कैबिनेट में ही 18 लाख प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति दे दी। (मेजों की थपथपाहट) हमने उसके लिए 40% राज्यांश की भी व्यवस्था की। आज ढाई साल में भारत सरकार ने भी सभी 18 लाख आवासों को स्वीकृति दे दी है और उसके केन्द्रांश की राशि भी हमें मिल चुकी है। इन ढाई वर्षों में 11 लाख से अधिक मकान बनकर तैयार हो गए हैं और हम प्रतिदिन 1600 मकान बना रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) आप थोड़ा ख्याल करिये। आपने 2023 का विधान सभा चुनाव जीतने के लिए एक मुख्यमंत्री आवास योजना शुरू की थी। आपने शुरू की थी ना? आपने कितने लोगों को पहली किस्त दी थी? 47 हजार लोगों को 25-25 हजार रुपये दिए थे। 2023 के चुनाव में वोट ठगने के लिए कि आपने यह काम किया था। उसको आपने अधूरा छोड़ा था, जिसे पूरा करने का काम हम लोगों ने किया है।

श्री भूपेश बघेल :- हमने ठगने के लिए नहीं दिया था। हमने 7 लाख 47 हजार लोगों को पहली किस्त दी थी। आप यह जो 18 लाख की बात कर रहे हैं, क्या उसमें 7 लाख शामिल हैं या नहीं?

श्री विष्णु देव साय :- हम तो कह रहे हैं कि उसमें शामिल है। हमने उसको पूरा किया है।

श्री भूपेश बघेल :- 11 लाख में 7 लाख शामिल है या उसके अतिरिक्त है?

श्री विष्णु देव साय :- हम लोगों ने क्लियर किया है।

श्री भूपेश बघेल :- मैंने 7 लाख 47 हजार लोगों को पहली किस्त दी थी, उसे कम्प्लीट करके 11 लाख और दिया।

अध्यक्ष महोदय :- एक बार उनको पूरा बोलने दीजिये, फिर आप प्रश्न करेंगे।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, ठगने की बात कहेंगे तो यह गलत है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है।

श्री भूपेश बघेल :- मुख्यमंत्री जी, आप ठगने की बात मत कीजिये।

श्री विष्णु देव साय :- हम उसे भी पूरा कर रहे हैं। आपको तो धन्यवाद देना चाहिए। (मेजों की थपथपाहट) हम आपके छोड़े हुए काम को भी पूरा कर रहे हैं और उसमें हमने कोई भेदभाव नहीं किया। यह प्रधानमंत्री आवास के संदर्भ में था। इतना ही नहीं, यदि हमारी सरकार की ढाई साल की सबसे बड़ी उपलब्धि देखें तो वह नक्सलवाद का समापन है। (मेजों की थपथपाहट) पहले ऐसा लगता था कि शायद इस समस्या का कभी समाधान नहीं होगा। ऐसे ही हमारे बस्तर के गरीब लोग, जनजाति समाज के लोग विकास से अछूता रह गये हैं, बस्तर जो कि केरल से बड़ा है, प्राकृतिक दृष्टि से बहुत सुंदर है, आपने भी यहां पर 5 साल शासन किया है। जब हम लोग 2023 में सरकार में आये और 2024 में माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री जी यहां पर रायपुर के अंदर में समीक्षा बैठक लिये थे, उसमें सभी नक्सल पीड़ित राज्य से आये थे। सारे प्रदेश के डीजीपी और सुरक्षा के बड़े अधिकारी शामिल हुये थे। तब पता चला कि देश में नक्सलवाद का 77 प्रतिशत छत्तीसगढ़ में है बाकी 23 परसेंट नक्सलवाद जो छै: राज्य

हैं, वहां थोड़ा-थोड़ा बचा है। क्या आप बतायेंगे कि 77 प्रतिशत नक्सलवाद आपके प्रदेश में क्यों बचा था और इसका क्या कारण है और बाकी में 23 परशेंट थोड़ा-थोड़ा था। आपने केन्द्र सरकार को सहयोग नहीं किया है, अगर आप सहयोग करते तो इसके पहले ही छत्तीसगढ़ नक्सलमुक्त हो जाता। आप लोग तो हिड़मा को अपना रोल मॉडल मानते हैं ना ? (शेम-शेम की आवाज)

श्री भूपेश बघेल :- माननीय मुख्यमंत्री जी, इतना असत्य मत बोलिये। जब केन्द्रीय गृह मंत्री जी ने मध्यप्रदेश में मीटिंग हुई थी, वहां ऑन रिकार्ड बोले हैं कि छत्तीसगढ़ की सरकार है, वह पूरा सहयोग कर रही है और पूरा बटालियन दिये और हमने स्थापित भी किया। यदि नक्सलवाद मिला है तो वह बात फिर लंबी चली जायेगी। मुझे तो रमन सिंह जी की सरकार से 15 साल का मिला था और पहले की बात करेंगे तो फिर लंबी जायेगी। हमने जो लड़ाई लड़ी है, उसके बाद आपको मिला है, जो थोड़ा सा बचा था, उसे आपने निपटाया।

श्री विष्णुदेव साय :- अध्यक्ष महोदय, थोड़ा सा नहीं, देश का 77 प्रतिशत बचा था।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, सवाल जवाब का नहीं है भई।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, यदि आरोप लगायेंगे तो मुझे जवाब देना पड़ेगा। मुझ पर आरोप लगा रहे हैं। आपने क्या किया, यह पूछ रहे हैं ?

अध्यक्ष महोदय :- तथ्य में बात कर रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, हिड़मा किसी का आदर्श नहीं हो सकता। नक्सलवाद का हमने विरोध किया है और शुरू से विरोध किया है और आज भी विरोध कर रहे हैं। नक्सलवाद का समर्थन कांग्रेस पार्टी नहीं कर सकती।

श्री सुशांत शुक्ला :- आप ही के साथी ने कहा कि हिड़मा आपका साथी है। (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- आप असत्य बोल रहे हो। (व्यवधान) मंत्री भी असत्य बोल रहे हैं और वह भी असत्य बोले रहे हैं। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य :- आपके रोल मॉडल है वो। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- बैठिये, बैठिये। (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- मुख्यमंत्री जी, कम से कम असत्य बोलना बंद करिये।

अध्यक्ष महोदय :- जब मुख्यमंत्री जी बोल रहे हैं तो बाकी किसी को बोलने की जरूरत नहीं है। मुख्यमंत्री जी अपनी बात का शानदार तरीके से प्रस्तुतीकरण कर रहे हैं। हम बीच में खड़े होकर न बोलें।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी।

अध्यक्ष महोदय :- अनुमति लेकर मुख्यमंत्री जी से बात करें। जब वह खड़े हैं तो मुख्यमंत्री जी से बिना पूछे...।

श्री अजय चन्द्राकर :- अनुमति ले रहा था । माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी हाऊस के अंदर है तो नोटिस ले लीजिएगा । (हंसी)

श्री विष्णुदेव साय :- अध्यक्ष महोदय, यह सरकार बस्तर के विकास के लिये वचनबद्ध है । छत्तीसगढ़ नक्सलमुक्त हुआ है । हम इसके लिये हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी को बहुत-बहुत बधाई और धन्यवाद देते हैं । (मेजों की थपथपाहट) हम जवानों के अदम्य साहस को भी नमन करते हैं, उन्होंने जो साहस दिखाया है और उस क्षेत्र की जनता का समर्थन भी मिला । वह लोग नक्सलवाद से ऊब चुके थे । वह विकास की मुख्य धारा से जुड़ना चाहते थे, इसलिये हम लोगों का साथ दिये और हम अपने प्रदेश के गृह मंत्री विजय शर्मा जी का भी धन्यवाद करना चाहेंगे, जिन्होंने रात दिन एक करके सब मिलाकर नक्सलवाद समाप्त किया है। (मेजों की थपथपाहट) जब हम लोगों ने नक्सलवाद से लड़ाई शुरू की तो पता था, जहां पर विकास 40 साल से भी ज्यादा समय तक पहुंचा नहीं है, अगर वहां की व्यथा सुनें तो बड़ा दर्द होता है। अभी हम लोग एक जगह गारपा गए थे, केदार जी का विधानसभा क्षेत्र है, वहां पहले कोई जा नहीं पाते थे। वहां के लोगों ने कहा कि अनाज के लिए हम लोगों को 5 दिन लगता है। उनको 5 दिन अनाज लाने में लगता था, रास्ता नहीं था, दूर में दुकान थी, कंधे में ढोकर लाते थे, गारपा से लाने में 5 दिन लगता था। आज जब नक्सल मुक्त हुआ है तो वहां राशन की दुकान खुली है। वैसे हम एक जगह मुलेर गए थे, मुलेर के लोग बताएं कि राशन लाने में उनको 3 दिन लगता है। आज उनके गांव में भी राशन दुकान खुली है। आज हम लोगों ने नियद नेल्ला नार योजना शुरू की है। (मेजों की थपथपाहट) आपकी सुंदर गांव योजना, इसके माध्यम से हम लोग करीब 17 विभाग और 40 से भी ज्यादा योजनाओं को उस गांव तक पहुंचा पाने में सफल हो रहे हैं। आज वहां सड़कें बन रही हैं, बिजली पहुंच रही हैं, घरों में पानी पहुंचा रहे हैं, स्कूल खोल रहे हैं, अस्पताल खोल रहे हैं। वहां पर दूरसंचार का साधन हो रहा है, मुख्यमंत्री बस सेवा योजना से बस भी चला रहे हैं। हमारे आदरणीय प्रदेश अध्यक्ष जी बता रहे थे 70 से ज्यादा बस चल रही हैं और हमने भी उस बस में सवारी की है। एक गांव से दूसरे गांव गए हैं। (मेजों की थपथपाहट) पहले वहां के गरीब लोग पिकअप वगैरह में यात्रा करते थे और कभी एक्सीडेंट हो जाता था तो इकट्ठे मौत हो जाती थी लेकिन आज सरकार वहां पर मुख्यमंत्री बस सेवा योजना में बस भी चला रही हैं। यह सारे विकास के काम कर रहे हैं और हम लोग वहां पर पर्यटन को बढ़ावा दे रहे हैं क्योंकि पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। वहां पर सैकड़ों तरह के वनोपज हैं, हम लोग उसका वैल्यू एडिशन कराएंगे, कृषि को बढ़ाएंगे, लोगों के खेतों में पानी पहुंचाना चाहते हैं। अभी इंद्रावती में देउरगांव और मटनार में दो-दो सिंचाई योजना सैंक्शन की है, जिससे करीब 80 हजार एकड़ में सिंचाई होगी, यह सब काम कर रहे हैं। हमारे माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री जी आश्वस्त किए हैं कि बस्तर संभाग को देश का सबसे अच्छा आदिवासी संभाग बनाएंगे। यह हम लोग कर रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) आज यहां पर

सेवा डेरा की बात हुई, सेवा डेरा गुंडाधुर जी की गांव है। वहां सेवा डेरा माननीय केंद्रीय गृह मंत्री जी ने शुभारंभ किया है। वहां पर सिलाई का प्रशिक्षण शुरू कर दिए हैं। उधर इमली भरी पड़ी है तो उसकी पैकिंग का काम शुरू किए हैं और आर्गेनिक धान से ढेंकी, दादी को पता होगा ढेंकी किसको बोलते हैं। ढेंकी से चावल बनाकर एक्सपोर्ट करने का काम भी कर रहे हैं, इस तरह से वहां की जनता का आर्थिक जीवन स्तर कैसे सुधरे हम लोग इसकी चिंता कर रहे हैं। हमारे सरगुजा और बस्तर संभाग में गरीब लोग और विशेषकर उसमें भी ज्यादा जनजातीय समाज के लोग हैं। आज तेंदूपत्ता की कीमत 4,000 से 5,500 मानक बोरा किए हैं। (मेजों की थपथपाहट) चरण पादुका योजना डॉक्टर साहब ने शुरू की थी। आपको मालूम होगा कि गांव के लोगों के पास जूता चप्पल भी नहीं होते हैं। गर्मी के दिनों में तेंदूपत्ता तोड़ने जाना पड़ता है और जंगल में कभी अगर पैर में कांटा खूंटी गड़ गया और गैंग्रीन घाव हो गयी तो कई लोगों का पैर भी काटना पड़ता है, इसको देखते हुए डॉक्टर साहब ने वहां पर जूता चप्पल देने का योजना शुरू की थी, जिसको आपने बंद कर दिया था, उसको भी हम लोगों ने शुरू की है। इस तरह से हम लोग तेंदूपत्ता को भी फिर से वहां पर बढ़ा रहे हैं। आज हम लोग 70 लाख महिलाओं को महतारी वंदन देने की बात की है। आज जब गांवों में, कार्यक्रमों में जाते हैं तो महिलाओं की संख्या ज्यादा दिखती है। आज वे लोग इतने खुश दिखते हैं और उनसे पूछते हैं कि महतारी वंदन योजना का लाभ मिल रहा है कि नहीं? 1,000 रुपये गांव वालों के लिए बहुत होता है। गांव की महिला को 1,000 रुपये एक साथ मिलना बहुत बड़ी बात है, लोग अपनी अनेक तरह की अनुभव बताती हैं। कोई बताती हैं कि मैं अपनी बेटी के नाम से सुकन्या समृद्धि योजना का खाता खुलवाई हूं, उसमें पैसा जमा करती हूं। कोई सिलाई मशीन खरीद कर सिलाई कढ़ाई करके अपना आर्थिक स्थिति ठीक कर रही हैं। कोई सब्जी, भाजी, किराना दुकान को बढ़ा रही हैं। तो यह महतारी वंदन योजना को लाभ हो रहा है। आज 5 लाख 60 हजार से ज्यादा जो भूमिहीन कृषि मजदूर हैं, उनको 10 हजार रुपये एक साल में एक समय में देने का काम कर रहे हैं। हम 2 साल उसको भी दे चुके हैं तो मोदी की गारंटी का यह सब काम पूरा कर रहे हैं। आज हम लोग रामलला दर्शन योजना चला रहे हैं। प्रभु श्री राम का यह ननिहाल है, माता कौशल्या की जन्मभूमि है, छत्तीसगढ़ वालों का प्रभु श्री राम से विशेष लगाव है तो यहां के 49 हजार से ज्यादा लोग इन दो-ढाई साल के अंदर में रामलला दर्शन योजना का लाभ ले चुके हैं और अयोध्या धाम जाकर प्रभु श्री राम का दर्शन करके आ चुके हैं। (मेजों की थपथपाहट) एक और बड़ी अच्छी योजना डॉ. साहब ने शुरू की थी- मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा दर्शन योजना। बूढ़े-बुजुर्गों की इच्छा होती है कि अंत समय में कोई तीर्थ कर लें, लेकिन हर घर में वह सक्षमता नहीं होती है इसलिए वह काम भी डॉ. साहब ने शुरू किया था, जिसको आपने बंद कर दिया था। उसको हम लोगों ने फिर से चालू किया है (मेजों की थपथपाहट) और पूरे देश में 19 जगह ये तीर्थ चिन्हित हैं। वहां पर सरकार अपने खर्चे से उनको तीर्थ कराती है। तो इस तरह से मोदी की गारंटी का काम हम लोग पूरा करने में लगे हैं। आप खाद की बात कर रहे थे। इस साल का

हमारा लक्ष्य 15.55 लाख मीट्रिक टन था और उसके अगेंस्ट में 13.16 लाख मीट्रिक टन का प्रदेश के पास भंडारण है। अभी 7 लाख 27 हजार मीट्रिक टन खाद का किसानों में वितरण भी किया जा चुका है। (मेजों की थपथपाहट) हम हमारे देश के रसायन एवं उर्वरक मंत्री श्री जे.पी. नड्डा जी को धन्यवाद देना चाहेंगे। हम लोगों की मांग पर उन्होंने फिर 50 हजार टन डीएपी भेजा था। अब मैं कुछ आंकड़े रखना चाहूंगा कि आपने 5 साल में क्या किया और ढाई साल में हमने क्या किया है। सिंचाई के क्षेत्र में आपकी गति कछुए जैसी थी। आपने 5 साल में 9 हजार 667 हेक्टेयर सिंचाई का रकबा बढ़ाया। हम लोगों ने मात्र इन ढाई सालों में 19 हजार 500 हेक्टेयर सिंचाई का रकबा बढ़ाया है जो कि दोगुना है। (मेजों की थपथपाहट) आपने सिंचाई योजनाओं के लिए 5 साल में 5 हजार 794 करोड़ रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति दी, लेकिन हम लोगों ने ढाई वर्ष में 11 हजार 107 करोड़ रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति दी है। (मेजों की थपथपाहट) आपके समय में जल संसाधन विभाग को सेंट्रल से एक भी कोई प्राइज नहीं मिला, लेकिन हमको सिंचाई के क्षेत्र में 2 साल में उत्कृष्ट राज्य के रूप में प्राइज मिला है। (मेजों की थपथपाहट) अगर ग्रामीण विकास की बात करें तो नरेगा की जगह आज विकसित भारत जी राम जी योजना हो गयी है, जो 1 जुलाई से प्रदेश में लागू हो गयी है। (मेजों की थपथपाहट) पहले मनरेगा में 4 हजार करोड़ रुपये का बजट रहता था, जो अब बढ़कर 6 हजार करोड़ रुपये हो गया है। 100 दिन की जगह पर 125 दिन के रोजगार की इसमें गारंटी है और 15 दिन में मजदूरी भुगतान की भी गारंटी है। (मेजों की थपथपाहट) अगर समय पर मजदूरी का भुगतान नहीं हुआ तो मजदूरों को उसकी पेनाल्टी सरकार देगी। तो जी राम जी में यह व्यवस्था है। हमारे पंचायत मंत्री गांव-गांव में अटल डिजिटल सेवा केंद्र खोल रहे हैं। 6 हजार से ज्यादा पंचायतों में खोल चुके हैं और वहां पर गांव वालों को हर तरह की सुविधाएं-आय, जाति, निवास प्रमाण पत्र तथा 1 लाख तक के पैसे का ट्रांजेक्शन भी हो रहा है। अभी हम सुशासन तिहार में जिस भी गांव में गये तो एक अटल डिजिटल सेवा केंद्र में जाते ही थे और वहां पर लोग मिल जाते थे, विशेषकर महिलाएं मिलती थीं तो वे बड़ी खुश होती थीं कि उनको पैसे के लिए बैंक जाना नहीं पड़ता है। हमारे पंचायत विभाग की तरफ से वहां पर उनको पेंशन, ये सब भी मिल जा रहा है। हस्तशिल्प भी हमारे प्रदेश में आजीविका का एक प्रमुख साधन है और इसके प्रचार-प्रसार के लिए देश के 5 शहर, जहां पर एयरपोर्ट है, वहां पर शोरूम खोलेंगे, इसके लिए भी हमने बजट में प्रावधान किया है। महिला सशक्तिकरण के लिए हम लोगों ने काम किया है। महतारी वंदन योजना तो है ही, इसके अलावा जो रेडी टू ईट का काम पहले हमारी महिला स्व सहायता समूह की माताएं बहनें करती थीं, जिसको छीनकर आपने निजी कंपनी को काम दे दिया था, उसको फिर से हम लोग वूमेन सेल्फ हेल्प ग्रुप को देने का काम करने जा रहे हैं, अभी वह कुछ जिलों में शुरू भी हो गया है। हम लोग अपने छत्तीसगढ़ में 10 लाख 40 हजार माताओं को लखपति बना चुके हैं। (मेजों की थपथपाहट) जमीन की रजिस्ट्री में महिलाओं को स्टाम्प ड्यूटी में 50 प्रतिशत की छूट है। यह भी महिला सशक्तिकरण के लिए

हम लोगों ने किया है। आज 70 लाख माताओं बहनों का आशीर्वाद हम लोगों के ऊपर है। आप सोच सकते हैं कि 70 लाख माताओं बहनों का आशीर्वाद है तो किसका क्या बिगड़ सकता है। (मेजों की थपथपाहट) मैं डॉ. साहब के कार्यकाल का बता रहा हूँ कि आप जब 2018 में थे तब उस समय विद्युत कंपनियों का लंबित दायित्व 1,321 करोड़ रुपये था जो इनके 5 साल के कार्यकाल में बढ़कर 3,481 करोड़ रुपये हो गया। मार्कफेड का लंबित दायित्व 2,561 करोड़ रुपये से बढ़कर 13,243 करोड़ रुपये हो गया। इसी तरह से नान का वित्तीय दायित्व 1,718 करोड़ रुपये से बढ़कर 5,500 करोड़ रुपये हो गया। आयुष्मान स्वास्थ्य बीमा योजना का वित्तीय दायित्व 2 करोड़ रुपये से बढ़कर आपके समय में 1,768 करोड़ रुपये हो गया। माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने जनकल्याणकारी योजनाओं के लिए राजस्व को बढ़ाने का काम भी ढाई वर्षों में किया है। इनके समय में वर्ष 2018-19 में वाणिज्य विभाग से 12,348 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ, जिसको हम लोग बढ़ाकर 21,054 करोड़ रुपये कर दिये हैं। (मेजों की थपथपाहट) आबकारी विभाग में इनके समय में वर्ष 2018-19 में 4,489 करोड़ रुपये का राजस्व था, जिसको अभी हम लोग बढ़ाकर 10,750 करोड़ रुपये कर दिये हैं। अब मैं इसमें और ज्यादा नहीं जाना चाहूंगा कि किस तरह से आपकी शराब दुकान में दो-दो कैश काउंटर होते थे। (शेम-शेम की आवाज) एक काउंटर का पैसा सरकार के पास जाता था और एक कहा जाता था..।

श्री भूपेश बघेल :- वर्ष 2018-19 का तो इनका था भई।

श्री विष्णु देव साय :- जी ?

श्री भूपेश बघेल :- वह इनके समय का था। आप हमारे आखिरी कार्यकाल का बताइये कि कितना बढ़ा था। वर्ष 2018-19 का तो पिछली सरकार का था। हमारी सरकार के आखिरी समय का बताइये कितना था।

श्री विष्णुदेव साय :- मैंने बताया न कि आपका 12,348 करोड़ रुपये था, जिसको हम लोग बढ़ाकर 21,054 करोड़ रुपये किये, (मेजों की थपथपाहट) यह वाणिज्य का है।

श्री भूपेश बघेल :- वर्ष 2023-24 में कितना था ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, अब यहां हर बात का प्रश्न थोड़ी न होगा। बैठिये।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, वह आंकड़े बता रहे हैं, उससे मुझे कोई तकलीफ नहीं है। वह आरोप लगा रहे हैं तो वहां जवाब देना पड़ेगा।

अध्यक्ष महोदय :- वह बता दिये ना। वह सब आंकड़े बता रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- नहीं, वह आंकड़े नहीं बता रहे हैं, आरोप भी लगा रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- वह तुलनात्मक अध्ययन है।

श्री विष्णुदेव साय :- तुलनात्मक बता रहा हूँ।

श्री भूपेश बघेल :- साहब, आप वर्ष 2018-19 से तुलना करेंगे ? आप वर्ष 2023-24 का करिये।

अध्यक्ष महोदय :- वह पूरी तुलना कर रहे हैं। यदि आपको तुलना में कोई दिक्कत हो तो बताइये। चलिए।

श्री विष्णुदेव साय :- अध्यक्ष महोदय, पंजीयन से होने वाली राजस्व प्राप्ति वर्ष 2018-19 की 1,108 करोड़ रुपये से बढ़कर 3,033 करोड़ रुपये हो गयी। खनन के समय वर्ष 2018-19 में राजस्व 4,489 करोड़ रुपये था, जो हम लोगों के समय में वर्ष 2025-26 में बढ़कर 16,911 करोड़ रुपये हो गया। आपकी सरकार तो दिल्ली दरबार के लिए ए.टी.एम. बनी रही। (शेम-शेम की आवाज)

श्री भूपेश बघेल :- आपकी सरकार स्टेट बैंक (एस.बी.आई.) बन गयी है। अभी पूरी स्टेट बैंक बनी है ना ? एक 1,500 करोड़ रुपये का वीडियो आया था। कुछ लोग अंदर है। (शेम-शेम की आवाज) 1,500 करोड़ को भेजना है अभी..।

श्री विष्णुदेव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनके 5 साल में पी.डब्ल्यू.डी. में 7443 करोड़ रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति हुई और हम लोग ढाई साल में 11191 करोड़ रुपये की पी.डब्ल्यू.डी. में प्रशासकीय स्वीकृति दिये हैं। (मेजों की थपथपाहट) उसी तरह से नगरीय प्रशासन विभाग में इन्होंने 5 साल में 1387 करोड़ रुपये खर्च किये, हम लोग ढाई साल में 1314 करोड़ रुपये अर्बन सेक्टर में खर्च किये। आवास एवं पर्यावरण विभाग में 546 करोड़ रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति इनके समय में मिली, जबकि हम लोग ढाई साल में 1828 करोड़ रुपये आवास एवं पर्यावरण विभाग में खर्च किये हैं। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग में इनके समय में 05 साल में 612 करोड़ रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति हुई, हम लोग ढाई में 1184 करोड़ रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति दिये हैं। इस तरह से हम लोग आपके 05 साल की तुलना में ढाई साल में ही ज्यादा अच्छा काम किये हैं। जब हमने दायित्व संभाला तो प्रत्याभूमि देनदारी 30 हजार करोड़ रुपये थी, अब यह घटकर 18,392 करोड़ रुपये रह गई है। पिछली सरकार के अंत में राजकोषीय घाटा जी.एस.डी.पी. का 4.6 प्रतिशत था। हम वित्तीय अनुशासन का परिचय देते हुए इसे 2.99 प्रतिशत पर ले आये हैं। इस बार अनुमान है कि यह 2.91 प्रतिशत के स्तर पर आ जायेगा। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, ट्राइवल की बात हुई थी, लेकिन फिर मैं बताना चाहूंगा कि जो दिल्ली में ट्राइवल यूथ हॉस्टल की सीट 50 थी, जिसको हम लोग ढाई साल में 200 सीट कर दिये हैं। और बड़ा सौभाग्य का विषय है कि इस बार वही से हमारे ट्राइवल यूथ हॉस्टल से 13 युवा यू.पी.एस.सी. की प्रारंभिक परीक्षा उत्तीर्ण किये हैं। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग राज्य में आपातकालीन सहायता के लिये डायल 112 नेक्स्ट जन सेवा जो 16 जिले में था, इसको बढ़ाकर 33 जिले में इसका विस्तार किये हैं। साइबर अपराध को रोकने के लिये सरकार गंभीरता से कार्य कर रही है। कांग्रेस सरकार ने केवल 5 साल में 5 साइबर थाने बनाये थे, हमने ढाई साल में 9 साइबर थाने खोले हैं तथा 5 साइबर थाने और अलग से आरंभ करने

वाले हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, युवा कल्याण के लिये भी हमारी सरकार काम कर रही है। हमने छत्तीसगढ़ कर्मचारी चयन मंडल का गठन किया है। अब तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के समान पदों के लिये 7 अलग-अलग श्रेणियों में संयुक्त भर्ती परीक्षा आयोजित की जायेगी। पहले कई सालों में एक बार परीक्षा होती थी, अब हर साल भर्ती की परीक्षाएँ आयोजित होंगी। इससे युवाओं में पी.एस.सी. की तरफ उत्साह और विश्वास का वातावरण बनेगा। कांग्रेस सरकार के समय 4174 पदों पर पुलिस भर्ती हुई, हमने ढाई सालों में ही पुलिस विभाग में 7 हजार पदों पर युवाओं की भर्ती की। (मेजों की थपथपाहट) हम आने वाले समय में 7 हजार पदों पर और भर्ती करने वाले हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, पी.एस.सी. घोटाले की बात हो ही गई है, उसकी सी.बी.आई. जांच कर रही है और दोषीदार आज जेल की सीखचों के अंदर में हैं। ढाई वर्षों में दो पी.एस.सी. का एकजाम हो गया है और जब उनके बच्चे अपने पेरेंट के साथ में मिलने के लिये आते हैं, गांव के किसान का बेटा, कोई मजदूर का बेटा होता है तो उनके चेहरों पर जो खुशी होती है, उसको देखते ही बनता है। (मेजों की थपथपाहट) हम लोग पी.एम. सेतु योजना के तहत 30 आई.टी.आई. का भी प्रदेश में उन्नयन कर रहे हैं। इसके लिये 6 क्लस्टर बनाये हैं और प्रत्येक क्लस्टर के लिये 241 करोड़ रुपया इसमें खर्चा कर रहे हैं ताकि हमारे युवा वहां पर प्रशिक्षित होकर रोजगार से जुड़ें। हम लोग अपने प्रदेश में निफ्ट, नाइलिट, फॉरेंसिक यूनिवर्सिटी जैसे संस्थान ला रहे हैं ताकि शैक्षणिक गुणवत्ता का स्तर यहां बढ़े। पिछली सरकार के 05 वर्षों में मात्र 8673 युवाओं को कौशल प्रशिक्षण दिया गया था, हमारी सरकार के ढाई साल में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना एवं मुख्यमंत्री कौशल विकास के अंतर्गत 22,000 से ज्यादा युवाओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है। (मेजों की थपथपाहट) और अब ए.आई. का जमाना है। युवाओं को ए.आई. से प्रशिक्षित करने के लिये हमने ए.आई. मिशन प्रारंभ किया है इसके लिये बजट में भी प्रावधान किया है। एन.आई.टी. रायपुर और ट्रिपल आई.टी. नवा रायपुर में 2 नये ए.आई. सेंटर ऑफ एक्सीलेंस भी हमारी सरकार स्थापित करने जा रही है। कांग्रेस के 5 साल के कार्यकाल में केवल एक ही उद्योग चलता था और वह उद्योग था तबादला उद्योग, ट्रांसफर उद्योग। आज हम लोग नयी उद्योग नीति लाये हैं। उद्योग नीति जरूर पढ़ना चाहिए, उसमें 8 लाख करोड़ से ज्यादा का एम.ओ.यू. हुआ है। जबकि हमारे साथी पूर्व वक्ता बता रहे थे कि आपके समय शायद पौने 200 के आस-पास एम.ओ.यू. हुआ था जो कि धरातल में नहीं के बराबर उतरा लेकिन हम लोगों ने जो एम.ओ.यू. किया है वह ठोक बजाकर किया है। (मेजों की थपथपाहट) आज अधिकांश धरातल में वह दिख रहा है और इससे 1 लाख 74 हजार से भी अधिक रोजगार का सृजन की संभावना है। वस्त्र उद्योग भी हम लोग ला रहे हैं जिसमें 42 हजार से ज्यादा रोजगार सृजित होने वाला है। सेमी कंडक्टर चिप्स प्लांट उसका भी काम हमारे प्लांट का काम छत्तीसगढ़ के अन्दर में नया रायपुर में शुरू हो गया है। एनर्जी के सेक्टर में 3 लाख करोड़ से ज्यादा का एम.ओ.यू. हुआ है। आने वाले कुछ वर्षों में हम लोग 30 हजार मेगावाट बिजली और अलग से पैदा

करेंगे और पूरे देश में हमारा यह प्रदेश पॉवर सेक्टर में नंबर वन होगा। आप मुफ्त बिजली की बात करते थे लेकिन कभी आपने पैसा कंपनी को नहीं दिया लेकिन हम लोग चूंकि आप हाफ बिजली चलाते थे लेकिन अब हम लोग यह रियायती बिजली से लोगों को मुफ्त बिजली की ओर ले जा रहे हैं। प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना और अभी तक 70 हजार से ज्यादा घरों में सोलर प्लांट लगा चुके हैं। प्रतिदिन 500 से ज्यादा घरों में रोज बिजली के लिए यह सोलर प्लांट लग रहा है। (मेजों की थपथपाहट) और सुशासन तिहार में हम भी एक घर जाते थे, वह बेनिफिशरी के घर में तो वह लोग बताते थे कि जहां साढ़े 3 हजार, 4 हजार बिजली बिल आता है आज वहाँ पर जीरो हो रहा है तो इस तरह से हम लोग हमारे लोगों को मुफ्त बिजली की ओर ले जा रहे हैं। अभी हम लोग मुख्यमंत्री बिजली बिल भुगतान समाधान योजना चला रहे हैं, जिनका बिजली बिल बढ़ा हुआ था, उनका सरचार्ज पूरी तरह से माफ कर रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) 12 लाख से अधिक उपभोक्ताओं का 910 करोड़ रुपया सरचार्ज माफ किए हैं और पिछली सरकार में आप लोगों ने 78 हजार 898 सिंचाई पम्पों का उर्जीकरण किया था। हम लोग केवल ढाई वर्ष में 1 लाख 2845 पम्प का उर्जीकरण करके किसानों के खेत में पानी पहुंचाने का काम किए हैं। (मेजों की थपथपाहट) विद्युत सहायता योजना के अंतर्गत किसानों को दी गई विद्युत सब्सिडी 9145 करोड़ रुपए से बढ़कर 14 हजार 198 करोड़ रुपए तक पहुंची है। यह किसानों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता है। बस अब कर रहा हूँ। आपके समय में डी.एम.एफ. में भी घोटाला हुआ, (शेम-शेम की आवाज) माननीय प्रधानमंत्री जी की कितनी अच्छी सोच है कि जहां पर माईंस होता है, कलकारखाने होते हैं तो वहां के लोग विस्थापित भी होते हैं, प्रदूषण भी झेलते हैं, उसके लिए उन्होंने डी.एम.एफ. खनिज न्यास निधि का प्रावधान किया, लेकिन उसमें भी आपके समय में 40-40 प्रतिशत कमीशन था। (शेम-शेम की आवाज) शायद अभी भी उस डी.एम.एफ. घोटाले में कोई अधिकारी आज भी जेल के अंदर में है। खनिज में आप लोगों के समय 12941 करोड़ रुपये राजस्व मिलता था। आज हम लोगों ने वर्ष 2024-2025 में 14592 करोड़ रुपये बढ़ाया है और वर्ष 2025-2026 में 16737 करोड़ रुपये हुआ। यह खनिज में राजस्व बढ़ाने का काम हमारी सरकार ने किया है। रेत उत्खनन की निगरानी के लिए कड़ाई से कार्यवाही कर रहे हैं। ड्रोन सर्विलांस के साथ-साथ वाहनों में जी.पी.एस. एवं आर.एफ. आई.डी. टैग को भी अनिवार्य किया जा रहा है और रेत तस्करों के ऊपर लगातार कार्यवाही हो रही है। अभी तक 95 से ज्यादा एफ.आई.आर. दर्ज हो चुके हैं। आज आप पेड़ कटाई की बात करते हैं। लेकिन जब आप मुख्यमंत्री थे तो उस समय का वीडियो भी है। आप लोगों से यह बोलते थे कि आप लोगों को बिजली चाहिए तो कोयले की जरूरत होगी। कोयला तो पहाड़ में ही और जंगल में ही मिलेगा। ऐसा आप बोलते थे। आप यहां तक बोलते थे कि..।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह बिल्कुल बोलता था, मैं छत्तीसगढ़ के लिए बोलता था। मैं राजस्थान के लिए नहीं बोलता था। आप राजस्थान के लिए काट रहे हो।

श्री विष्णु देव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कोयला खनन कर, पेड़ों की कटाई का जो विरोध कर रहे हैं, सबसे पहले अपने घरों के पंखे, कूलर और ए.सी. बंद कर देने चाहिए। खनन एवं सुव्यस्थित औद्योगिकीकरण के साथ, पर्यावरण संतुलन का ध्यान रखना, हमारी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। राज्य के कुल वन क्षेत्र 59.82 लाख हेक्टेयर में वर्ष 1980 से 12787 हेक्टेयर में अंडर ग्राउण्ड खदानें स्वीकृत की गयीं। जिसमें पेड़ कटाई नहीं होती है। यहां 17755 हेक्टेयर में खुली खदानें हैं जो कुल वन क्षेत्र का मात्र 0.29 प्रतिशत है। इसमें भी कटाई एक साथ न होकर, धीरे-धीरे पट्टा अवधि में होती है। खनन प्रस्ताव तब तक 3 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में रिक्लेम कर पुनः वन हो गया है। राज्य में विगत 2 वर्षों में वन संरक्षण अनिधियम के तहत स्वीकृत खनन प्रकरणों में खनन कार्य हेतु 1 लाख 3 हजार 855 पेड़ों की कटाई की गई है, जबकि इसके एवज में खनन एवं उद्योग क्षेत्रों में 30 लाख से अधिक पौधे लगाए गए हैं। मैं बता रहा हूँ कि 3 लाख की जगह में 30 लाख पौधे लगे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे आपत्ति है। आप पढ़ ही रहे हैं तो या तो टेबल कर दीजिए।

श्री विष्णु देव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बस खत्म कर रहा हूँ।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप अभी भी पढ़ रहे हैं।

श्री विष्णु देव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं डाटा पढ़ रहा हूँ।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप डाटा पढ़ लें यह समझ आता है लेकिन आप सबको पढ़ रहे हैं। आप डाटा पढ़ रहे हैं तब तक हमें कोई आपत्ति नहीं थी, लेकिन सबको पढ़ रहे हैं। इसलिए मैं बोल रहा हूँ।

श्री विष्णु देव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं डाटा ही पढ़ रहा हूँ।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह डाटा नहीं है। हमें डाटा में कोई तकलीफ नहीं है, लेकिन यह देखकर पढ़ रहे हैं।

श्री विष्णु देव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले साल से लगातार एक पेड़ मां के नाम अभियान चला रहे हैं। एक पेड़ मां के नाम में 7 करोड़ पेड़ लगा चुके हैं (मेजों की थपथपाहट) और इस साल ढाई करोड़ का लक्ष्य है। इस साल भी हम 3 करोड़ पेड़ लगायेंगे। भारतीय वन अनुसंधान संस्थान देहरादून द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य में वन एवं वृक्ष आवरण में 683 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि दर्ज की गयी है। माननीय अध्यक्ष महोदय, पहुंचविहीन क्षेत्रों में मोबाईल नेटवर्क पहुंचाने का भी काम हमारी सरकार ने किया है। पिछले ढाई वर्षों में 829 मोबाईल टॉवर लगाए हैं। भारत नेट फेज 3.0 के अंतर्गत प्रदेश के 5659 ग्राम पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर आधारित हाईस्पीड इंटरनेट से जोड़ा जाएगा। इससे गांव के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग और सरकारी सेवा घर पास ही मिल सकेंगी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जो दो नवाचार हमने किए हैं, उन्हें बताकर मैं अपनी बात समाप्त करूँगा। एक तो हम लोग इतना नवाचार करते जा रहे हैं कि इससे विपक्ष बौखलाया हुआ है। (मेजों की थपथपाहट) एक तो अभी मुख्यमंत्री हेल्पलाइन शुरू की है—1076 । किसी भी तरह की शिकायत है तो आप अपने लोगों को बता देंगे कि 1076 नंबर पर रजिस्टर करा लेंगे और यह 24 घंटे, सातों दिन खुला है। पूरा एक दफ्तर है हमारा । 50-50 लोग दो शिफ्टों में बैठते हैं आठ-आठ घंटे, और रात में 25 लोग बैठते हैं । 24 घंटे खुला रहता है और हर समस्या के समाधान के लिए समय निर्धारित किया है। उस निर्धारित अवधि में समस्या का समाधान होगा और हमारे 8,000 अधिकारी-कर्मचारी उसमें इन्वाल्व हैं । तहसीलदार से लेकर सचिव स्तर तक 8,000 अधिकारी उसमें शामिल हैं। L1, L2, L3, L4—चार स्तरों की समाधान की समिति/स्तर है तो यह आप अपने लोगों को अपने क्षेत्र में बताएं, ताकि वे इसका लाभ उठा सकें। इसका बहुत अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है। मुख्यमंत्री होने के नाते मैं बराबर इसकी चिंता करता हूँ और समाचारों में आप लोग देखते भी होंगे। कई लोग अपनी सक्सेस स्टोरी को, जो समस्या का समाधान हो रहा है, उसे छापते भी हैं तो इस तरह से इसका भी लाभ हो रहा है।

अध्यक्ष महोदय, हम लोग पैक्स (PACS) खोल रहे हैं—किसानों को पास में ही खाद, बीज और लोन मिल सके, इसलिए जो 2,058 पैक्स थे, उन्हें बढ़ाकर इस साल 515 पैक्स और खोले हैं । हम सहकारिता को बढ़ावा दे रहे हैं । बस्तर क्षेत्र में भी हम लोग दुग्ध-उत्पादन और पशुपालन में दुग्ध क्रांति लाने के लिए NDDB (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड) से समझौता किए हैं। दादी बड़े ध्यान से सुन रहे हैं । और हर परिवार को गाय और भैंस देंगे और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड वाले सिखाएंगे कि कैसी गाय पालनी चाहिए, और वे दूध का संकलन भी करेंगे।

श्री कवासी लखमा :- हरियाणा से गाय आया था, वह एक भी नहीं बचा है ।

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- एक गाय दादी को भी दे दीजिए, वे आजकल उड़ीसा में रह रहे हैं ।

श्री विष्णु देव साय :- इस बार NDDB वाले सब सिखाएंगे । इस तरह से हम सब विकास का काम कर रहे हैं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह तथाकथित अविश्वास प्रस्ताव कांग्रेस की ही तरह पूरी तरह से खोखला, आधारहीन, असत्य का पुलिंदा और राजनीतिक नौटंकी मात्र है। किसी विद्वान व्यक्ति ने कांग्रेस के बारे में कहा है कि कांग्रेस जब सरकार में होती है, तब वह बहुत खराब काम करती है, लेकिन जब वह विपक्ष में होती है तो उसका प्रदर्शन खुद के बनाए रिकॉर्ड से भी अत्यंत खराब होता है। यह अविश्वास प्रस्ताव उसी का उदाहरण है।

श्री भूपेश बघेल :- आपका भाषण बहुत खराब लिखा गया है । देख-देख के पढ़ रहे हैं, फिर भी ठीक आंकड़ा नहीं आ रहा है । यह भी बिल्कुल गलत लिखा गया है ।

श्री विष्णु देव साय :- अध्यक्ष महोदय, और अंत में, मैं यह कहते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ कि जनता की अदालत सबसे बड़ी होती है। वहाँ न छल चलता है, न बहाना चलता है। जिसने विश्वास निभाया, वही आगे बढ़ता है, जिसने विश्वास तोड़ा वह फिर लौटकर नहीं आता। मैं आप सबको विश्वास दिलाता हूँ कि आपको मालूम होगा कि जब 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य बना, तो बहुमत के आधार पर आपकी सरकार थी। 3 साल तक चली, लेकिन 3 साल में छत्तीसगढ़ के लोग इतने परेशान हो गए कि 15 साल आप लोगों को बेदखल कर दिया। और इस बार आप लोगों ने 5 साल परेशान किया है, तो उस हिसाब से हिसाब लगा लीजिए, आप लोग 25 साल सरकार में आने वाले नहीं हैं! 25 साल आप लोग सत्ता में नहीं आने वाले हैं। आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि यह सदन मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय एवं उनके मंत्रिपरिषद् के विरुद्ध अविश्वास व्यक्त करता है।

प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ।

(मेजों की थपथपाहट)

सत्र समापन

अध्यक्षीय उद्बोधन

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्यगण, चूँकि सत्र का समापन हो रहा है। रात के 2 बजकर 35 मिनट हो गये हैं तो मैं समझता हूँ कि जितना छोटा हो सके, मैं उतनी छोटी अपनी बात रखूँगा। षष्ठम विधान सभा के दशम सत्र में जो 13 जुलाई से 17 जुलाई, 2026 तक सत्र चला। आप सब सदस्यों ने संसदीय एवं विधायी कार्यों को सफलतापूर्वक सम्पादित किया। इसलिए मैं माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष, संसदीय कार्यमंत्री, पक्ष-प्रतिपक्ष के सभी सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ। सभापति तालिका के सभी सदस्यों का धन्यवाद। इस छत्तीसगढ़ सरकार के मुख्य सचिव, सभी सचिवगण, छत्तीसगढ़ विधान सभा के सचिव दिनेश शर्मा सहित उनके सभी सहयोगियों को धन्यवाद देता हूँ। सुरक्षा में लगे सभी अधिकारियों-कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूँ।

परम्परा अनुसार आगामी सत्र की संभावित तिथि घोषित करना होता है। संभावित तिथि दिसम्बर माह के द्वितीय सप्ताह में संभावित है। आप सभी का धन्यवाद। जय हिन्द।

अब राष्ट्रगीत “वंदे मातरम्” उसके पश्चात् “राष्ट्रगान” होगा। माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि अपने स्थान पर खड़े हों।

(राष्ट्रगीत “वंदे मातरम्”, राष्ट्रगान “जन गण मन” की धुन बजाई गई)

अध्यक्ष महोदय :- विधान सभा की कार्यवाही अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित।)

(रात्रि 2 बजकर 41 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित हुई)

अटल नगर, नवा रायपुर (छ.ग.)

दिनांक 17 जुलाई, 2026

दिनेश शर्मा

सचिव

छत्तीसगढ़ विधान सभा